

कृतिका भाग 1



कृतिका भाग – 1

इस जल प्रलय में

- फणीश्वर नाथ रेणु

सारांश

जल प्रलय में' फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखित रिपोर्टज है, जिसमें उन्होंने सन 1975 ई० में पटना में आई प्रलयांकारी बाढ़ का अँखों देखे हाल का वर्णन किया है।

लेखक का गाँव एक ऐसे क्षेत्र में था, जहाँ की विशाल और परती ज़मीन पर सावन-भादों के महीनों में पश्चिम, पूर्व और दक्षिण में बहने वाली कोसी, पनार, महानंदा और गंगा की बाढ़ से पीड़ित मानव व पशुओं का समूह शरण लेता था। सन 1967 में भयंकर बाढ़ आई थी, तब पूरे शहर और मुख्यमंत्री निवास तक के ढूबने की खबरें सुनाई देती रहीं। लेखक बाढ़ के प्रभाव व प्रकोप को देखने के लिए अपने एक कवि मित्र के साथ निकले। तभी आते-जाते लोगों द्वारा आपस में जिज्ञासावश एक-दूसरे को बाढ़ की सूचना से अवगत कराते देख लेखक गांधी मैदान के पास खड़े लोगों के पास गए।

शाम को साढ़े सात बजे पटना के आकाशवाणी केंद्र ने घोषणा की कि पानी आकाशवाणी के स्टूडियो की सीढ़ियों तक पहुँच गया है। बाढ़ का पानी देखकर आ रहे लोग पान की दुकानों पर खड़े हँस-बोलकर समाचार सुन रहे थे, परंतु लेखक और उनके मित्र के चेहरों पर उदासी थी। कुछ लोग ताश खेलने की तैयारी कर रहे थे। राजेंद्रनगर चौराहे पर मैगज़ीन कॉर्नर पर पूर्ववत पत्र-पत्रिकाएँ बिक रही थीं। लेखक कुछ पत्रिकाएँ लेकर तथा अपने मित्र से विदा लेकर अपने फ़्लैट में आ गए।

वहाँ उन्हें जनसंपर्क विभाग की गाड़ी से लाउडस्पीकर पर की गई बाढ़ से संबंधित घोषणाएँ सुनाई दीं। उसमें सबको सावधान रहने के लिए कहा गया। रात में देर तक जगने के बाद लेखक सोना चाहते हैं, पर नींद नहीं आती। वे कुछ लिखना चाहते हैं और तभी उनके दिमाग में कुछ पुरानी यादें तरोताजा हो जाती हैं। सन 1947 में मनिहारी शिले में बाढ़ आई थी। लेखक गुरु जी के साथ नाव पर दवा, किरोसन तेल, 'पकाही घाव' की दवा और दियासन्ताई आदि लेकर सहायता करने के लिए वहाँ गए थे।

इसके बाद 1949 में महानंदा नदी ने भी बाढ़ का कहर बरपाया था। लेखक वापसी थाना के एक गाँव में बीमारों को नाव पर चढ़ाकर कैंप ले जा रहे थे, तभी एक बीमार के साथ उसका कुत्ता भी नाव पर चढ़ गया। जब लेखक अपने साथियों के साथ एक टीले के पास पहुँचे तो वहाँ एक ऊँची स्टेश बनाकर 'बलवाही' का नाच हो रहा था और लोग मछली भूनकर खा रहे थे। एक काला-कलूटा 'नटुआ' लाल साड़ी में दुलहन के हाव-भाव को दिखा रहा था।

फिर एक बार सन 1967 ई० में जब पुनर्पुन का पानी राजेंद्रनगर में घुस गया, तो कुछ सजे-धजे युवक-युवतियों की टोली नाव पर स्टोव, केतली, बिस्कुट आदि लेकर जल-विहार करने निकले। उनके ट्रांजिस्टर पर 'हवा में उड़ता जाए' गाना बज रहा था।



जैसे ही उनकी नाव गोलंबर पहुंची और ब्लॉकों की छतों पर खड़े लड़कों ने उनकी खिल्ली उड़ानी शुरू कर दी, तो वे दुम दबाकर हवा हो गए।

रात के ढाई बजे का समय थापर पानी अभी तक वहाँ नहीं आया था। लेखक को लगा कि शायद इंजीनियरों ने तटबंध ठीक कर दिया हो। लेखक को नींद आ गई। सुबह साढ़े पाँच बजे जब लोगों ने उन्हें जगाया तो लेखक ने देखा कि सभी जागे हुए थे और पानी मोहल्ले में दस्तक दे चुका था। चारों ओर शोर-कोलाहल-कलरव, चीख-पुकार और पानी की लहरों का नृत्य दिखाई दे रहा था। चारों ओर पानी ही पानी दिखाई दे रहा था। पानी बहुत तेजी से चढ़ रहा था। लेखक ने बाढ़ का दृश्य तो अपने बचपन में भी देखा था, परंतु इस तरह अचानक पानी का चढ़ आना उन्होंने पहली बार देखा था।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 बाढ़ की खबर सुनकर लोग किस तरह की तैयारी करने लगे?

उत्तर- बाढ़ की खबर से सारे शहर में आतंक मचा हुआ था। लोग अपने सामान को नीचली मंजिल से ऊपरी मंजिल में ले जा रहे थे। सारे दुकानदार अपना सामान रिक्शा, टमटम, ट्रक और टेम्पो पर लादकर उसे सुरक्षित स्थानों पर ले जा रहे थे। खरीद-बिक्री बंद हो चुकी थी। लोग घरों में खाने का सामान, दियासलाई, मोमबत्ती, दवाईयाँ, किरोसीन आदि का प्रबन्ध करने में लगे हुए थे।

प्रश्न 2 बाढ़ की सही जानकारी लेने और बाढ़ का रूप देखने के लिए लेखक क्यों उत्सुक था?

उत्तर- लेखक ने पहले बाढ़ के बारे में सुना जरूर था पर कभी देखा नहीं था। उसने अपनी कई रचनाओं में बाढ़ की विनाशकीला का उल्लेख किया था। वह स्वयं अपनी आँखों से बाढ़ के पानी को शहर में घुसते और उसकी विनाशकीला के बारे में जानने को उत्सुक था।

प्रश्न 3 सबकी जुबान पर एक ही जिज्ञासा- “पानी कहाँ तक आ गया है?” इस कथन से जनसमूह की कौन-सी भवनाएं व्यक्त होती हैं?

उत्तर- इस कथन से जनसमूह में जिज्ञासा के भाव उठते हुए जान पड़ते हैं। लोग बाढ़ की स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए पैदल उस जगह जा रहे थे। सब के मन में व आँखों में एक ही प्रश्न जिज्ञासा का रूप ले चुका था- पानी कहाँ तक पहुंच गया होगा? उनके मन में यही प्रश्न उठ रहे थे कि पानी कौन-कौन से हिस्से को निगल गया होगा? उन्हें अभी बाढ़ के पानी का भय नहीं सता रहा था। वे बस बाढ़ के पानी की गति के विषय में जिज्ञासु थे।

प्रश्न 4 ‘मृत्यु का तरल दूत’ किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर- बाढ़ के निरंतर बढ़ते हुए जल-स्तर को ‘मृत्यु का तरल दूत’ कहा गया है। बढ़ते हुए जल ने अपनी भयानकता का संकेत दे दिया था। बाढ़ के इस आगे बढ़ते हुए जल ने न जाने कितने प्राणियों को उजाड़ दिया था, बहा दिया था और बेघर करके मौत की नींद सुला दिया था। इस तरल जल के कारण लोगों को मरना पड़ा, इसलिए इसे मृत्यु का तरल दूत कहना बिल्कुल सही है।



प्रश्न 5 आपदाओं से निपटने के लिए अपनी तरफ से कुछ सुझाव दीजिए।

उत्तर- बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है। इसके कारण हर जगह जल भराव हो जाता है क्योंकि मूसलाधार वर्षा के कारण नदी का जलस्तर बढ़ जाता है। स्थिति ये बन जाती है कि लोगों को उस जगह को छोड़कर जाना पड़ता है और जो समय रहते नहीं जा पाते, उन्हें ऊँचे स्थानों का आश्रय लेना पड़ता है। इस आपदा से निपटने के लिए तात्कालिक व दीर्घकालिक उपाय करने चाहिए। बाढ़ में फँसे बाढ़ पीड़ितों को निकालने के लिए नावों का उचित प्रबन्ध करना चाहिए। खाद्य-सामग्री (राहत सामग्री) का पर्याप्त मात्रा में भंडारण करना आवश्यक है। बचाव कार्यों के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं व सरकार को पहले से ही तैयारी आरंभ कर देनी चाहिए। पर्याप्त दर्वाईयाँ व चिकित्सा के लिए डॉक्टरों को भी नियुक्त करना चाहिए।

प्रश्न 6 ईह! जब दानापुर डूब रहा था तो पटनियाँ बाबू लोग उलटकर देखने भी नहीं गए...अब बूझो!'-इस कथन द्वारा लोगों की किस मानसिकता पर चोट की गई है?

उत्तर- लोग संकट की घड़ी में एक-दूसरे की सहायता करने के बजाए अपने निजी स्वार्थों की सिद्धि को अधिक महत्व देते हैं। अपने सुख-सुविधायों को छोड़कर किसी संकटग्रस्त व्यक्ति या व्यक्तियों का हाल-चाल जानने का भी कष्ट नहीं करते। उक्त कथन द्वारा लोगों की इसी मानसिकता पर चोट की गई है। यह कथन निश्चित रूप से कठोर और द्वेषपूर्ण है।

प्रश्न 7 खरीद-बिक्री बंद हो चुकने पर भी पान की बिक्री अचानक क्यों बढ़ गई थी?

उत्तर- खरीद-बिक्री बंद हो चुकने पर भी पान की बिक्री अचानक बढ़ गई थी क्योंकि लोग बाढ़ को देखने

के लिए बहुत बड़ी संख्या में इकट्ठे हो गए थे। वे बाढ़ से भयभीत नहीं थे, बल्कि हंसी-खुशी और कौतुहल से युक्त थे। ऐसे समय में पान उनके लिए समय गुजारने का सबसे अच्छा साधन था।

प्रश्न 8 जब लेखक को यह अहसास हुआ कि उसके इलाके में भी पानी घुसने की संभावना है तो उसने क्या-क्या प्रबंध किए?

उत्तर- जब लेखक को अहसास हुआ कि उसके इलाके में भी पानी घुसने की संभावना है तो वे रोजमरा की चीजें जुटाने में लग गए। उन्होंने आवश्यक ईंधन, आलू, मोमबत्ती, दियासलाई, पीने का पानी, कम्पोज की गोलियाँ इकट्ठी कर लीं ताकि बाढ़ से घिर जाने पर कुछ दिनों तक गुजारा चल सकें। उन्होंने पढ़ने के लिए किताबें भी खरीद ली। उन्होंने बाढ़ आने पर छत पर चले जाने का भी प्रबंध सुनिश्चित कर लिया।

प्रश्न 9 बाढ़ पीड़ित क्षेत्र में कौन-कौन सी बीमारियों के फैलने की आशंका रहती है?

उत्तर- बाढ़ के बाद हैजा, मलेरिया, टाइफाइड आदि बीमारियों के फैलने की संभावना रहती है क्योंकि बाढ़ के उत्तरे पानी में मच्छर अत्यधिक मात्रा में पनपते हैं जिसके कारण मलेरिया जैसी बीमारी हो जाती है। पानी की कमी से लोगों को गंदा पानी पीना पड़ता है जो हैजा और टाइफाइड जैसी बीमारियों को न्यौता देता है।

प्रश्न 10 नौजवान के पानी में उत्तरते ही कुत्ता भी पानी में कुंद गया। दोनों ने किन भावनाओं के वशीभूत होकर ऐसा किया?

उत्तर- नौजवान और कुत्ता परस्पर गहरे आत्मीय थे। दोनों एक-दूसरे के सच्चे साथी थे। उनमें मानव और पशु का भेदभाव भी नहीं था। वे एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे। यहाँ तक कि नौजवान को कुत्ते के बिना मृत्यु भी स्वीकार नहीं थी। इस व्यवहार से उनकी गहरी मैत्री का परिचय मिलता है।



प्रश्न 11 'अच्छा है, कुछ भी नहीं। कलम थी, वह भी चोरी चली गई। अच्छा है, कुछ भी नहीं— मेरे पास।'

—मूर्वी कैमरा, टेप रिकॉर्डर आदि की तीव्र उत्कंठा होते हुए भी लेखक ने अंत में उपर्युक्त कथन क्यों कहा?

उत्तर- यहाँ लेखक के बाढ़ से उत्पन्न दुःख को व्यक्त किया गया है। वह इस घटना को पहले कैमरे में कैद करना चाहता था परन्तु उसके पास कैमरा उपलब्ध नहीं था। फिर उसके मन में विचार आया कि वह कलम के द्वारा पन्जों में इस त्रासदी को लिखे जिसे उसने पहले स्वयं भोगा था पर उसकी कलम भी उसके पास नहीं थी। वो भी चोरी हो गई थी। इतनी तीव्र उत्कंठा होते हुए भी लेखक ने सोचा की अच्छा है, कुछ भी नहीं क्योंकि बाढ़ के इस सजीव भ्यानक रूप को अगर वो अपने कैमरे व कलम से पन्जों पर उतार भी लेता तो उसे दुःख ही तो प्राप्त होता। उसे बार-बार देखकर, पढ़कर उसे कुछ प्राप्त नहीं होता तो फिर उनकी तस्वीर लेकर वह क्या करता।

प्रश्न 12 आपने भी देखा होगा कि मिडिया द्वारा प्रस्तुत की गयी घटनाएँ कई बार समस्याएँ बन जाती हैं, ऐसी किसी घटना का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- जहाँ मिडिया समाज को जागृत करने का प्रयास करता वही कई बार समस्याओं को बढ़ा भी देता है। उदाहरण स्वरूप बाबरी मस्जिद काण्ड। इस घटना को इतना बढ़ा- चढ़ाकर मिडिया में दिखाया गया कि जिसके परिणाम स्वरूप पूरा देश सांप्रदायिक दंगों की चपेट में आ गया।

प्रश्न 13 अपनी देखी -सुनी आपदा का वर्णन कीजिए।

उत्तर- जुलाई 2005 पूरा मुंबई शहर बाढ़ में डूब गया था। पूरा का पूरा शहर जल में डूब चूका था। करीब एक बजे के आस-पास वर्षा ने अपना जो प्रलयकारी रूप धरा वह करीब हफ्ते भर जारी रहा। लोग दफ्तरों दुकानों और काम के स्थानों में फँसे के फँसे रह गए। नन्हे बच्चे विद्यालय में बिना बिजली के पूरी रात काटने के लिए मजबूर हो गए। इस त्रासदी में न जाने कितनी जानें गई और देश की इस आर्थिक राजधानी को कितना आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा।



STEP UP

ACADEMY



मेरे संग की औरतें

-मृदुला गर्गजी

सारांश

प्रस्तुत संस्मरण लेखिका मृदुला गर्ग द्वारा लिखा गया है। इसमें लेखिका ने अपने परिवार की औरतों के व्यक्तित्व और स्वभाव पर प्रकाश डाला है। लेखिका ने अपनी नानी के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। लेखिका की नानी अनपढ़, परंपरावादी और पर्दा-प्रथा वाली औरत थीं। उनके नाना ने तो विवाह के बाद कैंब्रिज विश्वविद्यालय से बैरिस्ट्री पास की और विदेशी शान-शौकत से जिंदगी बिताने लगे, परंतु नानी पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अतः नानी ने अपनी पुत्री की शादी की जिम्मेदारी अपने पति के एक मित्र स्वतंत्रता सेनानी प्यारे लाल शर्मा को सौंप दी कि वे अपनी बेटी की शादी आजादी के सिपाही से करवाना चाहती हैं। अतः लेखिका की माँ की शादी एक स्वतंत्रता सेनानी से हुई। वे अब खादी की साड़ी पहना करती थीं, जो उनके लिए असहनीय थी। लेखिका ने अपनी माँ को कभी भारतीय माँ जैसा नहीं देखा था। वे घर-परिवार और बच्चों के खान-पान आदि में ध्यान नहीं देती थीं। उन्हें पुस्तकें पढ़ने और संगीत सुनने का शौक था। उनमें दो गुण मुख्य थे-पहला, कभी झूठ न बोलना और दूसरा, वे एक की गोपनीय बात को दूसरे पर जाहिर नहीं होने देती थीं। इसी कारण उन्हें घर में आदर तथा बाहरवालों से दोस्ती मिलती थी।

लेखिका की परदादी को लीक से हटकर चलने का शौक था। उन्होंने मंदिर में जाकर विनती की कि उनकी पतोहू का पहला बच्चा लड़की हो। उनकी यह बात सुनकर लोग हक्के-बक्के से रह गए थे। ईश्वर ने उनके घर में पूरी पाँच कन्याएँ भेज दीं।

एक बार घर के सभी लोग घर से बाहर एक बरात में गए हुए थे और घर में जागरण था। अतः लेखिका की दादी शोर मचने की वजह से दूसरे कमरे में जाकर सोई हुई थीं। तभी चोर ने सेंध लगाई और उसी कमरे में घुस आया। परदादी की नींद खुल गई। उन्होंने चोर से एक लोटा पानी माँगा। बूढ़ी दादी के हठ के आगे चोर को झुकना पड़ा और वह कुँए से पानी ले आया। परदादी ने आधा लोटा पानी खुद पिया और आधा लोटा पानी चोर को पिला दिया और कहा कि अब हम माँ-बेटे हो गए। अब तुम चाहे चोरी करो या खेती करो। उनकी बात मानकर चोर चोरी छोड़कर खेती करने लगा।

लेखिका की बहनों में कभी इस हीन-भावना की बात नहीं आई कि वे एक लड़की हैं। पहली लड़की जिसके लिए परदादी ने मन्नत माँगी थी वह मंजुला भगत थीं। दूसरे नंबर की लड़की खुद लेखिका मृदुला गर्ग (घर का नाम उमा) थीं। तीसरी बहन का नाम चित्रा और उसके बाद रेणु और अचला नाम की बहनें थीं। इन पाँच बहनों के बाद एक भाई राजीव था।

लेखिका का भाई राजीव हिंदी में और अचला अंग्रेजी में लिखने लगी और रेणु विचित्र स्वभाव की थी। वह स्कूल से वापसी के समय गाड़ी में बैठने से इनकार कर देती थी और पैदल चलकर ही पसीने से तर होकर घर आती थी। उसके विचार सामंतवादी



व्यवस्था के खिलाफ़ थे। वह बी०ए० पास करना भी उचित नहीं मानती थी। लेखिका की तीसरी बहन चित्रा को पढ़ने में कम तथा पढ़ाने में अधिक रुचि थी। इस कारण उसके शिष्यों से उसके कम अंक आते थे। उसने अपनी शादी के लिए एक नज़र में लड़का पसंद करके ऐलान किया कि वह शादी करेगी तो उसी से और उसी के साथ उसकी शादी हुई।

अचला, सबसे छोटी बहन, पत्रकारिता और अर्थशास्त्र की छात्रा थी। उसने पिता की पसंद से शादी कर ली थी और उसे भी लिखने का रोग था। सभी ने शादी का निर्वाह भली-भाँति किया। लेखिका शादी के बाद बिहार के एक कस्बे, डालमिया नगर में रहने लगीं। वहाँ पर वहाँ की औरतों के साथ उन्होंने नाटक भी किए। इसके बाद मैसूर राज्य के कस्बे, बागलकोट में रहीं। वहाँ लेखिका ने अपने बलबूते पर प्राइमरी स्कूल खोला, जिसमें उनके और अन्य अफसरों के बच्चों ने अपनी पढ़ाई की तथा भिन्न-भिन्न शहरों के अलग-अलग विद्यालयों में दाखिला लिया। विद्यालय खोलकर लेखिका ने दिखा दिया कि वे अपने प्रयास में कभी असफल नहीं हो सकतीं। परंतु लेखिका स्वयं को अपनी छोटी बहन रेणु से कमतर आँकती थीं। वे एक अन्य घटना का स्मरण करते हुए लिखती हैं कि दिल्ली में 1950 के अंतिम दौर में नौ इंच तेज बारिश हुई तथा चारों तरफ पानी भर गया था। रेणु की स्कूल-बस नहीं आई थी। सबने कहा कि स्कूल बंद होगा, अतः वह स्कूल न जाए किंतु वह नहीं मानी। अपनी धुन की पक्की वह दो मील पैदल चलकर स्कूल गई और स्कूल बंद होने पर वापस लौटकर आई। लेखिका मानती हैं कि अपनी धुन में मंजिल की ओर चलते जाने का और अकेलेपन का कुछ और ही मज़ा होता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 लेखिका ने अपनी नानी को कभी देखा भी नहीं फिर भी उनके व्यक्तित्व से वे क्यों प्रभावित थीं?

उत्तर- लेखिका की नानी की मृत्यु उनकी माँ की शादी से पहले हो गई थी परन्तु उनकी माँ के द्वारा उन्होंने नानी के विषय में बहुत कुछ सुन रखा था। बेशक उनकी नानी शिक्षित स्त्री नहीं थीं, न ही कभी पर्दा व घर से बाहर ही गई थीं। परन्तु वे एक स्वतंत्र व्यक्तित्व की स्वामिनी थीं। उनके मन में आज़ादी की लड़ाई करने वालों के लिए विशेष आदर था। यही कारण था कि अपने अंत समय से पहले अपने पति के मित्र से उन्होंने निवेदन किया था कि उनकी पुत्री का विवाह उनके पति की पसंद से न हो, क्योंकि वह स्वयं अंग्रेज़ों के समर्थक थे, बल्कि उनके मित्र करवाएँ। वह अपनी ही तरह आज़ादी का दीवाना ढूँढ़े। वे देश की आज़ादी के लिए भी जूनून रखती परन्तु कभी घर से बाहर उन्होंने कदम नहीं रखा था।

प्रश्न 2 लेखिका की नानी आज़ादी के आंदोलन में किस प्रकार की भागीदारी रही?

उत्तर- लेखिका की नानी आज़ादी के आंदोलन में प्रत्यक्ष रूप में भले ही भाग नहीं ले पाई परन्तु अप्रत्यक्ष रूप में सदैव इस लड़ाई में सम्मिलित रहीं और इसका मुख्य उदारहण यही था कि उन्होंने अपनी पुत्री की शादी की जिम्मेदारी अपने पति के स्वतंत्रता सेनानी मित्र को दी थी। वह अपना दामाद एक आज़ादी का सिपाही चाहती थीं न कि अंग्रेज़ों की चाटुकारी करने वाले को। उन्हें अंग्रेज़ों और अंग्रेजियत से चिढ़ थी। उनके मन में आज़ादी के लिए एक जुनून था।

प्रश्न 3 लेखिका की माँ परंपरा का निर्वाह न करते हुए भी सबके दिलों पर राज करती थी। इस कथन के आलोक में-

i. लेखिका के माँ के व्यक्तित्व की विशेषताएँ लिखिए।



ii. लेखिका की दादी के घर के महौल का शब्द-चित्र अंकित कीजिए।

उत्तर-

i. लेखिका की माँ बहुत ही नाजुक, सुंदर और स्वतंत्र विचारों की महिला थीं। उनमें ईमानदारी, निष्पक्षता और सचाई भरी हुई थी। वे अन्य माताओं की तरह कभी भी अपनी बेटी को अच्छे-बुरे की न सीख दी और न खाना पकाकर खिलाया। उनका अधिकांश समय अध्यन अथवा संगीत को समर्पित था। वे कभी झूठ नहीं बोलती थीं और न कभी इधर की बात उधर करती थीं। शायद यही कारण था कि हर काम में उनकी राय ली जाती थी और सब कोई उसे सहर्ष स्वीकारता भी था।

ii. लेखिका की दादी के घर में कुछ लोग जहाँ अंग्रेजियत के दीवाने थे, वहीं कुछ लोग भारतीय नेताओं के मुरीद भी थे। घर में बहुमति होने के बाद भी एकता का बोलबाला था। घर में किसी प्रकार की संकीर्णता नहीं थी। सभी लोग अपनी-अपनी स्वतंत्रता एवं निजता बनाए रख सकते थे। घर के बच्चों के पालन-पोषण में घर के सभी लोग जिम्मेदार थे। कोई भी सदस्य अपने विचार किसी पर थोप नहीं सकता था। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि घर का माहौल अमन-चैन से भरपूर और सुखद था।

प्रश्न 4 आप अपनी कल्पना से लिखिए कि परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत क्यों माँगी?

उत्तर- लेखिका की दादी स्वतंत्र और साहसी महिला थी। उस समय लड़की की चाह रखना मेरे अनुसार उनके साहस और लीक से हटकर सोचना था।

प्रश्न 5 डराने-धमकाने, उपदेश देने या दबाव डालने की जगह सहजता से किसी को भी सही राह पर लाया जा सकता है- पाठके आधार पर तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- लेखिका के अनुसार एक बार उनके घर में चोर घुस आया था। उस पर चोर की ही बदकिस्मती थी कि वह लेखिका की दादी माँ के कमरे में घुस गया। उनकी दादी माँ ने यह जानते हुए भी कि वह चोर है उसको न डराया न धमकाया बल्कि सहजता पूर्वक उसे सुधार दिया। उन्होंने न सिर्फ उसके हाथ का पानी पिया अपितु उसी लोटे से पानी पिलाकर उसे अपना बेटा बना लिया। जिसके परिणामस्वरूप उस चोर ने चोरी करना छोड़कर खेतीबाड़ी कर अपना पूरा जीवनयापन किया।

प्रश्न 6 ‘शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है’-इस दिशा में लेखिका के प्रयासों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है। लेखिका को यह बात तब पूरी तरह समझ में आ गई, जब उनके दो बच्चे स्कूल जाने लायक हो गए। लेखिका कर्नाटक के एक छोटे कस्बे में रहती थी। उन्होंने वहाँ के कैथोलिक चर्च के विशेष से एक स्कूल खोलने का आग्रह किया। परंतु उन्होंने क्रिश्चियन बच्चों की संख्या कम होने की बात कहकर स्कूल खोलने से मना कर दिया। लेखिका ने कहा कि गैर-क्रिश्चियन बच्चों को भी शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है, परंतु विशेष तैयार नहीं हुए। ऐसे में लेखिका ने आगे बढ़ते हुए अपने दम पर एक ऐसा स्कूल खोलने का मन बना लिया जिसमें अंग्रेजी, कन्नड़ और हिन्दी तीन भाषाएँ पढ़ाई जाएँगी। लोगों ने भी लेखिका का साथ दिया और वे बच्चों को शिक्षा का अधिकार दिलाने में सफल रहीं।



प्रश्न 7 पाठ के आधार पर लिखिए कि जीवन में कैसे इंसानों को अधिक श्रद्धा भाव से देखा जाता है?

उत्तर- प्रस्तुत पाठ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जो लोग कभी झूठ नहीं बोलते और सच का साथ देते हैं। जो किसी की बात को इधर-उधर नहीं करते अर्थात् चुगलखोरी से दूर रहते हैं। जिनके इरादे मजबूत होते हैं, जो हीन भावना से ग्रसित नहीं होते तथा जिनका व्यक्तित्व सरल, सहज एवं पारदर्शी होता है, उन्हें पूरा समाज श्रद्धा भाव से देखता है।

प्रश्न 8 ‘सच अकेलेपन का मजा ही कुछ और है’ इस कथन के आधार पर लेखिका की बहन एवं लेखिका के व्यक्तित्व के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर- लेखिका और उनकी बहन जो सोचती थी उसे करके ही दम लेती थी। उनकी बहन बड़ी जिद्दी थी परन्तु उनके इस जिद्दीपन ने उनका दृढ़ निश्चय स्वभाव झलकता है। अत्यधिक बारिश होने के बावजूद, सब के मना करने के बावजूद लेखिका की बहन विद्यालय जाती है, तो दूसरी ओर लेखिका जब डालमिया नगर में रहती थीं तब उन्होंने स्त्री-पुरुष के नाटकों द्वारा सामाजिक कार्यों के लिए धन एकत्रित किया। कर्नाटक में स्कूल खोला। ये सारी बातें लेखिका के स्वतंत्र व्यक्तित्व, हिम्मत, धैर्य और लीक से हटकर अपनी अलग राह चलनेवाले वाले व्यक्तित्व की ओर संकेत करते हैं।



**STEP UP
ACADEMY**



रीढ़ की हड्डी

-जगदीशचन्द्र माथुर

सारांश

“रीढ़ की हड्डी” कहानी की शुरुआत कुछ इस तरह से होती हैं। उमा एक पढ़ीलिखी शादी के योग्य लड़की हैं जिसके पिता रामस्वरूप उसकी शादी के लिए चिंतित हैं। और आज उनके घर लड़के वाले (यानि बाबू गोपाल प्रसाद जो पेशे से वकील हैं और उनका लड़का शंकर जो बीएससी करने के बाद मेडिकल की पढ़ाई कर रहा हैं।) उमा को देखने आ रहे हैं।

चूंकि रामस्वरूप की बेटी उमा को देखने के लिए आज लड़के वाले आ रहे हैं। इसीलिए रामस्वरूप अपने नौकर रतन के साथ अपने घर के बैठक वाले कमरे को सजा रहे हैं। उन्होंने बैठक में एक तख्त (चारपाई) रख कर उसमें एक नया चादर बिछाया। फिर उमा के कमरे से हारमोनियम और सितार ला कर उसके ऊपर सजा दिया।

रामस्वरूप जमीन में एक नई दरी और टेबल में नया मेजपोश बिछाकर उसके ऊपर गुलदस्ते सजाकर कमरे को आकर्षक रूप देने की कोशिश करते हैं।

तभी रामस्वरूप की पत्नी प्रेमा आकर कहती है कि उमा मुंह फुला कर (नाराज होना) बैठी है। इस पर रामस्वरूप अपनी पत्नी प्रेमा से कहते हैं कि वह उमा को समझाएं क्योंकि बड़ी मुश्किल से उन्हें एक रिश्ता मिला है। इसीलिए वह अच्छे से तैयार होकर लड़के वालों के सामने आए।

दरअसल उमा के पिता किसी भी कीमत पर इस रिश्ते को हाथ से नहीं जाने देना चाहते हैं। लेकिन प्रेमा कहती है कि उसने उमा को बहुत समझाया है लेकिन वह मान नहीं रही है।

उसके बाद वह रामस्वरूप पर दोषरोपण करते हुए कहती हैं कि यह सब तुम्हारे ज्यादा पढ़ाने लिखाने का नतीजा है। अगर उमा को सिर्फ बारहवीं तक ही पढ़ाया होता तो, आज वह कंट्रोल में रहती। रामस्वरूप अपनी पत्नी प्रेमा से कहते हैं कि वह उमा की शिक्षा की सच्चाई लड़के वालों को न बताये।

दरअसल उमा B.A पास है। और लड़के वालों को ज्यादा पढ़ी लिखी लड़की नहीं चाहिए। इसीलिए रामस्वरूप ने लड़के वालों से झूठ बोला हैं कि लड़की सिर्फ दसरीं पास है।

प्रेमा की बातें सुनकर रामस्वरूप थोड़ा चिंतित होते हैं क्योंकि वो जानते हैं कि आजकल शादी ब्याह के वक्त लड़की के साज श्रृंगार का क्या महत्व है। लेकिन वह अपनी पत्नी से कहते हैं कि कोई बात नहीं, वह वैसे ही सुंदर हैं।

लड़के वालों के नाश्ते के लिए मिठाई, नमकीन, फल, चाय, टोस्ट का प्रबंध किया गया है। लेकिन टोस्ट में लगाने के लिए मक्खन खन्न हो चुका है। इसीलिए रामस्वरूप अपने नौकर को मक्खन लेने के लिए बाजार भेजते हैं। बाजार जाते वक्त नौकर को घर की तरफ आते मेहमान दिख जाते हैं जिनकी खबर वह अपने मालिक को देता हैं।



ठीक उसी समय बाबू गोपाल प्रसाद अपने लड़के शंकर के साथ रामस्वरूप के घर में दाखिल होते हैं। लेकिन गोपाल प्रसाद की आंखों में चतुराई साफ झलकती हैं। और आवाज से ही वो, बेहद अनुभवी और फितरती इंसान दिखाई देते हैं। उनके लड़के शंकर की आवाज एकदम पतली और खिसियाहट भरी हैं जबकि उसकी कमर झुकी हुई हैं।

रामस्वरूप ने मेहमानों का स्वागत किया और औपचारिक बातें शुरू कर दी। बातों-बातों में दोनों नये जमाने और अपने जमाने (समय) की तुलना करने लगते हैं।

थोड़ी देर बाद रामस्वरूप चाय नाश्ता लेने अंदर जाते हैं। रामस्वरूप के अंदर जाते ही गोपाल बाबू रामस्वरूप की हैसियत आंकने की कोशिश करने लगते हैं। वह अपने बेटे को भी डांटते हैं जो इधर-उधर झाँक रहा था। वह उससे सीधी कमर कर बैठने को कहते हैं।

इतने में रामस्वरूप दोनों के लिए चाय नाश्ता ले कर आते हैं। थोड़ी देर बात करने के बाद बाबू गोपाल प्रसाद असल मुद्दे यानि शादी विवाह के बारे में बात करना शुरू कर देते हैं।

जन्मपत्रिका मिलाने की बात पर गोपाल प्रसाद कहते हैं कि उन्होंने दोनों जन्मपत्रिकाओं को भगवान के चरणों में रख दिया। बातों-बातों में वो अपनी संकीर्ण मानसिकता का परिचय देते हुए कहते हैं कि लोग उनसे कहते हैं कि उन्होंने लड़कों को उच्च शिक्षा दी है। इसीलिए उन्हें बहुएं भी ग्रेजुएट लानी चाहिए।

लेकिन मैं उनको कहता हूँ कि लड़कों का पढ़ - लिख कर काबिल होना तो ठीक है लेकिन लड़कियां अगर ज्यादा पढ़ लिख जाए और अंग्रेजी अखबार पढ़कर पॉलिटिक्स करने लग जाए तो, घर गृहस्थी कैसे चलेगी। वो आगे कहते हैं कि मुझे बहुओं से नौकरी नहीं करानी है।

फिर वो रामस्वरूप से लड़की (उमा) की सुंदरता व अन्य चीजों के बारे में पूछते हैं। रामस्वरूप कहते हैं कि आप खुद ही देख लीजिए।

इसके बाद रामस्वरूप उमा को बुलाते हैं। उमा एक प्लेट में पान लेकर आती है। उमा की आँख पर लगे चश्मे को देखकर गोपाल प्रसाद और शंकर दोनों एक साथ चश्मे के बारे में पूछते हैं। लेकिन रामस्वरूप झूठा कारण बता कर उन्हें संतुष्ट कर देते हैं।

गोपाल प्रसाद उमा से गाने बजाने के संबंध में पूछते हैं तो उमा मीरा का एक सुंदर गीत गाती है। उसके बाद वो पेंटिंग, सिलाई, कढ़ाई आदि के बारे में भी पूछते हैं। उमा को यह सब अच्छा नहीं लगता है। इसलिए वह कोई उत्तर नहीं देती है। यह बात गोपाल प्रसाद को खटकती है। वो उमा से प्रश्नों के जवाब देने को कहते हैं। रामस्वरूप भी उमा से जवाब देने के लिए कहते हैं।

तब उमा अपनी धीमी मगर मजबूत आवाज में कहती है कि क्या दुकान में मेज-कुर्सी बेचते वक्त उनकी पसंद-नापसंद पूछी जाती है। दुकानदार ग्राहक को सीधे कुर्सी मेज दिखा देता है और मोल भाव तय करने लग जाता है। ठीक उसी तरह ये महाशय भी, किसी खरीददार के जैसे मुझे एक सामान की तरह देख-परख रहे हैं। रामस्वरूप उसे टोकते हैं और गोपाल प्रसाद नाराज होने लगते हैं।

लेकिन उमा अपनी बात जारी रखते हुए कहती हैं कि पिताजी आप मुझे कहने दीजिए। ये जो सज्जन मुझे खरीदने आये हैं जरा उनसे पूछिए क्या लड़कियां के दिल नहीं होते हैं, क्या उन्हें चोट नहीं लगती है। गोपाल प्रसाद गुस्से में आ जाते हैं और कहते हैं कि क्या उन्हें यहाँ बैइज्जती करने के लिए बुलाया हैं।



उमा जवाब देते हुए कहती हैं कि आप इतनी देर से मेरे बारे में इतनी जांच पड़ताल कर रहे हैं। क्या यह हमारी बेइज्जती नहीं हैं। साथ में ही वह लड़कियों की तुलना बेबस भेड़ बकरियों से करते हुए कहती है कि उन्हें शादी से पहले ऐसे जांचा परखा जाता हैं जैसे कोई कसाई भेड़-बकरियों खरीदने से पहले उन्हें अच्छी तरह से जाँचता परखता हैं।

वह उनके लड़के शंकर के बारे में बताती हैं कि किस तरह पिछली फरवरी में उसे लड़कियों के हॉस्टल से बेइज्जत कर भगाया गया था। तब गोपाल प्रसाद आश्वर्य से पूछते हैं क्या तुम कॉलेज में पढ़ी हो। उमा जवाब देते हुए कहती हैं कि उसने बी.ए पास किया है। ऐसा कर उसने कोई चोरी नहीं की। उसने पढ़ाई करते हुए अपनी मर्यादा का पूरा ध्यान रखा। उनके पुत्र की तरह कोई आवारागर्दी नहीं की।

अब शंकर व उसके पिता दोनों गुस्से में खड़े हो जाते हैं और रामस्वरूप को भला बुरा कहते हुए दरवाजे की ओर बढ़ते हैं। उमा पीछे से कहती है। जाइए.....जाइए, मगर घर जाकर यह पता अवश्य कर लेना कि आपके पुत्र की रीढ़ की हड्डी है भी कि नहीं। गोपाल प्रसाद और शंकर वहां से चले जाते हैं। उनको जाता देख रामस्वरूप निराश हो जाते हैं। पिता को निराश-हताश देख उमा अपने कमरे में जाकर रोने लग जाती हैं। तभी नौकर मक्खन लेकर आता है। और कहानी खत्म हो जाती हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद बात-बात पर
"एक हमारा ज़माना था..." कहकर अपने समय की तुलना वर्तमान समयसे करते हैं। इस प्रकार की तुलना करना कहाँ तक तर्कसंगत है?

उत्तर- इस तरह की तुलना करना बिल्कुल तर्कसंगत नहीं होता। क्योंकि समय के साथ समाज में, जलवायु में, खान-पान में सब में परिवर्तन होता रहता है। जैसे- उस वक्त की वस्तुओं की गुणवत्ता हमें आज प्राप्त नहीं होती। उस समय का स्वच्छ वातावरण या जलवायु हमें आज प्राप्त नहीं होता, तो हम कैसे कल की तुलना आज से कर सकते हैं? समय परिवर्तनशील है वह सदैव एक सा नहीं रहता समय के साथ हुए बदलाव को स्वीकार करने में ही भलाई है न कि उसकी तुलना बीते हुए कल से करने में।

प्रश्न 2 रामस्वरूप का अपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलवाना और विवाह के लिए छिपाना, यह विरोधाभास उनकी किस विवशता को उजागर करता है?

उत्तर- आधुनिक समाज में सभ्य नागरिक होने के बावजूद उन्हें अपनी बेटी के भविष्य की खातिर रुद्धिवादी लोगों के दबाव में झुकाना पड़ रहा था। उपर्युक्त बात उनकी इसी विवशता को उजागर करता है।

प्रश्न 3 अपनी बेटी का रिश्ता तय करने के लिए रामस्वरूप उमा से जिस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा कर रहे हैं, उचित क्यों नहीं है?

उत्तर- अपनी बेटी का रिश्ता तय करने के लिए रामस्वरूप उमा से जिस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा कर रहे हैं, वह सरासर गलत है। एक तो वे अपनी पढ़ी-लिखी लड़की को कम पढ़ा-लिखा साबित कर रहे हैं और उसे सुन्दरता को और बढ़ाने के लिए नकली प्रसाधन सामग्री का उपयोग करने के लिए कहते हैं जो अनुचित है। साथ ही वे यह भी चाहते हैं कि उमा वैसा ही आचरण करे जैसा लड़के वाले चाहते हैं। परन्तु वे यह क्यों भूल रहे हैं कि जिस प्रकार लड़के की अपेक्षाएँ होती हैं ठीक उसी प्रकार लड़कियों की



पसंद-नापसंद का भी ख्याल रखना चाहिए। क्योंकि आज समाज में लड़का तथा लड़की को समान दर्जा प्राप्त है।

प्रश्न 4 गोपाल प्रसाद विवाह को 'बिजनेस' मानते हैं और रामस्वरूप अपनी बेटी की उच्च शिक्षा छिपाते हैं क्या आप मानते हैं कि दोनों ही समान रूप से अपराधी हैं? अपने विचार लिखिए।

उत्तर- मेरे विचार से दोनों ही समान रूप से अपराधी हैं- गोपाल प्रसाद विवाह जैसे पवित्र बंधन में भी बिजनेस खोज रहे हैं, वे इस तरह के आचरण से इस सम्बन्ध की मधुरता, तथा सम्बन्धों की गरिमा को भी कम कर रहे हैं।

रामस्वरूप जहाँ आधुनिक सोच वाले व्यक्ति होने के बावजूद कायरता का परिचय दे रहे हैं। वे चाहते तो अपनी बेटी के साथ मजबूती से खड़े होते और एक स्वाभिमानी वर की तलाश करते न की मजबूरी में आकर परिस्थिति से समझौता करते।

प्रश्न 5 "...आपके लाड़ले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं..." उमा इस कथन के माध्यम से शंकर की किन कमियों की ओरसंकेत करना चाहती है?

उत्तर- उमा गोपाल प्रसाद जी के विचारों से पहले से ही खिल्ली थी। परन्तु उनके द्वारा अनगिनत सवालों ने उसे क्रोधित कर दिया था। आखिर उसे अपनी चुप्पी को तोड़कर गोपाल प्रसाद को उनके पुत्र के विषय में अवगत करना पड़ा।

i. शंकर एक चरित्रहीन व्यक्ति था। जो हमेशा लड़कियों का पीछा करते हुए होस्टल तक पहुँच जाता था। इस कारण उसे शर्मिंदा भी होना पड़ा था।

ii. दूसरी तरफ़ उसकी पीठ की तरफ़ इशारा कर वह गोपाल जी को उनके लड़के के स्वास्थ्य की ओर संकेत करती है। जिसके कारण वह बीमार रहता है तथा सीधी तरह बैठ नहीं पाता।

iii. शंकर अपने पिता पर पूरी तरह आश्रित है। उसकी रीढ़ की हड्डी नहीं है अर्थात् उसकी अपनी कोई मर्ज़ी नहीं है।

प्रश्न 6 शंकर जैसे लड़के या उमा जैसी लड़की- समाज को कैसे व्यक्तित्व की जरूरत है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- समाज में आज उमा जैसे व्यक्तित्व, स्पष्टवादिनी तथा उच्च चरित्र वाली लड़की की ही आवश्यकता है। ऐसी लड़कियाँ ही गोपाल प्रसाद जैसे दोहरी मानसिकता रखने वाले, लालची और ढोंगी लोगों को सबक सिखा सकती हैं। ऐसी लड़कियों से ही समाज और देश प्रगति कर पाएगा जो आत्मविश्वास से भरी तथा निःंदर हो। इसके विपरीत शंकर जैसे लड़के समाज के लिए निरुपयोगी हैं। शंकर जैसे व्यक्ति समाज को कोई दिशा नहीं प्रदान कर सकते हैं।

प्रश्न 7 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- यह शीर्षक एकांकी की भावना को व्यक्त करने के लिए बिल्कुल सही है। इस शीर्षक में समाज की सड़ी-गली मानसिकता को व्यक्त किया गया है तथा उस पर प्रहार किया है। क्योंकि रीढ़ शरीर का मुख्य हिस्सा होता है, वही उसको सीधा रखने में मदद करता है। उसमें लचीलापन होता है, जो शरीर को मुड़ने, बैठने, झुकने कूदने में मदद करता है। इस लचीलेपन के कारण ही शरीर हर कार्य करने में सक्षम है। व्यायाम के माध्यम से हम रीढ़ की हड्डी के लचीलेपन को बनाए रखते हैं। उसी तरह समय के अनुसार पुरानी रीतियों और परंपराओं का बदलना आवश्यक है। यह समय की माँग होती है। जब यह रीतियाँ या परंपराएँ मनुष्य के हित के स्थान पर उसका अहित करने लगे, तो वे विकार बन जाती हैं। यह एंकाकी समाज में व्याप्त इन विकारों पर कटाक्ष करता है। हमारा समाज इन मानसिकताओं का



गुलाम बनकर बिना रीढ़ वाला शरीर हो जाता है। दूसरी तरफ यहाँ शंकर जैसे लड़कों से भी यही तात्पर्य है बिना रीढ़ का। इस प्रकार के लड़कों का अपना कोई व्यक्तित्व नहीं होता और न ही इनका कोई चरित्र होता है। ये सारी उम्र दूसरों के इशारों पर ही चलते हैं। ये लोग समाज के ऊपर बोझ के सिवाए कुछ नहीं होते। इसलिए उमा ने इसे बिना रीढ़ की हड्डी वाला कहा है।

प्रश्न 8 कथा वस्तु के आधार पर आप किसे एकांकी का मुख्य पात्र मानते हैं और क्यों?

उत्तर- इस कहानी में कई पात्र हैं परन्तु सबसे सशक्त पात्र बनकर जो उभरता है वह उमा ही है। उमा की उपस्थिति भले थोड़े समय के लिए थी परन्तु उसके विचारों से प्रभावित हुए बिना हम नहीं रह पाते हैं। वह हमें बहुत कुछ सोचने के लिए मजबूर करती है। उसकी उपस्थिति नारी-समाज को एक नई सोच और दिशा प्रदान करती है।

प्रश्न 9 एकांकी के आधार पर रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- रामस्वरूप जी और गोपाल प्रसाद जी की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

रामस्वरूप: रामस्वरूप एक स्वतंत्रता प्रिय व्यक्ति हैं। वे औरतों की शिक्षा के पक्षपाती हैं। इसलिए अपनी पुत्री को भी पुत्र के समान ही उच्च शिक्षा दिलवाते हैं। वे एक स्नेही पिता हैं। रामस्वरूप जी अपनी पुत्री से बड़ा स्नेह करते हैं इसलिए उसके भविष्य की चिंता उन्हें सताती रहती है और इसी कारणवश वह अपनी पुत्री की शिक्षा भी लड़के वालों के आगे छिपा जाते हैं। रामस्वरूप जी समझदार व्यक्ति हैं। वे कई जगह गोपाल प्रसाद जी की गलत बातों का जवाब भी समझदारी पूर्वक देते हैं।

गोपाल प्रसाद: गोपाल प्रसाद एक रोबदार व्यक्तित्व के स्वामी हैं। वकालत में होने के कारण

अभिमान उनके व्यक्तित्व से टपकता है। गोपाल जी एक हँसमुख प्रवृत्ति के इंसान हैं। बात-बात पर मजाक करना उनका स्वभाव है। गोपाल प्रसाद जी एक चतुर व्यक्ति हैं इसलिए अपने बीमार व चरित्रहीन बेटे के लिए एक कम पढ़ी-लिखी लड़की चाहते हैं ताकि वो कभी उसके सम्मुख आवाज़ न उठा सके।

प्रश्न 10 इस एकांकी का क्या उद्देश्य है? लिखिए।

उत्तर- इस एकांकी का उद्देश्य समाज में औरतों की दशा को सुधारना व उनको उनके अधिकारों के प्रति जागरूक कराना है। यह एकांकी उन लोगों की तरफ अँगुली उठाती है जो समाज में स्त्रियों को जानवरों या सामान से ज्यादा कुछ नहीं समझते। जिनके लिए वह घर में सजाने से ज्यादा कुछ नहीं है। यह एकांकी औरत को उसके व्यक्तित्व की रक्षा करने का संदेश देती है और कई सीमा तक इस उद्देश्य में सफल भी होती है।

प्रश्न 11 समाज में महिलाओं को उचित गरिमा दिलाने हेतु आप कौन-कौन से प्रयास कर सकते हैं?

उत्तर- समाज में महिलाओं को उचित गरिमा दिलाने हेतु हम निम्नलिखित प्रयास कर सकते हैं-

- उनकी शिक्षा के हेतु कार्य कर सकते हैं ताकि समाज में वह सर उठा कर अपना जीवन व्यतीत कर सकें।
- अपने समय की महान एवं विदुषी स्त्रियों का उदाहरण समाज में प्रस्तुत करना चाहिए।
- महिलाओं को उचित सम्मान देना चाहिए।
- महिलाओं को अपनी इच्छा अनुसार हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का प्रोत्साहन देना चाहिए।
- समाज में महिला को समान भागीदारी दिलवाने के लिए प्रयत्न कर सकते हैं।

लड़कियों का विवाह बिना दहेज लिए व दिए हो इस विषय पर कार्य कर सकते हैं।



क्षितिज भाग 1



क्षितिज भाग - 1

दो बैलों की कथा

-प्रेमचंद

सारांश

लेखक के अनुसार गधा एक सीधा और निरापद जानवर है। वह सुख-दुख, हानि-लाभ, किसी भी दशा में कभी नहीं बदलता। उसमें ऋषि-मुनियों के गुण होते हैं, फिर भी आदमी उसे बेवकूफ़ कहता है। बैल गधे के छोटे भाई हैं जो कई रीतियों से अपना असंतोष प्रकट करते हैं।

झूरी काछी के पास हीरा और मोती नाम के दो स्वस्थ और सुंदर बैल थे। वह अपने बैलों से बहुत प्रेम करता था। हीरा और मोती के बीच भी घनिष्ठ संबंध था। एक बार झूरी ने दोनों को अपने ससुराल के खेतों में काम करने के लिए भेज दिया। वहाँ उनसे खूब काम करवाया जाता था लेकिन खाने को रुखा-सूखा ही दिया जाता था। अतः दोनों रस्सी तुड़ाकर झूरी के पास भाग आए। झूरी उन्हें देखकर बहुत खुश हुआ और अब उन्हें खाने-पीने की कमी नहीं रही। दोनों बड़े खुश थे। मगर झूरी की स्त्री को उनका भागना पसंद नहीं आया। उसने उन्हें खरी-खोटी और मजूर द्वारा खाली सूखा भूसा खिलाया गया। दूसरे दिन झूरी का साला फिर उन्हें लेने आ गया। फिर उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ी पर खाने को सूखा भूसा ही मिला।

कई बार काम करते समय मोती ने गाड़ी खाई में गिरानी चाही तो हीरा ने उसे समझाया। मोती बड़ा गुस्सैल था, हीरा धीरज से काम लेता था। हीरा की नाक पर जब खूब डंडे बरसाए गए तो मोती गुस्से से हल लेकर भागा, पर गले में बड़ी रस्सियाँ होने के कारण पकड़ा गया। कभी-कभी उन्हें खूब मारा-पीटा भी जाता था। इस तरह दोनों की हलत बहुत खराब थी।

वहाँ एक छोटी-सी बालिका रहती थी। उसकी माँ मर चुकी थी। उसकी सौतेली माँ उसे मारती रहती थी, इसलिए उन बैलों से उसे एक प्रकार की आत्मीयता हो गई थी। वह रोज़ दोनों को चोरी-छिपे दो रोटियाँ डाल जाती थी। इस तरह दोनों की दशा बहुत खराब थी। एक दिन उस बालिका ने उनकी रस्सियाँ खोल दी। दोनों भाग खड़े हुए। झूरी का साला और दूसरे लोग उन्हें पकड़ने दौड़े पर पकड़ न सके। भागते-भागते दोनों नई जगह पहुँच गए। झूरी के घर जाने का रास्ता वे भूल गए। फिर भी बहुत खुश थे। दोनों ने खेतों में मटर खाई और आजादी का अनुभव करने लगे। फिर एक साँड़ से उनका मुकाबला हुआ। दोनों ने मिलकर उसे मार भगाया, लेकिन खेत में चरते समय मालिक आ गया। मोती को फँसा देखकर हीरा भी खुद आ फँसा। दोनों काँजीहौस में बंद कर दिए गए। वहाँ और भी जानवर बंद थे। सबकी हालत बहुत खराब थी। जब हीरा-मोती को रात को भी भोजन न मिला तो दिल में विद्रोह की ज्वाला भड़क उठी। फिर एक दिन दीवार गिराकर दोनों ने दूसरे जानवरों को भगा दिया। मोती भाग सकता था पर हीरा को बँधा देखकर वह भी न भाग सका।

काँजीहौस के मालिक को पता लगने पर उसने मोती की खूब मरम्मत की और उसे मोटी रस्सी से बँध दिया। एक सप्ताह बाद



कंजीहौस के मालिक ने जानवरों को कसाई के हाथों बेच दिया। एक दढ़ियल आदमी हीरा-मोती को ले जाने लगा। वे समझ गए कि अब उनका अंत समीप है। चलते-चलते अचानक उन्हें लगा कि वे परिचित राह पर आ गए हैं। उनका घर नजदीक आ गया था। दोनों उन्मत्त होकर उछलने लगे और दौड़ते हुए झूरी के द्वार पर आकर खड़े हो गए। झूरी ने देखा तो खुशी से फूल उठा। अचानक दढ़ियल ने आकर बैलों की रस्सियाँ पकड़ ली। झूरी ने कहा कि वे उसके बैल हैं, पर दढ़ियल ज़ोर-जबरदस्ती करने लगा। तभी मोती ने सींग चलाया और दढ़ियल को दूर तक खदेड़ दिया। थोड़ी देर बाद ही दोनों खुशी से खली-भूसी-चूनी खाते दिखाई पड़े। घर की मालकिन ने भी आकर दोनों को चूम लिया।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 कंजीहौस में कैद पशुओं की हाजिरी क्यों ली जाती होगी?

उत्तर- कंजीहौस में कैद पशुओं की हाजिरी ली जाती है। इससे पशुओं की संख्या की जानकारी होती है ताकि कोई जानवर अगर कैद से भाग जाए तो तुरन्त पता लगाया जा सके।

प्रश्न 2 छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?

उत्तर- छोटी बच्ची की माँ मर चुकी थी। वह माँ के बिछुड़ने का दर्द जानती थी। इसलिए जब उसने हीरा-मोती की व्यथा देखी तो उसके मन में उनके प्रति प्रेम उमड़ आया। उसे लगा कि वे भी उसी की तरह अभागे हैं और अपने मालिक से दूर हैं।

प्रश्न 3 कहानी में बैलों के माध्यम से कौन-कौन से नीति-विषयक मूल्य उभरकर आए हैं?

उत्तर- इस कहानी के माध्यम से निम्नलिखित नीति-विषयक मूल्य उभरकर सामने आए हैं:

- विपत्ति के समय हमेशा मित्र की सहायता करनी चाहिए।
- आजादी के लिए हमेशा सजग एवं संघर्षशील रहना चाहिए।
- अपने समुदाय के लिए अपने हितों का त्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

iv. आजादी बहुत बड़ा मूल्य है। इसे पाने के लिए मनुष्य को बड़े-से-बड़ा कष्ट उठाने को तैयार रहना चाहिए।

प्रश्न 4 प्रस्तुत कहानी में प्रेमचंद ने गधे की किन स्वभावगत विशेषताओं के आधार पर उसके प्रति रुढ़ अर्थ 'मूर्ख' का प्रयोग न कर किसी नए अर्थ की ओर संकेत किया है?

उत्तर- गधे को स्वभाव के कारण मूर्खता का पर्याय समझा जाता है। उसके स्वभाव में सरलता और सहनशीलता भी देखने मिलती है। इस कहानी में लेखक ने गधे की सरलता और सहनशीलता की ओर हमारा ध्यान खींचा है। प्रेमचंद ने स्वयं कहा है- “सदगुणों का इतना अनादर कहीं नहीं देखा। कदाचित् सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है।” कहानी में भी उन्होंने सीधेपन की दुर्दशा दिखलाई है, मूर्खता की नहीं।

प्रश्न 5 किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा और मोती में गहरी दोस्ती थी?

उत्तर- हीरा और मोती दोनों बैलों में गहरी दोस्ती थी। कहानी के कुछ प्रसंगों के माध्यम से यह बात स्पष्ट होती है:

- दोनों एक दूसरे को चाटकर और सूंघकर अपना प्रेम प्रकट करते थे।



- ii. जब ये दोनों बैल हल या गाड़ी में जोत दिए जाते तो दोनों ज़्यादा से ज़्यादा बोझ स्वयं झोलकर दूसरे को कम बोझ देने की चेष्टा करते।
- iii. नाद में खली-भूसा पड़ जाने के बाद दोनों साथ ही नाँद में मुँह डालते और साथ ही बैठते थे। एक के मुँह हटा लेने पर दूसरा भी हटा लेता था।
- iv. जब कुछ लोगों ने खेत से पकड़कर ले जाने के लिए दोनों को घेर लिया तब हीरा निकल गया परन्तु मोती के पकड़े जाने पर वह भी बंधक बनने के लिए स्वयं ही लौट आया।
- v. कांजीहौस की दीवार के टूटने पर जब हीरा ने भागने से मना कर दिया तो अवसर होने के बावजूद भी मोती उसे छोड़कर नहीं भागा।

प्रश्न 6 "लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो।" हीरा के इस कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचंद के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर- हीरा के इस कथन से यह ज्ञात होता है कि समाज में स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार किया जाता था। उन्हें शारीरिक यातनाएँ दी जाती थीं। इसलिए समाज में ये नियम बनाए जाते थे कि उन्हें पुरुष समाज शारीरिक दंड न दे। हीरा और मोती भले इंसानों के प्रतीक हैं। इसलिए उनके कथन सभ्य समाज पर लागू होते हैं। असभ्य समाज में स्त्रियों की प्रताङ्गना होती रहती थी।

प्रश्न 7 किसान जीवन वाले समाज में पशु और मनुष्य के आपसी संबंधों को कहानी में किस तरह व्यक्त किया गया है?

उत्तर- प्रेमचंद ने किसान जीवन में मनुष्य तथा पशु के भावनात्मक सम्बन्धों को हीरा और मोती दो बैलों के

माध्यम से व्यक्त किया है। हीरा और मोती दोनों झूरी नामक एक किसान के बैल हैं जो अपने बैलों से अत्यंत प्रेम करता है और इसी प्रेम से वशीभूत होकर हीरा और मोती अपने मालिक झूरी को छोड़कर कहीं और नहीं रहना चाहते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि पशु भी स्नेह का भूखा होता है। प्रेम पाने से वे भी प्रेम व्यक्त करते हैं और क्रोध तथा अपमान पाकर वे भी असंतोष व्यक्त करते हैं।

प्रश्न 8 इतना तो हो ही गया कि नौ दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे ' – मोती के इस कथन के आलोक में उसकी विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- मोती के उक्त कथन के आलोक में उसकी निम्नलिखित विशेषताएँ प्रकट होती हैं:

- i. मोती का स्वभाव उग्र होते हुए भी वह दयालु था।
- ii. मोती सच्चा मित्र है। वह मुसीबत के वक्त अपने मित्र हीरा का साथ नहीं छोड़ता।
- iii. मोती परोपकारी है, तभी तो वह कांजीहौस में बंद जानवरों की जान बचाता है।
- iv. मोती साहसी है। वह हीरा की मदद से साँड़ को पराजित करता है।
- v. मोती अत्याचार का विरोधी है इसलिए कांजीहौस की दीवार तोड़कर विरोध प्रकट किया था।

प्रश्न 9 आशय स्पष्ट कीजिए-

- i. अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है।
- ii. उस एक रोटी से उनकी भूख तो क्या शांत होती; पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया।



उत्तर-

- i. यहाँ लेखक का आशय पशुओं के आपसी स्नेह से है। पशु एक दूसरे के विचार, भाव तथा शब्द इतनी आसानी से समझ जाते हैं जो मनुष्यों में देखने को नहीं मिलता। मनुष्य एक बुद्धिजीवी प्राणी है तथा सभी जीवों में श्रेष्ठ है परन्तु फिर भी प्रेम तथा भावनात्मक सम्बन्धों के प्रति जागरूकता पशुओं में अधिक देखने को मिलती है।
- ii. यहाँ मनुष्य तथा पशुओं के आत्मीय सम्बन्धों को व्यक्त किया गया है। दिन भर भूखा रहने के बाद भी उस छोटी सी लड़की द्वारा दिए गए रोटी से उनकी भूख तो नहीं मिलती थी परन्तु दोनों के हृदय को संतुष्टि मिलती थी। क्योंकि लड़की से उनको आत्मीयता हो गई थी।

प्रश्न 10 गया ने हीरा-मोती को दोनों बार सूखा भूसा खाने के लिए दिया क्योंकि-

- (क) गया पराये बैलों पर अधिक खर्च नहीं करना चाहता था।
- (ख) गरीबी के कारण खली आदि खरीदना उसके बस की बात न थी।
- (ग) वह हीरा-मोती के व्यवहार से बहुत दुखी था।
- (घ) उसे खली आदि सामग्री की जानकारी नहीं थी।

उत्तर- (ग) वह हीरा-मोती के व्यवहार से बहुत दुखी था।

रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

प्रश्न 1 हीरा और मोती ने शोषण के खिलाफ़ आवाज़ उठाई लेकिन उसके लिए प्रताङ्कना भी सही। हीरा-मोती की इस प्रतिक्रिया पर तर्क सहित अपने विचार प्रकट करें।

उत्तर- हीरा और मोती शोषण के विरुद्ध हैं वे हर शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाते रहे। उन्होंने झूरी के साले गया

का विरोध किया तो सूखी रोटियाँ और डंडे खाए फिर काँजीहौस में अन्याय का विरोध किया और बंधन में पड़े। मेरे विचार से उन्होंने शोषण का विरोध करके ठीक किया क्योंकि शोषित होकर जीने का क्या लाभ। शोषित को भय और यातना के सिवा कुछ प्राप्त नहीं होता।

प्रश्न 2 क्या आपको लगता है कि यह कहानी आजादी की कहानी की ओर भी संकेत करती है?

उत्तर- यह कहानी अप्रत्यक्ष रूप से आजादी के आंदोलन से जुड़ी है यह कहानी दो बैलों से सम्बंधित है। दोनों बैल संवेदनशील और क्रांतिकारी भारतीय हैं। दोनों मिलकर आजादी पाने के लिए संघर्षरत रहते हैं। ये अपने देश (झूरी के घर) से बहुत प्रेम करते हैं। उन्हें दूसरे देश में (घर में) रहना पसंद नहीं। स्वदेश जाने के लिए वे हर बाधा का डटकर सामना करते हैं। भूखे – प्यासे रहना पड़ता है, कैद में रहना पड़ता है। ये हमारे क्रांतिकारियों की लड़ाई याद दिला देते हैं।

भाषा- अध्ययन प्रश्न

प्रश्न 1 बस इतना ही काफ़ि है।

फिर मैं भी जोर लगाता हूँ।

'ही', 'भी' वाक्य में किसी बात पर ज़ोर देने का काम कर रहे हैं। ऐसे शब्दों को निपात कहते हैं। कहानी में से पाँच ऐसे वाक्य छाँटिए जिनमें निपात का प्रयोग हुआ हो।

उत्तर-

'ही' निपात-

एक ही विजय ने उसे संसार की सभ्य जातियों में गण्य बना दिया।

अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति था, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करनेवाला मनुष्य वंचित है।



नाँद में खली-भूसा पड़ जाने के बाद दोनों साथ ही उठते, साथ नाँद में मुँह डालते और साथ ही बैठते थे।

एक मुँह हटा लेता, तो दूसरा भी हटा लेता।

अभी चार ही ग्रास खाये थे दो आदमी लाठियाँ लिये दौड़ पडे, और दोनों मित्रों को घेर लिया।

' भी ' निपात-

कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर हैं

उसके चहरे पर एक स्थायी विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है। सुख-दुःख, हानि-लाभ, किसी भी दशा में बदलते नहीं देखा।

चार बातें सुनकर गम खा जाते हैं फिर भी बदनाम हैं।

गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्वपूर्ण थी।

झूरी इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था। उसकी टिटकार पर दोनों उड़ने लगते थे। यहाँ मार पड़ी।

प्रश्न 2 रचना के आधार पर वाक्य के भेद बताइए तथा उपवाक्य छाँटकर उसके भी भेद लिखिए-

- दीवार का गिरना था कि अधमरे से पड़े हुए सभी जानवर चेत उठे।
- सहसा एक दफ्तियल आदमी, जिसकी आँखे लाल थीं और मुद्रा अत्यन्त कठोर, आया।
- हीरा ने कहा -गया के घर से नाहक भागे।
- मैं बेचूँगा, तो बिकेंगे।
- अगर वह मुझे पकड़ता, तो मैं बे-मारे न छोड़ता।

उत्तर-

- यहाँ संयुक्त वाक्य है तथा संज्ञा उपवाक्य है।
- यहाँ मिश्र वाक्य है, विशेषण उपवाक्य है।
- यहाँ मिश्र वाक्य है, संज्ञा उपवाक्य है।
- यहाँ संयुक्त वाक्य है, क्रिया विशेषण उपवाक्य है।
- यहाँ संयुक्त वाक्य है, क्रिया विशेषण उपवाक्य है।

प्रश्न 3 कहानी में जगह – जगह पर मुहावरों का प्रयोग हुआ है कोई पाँच मुहावरे छाँटिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर-

मुहावरा	वाक्य-प्रयोग
जी तोड़ काम करना	भारतीय किसान जी तोड़ काम करते हैं।
टाल जाना	सेठजी नौकर को मटद करने का जूठा आश्वासन देते रहें पर जरूरत पड़ने पर टाल गए।
जान से हाथ धोना	युद्ध में हजारों जवान जान से हाथ धो बैठते हैं।
नौ दो ग्यारह होना	पुलिस के आने की भनक लगते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गए।
ईंट का जवाब पत्थर से देना	भारतीय खिलाड़ियों ने प्रतिद्वंद्वी टीम को ईंट का जवाब पत्थर से दिया।





ल्हासा की ओर

-राहुल सांकृत्यायन

सारांश

इस पाठ में राहुल सांकृत्यायन जी ने अपनी पहली तिब्बत यात्रा का वर्णन किया है जो उन्होंने सन् 1929-30 में नेपाल के रास्ते की थी। चूंकि उस समय भारतीयों को तिब्बत यात्रा की अनुमति नहीं थी, इसलिए उन्होंने यह यात्रा एक भिखमन्गों के छड़ा वेश में की थी।

लेखक की यात्रा बहुत वर्ष पहले जब फटी-कलिङ्गोड़ का रास्ता नहीं बना था, तो नेपाल से तिब्बत जाने का एक ही रास्ता था। इस रास्ते पर नेपाल के लोगों के साथ-साथ भारत के लोग भी जाते थे। यह रास्ता व्यापारिक और सैनिक रास्ता भी था, इसीलिए इसे लेखक ने मुख्य रास्ता बताया है। तिब्बत में जाति-पाति, छुआछूत का सवाल नहीं उठता और वहाँ औरतें परदा नहीं डालती हैं। चोरी की आशंका के कारण भिखमन्गों को कोई घर में घुसने नहीं देता। नहीं तो अपरिचित होने पर भी आप घर के अंदर जा सकते हैं और जरूरत अनुसार अपनी झोली से चाय दे सकते हैं, घर की बहु अथवा सास उसे आपके लिए पका देगी।

परित्यक्त चीनी किले से जब वह चले तो एक व्यक्ति को दो चिटें राहदारी देकर थोड़ला के पहले के आखिरी गाँव में पहुँच गए। यहाँ सुमति (मंगोल भिक्ष, राहुल का दोस्त) पहचान तथा भिखारी होने के कारण रहने को अच्छी जगह मिली। पांच साल बाद वे लोग इसी रास्ते से लौटे थे तब उन्हें रहने की जगह नहीं मिली थी और गरीब के झोपड़ी में ठहरना पड़ा था क्योंकि वे भिखारी नहीं बल्कि भद्र यात्री के वेश में थे।

अगले दिन राहुल जी एवं सुमति जी को एक विकट डाँड़ा थोड़ला पार करना था। डाँडे तिब्बत में सबसे खतरे की जगह थी। सोलह-सत्रह हजार फीट ऊंची होने के कारण दोनों ओर गाँव का नामोनिशान न था। डाकुओं के छिपने की जगह तथा सरकार की नरमी के कारण यहाँ अक्सर खून हो जाते थे। चूंकि वे लोग भिखारी के वेश में थे इसलिए हत्या की उन्हें परवाह नहीं थी परन्तु ऊंचाई का डर बना था। दूसरे दिन उन्होंने डाँडे की चढ़ाई घोड़े से की जिसमें उन्हें दक्षिण-पूर्व ओर बिना बर्फ और हरियाली के नंगे पहाड़ दिखे तथा उत्तर की ओर पहाड़ों पर कुछ बर्फ दिखी। उत्तरते समय लेखक का घोड़ा थोड़ा पीछे चलने लगा और वे बाएं की ओर डेढ़ मील आगे चल दिए। बाद में पूछ कर पता चला लङ्कोर का रास्ता दाहिने के तरफ तथा जिससे लेखक को देर हो गयी तथा सुमति नाराज हो गए परन्तु जल्द ही गुस्सा ठंडा हो गया और वे लङ्कोर में एक अच्छी जगह पर ठहरे।

वे अब तिट्टी के मैदान में थे जो की पहाड़ों से घिरा टापूथा सामने एक छोटी सी पहाड़ी दिखाई पड़ती थी जिसका नाम तिट्टी-समाधि-गिटी था। आसपास के गाँवों में सुमति के बहुत परिचित थे वे उनसे जाकर मिलना चाहते थे परन्तु लेखक ने उन्हें मना कर दिया और ल्हासा पहुँचकर पैसे देने का वादा किया। सुमति मान गए और उन्होंने आगे बढ़ना शुरू किया। उन्होंने सुबह चलना शुरू नहीं किया था इसीलिए उन्हें कड़ी धूप में आगे बढ़ना पड़ रहा था, वे पीठ पे अपनी चीज़े लादे और हाथ में डंडा लिए चल रहे थे। सुमति एक ओर यजमान से मिलना चाहते थे इसलिए उन्होंने बहाना कर टोकर विहार की ओर चलने को कहा।



तिब्बत की जमीन छोटे-बड़े जागीरदारों के हाथों में बँटी है। इन जागीरों का बड़ा हिस्सा मठों के हाथ में है। अपनी-अपनी जागीर में हर जागीरदार कुछ खेती खुद भी करता है जिसके लिए मजदुर उन्हें बेगार में मिल जाते हैं।

लेखक शेकर की खेती के मुखिया भिक्षु न्मसे से मिले। वहां एक अच्छा मंदिर था जिसमें बुद्ध वचन की हस्तलिखित 103 पोथियाँ रखी थीं जिसे लेखक पढ़ने में लग गए इसी दौरान सुमति ने आसपास अपने यजमानों से मिलकर आने के लिए लेखक से पूछा जिसे लेखक ने मान लिया, दोपहर तक सुमति वापस आ गए। चूँकि तिट्टी वहां से ज्यादा दूर नहीं था इसीलिए उन्होंने अपना सामान पीठ पर उठाया और न्मसे से विदा लेकर चल दिए।

सुमित का परिचय- वह लेखक को यात्रा के दौरान मिला जो एक मंगोल भिक्षु था। उनका नाम लोब्जटोख था। इसका अर्थ हैं सुमति प्रज. अतः सुविधा के लिए लेखक ने उसे सुमति नाम से पुकारा हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 थोड़ला के पहले के आखिरी गाँव पहुँचने पर भिखर्मंगे के वेश में होने के बावजूद लेखक को ठहरने के लिए उचित स्थान मिला जबकि दूसरी यात्रा के समय भद्र वेश भी उन्हें उचित स्थान नहीं दिला सका। क्यों?

उत्तर- लेखक के मित्र सुमति की यहाँ के लोगों से जान-पहचान होने के कारण भिखर्मंगों के वेश में रहने के बावजूद भी उन्हें ठहरने के लिए अच्छी जगह मिली। जबकि दूसरी यात्रा के समय जानकारी न होने के कारण भद्र यात्री के वेश में आने पर भी उन्हें रहने के लिए उचित स्थान नहीं मिला। उन्हें गाँव के एक सबसे गरीब झोंपड़े में ठहरने को स्थान मिला। ऐसा होना बहुत कुछ, लोगों की उस वक्त की मनोवृत्ति पर भी निर्भर करता है। क्योंकि शाम के वक्त छँपीकर बहुत कम होश-हवास को दुरुस्त रख पाते हैं।

प्रश्न 2 उस समय के तिब्बत में हथियार का क़ानून न रहने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय बना रहता था?

उत्तर- उस समय के तिब्बत में हथियार रखने से सम्बंधित कोई क़ानून नहीं था। इस कारण लोग खुलेआम पिस्तौल बन्दूक आदि रखते थे। साथ ही, वहाँ अनेक

निर्जन स्थान भी थे, जहाँ न पुलिस का प्रबंध था, न खुफिया बिभाग का। वहाँ डाकू किसी को भी आसानी से मार सकते थे। इसीलिए यात्रियों को हत्या और लूटमार का भय बना रहता था।

प्रश्न 3 लेखक लड़कोर के मार्ग में अपने साथियों से किस कारण पिछड़ गए थे?

उत्तर- लड़कोर के मार्ग में लेखक का घोड़ा थककर धीमा चलने लगा था इसलिए वे अपने साथियों से पिछड़कर रास्ता भटक गए।

प्रश्न 4 लेखक ने शेकर विहार में सुमति को उनके यजमानों के पास जाने से रोका, परन्तु दूसरी बार रोकने का प्रयास क्यों नहीं किया?

उत्तर- लेखक ने शेकर विहार में सुमति को यजमानों के पास जाने से रोका था क्योंकि अगर वह जाता तो उसे बहुत वक्त लग जाता और इससे लेखक को एक सप्ताह तक उसकी प्रतीक्षा करनी पड़ती। परन्तु दूसरी बार लेखक ने उसे रोकने का प्रयास इसलिए नहीं किया क्योंकि वे अकेले रहकर मंदिर में रखी हुई हस्तलिखित पोथियों का अध्ययन करना चाहते थे।

प्रश्न 5 यात्रा के दौरान लेखक को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?



उत्तर- यात्रा के दौरान लेखक को निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़ा-

- i. उस समय भारतीयों को तिब्बत यात्रा की अनुमति नहीं थी। इसलिए उन्हें भिखमंगे के रूप में यात्रा करना पड़ी।
- ii. चोरी के डर से भिखमंगों को वहाँ के लोग घर में घुसने नहीं देते थे। इसी कारण लेखक को भी ठहरने के स्थान को लेकर कठिनाई का सामना करना पड़ा।
- iii. डाँड़ा थोड़ा जैसी खतरनाक जगह को पार करना पड़ा।
- iv. लङ्कोर का रास्ता तय करते समय रास्ता भटक जाने के कारण वे अपने साथियों से बिछड़ गए।

प्रश्न 6 प्रस्तुत यात्रा-वृत्तान्त के आधार पर बताइए की उस समय का तिब्बती समाज कैसा था?

उत्तर- उस समय तिब्बती समाज में छुआछूत, जाती-पाँति आदि कुप्रथाएँ नहीं थीं। औरतें परदा नहीं करती कोई अपरिचित व्यक्ति भी किसी के घर में अन्दर तक जा सकता था परन्तु भिखमंगों को लोग चोरी के डर से घर में घुसने नहीं देते थे।

प्रश्न 7 'मैं अब पुस्तकों के भीतर था।' नीचे दिए गए विकल्पों में से कौन-सा इस वाक्य का अर्थ बतलाता है?

- (क) लेखक पुस्तकें पढ़ने में रम गया।
- (ख) लेखक पुस्तकों की शैल्फ के भीतर चला गया।
- (ग) लेखक के चारों ओर पुस्तकें हैं थीं।
- (घ) पुस्तक में लेखक का परिचय और चित्र छपा था।

उत्तर- (क) लेखक पुस्तकें पढ़ने में रम गया।

रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

प्रश्न 1 सुमति के यजमान और अन्य परिचित लोग लगभग हर गाँव में मिले। इस आधार पर आप सुमति के के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का चित्रण कर सकते हैं?

उत्तर- सुमति के यजमान और अन्य परिचित लोग हर गाँव में लेखक को मिले। इससे सुमति के व्यक्तित्व की अनेक विशेषताएँ प्रकट होती हैं: जैसे-

- i. सुमति मिलनसार एवं हँसमुख व्यक्ति हैं।
- ii. सुमति के परिचय और सम्मान का दायरा बहुत बड़ा है।
- iii. सुमति उनके यहाँ धर्मगुरु के रूप में सम्मानित होता है।
- iv. सुमति सबको बोध गया का गंडा प्रदान करता है। लोग गंडे को पाकर धन्य अनुभव करते हैं।
- v. सुमति स्वभाव से सरल, मिलनसार, स्नेही और मृदु रहा होगा। तभी लोग उसे उचित आदर देते होंगे।
- vi. सुमति बौद्ध धर्म में आस्था रखते थे तथा तिब्बत का अच्छा भौगोलिक ज्ञान रखते थे।

प्रश्न 2 'हालाँकि उस वक्त मेरा भेष ऐसा नहीं था कि उन्हें कुछ भी खयाल करना चाहिए था। उक्त कथन के अनुसार हमारे आचार-

व्यवहार के तरीके वेशभूषा के आधार पर तय होते हैं आपकी समझ से यहउचित है अथवा अनुचित, विचार व्यक्त करें।

उत्तर- बहुत हद तक वेश-भूषा हमारे आचार-व्यवहार से सम्बन्धित होती है। वेश-भूषा मनुष्य के व्यक्तित्व को दर्शाती है। उदाहरण के तौर पर साधु-संत को देखकर उनका सात्त्विक रूप हमारे सामने उभरता है। उसी प्रकार एक भिखमंगे की वेश-भूषा देखने पर उसकी आर्थिक विष्पणता सामने आती है।



प्रश्न 3 यात्रा वृत्तांत के आधार पर तिब्बत की भौगोलिक स्थिति का शब्द -चित्र प्रस्तुत करें। वहाँ की स्थिति आपके राज्य/ शहर से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर- तिब्बत एक पहाड़ी प्रदेश है जिस कारण यहाँ बर्फ पड़ती है। इसकी सीमा हिमालय पर्वत से शुरू होती है। डाँड़े के ऊपर से समुद्र तल की गहराई लगभग 17-18 हजार फीट है। पूरब से पश्चिम की ओर हिमालय के हजारों श्वेत शिखर दिखते हैं। भीटे की ओर दीखने वाले पहाड़ों पर न तो बरफ की सफेदी थी, न किसी तरह की हरियाली। उत्तर की तरफ पत्थरों का ढेर है।

प्रश्न 4 आपने किसी भी स्थान की यात्रा अवश्य की होगी? यात्रा के दौरान हुए अनुभवों को लिखकर प्रस्तुत करें।

उत्तर- ग्रीष्मावकाश में इस बार मैंने अपने माता-पिता, बहन और दो मित्रों के साथ देहरादून घूमने जाने की योजना बनाई। सबको मेरा प्रस्ताव पसंद आया और हम सब 24 मई को अपनी गाड़ी में बैठकर प्रातः 4 बजे देहरादून के लिए रवाना हुए। अभी गाड़ी 25-30 किमी 0 ही चली थी कि अचानक वह घरघराकर रुक गई। गाड़ी खराब हो गई थी। यहाँ आस-पास कोई शहर या कस्बा नहीं था। सड़क के दोनों ओर खेत थे। रास्ता सुनसान था। हम सब परेशान हो गए। पिताजी ने उतरकर देखा, पर उन्हें भी समझ नहीं आया कि गाड़ी क्यों नहीं चल रही थी। हमें वहीं खड़े-खड़े तीन घंटे बीत गए। उस सड़क पर आने-जाने वाली गाड़ियों को हमने हाथ देकर रोकने की कोशिश की, जिससे कुछ सहायता प्राप्त की जा सके, परंतु सभी लोग जल्दी में थे और कोई भी हमारी बात सुनने के लिए नहीं रुकना चाहता था। शाम होने जा रही थी। हम लोगों का भूख और गर्मी के कारण बुरा हाल था। मेरी छोटी बहन तो परेशान होकर रोने लगी, मां ने मुशिकल से उसे चुप कराया।

जब कोई हल नहीं सूझा तो मेरे पिता जी ने चाचा जी को फ़ोन किया और वे अपने साथ मैकेनिक को लेकर आए, तब कहीं जाकर गाड़ी ठीक हो सकी।

इस बीच मेरठ से खाना खरीदा गया और हम लोग रात में 12:30 बजे देहरादून पहुँच पाए। हमारा पूरा दिन बर्बाद हो गया था। अब जब कभी हम लोग गाड़ी में बैठकर बाहर जाते हैं या कहीं घूमने की योजना बनाते हैं, वह समस्याओं से भरा दिन बरबस याद आ जाता है।

प्रश्न 5 यात्रा वृत्तांत गद्य साहित्य की एक विधा है। आपकी इस पाठ्यपुस्तक में कौन-कौन सी विधाएँ हैं? प्रस्तुत विधा उनसे किन मायनों में अलग है?

उत्तर- प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में “महादेवी वर्मा” द्वारा रचित “मेरे बचपन के दिन” संस्मरण है। संस्मरण भी गद्य साहित्य की एक विधा है। इसमें लेखिका के बचपन की यादों का एक अंश प्रस्तुत किया गया है।

यात्रा वृत्तांत तथा संस्मरण दोनों ही गद्य साहित्य की विधाएँ हैं जोकि एक दूसरे से भिन्न है। यात्रा वृत्तांत किसी एक क्षेत्र की यात्रा के अपने अनुभवों पर आधारित है तथा संस्मरण जीवन के किसी व्यक्ति विशेष या किसी खास स्थान की स्मृति पर आधारित है। संस्मरण का क्षेत्र यात्रा वृत्तांत से अधिक व्यापक है।

भाषा- अध्ययन प्रश्न

प्रश्न 1 किसी बात को अनेक प्रकार से कहा जा सकता है; जैसे-

सुबह होने से पहले हम गाँव में थे।

पौ फटने वाला था कि हम गाँव में थे।

तारों की छाँव रहते -रहते हम गाँव पहुँच गए।

नीचे दिए गए वाक्य को अलग-अलग तरीकों में लिखिए-

‘जान नहीं पड़ता था कि घोड़ा आगे जा रहा है या पीछे।’



उत्तर-

- i. यह पता ही नहीं चल पा रहा था कि घोड़ा चल भी रहा है या नहीं।
- ii. कभी लगता था घोड़ा आगे जा रहा है, कभी लगता था पीछे जा रहा है।

प्रश्न 2 ऐसे शब्द जो किसी अंचल यानी क्षेत्र विशेष में प्रयुक्त होते हैं उन्हें आंचलिक शब्द कहा जाता है। प्रस्तुत पाठ में से आंचलिक शब्द ढूँढकर लिखिए।

पाठ में आए हुए आंचलिक शब्द-

उत्तर- कुची, भीटा, थुक्पा, खोटी, राहदारी

प्रश्न 3 पाठ में कागज, अक्षर, मैदान के आगे क्रमशः मोटे, अच्छे और विशाल शब्दों का प्रयोग हुआ है। इन शब्दों से उनकी विशेषता उभर कर आती है। पाठ में से कुछ ऐसे ही और शब्द छाँटिए जो किसी की विशेषता बता रहे हों।

उत्तर- बहुत पिछड़ना, धीमे चलना, कड़ी धूप, खुफिया विभाग





उपभोक्तावाद की संस्कृति

-शयामचरण दुबे

सारांश

लेखक ने इस पाठ में उपभोक्तावाद के बारे में बताया है। उनके अनुसार सबकुछ बदल रहा है। नई जीवनशैली आम व्यक्ति पर हावी होती जा रही है। अब उपभोग-भोग ही सुख बन गया है। बाजार विलासिता की सामग्रियों से भरा पड़ा है।

एक से बढ़कर एक टूथपेस्ट बाजार में उपलब्ध हैं। कोई दाँतों को मोतियों जैसा बनाने वाले, कोई मसूढ़ों को मजबूत रखता है तो कोई वनस्पति और खनिज तत्वों द्वारा निर्मित है। उन्हीं के अनुसार रंग और सफाई की क्षमता वाले ब्रश भी बाजार में मौजूद हैं। पल भर में मुह की दुर्गम्भ दूर करने वाले माउथवाश भी उपस्थित हैं। सौंदर्य-प्रासाधन में तो हर माह नए उत्पाद जुड़ जाते हैं। अगर एक साबुन को ही देखे तो ऐसे साबुन उपलब्ध हैं जो तरोताजा कर दे, शुद्ध-गंगाजल से निर्मित और कोई तो सिनेस्टार्स की खूबसूरती का राज भी है। संभ्रांत महिलाओं की ड्रेसिंग टेबल पर तीस-तीस हजार के आराम से मिल जाती है।

वस्तुओं और परिधानों की दुनिया से शहरों में जगह-जगह बुटीक खुल गए हैं। अलग-अलग ब्रांडों के नई डिजाइन के कपडे आ गए हैं। घड़ियां अब सिर्फ समय देखने के लिए बल्कि प्रतिष्ठा को बढ़ाने के रूप में पहनी जाती हैं। संगीत आये या न पर म्यूजिक सिस्टम बड़ा होना चाहिए भले ही बजाने न आये। कंप्यूटर को दिखावे के लिए खरीदा जा रहा है। प्रतिष्ठा के नाम पर शादी-विवाह पांच सितारा होटलों में बुक होते हैं। इलाज करवाने के लिए पांच सितारा हॉस्पिटलों में जाया जाता है। शिक्षा के लिए पांच सितारा स्कूल मौजूद हैं कुछ दिन में कॉलेज और यूनिवर्सिटी भी बन जाएंगे। अमेरिका और यूरोप में मरने के पहले ही अंतिम संस्कार के बाद का विश्राम का प्रबंध कर लिया जाता है। कब्र पर फूल-फव्वारे, संगीत आदि का इंतजाम कर लिया जाता है। यह भारत में तो नहीं होता पर भविष्य में होने लग जाएगा।

हमारी परम्पराओं का अवमूल्यन हुआ है, आस्थाओं का क्षरण हुआ है। हमारी मानसिकता में गिरावट आ रही है। हमारी सिमित संसाधनों का घोर अप्व्यय हो रहा है। आलू चिप्स और पिज़्ज़ा खाकर कोई भला स्वस्थ कैसे रह सकता है? सामाजिक सरोकार में कमी आ रही है। व्यक्तिगत केन्द्रता बढ़ रही है और स्वार्थ परमार्थ पर हावी हो रहा है। गांधीजी के अनुसार हमें अपने आदर्शों पर टिके रहते हुए स्वस्थ बदलावों को अपनाना है। उपभोक्ता संस्कृति भविष्य के लिए एक बड़ा खतरा साबित होने वाली है।





अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 लेखक के अनुसार जीवन में 'सुख' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- लेखक के अनुसार उपभोग का भोग करना ही सुख है। अर्थात् जीवन को सुखी बनाने वाले उत्पाद का ज़रूरत के अनुसार भोग करना ही जीवन का सुख है।

प्रश्न 2 आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है?

उत्तर- आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को पूरी तरह प्रभावित कर रही है। इसके कारण हमारी सामाजिक नींव खतरे में है। मनुष्य की इच्छाएँ बढ़ती जा रही हैं, मनुष्य आत्मकेंद्रित होता जा रहा है। सामाजिक दृष्टिकोण से यह एक बड़ा खतरा है।

प्रश्न 3 लेखक ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती क्यों कहा है?

उत्तर- गाँधी जी सामाजिक मर्यादाओं और नैतिकता के पक्षधर थे। गाँधी जी चाहते थे कि लोग सदाचारी, संयमी और नैतिक बनें, ताकि लोगों में परस्पर प्रेम, भाईचारा और अन्य सामाजिक सरोकार बढ़े। लेकिन उपभोक्तावादी संस्कृति इन सबके विपरीत चलती है। वह भोग को बढ़ावा देती है जिसके कारण नैतिकता तथा मर्यादा का हास होता है। गाँधी जी चाहते थे कि हम भारतीय अपनी बुनियाद और अपनी संस्कृति पर कायम रहें। उपभोक्ता संस्कृति से हमारी सांस्कृतिक अस्मिता का हास हो रहा है। उपभोक्ता संस्कृति से प्रभावित होकर मनुष्य स्वार्थ-केन्द्रित होता जा रहा है। भविष्य के लिए यह एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि यह बदलाव हमें सामाजिक पतन की ओर अग्रसर कर रहा है।

प्रश्न 4 आशय स्पष्ट कीजिए-

- जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं।
- प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं, चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न ह।

उत्तर-

- उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव अप्रत्यक्ष है। इसके प्रभाव में आकर हमारा चरित्र बदलता जा रहा है। हम उत्पादों का उपभोग करते-करते न केवल उनके गुलाम होते जा रहे हैं बल्कि अपने जीवन का लक्ष्य को भी उपभोग करना मान बैठे हैं। आज हम भोग को ही सुख मान बैठे हैं।
- सामाजिक प्रतिष्ठा विभिन्न प्रकार की होती है जिनके कई रूप तो बिलकुल विचित्र हैं। हास्यास्पद का अर्थ है- हँसने योग्य। अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए ऐसे-ऐसे कार्य और व्यवस्था करते हैं कि अनायास हँसी फूट पड़ती है। जैसे अमरीका में अपने अंतिम संस्कार और अंतिम विश्राम-स्थल के लिए अच्छा प्रबंध करना ऐसी झूठी प्रतिष्ठा है जिसे सुनकर हँसी आती है।

रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

प्रश्न 1 कोई वस्तु हमारे लिए उपयोगी हो या न हो, लेकिन टी.वी. पर विज्ञापन देखकर हम उसे खरीदने के लिए अवश्यलालायित होते हैं? क्यों?

उत्तर- आज का मनुष्य विज्ञापन के बढ़ते प्रभाव से स्वयं को मुक्त नहीं कर पाया है। आज विज्ञापन का



सम्बन्ध केवल सुख-सुविधा से नहीं है बल्कि समाज में अपने प्रतिष्ठा की साख को कायम रखना ही विज्ञापन का मुख्य उद्देश्य बन चुका है। यही कारण है कि जब भी टी.वी. पर किसी नई वस्तु का विज्ञापन आता है तो लोग उसे खरीदने के लिए लालायित हो उठते हैं।

प्रश्न 2 आपके अनुसार वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवत्ता होनी चाहिए या उसका विज्ञापन? तर्क देकर स्पष्ट करें।

उत्तर- वस्तुओं को खरीदने का एक ही आधार होना चाहिए - वस्तु की गुणवत्ता। विज्ञापन हमें गुणवत्ता वाली वस्तुओं का परिचय करा सकते हैं। अधिकतर विज्ञापन हमारे मन में वस्तुओं के प्रति भ्रामक आकर्षण पैदा करते हैं। वे आकर्षक दृश्य दिखाकर गुणहीन वस्तुओं का प्रचार करते हैं।

प्रश्न 3 पाठ के आधार पर आज के उपभोक्तावादी युग में पनप रही “दिखावे की संस्कृति” पर विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर- यह बात बिल्कुल सच है की आज दिखावे की संस्कृति पनप रही है। आज लोग अपने को आधुनिक से अत्याधुनिक और कुछ हटकर दिखाने के चक्कर में क्रीमती से क्रीमती सौंदर्य-प्रसाधन, म्युजिक-सिस्टम, मोबाईल फोन, घड़ी और कपड़े खरीदते हैं। समाज में आजकल इन चीजों से लोगों की हैसियत आँकी जाती है। यहाँ तक कि लोग मरने के बाद अपनी कब्र के लिए लाखों रुपए खर्च करने लगे हैं ताकि वे दुनिया में अपनी हैसियत के लिए पहचाने जा सकें। “दिखावे की संस्कृति” के बहुत से दुष्परिणाम अब सामने आ रहे हैं। इससे हमारा चरित्र स्वतः बदलता जा रहा है। हमारी अपनी सांस्कृतिक पहचान, परम्पराएँ, आस्थाएँ घटती जा रही हैं। हमारे सामाजिक सम्बन्ध संकुचित होने लगा है। मन में अशांति एवं आक्रोश बढ़ रहे हैं।

नैतिक मर्यादाएँ घट रही हैं। व्यक्तिवाद, स्वार्थ, भोगवाद आदि कुप्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं।

प्रश्न 4 आज की उपभोक्ता संस्कृति हमारे रीति -रिवाजों और त्योहारों को किस प्रकार प्रभावित कर रही है? अपने अनुभव के आधार पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर- आज की उपभोक्ता संस्कृति ने हमारे रीति -रिवाजों और त्योहारों को प्रभावित कर रखा है। त्योहारों का मतलब एक दूसरे से अच्छे लगने की प्रतिस्पर्धा हो गई है। नई - नई कम्पनियाँ जैसे इस मौके की तलाश में रहती हैं। त्यौहार के नाम पर ज्यादा से ज्यादा ग्राहक को विज्ञापन द्वारा आकर्षित करे। पहले त्यौहार में सारे काम परिवार के लोग मिलजुल कर करते थे। आज सारी चीजें बाजार से तैयार खरीद ली जाती हैं और बचकुचा काम नौकर से करवा लिया जाता है।

भाषा- अध्ययन प्रश्न

प्रश्न 1 धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है।

इस वाक्य में 'बदल रहा है' क्रिया है। यह क्रिया कैसे हो रही है - धीरे-धीरे। अतः यहाँ धीरे-धीरे क्रिया-विशेषण है। जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, क्रिया-विशेषण कहलाते हैं। जहाँ वाक्य में हमें पता चलता है क्रिया कैसे, कब, कितनी और कहाँ हो रही है, वहाँ वह शब्द क्रिया-विशेषण कहलाता है।

- ऊपर दिए गए उदाहरण को ध्यान में रखते हुए क्रिया-विशेषण से युक्त लगभग पाँच वाक्य पाठ में से छाँटकर लिखिए।
- धीरे-धीरे, ज़ोर से, लगातार, हमेशा, आजकल, कम, ज्यादा, यहाँ, उधर, बाहर - इन क्रिया-विशेषण शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।





- iii. नीचे दिए गए वाक्यों में से क्रिया-विशेषण और विशेषण शब्द छाँटकर अलग लिखिए-

	वाक्य	क्रिया-विशेषण	विशेषण
1.	कल रात से निरंतर बारिश हो रही है।	-	-
2.	पेड़ पर लगे पके आम देखकर बच्चों के मुँह में पानी आ गया।	-	-
3.	रसोईघर से आती पुलाव की हल्की खुशबू से मुझे जोरों की भूख लग आई।	-	-
4.	उतना ही खाओ जितनी भूख है।	-	-
5.	विलासिता की वस्तुओं से आजकल बाजार भरा पड़ा है।	-	-

उत्तर-

- i. क्रिया-विशेषण से युक्त शब्द-
- एक **छोटी-सी** झलक उपभोक्तावादी समाज की।
 - आप उसे **ठीक** तरह चला भी न सकें।
 - हमारा समाज भी अन्य-निर्देशित होता जा रहा है।
 - लुभाने की जी तोड़ कोशिश में निरंतर लगी रहती है।

- ii. क्रिया-विशेषण शब्दों से बने वाक्य-
- धीरे-धीरे** - धीरे-धीरे मनुष्य के स्वभाव में बदलाव आया है।
 - ज़ोर से** - इतनी ज़ोर से शोर मत करो।
 - लगातार** - बच्चे शाम से लगातार खेल रहे हैं।
 - हमेशा** - वह हमेशा चुप रहता है।
 - आजकल** - आजकर बहुत बारिश हो रही है।
 - कम** - यह खाना राजीव के लिए कम है।
 - ज्यादा** - ज्यादा क्रोध करना हानिकारक है।
 - यहाँ** - यहाँ मेरा घर है।
 - उधर** - उधर बच्चों का स्कूल है।
 - बाहर** - अभी बाहर जाना मना है।
- iii.

क्रिया-विशेषण	विशेषण
निरंतर	कल रात
मुँह में पानी	पके आम
भूख	हल्की खुशबू
भरा	उतना, जितना
आजकल	भरा





साँवले सपनों की याद

-जाबिर हुसैन

सारांश

‘साँवले सपनों की याद’ पाठ में एक व्यक्ति का चित्रा खींचा गया है। अतः यह एक व्यक्ति-चित्रा है। लेखक कहते हैं कि सुनहरे रंग के पक्षियों के पंखों पर साँवले सपनों का एक हुजूम सवार होकर मौत की खामोश वादी की तरफ चला जा रहा है। उस झुंड में सबसे आगे सालिम अली चल रहे हैं। वे सैलानियों की तरह एक अंतहीन यात्रा की ओर चल पड़े हैं। इस बार का सफर उनका आखिरी सफर है। इस बार उन्हें कोई भी वापस नहीं बुला सकता क्योंकि वे अब एक पक्षी की तरह मौत की गोद में जा बसे हैं। सालिम अली इस बात से दुखी तथा नाराज़ थे कि लोग पक्षियों को आदमी की तरह देखते हैं। लोग पहाड़ों, झरनों तथा जंगलों को भी आदमी की नज़र से देखते हैं। यह गलत है क्योंकि कोई भी आदमी पक्षियों की मधुर आवाज़ सुनकर रोमांचित नहीं हो सकता है।

लेखक कहते हैं कि वृद्धावन में भगवान कृष्ण ने पता नहीं कब रासलीला की थी, कब ग्वाल-बालों के साथ खेल खेले थे? कब मक्खन खाया था? कब बाँसुरी बजाई थी? कब वन-विहार किया था?

किंतु आज जब हम यमुना के काले पानी को देखते हैं तो ऐसा लगता है कि अभी-अभी भगवान श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाते हुए आ जाएँगे और सारे वातावरण में संगीत का जादू छा जाएगा। वृद्धावन से कृष्ण की बाँसुरी का जादू कभी खत्म ही नहीं होता। सालिम अली ने बहुत भ्रमण किया था तथा उनकी उम्र सौ वर्ष की हो रही थी। अतः उनका शरीर दुर्बल हो गया था। मुख्यतः वे यात्रा करते-करते थक चुके थे, किंतु इस उम्र में भी उनके अंदर पक्षियों को खोजने का जुनून सवार था। दूरबीन उनकी आँखों पर या गरदन में पड़ी ही रहती थी तथा उनकी नज़र दूर-दूर तक फैले आकाश में पक्षियों को ढूँढ़ती रहती थी। उन्हें प्रकृति में एक हँसता-खेलता सुंदर-सलोना संसार दिखाई देता था।

इस सुंदर रहस्यमयी दुनिया को उन्होंने बड़े परिश्रम से बनाया था। इसके बनाने में उनकी पत्नी तहमीना का भी योगदान था। सालिम अली केरल की साइलेंट वैली को रेगिस्ट्रेशन के झोंकों से बचाना चाहते थे। इसलिए वे एक बार पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह से भी मिले थे। चौधरी चरण सिंह गाँव में जन्मे हुए थे और गाँव की मिट्टी से जुड़े हुए थे। अतः वे सालिम अली की पर्यावरण की सुरक्षा संबंधी बातें सुनकर भावुक हो गए थे। आज ये दोनों व्यक्ति नहीं हैं। अब देखते हैं कि हिमालय के घने जंगलों ए बर्फ से ढकी चोटियों तथा लेह – लद्वाख की बर्फिली ज़मीनों पर रहने वाले पक्षियों की चिंता कौन करता है?

सालिम अली ने अपनी आत्मकथा का नाम रखा था ‘फाल आ.फ ए स्पैरो’। लेखक को याद है कि डी.एच. लारेंस की मृत्यु के बाद जब लोगों ने उनकी पत्नी फ्रीडा लारेंस से अपने पति के बारे में लिखने का अनुरोध किया तो वे बोली थीं कि मेरे लिए लारेंस के बारे में लिखना असंभव-सा है, मुझसे श्यादा तो उनके बारे में छत पर बैठने वाली गौरैया जानती है।

बचपन में अन्य बच्चों के समान सालिम अली अपनी एयरगन से खेल रहे थे। खेलते समय उनकी एयरगन से एक चिड़िया



घायल होकर गिर पड़ी थी। उसी दिन से सालिम अली के हृदय में पक्षियों के प्रति दया का भाव जाग उठा और वे पक्षियों की खोज तथा उनकी रक्षा के उपायों में लग गए। प्राकृतिक रहस्यों को जानने के लिए निरंतर प्रयास करते रहे। इसके लिए उन्होंने बड़े-से-बड़े तथा कठिन-से-कठिन कार्य किए।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 किस घटना ने सालिम अली के जीवन की दिशा को बदल दिया और उन्हें पक्षी प्रेमी बना दिया?

उत्तर- बचपन में एक बार मामा की दी हुई एयरगन से सालिम अली ने एक गौरैया का शिकार किया। मामा से गौरैया के बारे में जानकारी माँगनी चाही तो मामा ने उन्हें बाम्बे नैचुरल हिस्ट्री सोसायटी [बी.एन.एच.एस] जाने के लिए कहा। बी.एन.एच.एस से इन्हें गौरैया की पूरी जानकारी मिली। उसी समय से सालिम अली के मन में पक्षियों के बारे में जानने की इतनी उत्सुकता जगी कि उन्होंने पक्षी विज्ञान को ही अपना करियर बना लिया।

प्रश्न 2 सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री के सामने पर्यावरण से संबंधित किन संभावित खतरों का चित्र खोंचा होगा कि जिससे उनकी आँखें नम हो गई थीं?

उत्तर- सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरणसिंह के सामने केरल की साइलेंट-वैली संबन्धी खतरों की बात उठाई होगी। उस समय केरल पर रेगिस्टानी हवा के झोंकों का खतरा मंडरा रहा था। वहाँ का पर्यावरण दूषित हो रहा था। प्रधानमन्त्री को वातावरण की सुरक्षा का ध्यान था। पर्यावरण के दूषित होने के खतरे के बारे में सोचकर उनकी आँखे नम हो गईं।

प्रश्न 3 लॉरेंस की पत्नी फ्रीदा ने ऐसा क्यों कहा होगा कि “मेरी छत पर बैठने वाली गौरैया लॉरेंस के बारे में ढेर सारी बातें जानती हैं?”

उत्तर- लॉरेंस की पत्नी फ्रीदा जानती थी कि लॉरेंस को गौरैया से बहुत प्रेम था। वे अपना काफी समय

गौरैया के साथ बिताते थे। गौरैया भी उनके साथ अन्तरंग साथी जैसा व्यवहार करती थी। उनके इसी पक्षी-प्रेम को उदघाटित करने के लिए उन्होंने यह वाक्य कहा।

प्रश्न 4 आशय स्पष्ट कीजिए-

- वो लॉरेंस की तरह, नैसर्गिक जिंदगी का प्रतिरूप बन गए थे।
- कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा।
- सलीम अली प्रकृति की दुनिया में एक टापू बनने की बजाए अथाह सागर बनकर उभरे थे।

उत्तर-

- लॉरेंस का जीवन बहुत सीधा-सादा था, प्रकृति के प्रति उनके मन में जिज्ञासा थी। सालिम अली का व्यक्तित्व भी लॉरेंस की तरह ही सुलझा तथा सरल था।
- यहाँ लेखक का आशय है कि मृत व्यक्ति को कोई जीवित नहीं कर सकता। हम चाहे कुछ भी कर लें पर उसमें कोई हरकत नहीं ला सकते।
- सलीम अली प्रकृति के खुले संसार में खोंज करने के लिए निकले। उन्होंने स्वयं को किसी सीमा में कैद नहीं किया। वे एक टापू की तरह किसी स्थान विशेष या पशु-पक्षी विशेष में सीमित नहीं थे। उन्होंने अथाह सागर की तरह प्रकृति में जो-जो अनुभव आयी, उन्हें सँजोया। उनका कार्यक्षेत्र बहुत विशाल था।



प्रश्न 5 इस पाठ के आधार पर लेखक की भाषा-शैली की चार विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- लेखक की भाषा-शैली की विशेषताएँ—

- i. इनकी शैली चित्रात्मक है। पाठ को पढ़ते हुए इसकी घटनाओं का चित्र उभर कर हमारे सामने आता है।
- ii. लेखक ने भाषा में हिंदी के साथ-साथ कहीं-कहीं उर्दू तथा कहीं-कहीं अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी किया है।
- iii. इनकी भाषा अत्यंत सरल तथा सहज है।
- iv. अपने मनोभावों को प्रस्तुत करने के लिए लेखक ने अभिव्यक्ति शैली का सहारा लिया है।

प्रश्न 6 इस पाठ में लेखक ने सलीम अली के व्यक्तित्व का जो चित्र खींचा है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- सलीम अली अनन्य प्रकृति-प्रेमी थे। प्रकृति तथा पक्षियों के प्रति उनके मन में कभी न खत्म होने वाली जिज्ञासा थी। लेखक के शब्दों में, "उन जैसा 'बर्ड-वाचर' शायद कोई हुआ है।" उन्हें दूर आकाश में उड़ते पक्षियों की खोंज करने का तथा उनकी सुरक्षा के उपाय कोजने का असीम चाव था। वे स्वभाव से परम धूमककड़ और यायावर थे। लम्बी यात्राओं ने उनके शरीर को कमज़ोर कर दिया था। व्यवहार में वे सरल-सीधे और भोले इंसान थे। वे बाहरी चकाचौंध और विशिष्टता से दूर थे।

प्रश्न 7 "साँवले सपनों की याद" शीर्षक की सार्थकता पर टिप्पणी कीजिये।

उत्तर- "साँवले सपनों की याद" एक रहस्यात्मक शीर्षक है। यह रचना लेखक जाबिर हुसैन द्वारा अपने मित्र

सलीम अली की याद में लिखा गया संस्मरण है। "साँवले सपने" मनमोहक इच्छाओं के प्रतीक हैं। ये सपने प्रसिद्ध पक्षी-प्रेमी सलीम अली से संबंधित हैं। सलीम अली जीवन-भर सुनहरे पक्षियों की दुनिया में खोए रहे। वे उनकी सुरक्षा और खोंज के सपनों में खोए रहे। ये सपने हर किसी को नहीं आते। हर कोई पक्षी-प्रेम में इतना नहीं डूब सकता। इसलिए आज जब सलीम अली नहीं रहे तो लेखक को उन साँवले सपनों की याद आती है जो सलीम अली की आँखों में बसते थे। ये शीर्षक सार्थक तो है किन्तु गहरा रहस्यात्मक है। चन्दन की तरह घिस-घिस कर इसके अर्थ तथा प्रभाव तक पहुँचा जा सकता है।

रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

प्रश्न 1 प्रस्तुत पाठ सलीम अली की पर्यावरण के प्रति चिंता को भी व्यक्त करता है। पर्यावरण को बचाने के लिए आप कैसे योगदान दे सकते हैं?

उत्तर- पर्यावरण को बचाने के लिए हम निम्नलिखित योगदान दे सकते हैं—

- i. हमें पेड़ों की कटाई को रोकना होगा।
- ii. वायु को शुद्ध करने के लिए पेड़-पौधे लगाने चाहिए।
- iii. प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का कम-से-कम प्रयोग करेंगे।
- iv. जल प्रदूषित नहीं होने देना चाहिए।
- v. फैक्ट्रियों से निकले दूषित पानी तथा कचरों का उचित तरीके से निपटारा करेंगे।

सामाजिक उत्सवों में होने वाली तेज़ आवाज़ को रोककर हम ध्वनि प्रदूषण रोक सकते हैं।





प्रेमचंद के फटे जूते

-हरिशंकर परसाई

सारांश

परसाई जी के सामने प्रेमचंद तथा उनकी पत्नी का एक चित्र है। इसमें प्रेमचंद धोती-कुर्ता पहने हैं तथा उनके सिर पर टोपी है। वे बहुत दुबले हैं, चेहरा बैठा हुआ तथा हड्डियाँ उभरी हुई हैं। चित्र को देखने से ही पता चल रहा है कि वे निर्धनता में जी रहे हैं। वे कैनवस के जूते पहने हैं जो बिल्कुल फट चुके हैं, जिसके कारण ढंग से बँध नहीं पा रहे हैं और बाएँ पैर की ऊँगलियाँ दिख रही हैं। उनकी ऐसी हालत देखकर लेखक को चिंता हो रही है कि यदि उनकी (प्रेमचंद) फ़ोटो खिंचाते समय ऐसी हालत है तो वास्तविक जीवन में उनकी क्या हालत रही होगी। फिर उन्होंने सोचा कि प्रेमचंद कहीं दो तरह का जीवन जीने वाले व्यक्ति तो नहीं थे। किंतु उन्हें दिखावा पसंद नहीं था, अतः उनकी घर की तथा बाहर की जिंदगी एक-सी ही रही होगी। फ़ोटो में दिख रही तथा वास्तविक स्थिति में कोई अंतर नहीं रहा होगा। तभी तो निश्चितता तथा लापरवाही से फ़ोटो में बैठे हैं। वे 'सादा जीवन उच्च विचार' रखने में विश्वास रखते थे। अतः गरीबी से दुखी नहीं थे।

प्रेमचंद जी के चेहरे पर एक व्यंग्य भरी मुस्कान देखकर लेखक परेशान हैं। वह सोचते हैं कि प्रेमचंद ने फटे जूतों में फ़ोटो खिंचवाने से मना क्यों नहीं किया। फिर लेखक को लगा कि शायद उनकी पत्नी ने जोर दिया होगा, इसलिए उन्होंने फटे जूते में ही फ़ोटो खिंचा लिया होगा। लेखक प्रेमचंद की इस दुर्दशा पर रोना चाहते हैं किंतु उनकी आँखों के दर्द भरे व्यंग्य ने उन्हें रोने से रोक दिया।

लेखक कहते हैं कि मेरा भी तो जूता फट गया है किंतु वह ऊपर से तो ठीक है। मैं पर्दे का पूरी तरह से ध्यान रखता हूँ। मैं अपनी ऊँगली को बाहर नहीं निकलने देता। मैं इस तरह फटा जूता पहनकर फ़ोटो तो कभी नहीं खिंचवा सकता।

लेखक प्रेमचंद की व्यंग्य भरी मुस्कान देखकर आश्वर्यचकित हैं। वे सोच रहे हैं कि इस व्यंग्य भरी मुस्कान का आखिर क्या मतलब हो सकता है। क्या उनके साथ कोई हादसा हो गया या होरी का गोदान हो गया? या हल्कू किसान के खेत को नीलगायों ने चर लिया है या माधो ने अपनी पत्नी के कफ़न को बेचकर शराब पी ली है? या महाजन के तगादे से बचने के लिए प्रेमचंद को लंबा चक्कर काटकर घर जाना पड़ा है जिससे उनका जूता घिस गया है? लेखक को याद आता है कि ईश्वर-भक्त संत कवि कुंभनदास का जूता भी फतेहपुर सीकरी आने-जाने से घिस गया था।

अचानक लेखक को समझ आया कि प्रेमचंद का जूता लंबा चक्कर काटने से नहीं फटा होगा बल्कि वे सारे जीवन किसी कठोर वस्तु को ठोकर मारते रहे होंगे। रास्ते में पड़ने वाले टीले से बचकर निकलने के बजाए वे उसे ठोकरे मारते रहे होंगे। उन्हें समझौता करना पसंद नहीं है। जिस प्रकार होरी अपना नेम-धरम नहीं छोड़ पाए, या फिर नेम-धरम उनके लिए मुक्ति का साधन था।

लेखक मानते हैं कि प्रेमचंद की ऊँगली किसी घृणित वस्तु की ओर संकेत कर रही है, जिसे उन्होंने ठोकरें मार-मारकर अपने जूते फाड़ लिए हैं। वे उन लोगों पर मुस्करा रहे हैं जो अपनी ऊँगली को ढकने के लिए अपने तलवे घिसते रहते हैं।



अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 हरिशंकर परसाई ने प्रेमचंद का जो शब्दचित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है उससे प्रेमचंद के व्यक्तित्व की कौन-कौनसी विशेषताएँ उभरकर आती हैं?

उत्तर- प्रेमचंद के व्यक्तित्व की विशेषताएँ-

- i. प्रेमचंद का व्यक्तित्व बहुत ही सीधा-सादा था, उनके व्यक्तित्व में दिखावा नहीं था।
- ii. प्रेमचंद एक स्वाभिमानी व्यक्ति थे। किसी और की वस्तु माँगना उनके व्यक्तित्व के खिलाफ़ था।
- iii. इन्हें समझौता करना मंजूर नहीं था।
- iv. ये परिस्थितियों के गुलाम नहीं थे। किसी भी परिस्थितियों का डटकर मुकाबला करना इनके व्यक्तित्व की विशेषता थी।

प्रश्न 2 सही कथन के सामने (✓) का निशान लगाइए-

- i. बाएँ पाँव का जूता ठीक है मगर दाहिने जूते में बड़ा छेद हो गया है जिसमें से अँगुली बाहर निकल आई है।
- ii. लोग तो इत्र चुपड़कर फोटो खिंचाते हैं जिससे फोटो में खुशबू आ जाए।
- iii. तुम्हारी यह व्यंग्य मुसकान मेरे हौसले बढ़ाती है।
- iv. जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ अँगूठे से इशारा करते हो?

उत्तर- लोग तो इत्र चुपड़कर फोटो खिंचाते हैं जिससे फोटो में खुशबू आ जाए। (✓)

प्रश्न 3 नीचे दी गई पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए-

- i. जूता हमेशा टोपी से कीमती रहा है। अब तो जूते की कीमत और बढ़ गई है और एक जूते पर पचीसों टोपियाँ न्योछावर होती हैं।

ii. तुम परदे का महत्व नहीं जानते, हम पर्दे पर कुर्बान हो रहे हैं।

iii. जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ हाथ की नहीं, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो?

उत्तर-

i. यहाँ पर जूते का आशय समृद्धि से है तथा टोपी मान, मर्यादा तथा इज्जत का प्रतीक है। वैसे तो इज्जत का महत्व सम्पत्ति से अधिक है। परन्तु आज की परिस्थिति में इज्जत को समाज के समृद्ध एवं प्रतिष्ठित लोगों के सामने झुकना पड़ता है।

ii. यहाँ परदे का सम्बन्ध इज्जत से है। जहाँ कुछ लोग इज्जत को अपना सर्वस्व मानते हैं तथा उस पर अपना सब कुछ न्योछावर करने को तैयार रहते हैं, वहीं दूसरी ओर समाज में कुछ ऐसे लोग भी हैं जिनके लिए इज्जत महत्वहीन है।

iii. प्रेमचंद गलत वस्तु या व्यक्ति को इस लायक नहीं समझते थे कि उनके लिए अपने हाथ का प्रयोग करके हाथ के महत्व को कम करें बल्कि ऐसे गलत व्यक्ति या वस्तु को पैर से सम्बोधित करना ही उसके महत्व के अनुसार उचित है।

प्रश्न 4 पाठ में एक जगह लेखक सोचता है कि 'फोटो खिंचाने कि अगर यह पोशाक है तो पहनने की कैसी होगी' ? 'लेकिन अगले ही पल वह विचार बदलता है कि' नहीं इस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी। आपके अनुसार इस संदर्भ में प्रेमचंद के बारे में लेखक के विचार बदलने की क्या वजहें हो सकती हैं?



उत्तर- लोग प्रायः ऐसा करते हैं कि दैनिक जीवन में साधारण कपड़ों का प्रयोग करते हैं और विशेष अवसरों पर अच्छे कपड़ों का। लेखक ने पहले सोचा प्रेमचंद खास मौके पर इतने साधारण हैं तो साधारण मौकों पर ये इससे भी अधिक साधारण होते होंगे। परन्तु फिर लेखक को लगा कि प्रेमचंद का व्यक्तित्व दिखावे की दुनिया से बिलकुल भिन्न हैं क्योंकि वे जैसे भीतर हैं वैसे ही बाहर भी हैं।

प्रश्न 5 आपने यह व्यंग्य पढ़ा। इसे पढ़कर आपको लेखक की कौन सी बातें आकर्षित करती हैं?

उत्तर- लेखक एक स्पष्ट वक्ता है। यहाँ बात को व्यंग के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। प्रेमचंद के व्यक्तित्व की विशेषताओं को व्यक्त करने के लिए जिन उदाहरणों का प्रयोग किया गया है, वे व्यंग को ओर भी आकर्षक बनाते हैं। कड़वी से कड़वी बातों को अत्यंत सरलता से व्यक्त किया है। यहाँ अप्रत्यक्ष रूप से समाज के दोषों पर व्यंग किया गया है।

प्रश्न 6 पाठ में 'टीले' शब्द का प्रयोग किन संदर्भों को इंगित करने के लिए किया गया होगा?

उत्तर- टीला रस्ते की रुकावट का प्रतीक है। इस पाठ में टीला शब्द सामाजिक कुरीतियों, अन्याय तथा भेदभाव को दर्शाता है क्योंकि यह मानव के सामजिक विकास में बाधाएँ उत्पन्न करता है।

रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

प्रश्न 1 प्रेमचंद के फटे जूते को आधार बनाकर परसाई जी ने यह व्यंग्य लिखा है। आप भी किसी व्यक्ति की पोशाक को आधार बनाकर एक व्यंग्य लिखिए।

उत्तर- हमारे एक पड़ोसी है। जो बहुत ही कंजूस है। यहाँ तक के बच्चों के खाने-पीने की चीजों में भी कटौती करते हैं। परंतु दुनिया में अपनी झूठी शान दिखाने के लिए बड़ी बड़ी नामचीन कम्पनियों के कपड़े ही पहनते। उनका यह दोघलापन मेरी समझ से परे है।

प्रश्न 2 हमारे एक पड़ोसी है। जो बहुत ही कंजूस है। यहाँ तक के बच्चों के खाने-पीने की चीजों में भी कटौती

करते हैं। परंतु दुनिया में अपनी झूठी शान दिखाने के लिए बड़ी बड़ी नामचीन कम्पनियों के कपड़े ही पहनते। उनका यह दोघलापन मेरी समझ से परे है।

उत्तर- आज की दुनिया दिखावे के प्रति जयादा जागरूक है। अगर समाज में अपनी शान बनाए रखनी है तो महँगे से महँगे कपड़े पहनना आवश्यक हो गया है। यहाँ तक की व्यक्ति का मान-सम्मान और चरित्र भी वेश-भूषा पर अवलम्बित हो गया है। आज सादा जीवन जीने वालों को पिछड़ा समझा जाने लगा है।

भाषा- अध्ययन प्रश्न

प्रश्न 1 पाठ में आए मुहावरे छाँटिए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर-

- अँगुली का इशारा-** (कुछ बताने की कोशिश) मैं तुम्हारी अँगुली का इशारा खूब समझता हूँ।
- व्यंग्य-मुस्कान-** (मज़ाक उड़ाना) तुम अपनी व्यंग भरी मुस्कान से मेरी तरफ मत देखो।
- बाजू से निकलना-** (कठिनाईयों का सामना न करना) इस कठिन परिस्थिति में तुमने मेरा साथ छोड़कर बाजू से निकलना सही समझा।
- रास्ते पर खड़ा होना-** (बाधा पड़ना) तुम मेरी सफलता के रास्ते पर खड़े हो।

प्रश्न 2 प्रेमचंद के व्यक्तित्व को उभारने के लिए लेखक ने जिन विशेषणों का उपयोग किया है उनकी सूची बनाइए।

उत्तर- लेखक ने प्रेमचंद की विशेषताओं को प्रस्तुत करने के लिए कुछ शब्दों का प्रयोग किया है। वे इस प्रकार हैं-

- महान कथाकार
- उपन्यास-सम्राट
- युग-प्रवर्तक





मेरे बचपन के दिन

-महादेवी वर्मा

सारांश

लेखिका के परिवार में पहले लड़कियों को जन्म लेते ही मार दिया जाता था। इसीलिए उनके कुल में 200 वर्षों तक कोई लड़की नहीं हुई। 200 वर्षों के बाद लेखिका का जन्म हुआ। लेखिका के दादा जी ने दर्गा-पूजा करके लड़की माँगी थी। इसलिए उन्हकं अपने बचपन में कोई दुख नहीं हुआ। लेखिका को उर्दूए फारसीए अंग्रेजी तथा संस्कृत भाषाओं को पढ़ने की सुविधा प्राप्त थी। हिंदी पढ़ने के लिए तो उन्हें उनकी माँ ने ही प्रेरित किया था। लेखिका को हिंदीए संस्कृत पढ़ने में तो बहुत ही आनंद आया किंतु उर्दूफारसी पढ़ने में उनकी रुचि नहीं जागी। मिशन स्कूल दिनचर्या भी उन्हें अपनी ओर आकर्षित न कर सकी। इसीलिए उन्हें क्रांतिकारी गल्स कांलेज में भर्ती कराया गया था। वहाँ उन्हें हिंदू व ईसाई लड़कियों के साथ रहने का अवसर मिला।

लेखिका जिस छात्रावास में रहती थीं वहाँ हर कमरे में चार-चार छात्राएँ रहती थीं। लेखिका के कमरे में सुभद्रा कुमारी चाहौन भी थीं जो वहाँ की सीनियर छात्रा थीं। वे कविता लिखती थीं। इधर लेखिका की माँ भी भजन लिखती और गाती थीं। अतः उन्हें भी लिखने की इच्छा हुई। उन्होंने कविता लिखनी प्रारंभ की और लिखती ही चली गई। एक दिन महादेवी के द्वारा छिप कर कविता लिखने की भनक सुभद्रा वुफमारी के कानों में पड़ी तो उन्होंने लेखिका की काँपियों में से कविताएँ ढूँढ़कर उनके विषय में सारे छात्रावास को बता दिया। उस दिन से उन दोनों के बीच मित्राता हो गई। फिर दोनों ही खेल के समय साथ ही बैठकर कविता लिखने लगीं। उनकी तुकबंदी कर लिखी गई कविता 'स्त्री दर्पण' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई।

सन 1917 के आस-पास हिंदी के प्रचार का समय था। अतः उन दिनों कवि सम्मेलन खूब होने लगे थे। लेखिका भी कवि सम्मेलनों में जाने लगीं। उनके साथ क्रांतिकारी एक शिक्षिका उनके साथ जाया करती थीं। उन कवि सम्मेलनों के अध्यक्ष प्रायः हरिऔधार श्रीधर पाठक जैसे महान कवि होते थे। अतः लेखिका अपनी बारी का घबराहट के साथ इंतशार करती थीं और अपने नाम की उद्घोषणां सुनने के लिए बचे नै रहती थीं। किंतु उन्हों हमशा ही प्रथम परु स्कार ही मिलता था।

उन्हीं दिनों गांधी जी आनंद भवन आए। लेखिका भी अन्य छात्राओं के साथ उनसे भेंट करके जेबखर्च से बचाकर कुछ पैसे देने उनके पास गई। उन्होंने कवि सम्मेलन में पुरस्कार स्वरूप मिला एक चाँदी का कटोरा गांधी जी को दिखाया तथा गांधी जी के माँगने पर देश-हित के लिए उन्हें दे दिया। वे गांधी जी को वह कीमती तथा स्मृति-चिह्न रूपी कटोरा भेंट करके बहुत खुश हुईं। छात्रावास का जीवन जाति-पाँति के भद्र-भाव से दूर आपसी प्रेम भरा हुआ एक परिवार जैसा था। अतः ज़ेबुन नाम की एक मराठी लड़की लेखिका का सारा काम कर देती थी। वह हिंदी तथा मराठी भाषा का मिलाजुला रूप बांला करती थी। वह अच्छी हिंदी नहीं जानती थी। वहाँ एक बेगम थीं जिनको मराठी बालेने पर चिढ़ हाती थी। 'हम मराठी हैं तो मराठी हीं बोलें।' उन दिनाएँ देश में सर्वत्र पारस्परिक प्रेम एवं सद्गुरुवाव का वातावरण था। अतः अवध की छात्राएँ अवधी, बुंदेलखण्ड की छात्राएँ बुंदेली बोला करती थीं। इससे किसी को कोई आपत्ति नहीं होती थी। मेस में सभी एक साथ खाना खाती थीं तथा एक ही इश्वर प्रार्थना एवं भाजे न मंत्रा बाले ती थीं। इसमें कई झागड़ा नहीं होता था।



लेखिका का परिवार जहाँ रहता था वहाँ एक जवारा की बेगम साहिबा का परिवार भी रहता था। उनके परिवारों में बहुत घनिष्ठता थी। उनके बीच कोई जाति एवं धर्म-संबंधी भेदभाव नहीं था। वे एक-दूसरे के जन्मदिन पर परिवार जैसे मिलते-जुलते थे। बेगम के बच्चे लेखिका की माँ को चर्चीजान तथा लेखिका बेगम साहिबा को ताई कहती थीं। लेखिका राखी के दिन बेगम साहिबा के बच्चों को राखी अवश्य बाँधती थीं तथा मोहर्रम के दिन बेगम साहिबा लेखिका के लिए कपड़े अवश्य बनवाती थीं। लेखिका के घर जब छोटे भाई का जन्म हुआ तो बेगम साहिबा ने माँगकर नेग लिया था। उसका नाम 'मनमोहन' भी उन्हीं ने रखा था।

वही मनमोहन वर्मा पढ़ानिखकर प्रोफेसर बने तथा बाद में जम्मू विश्वविद्यालय तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति बने।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 'मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है।' इसकथन के आलोक में आप यह पता लगाएँ कि-

- उस समय लड़कियों की दशा कैसी थी?
- लड़कियों के जन्म के संबंध में आज कैसी परिस्थितियाँ हैं?

उत्तर-

- उस समय लड़कियों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। उस समय का समाज पुरुष प्रधान था। पुरुषों को समाज में ऊँचा दर्जा प्राप्त था। पुरुषों के सामने नारी को अत्यंत हीन दृष्टि से देखा जाता था। इसका एक कारण समाज में व्याप्त दहेज-प्रथा भी थी। इसी कारण से लड़कियों के जन्म के समय या तो उसे मार दिया जाता था या तो उन्हें बंद कमरे की चार दीवारी के अंदर कैद करके रखा जाता था। शिक्षा को पाने का अधिकार भी केवल लड़कों को ही था। कुछ उच्च वर्गों की लड़कियाँ ही शिक्षित थीं परन्तु उसकी संख्या भी गिनी चुनी थी। ऐसी लड़कियों को शिक्षा प्राप्त करने के

लिए बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।

- लड़कियों को लेकर पहले की तुलना में आज की स्थिति में सुधार आया है। इसका एक मात्र कारण अपने अधिकारों को पाने के लिए नारी की जागरूकता है। यद्यपि स्थिति पूरी तरह से अनूकूल नहीं है परन्तु फिर भी आज के समाज में नारियों को उचित स्थान प्राप्त है। आज भी कुछ परिवारों में नारी की स्वतंत्रता पर प्रश्न चिन्ह है। कहीं-कहीं पर दहेज-प्रथा है। परन्तु निष्कर्ष तौर पर हम कह सकते हैं कि समय के साथ-साथ लड़कियों की स्थिति में पहले से अधिक सुधार आया है। हमारे समाज में भी नारी के अस्तित्व को लेकर लोगों का दृष्टिकोण बदल रहा है। अतः हम कह सकते हैं कि पुरुष प्रधान समाज में नारी आज पुरुषों से पीछे नहीं है।

प्रश्न 2 लेखिका उर्दू-फारसी क्यों नहीं सीख पाई?

उत्तर- लेखिका को बचपन में उर्दू पढ़ाने के लिए मौलवी रखा गया परन्तु उनकी इसमें रुचि न होने के कारण वो उर्दू-फारसी नहीं सीख पायीं।



प्रश्न 3 लेखिका ने अपनी माँ के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर- महादेवी की माता अच्छे संस्कार वाली महिला थीं। वे धार्मिक स्वभाव की महिला थीं। वे पूजा-पाठ किया करती थीं। वे ईश्वर में आस्था रखती थीं। सर्वे “कृपानिधान पंछी बन बोले” पद गाती थीं। प्रभाती गाती थीं। शाम को मीरा के पद गाती थीं। वे लिखा भी करती थीं। लेखिका ने अपनी माँ के हिंदी-प्रेम और लेखन गायन के शौक का वर्णन किया है। उन्हें हिंदी तथा संस्कृत का अच्छा ज्ञान था। इसलिए इन दोनों भाषाओं का प्रभाव महादेवी पर भी पड़ा।

प्रश्न 4 जवारा के नवाब के साथ अपने पारिवारिक संबंधों को लेखिका ने आज के संदर्भ में स्वप्न जैसे क्यों कहा है?

उत्तर- पहले हिंदु- मुस्लिम को लेकर इतना भेदभाव नहीं था। हिंदु और मुस्लिम दोनों एक ही देश में प्रेम पूर्वक रहते थे। स्वतंत्रता के पश्चात् हिंदु और मुस्लिम संबंधों में बदलाव आ गया है। आपसी फूट के कारण देश दो हिस्सों में बँट गया - पाकिस्तान मुस्लिम प्रधान देश के रूप में प्रतिष्ठित है तथा हिंदुस्तान में हिंदुओं का वर्चस्व कायम है। ऐसी परिस्थिति में हिंदु तथा मुस्लिम दो अलग-अलग धर्मों के लोगों का प्रेमपूर्वक रहना स्वप्न समान प्रतीत होता है।

रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

प्रश्न 1 ज़ेबुन्निसा महादेवी वर्मा के लिए बहुत काम करती थी। ज़ेबुन्निसा के स्थान पर यदि आप होतीं/ होते तो महादेवी से आपकी क्या अपेक्षा होती?

उत्तर- ज़ेबुन्निसा महादेवी वर्मा के लिए उनका काम करता थी। इससे काव्य रचना के लिए महादेवी वर्मा को काफ़ी सहयोग मिल जाता था। हमें भी किसी की प्रतिभा को उभारने के लिए इसी तरह का सहयोग करना चाहिए।

प्रश्न 2 महादेवी वर्मा को काव्य प्रतियोगिता में चाँदी का कटोरा मिला था। अनुमान लगाइए कि आपको इस तरह का कोई पुरस्कार मिला हो और वह देशहित में या किसी आपदा निवारण के काम में देना पड़े तो आप कैसा अनुभव करेंगे/ करेंगी?

उत्तर- हमारा भी देश के प्रति कई कर्तव्य हैं। अगर मुझे भी देशहित या आपदा निवारण के सहयोग में अपने पुरस्कार को त्याग करना पड़े तो इसमें मुझे प्रसन्नता होगी। आखिर मेरा कुछ तो देश या लोगों के काम आ पाया। देश प्रेम के आगे पुरस्कार का कोई मूल्य नहीं है।

प्रश्न 3 लेखिका ने छात्रावास के जिस बहुभाषी परिवेश की चर्चा की है उसे अपनी मातृभाषा में लिखिए।

उत्तर- लेखिका “महादेवी वर्मा” के छात्रावास का परिवेश बहुभाषी था। कोई हिंदी बोलता था तो किसी की भाषा उर्दू थी। वहाँ कुछ मराठी लड़किया भी थीं, जो आपस में मराठी बोलती थीं। अवध की लड़कियाँ आपस में अवधी बोलती थीं। बुंदेलखण्ड की लड़कियाँ बुंदेली में बात करती थीं। अलग-अलग प्रांत के होने के बावजूद भी वे आपस में हिंदी में ही बातें करती थीं। छात्रावास में उन्हें हिंदी तथा उर्दू दोनों की शिक्षा दी जाती थी।

प्रश्न 4 महादेवी जी के इस संस्मरण को पढ़ते हुए आपके मानस-पटल पर भी अपने बचपन की स्मृति उभरकर आई होगी, उसे संस्मरण शैली में लिखिए।

उत्तर- एक दिन की बात है, मैं और मेरा मित्र पाठशाला से घर लौट रहे थे। हमें सड़क पार करनी थी। मैं आगे था मैंने ठीक से सड़क पार कर ली परंतु तब तक सिगनल हरा हो गया और वाहन तेज गति से आगे बढ़ने लगे। मेरे मित्र ने सड़क के दोनों ओर देखा ही नहीं और लापरवाही से सड़क पार करने लगा। कार चालाक ने बड़ा प्रयास किया कि मेरे मित्र को समय रहते सूचित किया जा सके परन्तु ऐसा नहीं हो पाया।



कार चालाक ने मेरे मित्र को बचाने के प्रयास में कार को इधर-उधर घुमाने का प्रयास किया। इस प्रयास में उसकी कार हमारे विद्यालय के पास एक पेड़ से जा टकराई। इस टक्कर में कार चालक बुरी तरह घायल हो गया।

उसे गंभीर चोटें आई थीं। संयोग से पास ही अस्पताल होने के कारण कार चालक को चिकित्सा सुविधा समय रहते उपलब्ध करवाई जा सकी और उसकी जान बच गई। इस घटना ने मेरे होश उड़ा दिए। मेरे मित्र को भी बहुत ग्लानि का अनुभव हुआ। उस दिन के बाद मैंने सड़क पार करते हुए कभी लापरवाही नहीं बरती। यह घटना मेरे लिए अविस्मरणीय घटना बन गई।

प्रश्न 5 महादेवी ने कवि-सम्मेलनों में कविता-पाठ के लिए अपना नाम बुलाए जाने से पहले होने वाली बेचैनी का जिक्र किया है। अपने विद्यालय में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेते समय आपने जो बेचैनी अनुभव की होगी, उस पर डायरी का एक पृष्ठ लिखिए।

उत्तर- ४ अगस्त, २०-

आज हमारे विद्यालय का वार्षिकोत्सव मनाया गया। इसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस कार्यक्रम में मुझे अपने मित्र के साथ नृत्य प्रस्तुत करना था। हमारा नृत्य तीसरा था। हम कार्यक्रम शुरू होने पहले वस्त्र और आभूषण के साथ सुसज्ज हो गए थे। पर जैसे ही कार्यक्रम शुरू हुआ मेरे दिल कई धड़कने बढ़नी लगी। मैंने पहली बार ऐसे कार्यक्रम में नाम लिखवाया था। और देखते देखते हमारा नाम पुकारा गया। जैसे ही हम मंच पर गए सबने तालियों से हमें प्रोत्साहन दिया। मुझ में धीरे-धीरे आत्मविश्वास बढ़ता गया और मैं नृत्य में लीन हो गया। सब को हमारा नृत्य बहुत अच्छा लगा। यह दिन मुझे हमेशा याद रहेंगा।

भाषा- अध्ययन प्रश्न

प्रश्न 1 पाठ से निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द ढूँढ़कर लिखिए-

विद्वान्, अनंत, निरपराधी, दंड, शांति।

उत्तर- विलोम शब्द-

- विद्वान्- मूर्ख
- अनंत- संक्षिप्त
- निरपराधी- अपराधी
- दंड- पुरस्कार
- शांति- अशांति

प्रश्न 2 निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग/ प्रत्यय अलग कीजिए और मूल शब्द बताइए-

निराहारी, साम्प्रदायिकता, अप्रसन्नता, अपनापन, किनारीदार, स्वतंत्रता

उत्तर-

- निराहारी- निर् + आहार + ई साम्प्रदायिकता - सम्प्रदाय + इक + ता
- अप्रसन्नता- अ + प्रसन्न + ता
- अपनापन- अपना + पन
- किनारीदार- किनारा + ई + दार
- स्वतंत्रता- स्वतंत्र + ता

प्रश्न 3 निम्नलिखित उपसर्ग-प्रत्ययों की सहायता से दो-दो शब्द लिखिए-

उपसर्ग- अन्, अ, सत्, स्व, दुर्

प्रत्यय- दार, हार, वाला, अनीय

उत्तर- उपसर्ग-

- अन्- अन्वेषण, अनशन
- अ- असत्य, अन्याय
- सत्- सत्वरित्र, सत्कर्म



- स्व- स्वराज, स्वाधीन
- दुर्- दुर्जन, दुर्व्यवहार

प्रत्यय-

- दार- किनारेदार, दुकानदार
- हार- पालनहार, तारनहार
- वाला- फलवाला, मिठाईवाला
- अनीय- दर्शनीय, आदरनीय

प्रश्न 4 पाठ में आए सामासिक पद छाँटकर विग्रह कीजिए-

पूजा-पाठ	पूजा और पाठ
.....
.....
.....
.....

उत्तर-

सामासिक पद	विग्रह
परमधाम	परम है जो धाम
दुर्गापूजा	दुर्गा की पूजा
कुलदेवी	कुल की देवी
पंचतंत्र	पाँच तंत्रों का समूह
रोना-धोना	रोना और धोना
उर्दू-फारसी	उर्दू और फ़ारसी
चाची-ताई	चाची और ताई
छात्रावास	छात्रों के लिए आवास
कवि-सम्मेलन	कवियों का सम्मेलन
जेब-खर्च	जेब के लिए खर्च



**STEP UP
ACADEMY**



साखियाँ एवं सबद

-कबीर

सारांश

साखियाँ

मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं।
मुकताफल मुकता चुंगे, अब उड़ि अनत न जाहि। 1।

अर्थ – इस पंक्ति में कबीर ने व्यक्तियों की तुलना हंसों से करते हुए कहा है की जिस तरह हंस मानसरोवर में खेलते हैं और मोती चुगते हैं, वे उसे छोड़ कर्हीं नहीं जाना चाहते ठीक उसी तरह मनुष्य भी जीवन के मायाजाल में बंध जाता है और इसे ही सच्चाई समझने लगता है।

प्रेमी ढूँढ़ते मैं फिरौं, प्रेमी मिले न कोइ।
प्रेमी कौं प्रेमी मिलै, सब विष अमृत होइ। 2।

अर्थ – यहां कबीर यह कहते हैं की प्रेमी यानी ईश्वर को ढूँढना बहुत मुश्किल है। वे उसे ढूँढ़ते फिर रहे हैं परन्तु वह उन्हें मिल नहीं रहा है। प्रेमी रूपी ईश्वर मिल जाने पर उनका सारा विष यानी कष्ट अमृत यानी सुख में बदल जाएगा।

हस्ती चढ़िए ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झक मारि। 3।

अर्थ – यहां कबीर कहना चाहते हैं की व्यक्ति को ज्ञान रूपी हाथी की सवारी करनी चाहिए और सहज साधना रूपी गलीचा बिछाना चाहिए। संसार की तुलना कुत्तों से की गयी है जो आपके ऊपर भौंकते रहेंगे जिसे अनदेखा कर चलते रहना चाहिए। एक दिन वे स्वयं ही झक मारकर चुप हो जायेंगे।

पखापखी के कारनै, सब जग रहा भुलान।
निरपख होइ के हरि भजै, सोई संत सुजान। 4।

अर्थ – संत कबीर कहते हैं पक्ष-विपक्ष के कारण सारा संसार आपस में लड़ रहा है और भूल-भुलैया में पड़कर प्रभु को भूल गया है। जो व्यक्ति इन सब झंझटों में पड़े बिना निष्पक्ष होकर प्रभु भजन में लगा है वही सही अर्थों में मनुष्य है।

हिन्दू मूआ राम कहि, मुसलमान खुदाई।
कहै कबीर सो जीवता, दुहुँ के निकटि न जाइ। 5।

अर्थ – कबीर ने कहा है की हिन्दू राम-राम का भजन और मुसलमान खुदा-खुदा कहते मर जाते हैं, उन्हें कुछ हासिल नहीं होता। असल में वह व्यक्ति ही जीवित के समान है जो इन दोनों ही बातों से अपने आप को अलग रखता है।



काबा फिरि कासी भया, रामहिं भया रहीम।
मोट चुन मैदा भया, बैठी कबीरा जीम। 6।

अर्थ – कबीर कहते हैं की आप या तो काबा जाएँ या काशी, राम भंजे या रहीम दोनों का अर्थ समान ही है। जिस प्रकार गेहूं को पीसने से वह आटा बन जाता है तथा बारीक पीसने से मैदा परन्तु दोनों ही खाने के प्रयोग में ही लाए जाते हैं। इसलिए दोनों ही अर्थों में आप प्रभु के ही दर्शन करेंगें।

उच्चे कुल का जनमिया, जे करनी उच्च न होइ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधू निंदा सोई। 7।

अर्थ – इन पंक्तियों में कबीर कहते हैं की केवल उच्च कुल में जन्म लेने कुछ नहीं हो जाता, उसके कर्म ज्यादा मायने रखते हैं। अगर वह व्यक्ति बुरे कार्य करता है तो उसका कुल अनदेखा कर दिया जाता है, ठीक उसी प्रकार जिस तरह सोने के कलश में रखी शराब भी शराब ही कहलाती है।

सबद

मोको कहाँ ढूँढे बंदे, मैं तो तेरे पास में ।
ना मैं देवल ना मैं मस्जिद, ना काबे कैलास में ।
ना तो कौने क्रिया – कर्म में, नहीं योग वैराग में ।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पलभर की तलास में ।
कहें कबीर सुनो भई साधो, सब स्वासों की स्वास में॥

अर्थ – इन पंक्तियों में कबीरदास जी ने बताया है मनुष्य ईश्वर में चहुंओर भटकता रहता है। कभी वह मंदिर जाता है तो कभी मस्जिद, कभी काबा भ्रमण है तो कभी कैलाश। वह ईश्वर को पाने के लिए पूजा-पाठ, तंत्र-मंत्र करता है जिसे कबीर ने महज आडम्बर बताया है। इसी प्रकार वह अपने जीवन का सारा समय गुजार देता है जबकि ईश्वर सबकी साँसों में, हृदय में, आत्मा में मौजूद है, वह पलभर में मिल जा सकता है चूँकि वह कण-कण में व्याप्त है।

संतों भाई आई ग्याँन की आँधी रे ।
भ्रम की टाटी सबै उड़ानी, माया रहै न बाँधी ॥
हिति चित्त की द्वै थूँनी गिराँनी, मोह बलिण्डा तूटा ।
त्रिस्नाँ छाँनि परि घर ऊपरि, कुबुधि का भाण्डा फूटा ॥
जोग जुगति करि संतों बाँधी, निरचू चुवै न पाँणी ।
कूङ कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जाँणी ॥
आँधी पीछै जो जल बूठ, प्रेम हरि जन भींनाँ ।
कहै कबीर भाँन के प्रगटै, उदित भया तम खीनाँ ॥

अर्थ – इन पंक्तियों में कबीर जी ने ज्ञान की महत्ता को स्पष्ट किया है। उन्होंने ज्ञान की तुलना आँधी से करते हुए कहा है की जिस तरह आँधी चलती है तब कमजोर पड़ती हुई झोपड़ी की चारों ओर की दीवारे गिर जाती हैं, वह बंधन मुक्त हो जाती है



और खम्भे धराशायी हो जाते हैं उसी प्रकार जब व्यक्ति को ज्ञान प्राप्त होता है तब मन के सारे भ्रम दूर हो जाते हैं, सारे बंधन टूट जाते हैं।

छत को गिरने से रोकने वाला लकड़ी का टुकड़ा जो खम्भे को जोड़ता है वो भी टूट जाता है और छत गिर जाती है और रखा सामान नष्ट हो जाता है उसी प्रकार ज्ञान प्राप्त होने पर व्यक्ति स्वार्थ रहित हो जाता है, उसका मोह भंग हो जाता है जिससे उसके अंदर का लालच मिट जाता है और मन का समस्त विकार नष्ट हो जाते हैं। परन्तु जिनका घर मजबूत रहता है यानी जिनके मन में कोई कपट नहीं होती, साधू स्वभाव के होते हैं उन्हें आंधी का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

आंधी के बाद वर्षा से सारी चीजें धूल जाती हैं उसी तरह ज्ञान प्राप्ति के बाद मन निर्मल हो जाता है। व्यक्ति ईश्वर के भजन में लीन हो जाता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 'मानसरोवर' से कवि का क्या आशय है?

उत्तर- 'मानसरोवर' से कवि का आशय हृदय रुपी तालाब से है। जो हमारे मन में स्थित है।

प्रश्न 2 कवि ने सच्चे प्रेमी की क्या कसौटी बताई है?

उत्तर- कवि के अनुसार सच्चे प्रेमी की कसौटी यह है की उससे मिलने पर मन की सारी मलिनता नष्ट हो जाती है। पाप धूल जाते हैं और सदभावनाएँ जाग्रत हो जाती हैं।

प्रश्न 3 तीसरे दोहे में कवि ने किस प्रकार के ज्ञान को महत्त्व दिया है?

उत्तर- तीसरे दोहे में कवि ने अनुभव से प्राप्त ज्ञान को महत्त्व दिया है।

प्रश्न 4 इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है?

उत्तर- कबीर के अनुसार सच्चा संत वही कहलाता है जो साम्प्रदायिक भेदभाव, सांसारिक मोह माया से दूर, सभी स्तिथियों में समभाव (सुख दुःख, लाभ-हानि, ऊँच-नीच, अच्छा-बुरा) तथा निश्छल भाव से प्रभु भक्ति में लीन रहता है।

प्रश्न 5 अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीर ने किस तरह की संकीर्णताओं की ओर संकेत किया है?

उत्तर- अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीरदास जी ने समाज में व्याप्त धार्मिक संकीर्णताओं, समाज की जाति पाति की असमानता की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करने की चेष्टा की है।

प्रश्न 6 अंतिम दो दोहों के माध्यम से कबीरदास जी ने समाज में व्याप्त धार्मिक संकीर्णताओं, समाज की जाति पाति की असमानता की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करने की चेष्टा की है।

उत्तर- किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कर्मों से होती है। आज तक हजारों राजा पैदा हुए और मर गए। परन्तु लोग जिन्हें जानते हैं, वे हैं- राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर आदि। इन्हें इसलिए जाना गया क्योंकि ये केवल कुल से ऊँचे नहीं थे, बल्कि इन्होंने ऊँचें कर्म किए। इनके विपरीत कबीर, सूर, युन्सी बहुत सामान्य घरों से थे। इन्हें बचपन में ठोकरें भी कहानी पड़ीं। परन्तु फिर भी वे अपने श्रेष्ठ कर्मों के आधार पर संसार-भर में प्रसिद्ध हो गए। इसलिए हम कह सकते हैं कि महत्त्व ऊँचे कर्मों का होता है, कुल का नहीं।

प्रश्न 7 काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

हस्ती चढ़िये ज्ञान कौ, सहज दुलीचा डारि।

स्वान रूप संसार है, भूँकन दे झाँख मारि।



उत्तर- प्रस्तुत दोहे में कबीरदास जी ने ज्ञान को हाथी की उपमा तथा लोगों की प्रतिक्रिया को स्वान (कुत्ते) का भौंकना कहा है। यहाँ रूपक अलंकार का प्रयोग किया गया है। दोहा छंद का प्रयोग किया गया है। यहाँ सधुककड़ी भाषा का प्रयोग किया गया है। यहाँ शास्त्रीय ज्ञान का विरोध किया गया है तथा सहज ज्ञान को महत्व दिया गया है।

प्रश्न 8 मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ ढूँढता फिरता है?

उत्तर- हिन्दू अपने ईश्वर को मंदिर तथा पवित्र तीर्थ स्थलों में ढूँढता है तो मुस्लिम अपने अल्लाह को काबे या मस्जिद में और मनुष्य ईश्वर को योग, वैराग्य तथा अनेक प्रकार की धार्मिक क्रियाओं में खोजता फिरता है।

प्रश्न 9 कबीर ने ईश्वर-प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है?

उत्तर- कबीर ने समाज द्वारा ईश्वर-प्राप्ति के लिए किए गए प्रयत्नों का खंडन किया है। वे इस प्रकार हैं-

- कबीरदास जी के अनुसार ईश्वर की प्राप्ति मंदिर या मस्जिद में जाकर नहीं होती।
- ईश्वर प्राप्ति के लिए कठिन साधना की आवश्यकता नहीं है।
- कबीर ने मूर्ति-पूजा जैसे बाह्य-आडम्बर का खंडन किया है। कबीर ईश्वर को निराकार ब्रह्म मानते थे।
- कबीर ने ईश्वर की प्राप्ति के लिए योग-वैराग (सन्यास) जीवन का विरोध किया है।

प्रश्न 10 कबीर ने ईश्वर को सब स्वाँसों की स्वाँस में क्यों कहा है?

उत्तर- 'सब स्वाँसों की स्वाँस में' से कवि का तात्पर्य यह है कि ईश्वर कण-कण में व्याप्त हैं, सभी मनुष्यों के अंदर हैं। जब तक मनुष्य की साँस (जीवन) है तब तक ईश्वर उनकी आत्मा में है।

प्रश्न 11 कबीर ने ज्ञान के आगमन की तुलना सामान्य हवा से न कर आँधी से क्यों की?

उत्तर- कबीर ने ज्ञान के आगमन की तुलना सामान्य हवा से न कर आँधी से की है क्योंकि सामान्य हवा में स्थिति परिवर्तन की क्षमता नहीं होती है। परन्तु हवा तीव्र गति से आँधी के रूप में जब चलती है तो स्थिति बदल जाती है। आँधी में वो क्षमता होती है कि वो सब कुछ उड़ा सके। ज्ञान में भी प्रबल शक्ति होती है जिससे वह मनुष्य के अंदर व्याप्त अज्ञानता के अंदरकार को दूर कर देती है।

प्रश्न 12 ज्ञान की आँधी का भक्ति के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- ज्ञान की आँधी का मनुष्य के जीवन पर यह प्रभाव पड़ता है कि उसके सारी शंकाए और अज्ञानता का नाश हो जाता है। वह मोह के सांसारिक बंधनों से मुक्त हो जाता है। मन पवित्र तथा निश्छल होकर प्रभु भक्ति में तल्लीन हो जाता है।

प्रश्न 13 भाव स्पष्ट कीजिए-

- हिति चिन की द्वै थूँनी गिराँनी, मोह बलिंडा तूटा।
- आँधी पीछे जो जल बूठा, प्रेम हरि जन भीनाँ।

उत्तर-

- ज्ञान की आँधी ने स्वार्थ तथा मोह दोनों स्तम्भों को गिरा कर समाप्त कर दिया तथा मोह रुपी छत को उड़ाकर चित्त को निर्मल कर दिया।
- ज्ञान की आँधी के पश्चात् जो जल बरसा उस जल से मन हरि अर्थात् ईश्वर की भक्ति में भीग गया।

रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

प्रश्न 1 संकलित साखियों और पदों के आधार पर कबीर के धार्मिक और सांप्रदायिक सद्व्याव सम्बन्धी विचारों पर प्रकाश डालिए।





उत्तर- कबीर ने अपने विचारों द्वारा जन मानस की आँखों पर धर्म तथा संप्रदाय के नाम पर पड़े परदे को खोलने का प्रयास किया है। उन्होंने हिंदु- मुस्लिम एकता का समर्थन किया तथा धार्मिक कुप्रथाओं जैसे मूर्तिपूजा का विरोध किया है। ईश्वर मंदिर, मस्जिद तथा गुरुद्वारे में नहीं होते हैं बल्कि मनुष्य की आत्मा में व्याप्त हैं। कबीर ने हर एक मनुष्य को किसी एक मत, संप्रदाय, धर्म आदि में न पड़ने की सलाह दी है। ये सारी चीजें मनुष्य को राह से भटकाने तथा बँटवारे की ओर ले जाती हैं अतः कबीर के अनुसार हमें इन सब चक्करों में नहीं पड़ना चाहिए। मनुष्य को चाहिए की वह निष्काम तथा निश्छल भाव से प्रभु की आराधना करें।

भाषा- अध्ययन प्रश्न

प्रश्न 1 निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-
पखापखी, अनत, जोग, जुगति, बैराग, निरपर्ख

उत्तर-

- i. **पखापखी**- पक्ष-विपक्ष
- ii. **अनत**- अन्यत्र
- iii. **जोग**- योग
- iv. **जुगति**- युक्ति
- v. **बैराग**- वैराग्य
- vi. **निरपर्ख**- निष्पक्ष



**STEP UP
ACADEMY**



वारख

-ललद्यद

सारांश

रस्सी कच्चे धागे की खींच रही मैं नाव

जाने कब सुन मेरी पुकार, करें देव भवसागर पार,
पानी टपके कच्चे सकोरे, व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे,
जी मैं उठती रह-रह हूक, घर जाने की चाह है धेरे।

व्याख्या – प्रस्तुत पंक्तियों में कवियत्री ने नाव की तुलना अपने जिंदगी से करते हुए कहा है की वे इसे कच्ची डोरी यानी साँसों द्वारा चला रही हैं। वह इस इंतजार में अपनी जिंदगी काट रही हैं की कभी प्रभु उनकी पुकार सुन उन्हें इस जिंदगी से पार करेंगे। उन्होंने अपने शरीर की तुलना मिट्टी के कच्चे ढांचे से करते हुए कहा की उसे नित्य पानी टपक रहा है यानी प्रत्येक दिन उनकी उम्र काम होती जा रही है। उनके प्रभु-मिलन के लिए किये गए सारे प्रयास व्यर्थ होते जा रहे हैं, उनकी मिलने की व्याकुलता बढ़ती जा रही है। असफलता प्राप्त होने से उनको गिलानी हो रही है, उन्हें प्रभु की शरण में जाने की चाहत धेरे हुई है।

खा खा कर कुछ पाएगा नहीं,

न खाकर बनेगा अहंकारी,

सम खा तभी होगा समभावी,

खुलेगी साँकल बन्द द्वार की।

व्याख्या – इन पंक्तियों में कवियत्री ने जीवन में संतुलनता की महत्ता को स्पष्ट करते हुए कहा है की केवल भोग-उपभोग में लिप्त रहने से कुछ किसी को कुछ हासिल नहीं होगा, वह दिन-प्रतिदिन स्वार्थी बनता जाएगा। जिस दिन उसने स्वार्थ का त्याग कर त्यागी बन गया तो वह अहंकारी बन जाएगा जिस कारण उसका विनाश हो जाएगा। अगले पंक्तियों में कवियत्री ने संतुलन पे जोर डालते हुए कहा है की न तो व्यक्ति को ज्यादा भोग करना चाहिए ना ही त्याग, दोनों को बराबर मात्रा में रखना चाहिए जिससे समभाव उत्पन्न होगा। इस कारण हमारे हृदय में उदारता आएगी और हम अपने-पराये से उठकर अपने हृदय का द्वार समस्त संसार के लिए खोलेंगे।

आई सीधी राह से, गई न सीधी राह,

सुषुम सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह।

ज़ेब टटोली कौड़ी ना पाई

माँझी को दूँ क्या उतराई।

व्याख्या – इन पंक्तियों में कवियत्री ने अपने पश्चाताप को उजागर किया है। अपने द्वारा पमात्मा से मिलान के लिए सामान्य भक्ति मार्ग को ना अपनाकर हठयोग का सहारा लिया। अर्थात् उसने भक्ति रूपी सीढ़ी को ना चढ़कर कुण्डलिनी योग को



जागृत कर परमात्मा और अपने बीच सीधे तौर पर सेतु बनाना चाहती थी। परन्तु वह अपने इस प्रयास में लगातार असफल होती रही और साथ में आयु भी बढ़ती गयी। जब उसे अपनी गलती का अहसास हुआ तब तक बहुत देर हो चुकी थी और उसकी जीवन की संध्या नजदीक आ गयी थी अर्थात् उसकी मृत्यु करीब थी। जब उसने अपने जिंदगी का लेख जोखा कि तो पाया कि वह बहुत दरिद्र है और उसने अपने जीवन में कुछ सफलता नहीं पाया या कोई पुण्य कर्म नहीं किया और अब उसके पास कुछ करने का समय भी नहीं है। अब तो उसे परमात्मा से मिलान हेतु भक्ति भवसागर के पार ही जाना होगा। पार पाने के लिए परमात्मा जब उससे पार उत्तराई के रूप में उसके पुण्य कर्म मांगेगे तो वह ईश्वर को क्या मुँह दिखाएगी और उन्हें क्या देगी क्योंकि उसने तो अपनी पूरी जिंदगी ही हठयोग में बिता दिया। उसने अपनी जिंदगी में ना कोई पुण्य कर्म कमाया और ना ही कोई उदारता दिखाई। अब कवियित्री अपने इस अवस्था पर पूर्ण पछतावा हो रहा है पर इससे अब कोई मोल नहीं क्योंकि जो समय एक बार चला जाता है वो वापिस नहीं आता। अब पछतावा के अलावा वह कुछ नहीं कर सकती।

थल थल में बसता है शिव हीभेद न कर क्या हिन्दू मुसलमाँ,

ज्ञानी है तो स्वयं को जान,

यही है साहिब से पहचान।

व्याख्या – इन पंक्तियों में कवियित्री ने बताया है कि ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, वह सबके हृदय के अंदर मौजूद है। इसलिए हमें किसी व्यक्ति से हिन्दू-मुसलमान जानकार भेदभाव नहीं करना चाहिए। अगर कोई ज्ञानी तो उसे स्वयं के अंदर झाँककर अपने आप को जानना चाहिए, यही ईश्वर से मिलने का एकमात्र साधन है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 'रस्सी' यहाँ किसके लिए प्रयुक्त हुआ है और वह कैसी है?

उत्तर- यहाँ रस्सी से कवियित्री का तात्पर्य स्वयं के इस नाशवान शरीर से है। उनके अनुसार यह शरीर सदा साथ नहीं रहता। यह कच्चे धागे की भाँति है जो कभी भी साथ छोड़ देता है और इसी कच्चे धागे से वह जीवन नैया पार करने की कोशिश कर रही है।

प्रश्न 2 कवियित्री द्वारा मुक्ति के लिए किए जाने वाले प्रयास व्यर्थ क्यों हो रहे हैं?

उत्तर- कवियित्री के कच्चेपन के कारण उसके मुक्ति के सारे प्रयास विफल हो रहे हैं अर्थात् उसमें अभी पूर्ण रूप से प्रौढ़ता नहीं आई है जिसकी वजह से उसके प्रभु से मिलने के सारे प्रयास व्यर्थ हैं। वह कच्ची मिट्टी के उस बर्तन की तरह है जिसमें रखा जल टपकता

रहता है और यही दर्द उसके हृदय में दुःख का संचार करता रहा है, उसके प्रभु से उसे मिलने नहीं दे रहा।

प्रश्न 3 कवियित्री का 'घर जाने की चाह' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- कवियित्री का घर जाने की चाह से तात्पर्य है प्रभु से मिलना। कवियित्री इस भवसागर को पार करके अपने परमात्मा की शरण में जाना चाहती है।

प्रश्न 4 भाव स्पष्ट कीजिए-

i. जेब टटोली कौड़ी न पाई।

ii. खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं,
न खाकर बनेगा अंहकारी।

उत्तर-

i. कवियित्री कहती है कि इस संसार में आकर वह सांसारिकता में उलझकर रह गयी और जब



अंत समय आया और जेब टटोली तो कुछ भी हासिल न हुआ अब उसे चिंता सता रही है कि भवसागर पार करानेवाले माझी अर्थात् ईश्वर को उत्तरार्ड के रूप में क्या देगी।

ii. प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री मनुष्य को ईश्वर प्राप्ति के लिए मध्यम मार्ग अपनाने को कह रही है। कवयित्री कहती है कि मनुष्य को भोग विलास में पड़कर कुछ भी प्राप्त होने वाला नहीं है। मनुष्य जब सांसारिक भोगों को पूरी तरह से त्याग देता है तब उसके मन में अंहकार की भावना पैदा हो जाती है। अतः भोग त्याग, सुख-दुःख के मध्य का मार्ग अपनाने की बात यहाँ पर कवयित्री कर रही है।

प्रश्न 5 बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए ललद्यद ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर- कवयित्री के अनुसार ईश्वर को अपने अन्तःकरण में खोजना चाहिए। जिस दिन मनुष्य के हृदय में ईश्वर भक्ति जागृत हो गई अज्ञानता के सारे अंधकार स्वयं ही समाप्त हो जाएँगे। जो दिमाग इन सांसारिक भोगों को भोगने का आदी हो गया है और इसी कारण उसने ईश्वर से खुद को विमुख कर लिया है, प्रभु को अपने हृदय में पाकर स्वतः ही ये साँकल (जंजीरे) खुल जाएँगी और प्रभु के लिए द्वार के सारे रास्ते मिल जाएँगे। इसलिए सच्चे मन से प्रभु की साधना करो, अपने अन्तःकरण व बाह्य इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर हृदय में प्रभु का जाप करो, सुख व दुःख को समान भाव से भोगों। यही उपाय कवियत्री ने सुझाए हैं।

प्रश्न 6 ईश्वर प्राप्ति के लिए बहुत से साधक हठयोग जैसी कठिन साधना भी करते हैं, लेकिन उससे भी लक्ष्य प्राप्ति नहीं होती। यह भाव किन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है?

उत्तर- आई सीधी राह से, गई न सीधी राह। सुषम-सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह! जेब टटोली, कौड़ी न पाई। माझी को ढूँ क्या उत्तरार्ड?

प्रश्न 7 'जानी' से कवयित्री का अभिप्राय है?

उत्तर- यहाँ कवयित्री ने जानी से अभिप्राय उस ज्ञान को लिया है जो आत्मा व परमात्मा के सम्बन्ध को जान सके ना कि उस ज्ञान से जो हम शिक्षा द्वारा अर्जित करते हैं। कवयित्री के अनुसार भगवान कण-कण में व्याप्त हैं पर हम उसको धर्मों में विभाजित कर मंदिरों व मस्जिदों में ढूँढते हैं। जो अपने अन्तःकरण में बसे ईश्वर के स्वरूप को जान सके वही ज्ञानी कहलाता है और वहीं उस परमात्मा को प्राप्त करता है। तात्पर्य यह है कि ईश्वर को अपने ही हृदय में ढूँढ़ना चाहिए और जो उसे ढूँढ़ लेते हैं वही सच्चे ज्ञानी हैं।

रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

प्रश्न 1 हमारे संतों, भक्तों और महापुरुषों ने बार-बार चेताया है कि मनुष्यों में परस्पर किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता, लेकिन आज भी हमारे समाज में भेदभाव दिखाई देता है-

- आपकी दृष्टि में इस कारण देश और समाज को क्या हानि हो रही है?
- आपसी भेदभाव को मिटाने के लिए अपने सुझाव दीजिए।

उत्तर-

- समाज में व्याप्त भेदभाव के कारण निम्न हानियों हो रही है-
 - हिंदू-मुस्लिम का झगड़ा इसी भेदभाव की उपज है जिसके परिणाम स्वरूप भारत पाकिस्तान दो देश बने।



- भेदभाव के कारण ही उच्च और निम्न वर्ग में सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाता।
 - पर्वों के समय अनायास झगड़े की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
 - आपसी भेदभाव के कारण ही एक वर्ग दूसरे वर्ग को संदेह और अविश्वास की वृष्टि से देखता है।
 - भेदभाव की उपज से अलगाववाद, उग्रवाद जैसी सामाजिक समस्याएँ पैदा होती हैं।
- ii. आपसी भेदभाव को मिटाने के लिए निम्न सुझाव अपनाए जा सकते हैं-
- आपसी भेदभाव को मिटाने के लिए निम्न सबसे पहले उन बातों की चर्चा ही न करें जिससे यह भेदभाव उपजता हो।
 - सरकार अपनी नीतियों के द्वारा आपसी जाति भेदभाव को बढ़ावा न दें।
 - राजनैतिक दल अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए लोगों की धार्मिक भावनाओं का सहारा न ले।
 - नौकरियों, शिक्षा तथा अन्य किसी भी सरकारी योजनाओं में आरक्षण को बढ़ावा न देकर योग्यता को आधार बनाना चाहिए।
 - स्कूली पाठ्यक्रम भी एकता समता पर आधारित हों।





सवैये

-रसखान

सारांश

मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
 जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझारन॥
 पाहन हौं तो वही गिरि को जो कियो हरिछत्र पुरंदर धारन।
 जौ खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन।

रसखान के सवैये भावार्थ :- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि रसखान के श्री कृष्ण एवं उनके गांव गोकुल-ब्रज के प्रति लगाव का वर्णन हुआ है। रसखान मानते हैं कि ब्रज के कण-कण में श्री कृष्ण बसे हुए हैं। इसी वजह से वे अपने प्रत्येक जन्म में ब्रज की धरती पर जन्म लेना चाहते हैं। अगर उनका जन्म मनुष्य के रूप में हो, तो वो गोकुल के ग्वालों के बीच में जन्म लेना चाहते हैं। पशु के रूप में जन्म लेने पर, वो गोकुल की गायों के साथ घूमना-फिरना चाहते हैं।

अगर वो पत्थर भी बनें, तो उसी गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनना चाहते हैं, जिसे श्री कृष्ण ने इन्द्र के प्रकोप से गोकुलवासियों को बचाने के लिए अपनी ऊँगली पर उठाया था। अगर वो पक्षी भी बनें, तो वो यमुना के तट पर कदम्ब के पेड़ों में रहने वाले पक्षियों के साथ रहना चाहते हैं। इस प्रकार कवि चाहे कोई भी जन्म लें, वो रहना ब्रज की भूमि पर ही चाहते हैं।

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
 आठहूँ सिद्धि नवौ निधि के सुख नंद की गाइ चराइ बिसारौं॥
 रसखान कबौं इन आँखिन सौं, ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।
 कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वरौं॥

रसखान के सवैये भावार्थ :- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि रसखान का भगवान श्री कृष्ण एवं उनसे जुड़ी वस्तुओं के प्रति बड़ा गहरा लगाव देखने को मिलता है। वे कृष्ण की लाठी और कंबल के लिए तीनों लोकों का राज-पाठ तक छोड़ने के लिए तैयार हैं। अगर उन्हें नन्द की गायों को चराने का मौका मिले, तो इसके लिए वो आठों सिद्धियों एवं नौ निधियों के सुख को भी त्याग सकते हैं। जब से कवि ने ब्रज के वनों, बगीचों, तालाबों इत्यादि को देखा है, वे इनसे दूर नहीं रह पा रहे हैं। जब से कवि ने करील की झाड़ियों और वन को देखा है, वो इनके ऊपर करोड़ों सोने के महल भी न्योछावर करने के लिए तैयार हैं।

मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरें पहिरेंगी।
 ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारनि संग फिरेंगी॥
 भावतो वोहि मेरो रसखानि सौं तेरे कहे सब स्वांग करौंगी।
 या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी॥



रसखान के सर्वैये भावार्थ :- प्रस्तुत पंक्तियों में रसखान ने कृष्ण से अपार प्रेम करने वाली गोपियों के बारे में बताया है, जो एक-दूसरे से बात करते हुए कह रही हैं कि वो कान्हा द्वारा उपयोग की जाने वाली वस्तुओं की मदद से कान्हा का रूप धारण कर सकती हैं। मगर, वो कृष्ण की मुरली को धारण नहीं करेंगी। यहाँ गोपियाँ कह रही हैं कि वे अपने सिर पर श्री कृष्ण की तरह मोरपंख से बना मुकुट पहन लेंगी। अपने गले में कुंज की माला भी पहन लेंगी। उनके सामान पीले वस्त्र पहन लेंगी और अपने हाथों में लाठी लेकर वन में ग्वालों के संग गायें चराएंगी।

गोपी कह रही है कि कृष्ण हमारे मन को बहुत भाते हैं, इसलिए मैं तुम्हारे कहने पर ये सब कर लूँगी। मगर, मुझे कृष्ण के होठों पर रखी हुई मुरली अपने होठों से लगाने के लिए मत बोलना, क्योंकि इसी मुरली की वजह से कृष्ण हमसे दूर हुए हैं। गोपियों को लगता है कि श्री कृष्ण मुरली से बहुत प्रेम करते हैं और उसे हमेशा अपने होठों से लगाए रहते हैं, इसीलिए वे मुरली को अपनी सौतन या सौत की तरह देखती हैं।

काननि दै अँगुरी रहिबो जबहीं मुरली धुनि मंद बजैहै।

मोहनी तानन सों रसखानि अटा चढ़ि गोधन गैहै तौ गैहै॥

टेरि कहों सिगरे ब्रजलोगनि काल्हि कोऊ कितनो समुझैहै।

माइ री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै, न जैहै, न जैहै॥

रसखान के सर्वैये भावार्थ :- रसखान ने इन पंक्तियों में गोपियों के कृष्ण प्रेम का वर्णन किया है, वो चाहकर भी कृष्ण को अपने दिलो-दिमाग से निकल नहीं सकती हैं। इसीलिए वे कह रही हैं कि जब कृष्ण अपनी मुरली बजाएंगे, तो वो उससे निकलने वाली मधुर ध्वनि को नहीं सुनेंगी। वो सभी अपने कानों पर हाथ रख लेंगी। उनका मानना है कि भले ही, कृष्ण किसी महल पर चढ़ कर, अपनी मुरली की मधुर तान क्यों न बजायें और गीत ही क्यों न गाएं, जब तक वो उसे नहीं सुनेंगी, तब तक उन पर मधुर तानों का कोई असर नहीं होने वाला।

लेकिन अगर गलती से भी मुरली की मधुर ध्वनि उनके कानों में चली गई, तो फिर हम अपने वश में नहीं रह पाएंगी। फिर चाहे हमें कोई कितना भी समझाए, हम कुछ भी समझ नहीं पाएंगी। गोपियों के अनुसार, कृष्ण की मुस्कान इतनी प्यारी लगती है कि उसे देख कर कोई भी उनके वश में आए बिना नहीं रह सकता है। इसी कारणवश, गोपियाँ कह रही हैं कि श्री कृष्ण का मोहक मुख देख कर, उनसे खुद को बिल्कुल भी संभाला नहीं जाएगा। वो सारी लाज-शर्म छोड़कर श्री कृष्ण की ओर खिंची चली जाएँगी।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 ब्रजभूमि के प्रति कवि का प्रेम किन-किन रूपों में अभिव्यक्त हुआ है?

उत्तर- रसखान जी अगले जन्म में ब्रज के गाँव में ग्वाले के रूप में जन्म लेना चाहते हैं ताकि वह वहाँ की गायों को चराते हुए श्री कृष्ण की जन्मभूमि में अपना

जीवन व्यतीत कर सकें। श्री कृष्ण के लिए अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करते हुए वे आगे व्यक्त करते हैं कि वे यदि पशु रूप में जन्म लें तो गाय बनकर ब्रज में चरना चाहते हैं ताकि वासुदेव की गायों के बीच घूमें व ब्रज का आनंद प्राप्त कर सकें और यदि



वह पत्थर बने तो गोवर्धन पर्वत का ही अंश बनना चाहेंगे क्योंकि श्री कृष्ण ने इस पर्वत को अपनी अंगुली में धारण किया था। यदि उन्हें पक्षी बनने का सौभाग्य प्राप्त होगा तो वहाँ के कदम्ब के पेड़ों पर निवास करें ताकि श्री कृष्ण की खेल क्रीड़ा का आनंद उठा सकें। इन सब उपायों द्वारा वह श्री कृष्ण के प्रति अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करना चाहते हैं।

प्रश्न 2 कवि का ब्रज के वन, बाग और तालाब को निहारने के पीछे क्या कारण हैं?

उत्तर- कवि का ब्रज के वन, बाग और तालाब को इसलिए निहारना चाहता है क्योंकि इसके साथ कृष्ण की यादें जुड़ी हुई हैं। कभी कृष्ण इन्हीं में विहार किया करते थे। इसलिए कवि उन्हें देखकर धन्य हो जाते हैं।

प्रश्न 3 एक लकुटी और कामरिया पर कवि सब कुछ न्योछावर करने को क्यों तैयार हैं?

उत्तर- श्री कृष्ण रसखान जी के आराध्य देव हैं। उनके द्वारा डाले गए कंबल और पकड़ी हुई लाठी उनके लिए बहुत मूल्यवान है। श्री कृष्ण लाठी व कंबल डाले हुए ग्वाले के रूप में सुशोभित हो रहे हैं। जो कि संसार के समस्त सुखों को मात देने वाला है और उन्हें इस रूप में देखकर वह अपना सब कुछ न्योछावर करने को तैयार हैं। भगवान के द्वारा धारण की गई वस्तुओं का मूल्य भक्त के लिए परम सुखकारी होता है।

प्रश्न 4 सखी ने गोपी से कृष्ण का कैसा रूप धारण करने का आग्रह किया था ? अपने शब्दों में वर्णन कीजिये।

उत्तर- सखी गोपी से कृष्ण का मोहक रूप धारण करने का आग्रह करती है। सखी गोपी से वही सब कुछ धारण करने के लिए कहती है जो कृष्ण धारण करते हैं, सखी ने गोपी से आग्रह किया था कि वह कृष्ण के समान सिर पर मोरपंखों का मुकुट धारण करें। गले में गुंजों की माला पहने। तन पर पीले वस्त्र पहने। हाथों में लाठी थामे वन में गायों को चराने जाए।

प्रश्न 5 आपके विचार से कवि पशु, पक्षी और पहाड़ के रूप में भी कृष्ण का सान्निध्य क्यों प्राप्त करना चाहता है?

उत्तर- श्रीकृष्ण कवि के आराध्य देव हैं। वे सदैव उनका सान्निध्य चाहता है। पहाड़ को अपनी अंगुली में उठाकर कृष्ण ने उसे अपने समीप रखा था। पशु-पक्षी सदैव कृष्ण के प्रिय रहे हैं। अतः वे इनके माध्यम से सरलतापूर्वक भगवान श्रीकृष्ण का सान्निध्य प्राप्त कर सकता है। इनके माध्यम से अपने आराध्य देव की लीलाओं का रसपान कर सकता है। अन्य साधनों से प्रभु का साथ मिल पाने में कठिनाई हो सकती है परन्तु इनके माध्यम से सरलतापूर्वक प्रभु का सान्निध्य मिल जाएगा। इसलिए वे पशु, पक्षी तथा पहाड़ बनकर ही प्रभु का सान्निध्य चाहता है।

प्रश्न 6 चौथे सवैये के अनुसार गोपियाँ अपने आप को क्यों विवश पाती हैं?

उत्तर- चौथे सवैये के अनुसार कृष्ण का रूप अत्यंत मोहक है तथा उनकी मुरली की धुन बड़ी मादक है। इन दोनों से बचना गोपियों के लिए अत्यंत कठिन है। गोपियाँ कृष्ण की सुन्दरता तथा तान पर आसक्त हैं इसलिए वे कृष्ण के समक्ष विवश हो जाती हैं।

प्रश्न 7 भाव स्पष्ट कीजिए –

- कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारों।
- माइ री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै, न जैहै, न जैहै।

उत्तर-

- भाव यह है कि रसखान जी ब्रज की काँटेदार झाड़ियों व कुंजन पर सोने के महलों का सुख न्योछावर करदेना चाहते हैं। अर्थात् जो सुख ब्रज की प्राकृतिक सौंदर्य को निहारने में है वह सुख सांसारिक वस्तुओं को निहारने में दूर-दूर तक नहीं है।



ii. भाव यह है कि कृष्ण की मुस्कान इतनी मोहक है कि गोपी से वह झेली नहीं जाती है अर्थात् कृष्ण की मुस्कान पर गोपी इस तरह मोहित हो जाती है कि लोक लाज का भी भय उनके मन में नहीं रहता और गोपी कृष्ण की तरफ खीची चली जाती है।

प्रश्न 8 'कालिंदी कूल कदम्ब की डारन' में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर- 'कालिंदी कूल कदम्ब की डारन' में 'क' वर्ण की आवृत्ति होने के कारण अनुप्रास अलंकार है।

प्रश्न 9 काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।

उत्तर- इस छंद में गोपी अपनी दूसरी सखी से श्री कृष्ण की भाँति वेशभूषा धारण करने का आग्रह करती है। वह कहती है तू श्री कृष्ण की भाँति सिर पर मोर मुकुट व गले में गुंज की माला धारण कर, शरीर पर पीताम्बर वस्त्र पहन व हाथ में लाठी डाल कर मुझे दिखा ताकि मैं श्री कृष्ण के रूप का रसपान कर सकूँ। उसकी सखी उसके आग्रह पर सब करने को तैयार हो जाती है परन्तु श्री कृष्ण की मुरली को अपने होठों से लगाने को तैयार नहीं होती। उसके अनुसार उसको ये मुरली सौत की तरह प्रतीत होती है और वो अपनी सौत रूपी मुरली को अपने होठों से लगाने नहीं देना चाहती।

यहाँ पर 'ल' वर्ण और 'म' वर्ण की एक से अधिक बार आवृत्ति हुई है इस कारण यहाँ अनुप्रास अलंकार है। छंद में सर्वैया छंद का प्रयोग हुआ है तथा ब्रज भाषा का सुंदर प्रयोग हुआ है जिससे छंद की छटा ही निराली हो जाती है। साथ में माधुर्य गुण का समावेश हुआ है।

रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

प्रश्न 1 प्रस्तुत सर्वैयों में जिस प्रकार ब्रजभूमि के प्रति प्रेम अभिव्यक्त हुआ है, उसी तरह आप अपनी मातृभूमि के प्रति अपने मनोभावों को अभिव्यक्त कीजिए।

उत्तर- मुझे अपनी मातृभूमि से प्यार है। हम इसकी धूल में खेलकर, इसका अन्न जल पीकर बड़े हुए हैं अतः हमारा भी फ़र्ज बनता है कि हम अपनी मातृभूमि का कर्ज अदा करें। इसलिए जब भी मौका मिलेगा तब - तब मैं अपनी मातृभूमि के लिए अपना त्याग देने के लिए तैयार रहूँगा। मैं ऐसा कोई कार्य नहीं करूँगा जिससे मेरी मातृभूमि का सिर नीचा हो। जहाँ तक संभव होगा मैं अपनी मातृभूमि के उत्थान के लिए प्रयास करूँगा।

प्रश्न 2 रसखान के इन सर्वैयों का शिक्षक की सहायता से कक्षा में आदर्श वाचन कीजिये। साथ ही किन्हीं दो सर्वैयों को कंठस्थ कीजिये।

उत्तर- छात्र स्वयं करने का प्रयत्न करे।





कैदी और कोकिला

-माखनलाल चतुर्वेदी

सारांश

यह आजादी से पूर्व की कविता है। इसमें कवि ने अंग्रेजों के अत्याचारों का लिखित चित्रण किया है। स्वतंत्रता सेनानियों के यातनाओं को प्रदर्शित करने के लिए कवि ने कोयल का सहारा लिया है। जेल में बैठा एक कैदी कोयल को अपने दुःखों के बारे में बतला रहा है। अँगरेज उसे चोर, डाकू और बदमाशों के बीच डाले हुए हैं, भर पेट खाना भी नहीं दिया जाता है। उन्होंने अंग्रेजों के शासन को काला शासन कहा है। जहाँ उन्होंने बताया है कि यह वक्त अब मधुर गीत सुनाने का नहीं बल्कि आजादी के गीत सुनाने का है। कवि ने कोयल चाहा है कि वह स्वतंत्र नभ में जाकर गुलामी के खिलाफ लड़ने के लिए लोगों को प्रेरित करे।

कैदी और कोकिला कविता का अर्थ

क्या गाती हो ?क्यों रह-रह जाती हो ?कोकिल बोलो तो !क्या लाती हो ?संदेशा किसका है ?कोकिल बोलो तो !

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि ‘माखनलाल चतुर्वेदी’ जी के द्वारा रचित कविता ‘कैदी और कोकिला’ से ली गई हैं। कवि के द्वारा जेल में बंद स्वतंत्रता सेनानी की मनोदशा और पीड़ा को व्यक्त किया गया है। जब कोयल कवि को अद्वारात्री में चीखती-गाती हुई नज़र आई, तो उनके मन में कई तरह के भावपूर्ण प्रश्न उत्पन्न होने लगे कि कोयल उनके लिए कोई प्रेरणात्मक संदेश लेकर आयी होगी। जब कवि से रहा नहीं गया तो वे कोयल से प्रश्न पूछने लगते हैं –

कोकिल ! तुम क्या गा रही हो ? आखिर गाते-गाते बीच में चुप क्यों हो जाती हो ? मुझे भी बताओ | क्या तुम मेरे लिए कोई संदेशा लेकर आई हो ? मुझे बताओ, किसका संदेशा है ? कोकिल ! मुझे भी बताओ |

ऊँची काली दीवारों के धेरे में,डाकू, चोरों, बटमारों के डेरे में,जीने को देते नहीं पेट-भर खाना मरने भी देते नहीं,

तड़प रह जाना!जीवन पर अब दिन-रात कड़ा पहरा है,शासन है, या तम का प्रभाव गहरा है ?

हिमकर निराश कर चला रात भी काली,इस समय कालिमामयी जगी क्यूँ आली ?

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि ‘माखनलाल चतुर्वेदी’ जी के द्वारा रचित कविता ‘कैदी और कोकिला’ से ली गई हैं। इन पंक्तियों में कवि ने पराधीन भारतीयों के प्रति ब्रिटिश शासन की क्रूरता को उजागर करने का प्रयास किया है। कवि एक स्वतंत्रता सेनानी और कैदी के रूप में जेल के भीतर उनके साथ होने वाले अत्याचार को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि उन्हें जेल के भीतर अंधकारमय ऊँची दीवारों के धेरे में रख दिया गया है, जहाँ अपमानित होकर डाकू, चोरों, लुटेरों के साथ रहना पड़ता है। न जीने के लिए पेट भर खाना नसीब होता है और न ही मरने की छूट दी जाती है। ज़ख्मी शरीर को तड़पता हुआ छोड़ देना ही शासन का उद्देश्य है शायद। कैदियों की स्वतंत्रता छीनकर रात-दिन का कड़ा पहरा लगा दिया गया है। जब कवि आसमान की ओर देखते हैं, तो आशा रूपी चन्द्रमा नहीं दिखाई देता, बल्कि अंधकार रूपी निराशा हाथ लगती है। तभी कवि कोयल को संबोधित करते हुए कहते हैं कि – “हे कोयल ! इतनी काली घनघोर रात में तू क्यूँ जाग रही है ? मुझे भी बताओ।”



क्यों हूक पड़ी ? वेदना बोझ वाली-सी, कोकिल बोलो तो ! क्या लूटा ?

मृदुल वैभव कीरखवाली-सी, कोकिल बोलो तो !

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि ‘माखनलाल चतुर्वेदी’ जी के द्वारा रचित कविता ‘कैदी और कोकिला’ से ली गई हैं | जेल में कैद भारतीयों की वेदनाओं का एहसास कोयल को भी था | शायद इसलिए कोयल की आवाज में कवि ने दर्द महसूस किया | उन्हें लगा कि कोयल ने अँग्रेजी हुकूमत के द्वारा भारतीयों पर किए जाने वाले अत्याचार को देख लिया है | इसीलिए उसके कंठ से मीठी ध्वनि के बदले वेदना का स्वर फूट रहा है | कोयल को देखकर कवि को लगा कि कोयल अपनी वेदना साझा करना चाह रही हो | कवि कोयल से पूछते हैं कि – “हे कोयल ! तुम्हारा क्या लूट गया है ? मुझे भी बताओ !” उस समय कोयल की मीठी आवाज कहीं गुम हो गई थी, जो मीठी आवाज उसकी वैभव और पहचान है | कोयल का दुखद भाव देखकर कवि पूछते हैं कि – “हे कोयल ! आखिर तुम पर कैसा दुख का पहाड़ टूटा है ? मुझे भी बताओ !”

क्या हुई बावली ? अर्द्धरात्री को चीखी, कोकिल बोलो तो ! किस दावानल कीज्वालाएँ हैं दीर्खीं ? कोकिल बोलो तो !

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि ‘माखनलाल चतुर्वेदी’ जी के द्वारा रचित कविता ‘कैदी और कोकिला’ से ली गई हैं | इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कोयल को संबोधित करते हुए कहते हैं कि अर्द्धरात्री में तेरा वेदनापूर्ण स्वर में चीखना-गाना मुझे कुछ अशुभ लगा है | तुम बताओ, आखिर तुम्हें हुआ क्या है ? क्या कोई पीड़ा तुम्हें सता रहा है ? आगे कवि ब्रिटिश शासन की क्रूरता की ओर इशारा करते हुए कोयल से कहते हैं कि – “क्या तुम्हें संकट रूपी जंगल में लगी हुई आग की ज्वालाएँ दिख गई हैं ? हे कोयल ! मुझे भी बताओ, तुम्हें हुआ क्या है ?”

क्या देख न सकती ज़ंजीरों का गहना ? हथकड़ियाँ क्यों ? ये ब्रिटिश-राज का गहना, कोल्हू का चर्क चूँ ?

— जीवन की तान, गिर्दी पर अँगुलियों ने लिखे गान !

हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ, खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कूँआ | दिन में करुणा क्यों जगे, रुलानेवाली, इसलिए रात में ग़ज़ब ढा रही आली ?

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि माखनलाल चतुर्वेदी जी के द्वारा रचित कविता ‘कैदी और कोकिला’ से ली गई हैं | कवि को अचानक से अनुभव हुआ कि शायद कोयल उन्हें ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ देखकर चीख पड़ी होगी | तभी कवि कोयल से कहते हैं कि – क्या तुम हमें ज़ंजीरों में जकड़ा देख नहीं सकती ? यहीं तो हमारी पराधीनता का प्रतिफल है, जो ब्रिटिश शासन के द्वारा दिया गया एक प्रकार का गहना है | अब तो मानो कोल्हू चलने की आवाज हमारे जीवन का गान बन गया है | कड़ी धूप में पत्थर तोड़ते-तोड़ते उन पत्थरों पर अपनी उंगलियों से देश की स्वतंत्रता का गान लिख रहे हैं | हम अपने पेट पर रस्सी बांधकर चरसा खींच-खींचकर ब्रिटिश सरकार की अकड़ का कुआँ खाली कर रहे हैं | अर्थात् कवि कहना चाहते हैं कि हम इतने दुःख सहने के बावजूद भी ब्रिटिश हुकूमत के सामने घुटने नहीं टेक रहे हैं, इससे उनकी कुआँ रूपी अकड़ अवश्य कम हो जाएगी | आगे कवि कोयल को संबोधित करते हुए कहते हैं कि अर्द्धरात्री में तुम्हारे इस वेदना भरी आवाज ने मेरे ऊपर ग़ज़ब ढा दिया है और मेरे मन-हृदय को व्याकुलता से भर दिया है |

इस शांत समय में, अंधकार को बेध, रो रही क्यों हो ? कोकिल बोलो तो !

चुपचाप, मधुर विद्रोह-बीजइस भाँति बो रही क्यों हो ? कोकिल बोलो तो !

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि माखनलाल चतुर्वेदी जी के द्वारा रचित कविता ‘कैदी और कोकिला’ से ली गई हैं | इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कोयल को संबोधित करते हुए कहते हैं कि रात्रि का आधा पहर गुजर चुका है और वातावरण में सन्नाटा पसरा है | इस सन्नाटे को भेदते हुए तुम क्यूँ रो रही हो ? मुझे भी बताओ कोयल ! क्या तुम ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह

का बीज बो रही हो ? मुझे भी बताओ कोयल ! अर्थात् कवि के उक्त पंक्तियों के अनुसार, कोयल भारतीयों में देशभक्ति की भावना जागृत करना चाहती है। ताकि पराधीनता की ज़ंजीरों से हम मुक्त हो सकें।

काली तू, रजनी भी काली, शासन की करनी भी काली, काली लहर कल्पना काली, मेरी काल कोठरी काली, टोपी काली, कमली काली, मेरी लौह-शृंखला काली, पहरे की हुंकृति की व्याली, तिस पर है गाली, ऐ आली !

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि ‘माखनलाल चतुर्वेदी’ जी के द्वारा रचित कविता ‘कैदी और कोकिला’ से ली गई हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कोयल को संबोधित करते हुए कहते हैं कि हमारे जीवन में सबकुछ दुःख रूपी काली ही काली हैं। समस्त स्वतंत्रता संग्राम के नायकों का प्रतिनिधित्व करते हुए, कवि एक कैदी के रूप में कोयल से कह रहे हैं कि देखो ! तू भी काली है और ये दुखों की रात भी काली है। साथ में शासन के कष्टदायक इरादे भी काले हैं। हम जिस कोठरी में रहते हैं, वह भी काली है और आस-पास चलने वाली हवा के साथ-साथ यहाँ से मुक्ति पाने की कल्पना भी काली है। हमने जो टोपी पहनी है, वह भी तो काली है और जो कम्बल तन को ढका है, वह भी काला है। जिन लौह-ज़ंजीरों से हमें कैद किया गया है, वह भी काली है। आगे कवि भावात्मक रूप में कहते हैं कि दिन-रात इतने कठोर यातनाओं को सहने के बाद भी हमें पहरेदारों की हुंकार और गाली को सहन करना पड़ता है।

इस काले संकट-सागर परमरने की, मदमाती ! कोकिल बोलो तो !

अपने चमकीले गीतों को क्योंकर हो तैराती ! कोकिल बोलो तो !

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि ‘माखनलाल चतुर्वेदी’ जी के द्वारा रचित कविता ‘कैदी और कोकिला’ से ली गई हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कोयल को संबोधित करते हुए कहते हैं कि कोयल मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि तुम स्वतंत्र होने के बाद भी आधी रात में संकट रूपी कारागार के आस-पास मंडराकर अपनी मदमस्त ध्वनि में स्वतंत्रता की भावना जागृत करने वाली गीत क्यूँ गाए जा रही हो ? क्या तुम्हें किसी से डर नहीं लगता ? बोलो कोयल !

तुझे मिली हरियाली डाली, मुझे नसीब कोठरी काली ! तेरा नभ-भर में संचारमेरा दस फुट का संसार !

तेरे गीत कहावें वाह, रोना भी है मुझे गुनाह ! देख विषमता तेरी-मेरी, बजा रही तिस पर रणभेरी !

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि ‘माखनलाल चतुर्वेदी’ जी के द्वारा रचित कविता ‘कैदी और कोकिला’ से ली गई हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कोयल को संबोधित करते हुए कहते हैं कि तुम पूर्ण रूप से स्वतंत्र हो कोयल, पूरा आसमान तुम्हारा ठिकाना है, तुम्हारे गीतों पर लोगों की प्रशंसापूर्वक तालियाँ बज उठती हैं। परन्तु, इसके विपरीत मेरे नसीब में पराधीनता की काली रात है, जेल के चार दीवारी के भीतर ही मेरा काला संसार है, मैं चीखता-रोता भी हूँ, तो कोई मेरे आँसू पौछने नहीं आता, मानो मेरा रोना कोई बहुत बड़ा गुनाह हो। हमारी परिस्थितियाँ अलग-अलग हैं। आगे कवि कोयल को संबोधित करते हुए कहते हैं कि मैं तुमसे जानना चाहता हूँ कि तुम युद्ध का गीत क्यूँ गा रही हो ? तुम तो आजाद हो, मुझे बताओ कोयल !

इस हुंकृति पर, अपनी कृति से और कहो क्या कर दूँ ? कोकिल बोलो तो ! मोहन के व्रत पर, प्राणों का आसव किसमें भर दूँ ! कोकिल बोलो तो !

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि ‘माखनलाल चतुर्वेदी’ जी के द्वारा रचित कविता ‘कैदी और कोकिला’ से ली गई हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहते हैं कि मैंने ब्रिटिश हुकूमत की यातना सह रहे भारतीय कैदियों में कोयल की विद्रोह भरी आवाज के माध्यम से बूढ़ी हड्डियों में भी जान फूंकने का काम कर दिया है। अर्थात्, जिसे सुनकर कैदी कुछ भी कर गुजरने के लिए तैयार हो सकते हैं। कोयल बोलो ! और मैं क्या करूँ ? तुम ही बताओ, क्या गांधी जी के स्वतंत्रता अभियान की खातिर अपने प्राणों को व्योछावर कर दूँ ? अपने कलम से कैसे क्रांति लाने को तत्पर हूँ। कोयल बोलो ! मैं और क्या कर सकता हूँ ?



अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 कोयल की कूक सुनकर कवि की क्या प्रतिक्रिया थी?

उत्तर- कोयल की कूक सुनकर कवि को लगता है कि कोयल कोई संदेश लेकर आई है। संदेश विशेष है तभी वह अद्वृतात्रि में आई है नहीं तो सुबह की प्रतीक्षा करती।

प्रश्न 2 कवि ने कोकिल के बोलने के किन कारणों की संभावना बताई?

उत्तर- कवि ने कोयल के बोलने की निम्न संभावनाएँ बताई हैं-

- कोकिला कोई संदेश पहुँचाना चाहती है।
- उसने दावानल की लपटें देख लीं हैं।
- समस्या अत्यंत गंभीर है इसलिए वह सुबह होने की प्रतीक्षा नहीं कर पाती है।
- क्रांतिकारीयों के मन में देश-प्रेम की भावना को और मजबूत करने आई है।

प्रश्न 3 किस शासन की तुलना तम के प्रभाव से की गई है और क्यों?

उत्तर- अंग्रेजों के शासन की तुलना तम के प्रभाव से की गयी है क्योंकि अँगरेज सरकार की कार्य प्रणाली अन्धकार की तरह काली है। यहाँ अन्धकार का मतलब अन्याय से है। अँग्रेज शासन प्रणाली अन्यायपूर्ण थी।

प्रश्न 4 कविता के आधार पर पराधीन भारत की जेलों में दी जाने वाली यंत्रणाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर- कविता के आधार पर पराधीन भारत की जेलों में दी जाने वाली यंत्रणाएँ निम्न थीं-

- कैदियों से पशुओं की तरह काम करवाया जाता था।
- अँधेरी कोठरियों में कैदियों को जंजीरों से बाँध कर रखा जाता था।

iii. कोठरियाँ भी काफी छोटी होती थीं।

iv. खाने को भी कम दिया जाता था।

v. क्रांतिकारियों को चोर, लुटेरे और डाकूओं के साथ रखा जाता था।

vi. जेल में अमानवीय यातनाएँ दी जाती थीं।

प्रश्न 5 भाव स्पष्ट कीजिए-

i. मृदुल वैभव की रखवाली-सी, कोकिल बोलो तो!

ii. हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ, खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुँआ।

उत्तर-

i. मृदुल वैभव की रखवाली से यहाँ कवि का तात्पर्य कोयल की मीठी तथा कोमल आवाज से है। उसकी आवाज में मिठास होने के बाद भी जब वह वेदना पूर्ण आवाज में चीख उठती है तो कवि उससे उसकी वेदना का कारण पूछता है।

ii. अंग्रेजी सरकार कवि से पशुओं के समान परिश्रम करवाते हैं। कवि के पेट पर जुआ बाँधकर कुँए से पानी निकाला जाता है। परन्तु इससे भी वे दुःखी नहीं होते तथा अंग्रेजी सरकार के षड्यंत्र को विफल कर उनकी अकड़ को समाप्त कर देना चाहते हैं।

प्रश्न 6 अद्वृतात्रि में कोयल की चीख से कवि को क्या अंदेशा होते हैं?

उत्तर- अद्वृतात्रि में कोयल के चीखने से कवि को अनेकों अंदेशे होते हैं जैसे शायद कोयल पागल तो नहीं हो गयी है, या शायद वह किसी कष्ट में है या कोई सन्देश लेकर आई हैं या यह भी हो सकता है कि वह क्रांतिकारियों के दुःख से द्रवित होकर चीख रही हो।



प्रश्न 7 कवि को कोयल से ईर्ष्या क्यों हो रही है?

उत्तर- कोयल की स्वतंत्रता से कवि को ईर्ष्या हो रही है। वह आकाश में स्वतंत्रता से उड़ान भर रही है और कवि जेल की काल कोठरी में बंद है। कोयल गाकर अपने आनंद को प्रकट कर सकती है पर कवि के लिए तो रोना भी एक बड़ा गुनाह है जिसके लिए उसे दंड भी मिल सकता है।

प्रश्न 8 कवि के स्मृति-पटल पर कोयल के गीतों की कौन सी मधुर स्मृतियाँ अंकित हैं, जिन्हें वह अब नष्ट करने पर तुली हैं?

उत्तर- कोयल हरी-भरी डालियों पर बैठकर अपने मधुर स्वर से सारी सृष्टि को गुंजायमान करती थी, उसके मधुर गीतों में खुशियाँ झलकती थीं, स्वतंत्रता पूर्वक आकाश में विचरण करती थीं परन्तु अब इन विशेषताओं को वह नष्ट करने पर तुली हैं।

प्रश्न 9 हथकड़ियों को गहना क्यों कहा गया है?

उत्तर- कवि ने हथकड़ियों की तुलना गहनों से की है क्योंकि भले ही यह कवि के लिए हथकड़ी है परन्तु यह ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गई पराधीनता है। यह ब्रिटिश राज का प्रतीक है, जो अंग्रेजों द्वारा पहनाया गया है।

प्रश्न 10 'कालि तूऐ आली!' - इन पंक्तियों में 'काली' शब्द की आवृत्ति से उत्पन्न चमत्कार का विवेचन कीजिए।

उत्तर- इन कविता की पंक्तियों में कवि ने नौ बार काली शब्द का प्रयोग किया है। शब्द तो एक ही है परन्तु भिन्न - भिन्न अर्थों में इसका प्रयोग किया गया है। कहीं पर यह शब्द अँग्रेज सरकार के काले शासन को संबोधित कर रहा है तो कहीं वातावरण की कालिमा और निराशा को उजागर कर रहा है।

प्रश्न 11 काव्य - सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

- किस दानावल की ज्वालाएँ हैं दीखीं?
 - तेरे गीत कहावें वाह, रोना भी है मुझे गुनाह!
- देख विषमता तेरी - मेरी बजा रही तिस पर रणभेरी।

उत्तर-

i. यहाँ कवि कोयल की वेदना पूर्ण आवाज पर अपनी आशंका व्यक्त कर रहा है। अपनी प्रश्नात्मक शैली से कवि कोयल के कष्ट का अनुमान लगा रहा है। कवि ने विम्बात्मक शैली का प्रयोग किया है, भाषा में सहजता तथा सरलता है।

ii. प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में कवि ने अपने तथा कोयल के जीवन की विषमताओं की ओर संकेत किया है। कवि ने यहाँ तुकबंदी का प्रयोग किया है, अपनी तथा कोयल के जीवन की तुलना की है तथा सरल भाषा का प्रयोग किया है।

रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

प्रश्न 1 काव्य - सौंदर्य स्पष्ट कीजिए -

किस दानावल की ज्वालाएँ हैं दीखीं?

उत्तर- **भाव सौंदर्य-** कवि ने यहाँ पर प्रश्नात्मक शैली में कोयल की इस वेदनापूर्ण आवाज पर अपनी आशंका व्यक्त की है। कोयल ने ऐसा क्या देख लिया है जिसके कारण वह इतनी व्यथित है।

शिल्प- **सौंदर्य-** दावानल की ज्वालाएँ में रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है। भाषा तत्सम शब्द युक्त खड़ी बोली है। भाषा में सहजता और सरलता है।

प्रश्न 2 आपके विचार से स्वतंत्रता सेनानियों और अपराधियों के साथ एक-सा व्यवहार क्यों किया जाता होगा?

उत्तर- ब्रिटिश सरकार स्वतंत्रता सेनानियों तथा अपराधियों में कोई अंतर नहीं समझती थी। ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों के अधिकार को छीन लिया था। अतः अपने अधिकारों की प्राप्ति तथा भारत वासियों को आजादी दिलाने के लिए स्वतंत्रता सेनानियों ने बहुत संघर्ष किया। भारतीयों पर अपना वर्चस्व कायम रखने तथा स्वतंत्रता सेनानियों के मनोबल को तोड़ने के लिए वे स्वतंत्रता प्रेमियों तथा अपराधियों के साथ एक-सा व्यवहार करते थे।





ग्राम श्री

-सुमित्रानंदन पंत

सारांश



फैली खेतों में दूर तलकमखमल की कोमल हरियाली, लिपटीं जिससे रवि की किरणें चाँदी की सी उजली जाली !

तिनकों के हरे हरे तन परहिल हरित रुधिर है रहा झलक, श्यामल भू तल पर झुका हुआ

नभ का चिर निर्मल नील फलक !

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि ‘सुमित्रानंदन पंत’ जी के द्वारा रचित कविता ‘ग्राम श्री’ से ली गई हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि गाँव की मनोरम प्राकृतिक सुंदरता का चित्रण करते हुए कह रहे हैं कि गाँव के खेतों में चारों ओर मखमल रूपी हरियाली फैली हुई है। जब उन पर सूर्य की किरणें पड़ती हैं, तब सारा खेत और आस-पास का वातावरण चमक उठता है। मानो ऐसा प्रतीत होता है कि चाँदी की कोई चमकदार जाली बिछी हुई है। जो हरे-हरे फसलें हैं, उनकी नाजुक तना पर, जब सूर्य की किरणों का प्रभाव पड़ता है, तो उनके अंदर दौड़ता-हिलता हुआ हरे रंग का रक्त स्पष्ट दिखाई देता है। जब हमारी दृष्टि दूर तक आसमान पर पड़ती है, तो हमें ऐसा आभाष होता है, मानो नीला आकाश चारों ओर से झुका हुआ है और हमारी खेतों की हरियाली का रक्षक बना हुआ है।

रोमांचित सी लगती वसुधाआई जौ गेहूँ में बाली, अरहर सनई की सोने कीकिंकिणियाँ हैं शोभाशाली !

उड़ती भीनी तैलाक्त गंधफूली सरसों पीली पीली, लो, हरित धरा से झाँक रहीनीलम की कलि, तीसी नीली !

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि ‘सुमित्रानंदन पंत’ जी के द्वारा रचित कविता ‘ग्राम श्री’ से ली गई हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि पंत जी खेतों में उग आई फसलों का गुणगान करते हुए कहते हैं कि जब से जौ और गेहूँ में बालियाँ आ गई हैं, तब से धरती और भी रोमांचित लगने लगी है। अरहर और सनई की फसलें सोने जैसा प्रतीत हो रही हैं तथा धरती को शोभा प्रदान कर



रही हैं। हवा के सहरे हिल-हिलकर मनोहर ध्वनि उत्पन्न कर रही हैं। सरसों की फसलें खेतों में लहलहा रहे हैं, जिसके फूलों के खिलने से पूरा वातावरण सुगंधित हो गया है। वहीं हरियाली युक्त धरा से नीलम की कलियाँ और तीसी के नीले फूल भी झाँकते हुए धरती को शोभा और सौंदर्य से भर रहे हैं।

रंग रंग के फूलों में रिलमिलहंस रही सखियाँ मटर खड़ी, मखमली पेटियों सी लटकीछीमियाँ, छिपाए बीज लड़ी !

फिरती हैं रंग रंग की तितलीरंग रंग के फूलों पर सुंदर, फूले फिरते हैं फूल स्वयंउड उड वृतों से वृतों पर !

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि सुमित्रानंदन पंत जी के द्वारा रचित कविता ग्राम श्री से ली गई हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि खेतों में विभिन्न रंगों से सुसज्जित फूलों और तितलियों की सुंदरता का मनभावन चित्रण करते हुए कहते हैं कि रंग-बिरंगे फूलों के बीच में मटर के फसलों का सुन्दर दृश्य देखकर आस-पास के सखियाँ रूपी पौधे या फसलें मुस्कुरा रहे हैं। वहीं पर कहीं मखमली पेटियों के समान छिमियों का अस्तित्व का नजारा भी है, जो बीज से लदी हुई हैं। तरह-तरह के रंगों से सुसज्जित तितलियाँ, तरह-तरह के रंग-बिरंगे फूलों पर उड़-उड़कर बैठती हैं। मानो ऐसा लग रहा है, जैसे खुद फूल ही उड़-उड़कर विचरण कर रहे हैं।

अब रजत स्वर्ण मंजरियों सेलद गई आम तरु की डाली, झर रहे ढाक, पीपल के दल, हो उठी कोकिला मतवाली !

महके कटहल, मुकुलित जामुन, जंगल में झरबेरी झूली, फूले आड़, नीम्बू, दाढ़िमआलू, गोभी, बैंगन, मूली !

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि सुमित्रानंदन पंत जी के द्वारा रचित कविता ग्राम श्री से ली गई हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि बसंत-ऋतु का मनमोहक चित्रण करते हुए कहते हैं कि स्वर्ण और रजत अर्थात् सुनहरी और चाँदनी रंग के मंजरियों से आम के पेड़ की जो डालियाँ हैं, वो लद गई हैं। पतझड़ के कारण पीपल और दूसरे पेड़ों के पत्ते झर रहे हैं और कोयल मतवाली हो चुकी है अर्थात् अपनी मधुर ध्वनि का सबको रसपान करा रही है। कटहल की महक महसूस होने लगी है और जामुन भी पेड़ों पर लद गए हैं। वनों में झरबेरी का अस्तित्व आ गया है। हरी-भरी खेतों में अनेक फल-सब्जियाँ उग आई हैं, जैसे — आड़, नीम्बू, आलू, दाढ़िम, मूली, गोभी, बैंगन आदि।

पीले मीठे अमरुदों में अब लाल लाल चित्तियाँ पड़ीं, पक गये सुनहले मधुर बेर, अँवली से तरु की डाल जड़ी ! लहलह पालक, महमह धनिया, लौकी और सेम फलों, फैलीं मखमली टमाटर हुए लाल, मिर्चों की बड़ी हरी थैली !

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि सुमित्रानंदन पंत जी के द्वारा रचित कविता ग्राम श्री से ली गई हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि प्रकृति के कुछ और सुन्दर दृश्य की ओर संकेत करते हुए कह रहे हैं कि जो अमरुद पके और मीठे हैं, वो अब पीले हो गए हैं। उन पर लाल चित्तियाँ या निशान पड़ गए हैं। बैर भी पक कर मीठे और सुनहले रंग के हो गए हैं और आँवले के आकर्षक छोटे-छोटे फल से डाल झूल गई हैं। खेतों में पालक लहलहा रहे हैं और धनिया सुगंधित हो उठी है। लौकी और सेम भी फलकर, आस-पास फैल गए हैं। मखमल रूपी टमाटर भी पककर लाल हो गए हैं और छोटे-छोटे नाजुक पौधे में हरी-हरी मिर्च का भंडार लग आया है।

बालू के साँपों से अंकित गंगा की सतरंगी रेतीसुंदर लगती सरपत छाईतट पर तरबूजों की खेती; अँगुली की कंधी से बगुलेकलंगी सँवारते हैं कोई, तिरते जल में सुखाब, पुलिन परमगरौठी रहती सोई !

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि सुमित्रानंदन पंत जी के द्वारा रचित कविता ग्राम श्री से ली गई हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि आगे गंगा-तट के प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण करते हुए कहते हैं कि गंगा किनारे जो विभिन्न रंगों में सन्जिहित रेत का



भंडार है, उस रेत के टेढ़े-मेढ़े दृश्य को देखकर ऐसा लगता है, मानो कोई बालु रूपी साँप पड़ा हुआ है। गंगा के तट पर जो घास की हरियाली बिछी है, वह बहुत सुन्दर लग रही है। साथ में तरबूजों की खेती से तट का दृश्य बेहद सुन्दर और आकर्षक लग रहा है। बगुले तट पर शिकार करते हुए अपने पंजों से कलंगी को ऐसे सँवारते या ठीक करते हैं, मानो वे कंधी कर रहे हैं। गंगा के जल में चक्रवाक पक्षी तैरते हुए नज़र आ रहे हैं और जो मगरौठी पक्षी हैं, वह आराम से सोए हुए विश्राम कर रहे हैं।

हँसमुख हरियाली हिम-आतपसुख से अलसाए-से सोए, भीगी औंधियाली में निशि की तारक स्वर्जों में-से खोये-

मरकत डिब्बे सा खुला ग्राम-जिस पर नीलम नभ आच्छादन-निरुपम

हिमांत में स्निग्ध शांतनिज शोभा से हरता जन मन !

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ कवि सुमित्रानंदन पंत जी के द्वारा रचित कविता ग्राम श्री से ली गई हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि पंत जी के द्वारा गाँव की हरियाली और प्राकृतिक सौंदर्य व दृश्य का सुन्दर चित्रण किया गया है। कवि कहते हैं कि जब सर्दी के दिन में हिम अर्थात् ठंड का आगमन धरती पर होता है, तो लोग आलसी बनकर सुख से सोए रहते हैं। सर्दी की रातों में ओस पड़ने की वजह से सबकुछ भीगा-भीगा सा और ठंडक सा महसूस हो रहा है। तारों को देखकर ऐसा आभास हो रहा है, मानो वे सपनों की दुनिया में खोये हैं। इस आकर्षक और मनोहर वातावरण में पूरा गाँव मरकत अर्थात् पन्ना नामक रत्न के जैसा प्रतीत हो रहा है, जो मानो नीला आकाश से आच्छादित है। तत्पश्चात्, कवि कहते हैं कि शरद ऋतू के अंतिम क्षणों में गाँव के मासूम वातावरण में अनुपम शांति का अनुभव हो रहा है, पूरा गाँव शोभायुक्त हो गया है, जिसे देखकर और एहसास करके गाँव के सारे लोग प्रफुल्लित हैं। उनका मन बहुत खिला-खिला सा है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 कवि ने गाँव को 'हरता जन मन' क्यों कहा है?

उत्तर- गाँव का वातावरण अत्यंत मनमोहक है। यहाँ प्रकृति का सौंदर्य सभी लोगों के मन को अच्छा लगता है। इसलिए कवि ने गाँव को 'हरता जन मन' कहा है।

प्रश्न 2 कविता में किस मौसम के सौंदर्य का वर्णन है?

उत्तर- कविता में वसंत ऋतु के सौंदर्य का वर्णन है। इसी ऋतु में सरसों के पीले फूल खिलते हैं और चारों ओर हरियाली होती है।

प्रश्न 3 गाँव को 'मरकत डिब्बे सा खुला' क्यों कहा गया है?

उत्तर- खेतों में हरियाली छाई हुई है। विविध प्रकार की फसलें लहँहा रही हैं। कहीं फूलों पर रंगीन तितलियाँ मंडरा रही हैं। चारों ओर फल और फूलों की सुंगंध

बिखरी पड़ी है। सूरज की धूप से निखरता सौंदर्य इस हरीतिमा में चमक पैदा करता है। इसी हरीतिमा को दर्शाने के किए गाँव को 'मरकत डिब्बे सा खुला' कहा गया है।

प्रश्न 4 अरहर और सनई के खेत कवि को कैसे दिखाई देते हैं?

उत्तर- अरहर और सनई के खेत कवि को सोने की किंकणियों के सामान दिखाई दे रहे हैं।

प्रश्न 5 भाव स्पष्ट कीजिए-

i. बालू के साँपों से अंकित

गंगा की सतरंगी रेती

ii. हँसमुख हरियाली हिम-आतप

सुख से अलसाए-से सोए

**उत्तर-**

- प्रस्तुत पंक्तियों में गंगा नदी के तट वाली ज़मीन को सतरंगी कहा गया है। रेत पर टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएँ हैं, जो सूरज की किरणों के प्रभाव से चमकने लगती हैं। ये रेखाएँ टेढ़ी चाल चलने वाले साँपों के समान प्रतीत होती हैं।
- इन पंक्तियों में गाँव की हरियाली का वर्णन प्रस्तुत किया गया है। हँसते हुए मुख के समान गाँव की हरियाली सर्दियों की धूप में आलस्य से सो रही प्रतीत होती है।

प्रश्न 6 निम्न पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

तिनकों के हरे हरे तन पर
हिल हरित रुधिर है रहा झलक

उत्तर- हरे हरे - पुनरुक्ति अलंकार है।

हिल हरित - अनुप्रास अलंकार है।

तिनकों के तन पर - मानवीकरण अलंकार है।

प्रश्न 7 इस कविता में जिस गाँव का चित्रण हुआ है वह भारत के किस भू-भाग पर स्थित है?**उत्तर-** इस कविता में उत्तरी भारत के गाँव का चित्रण हुआ है। उत्तरी भारत, भारत के खेती प्रधान राज्यों में प्रमुख है।

रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

प्रश्न 1 भाव और भाषा की दृष्टि से आपको यह कविता कैसी लगी? उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।**उत्तर-** प्रस्तुत कविता भाव तथा भाषा दोनों ही तरफ से अत्यंत आकर्षक है। यहाँ प्रकृति का मनमोहक रूप प्रस्तुत किया गया है तथा प्रकृति का मानवीकरण

किया गया है। कविता की भाषा अत्यंत सरल तथा सहज है। कविता को कठिन भाषा के प्रयोग से बोझिल नहीं बनाया गया है। अलंकारों का प्रयोग करके कविता के सौन्दर्य को बढ़ाया गया है। रूपक, उपमा, अनुप्रास अलंकारों का प्रयोग उचित स्थान पर किया गया है।

प्रश्न 2 आप जहाँ रहते हैं उस इलाके के किसी मौसम विशेष के सौन्दर्य को कविता या गद्य में वर्णित कीजिए।**उत्तर-** मेरे मुंबई शहर की बरसात

उमस से राहत दिलानेवाली बरसात

खुशियों से सराबोर करनेवाली बरसात

मेरे मुंबई शहर की बरसात

चाय की चुस्की और गर्म पकौड़ियों वाली बरसात

मरीन ड्राइव पर सागर की अठखेलियोंवाली बरसात

मेरे मुंबई शहर की बरसात

कीचड़ से लथपथवाली बरसात

सड़कों पर ट्रैफिक जामवाली बरसात

मेरे मुंबई शहर की बरसात

आपाधापी और रेलमपेलम वाली बरसात

मजदूरों से रोटी, रोजी छिनने वाली बरसात

मेरे मुंबई शहर की बरसात

आफिस स्कूलों से छुट्टियाँ की आस बढ़ाने वाली बरसात

मन अंतर आत्मा को छूने वाली बरसात

मेरे मुंबई शहर की बरसात





मेघ आये

-सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

सारांश

‘मेघ आए’ कविता में कवि श्री सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने प्रकृति का अद्भुत वर्णन किया है। मानवीकरण के माध्यम से कवि ने कविता को चत्ताकर्षक बना दिया है। कवि ने बादलों को मेहमान के समान बताया है। पूरे साल भर के इंतशार के बाद जब बादल आए ग्रामीण लोग बादलों का स्वागत उसी प्रकार करने लगे जिस प्रकार कोई अपने (दामाद) का स्वागत करता है। किसी ने स्वागत किया तो किसी ने उलाहना भी दिया। बादलों के स्वागत में सारी प्रकृति ही उपस्थित हो गई। बादल मेहमान अर्थात् दामाद की तरह बन-ठन कर तथा सज-धजकर आए हैं। हवा भी चंचल बालिका की तरह नाच-गाकर उनका स्वागत कर रही है। मेघों को देखने के लिए हर आदमी उतावला हो रहा है।

इसीलिए सबने अपने अपने घरों के दरवाजे तथा खिड़कियाँ खोल दिए हैं और बादलों को देख रहे हैं। आँधी चली और धूल इधर-उधर भागने लगी। धूल का भागना ऐसा लगाए मानो कोई गाँव की लड़की अपना घाघरा उठाकर घर की तरफ भाग चली। गाँव की नदी भी एक प्रेमिका की तरह अपने मेहमान मेघों को देखकर ठिठक गई तथा उन्हें तिरछी नजर से देखने लगी। गाँव की सुंदरियों ने अपना धूंधट उठाकर बने-ठने? सजे-सँवरे मेहमानों के समान बादलों को देखा। बादल रूपी मेहमानों के आने पर पीपल ने गाँव के एक बड़े-बूढ़े बुजुर्ग की तरह झुककर उनका स्वागत किया। साल भर की गर्मी सहकर मुरझाई लताएँ ऐसे दरवाजे के पीछे चिपकी खड़ी थीं जैसे कोई नायिका दरवाशे के पीछे खड़े होकर आने वाले को उलाहना दे रही हो कि पूरा साल बिताकर अब आए हो। अभी तक याद नहीं आई कि मैं मरी या जी। तालाब भी पानी से लबालब भरा हुआ ऐसे लहरा रहा था कि मानो वह बादलों के स्वागत के लिए परात में पानी भर कर लाया हो। चारों ओर बादल गरजने लगे बिजली चमकने लगी और झरने विश्वास हो गया है कि वर्षा अवश्य होगी। मेघ रूपी मेहमान को लता रूपी अपनी प्रिया से मिलते देखकर सारी प्रकृति खुश हो गई। सभी खुश हुए। वर्षा रूपी खुशी के आँसू बहने लगे।

काव्यांश 1.

मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली ,

दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगीं गली-गली ,

पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।

मेघ आए बड़े बन-ठन के संवर के।



भावार्थ –

उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि जिस प्रकार लंबे समय बाद जब एक दामाद अपने ससुराल सज धज कर आता है। तो गांव की नवयुवतियों (किशोर लड़कियों) उसके आने की खबर पूरे गांव वालों को उसके गांव पहुंचने से पहले ही दे देती हैं। और सभी लोग अपने घरों की खिड़कियों और दरवाजे गली की तरफ खोल कर शहर से आए अपने उस दामाद को देखने लगते हैं। ठीक उसी प्रकार जब भीषण गर्मी के बाद वर्षा ऋतु का आगमन होता है। और काले-काले धने, पानी से भरे हुए बादल आकाश में छाने लगते हैं। उन बादलों के आकाश में छाने से पहले तेज हवायें चलने लगती हैं। जो काले धने बादलों के आकाश में छाने का संकेत देती है।

कवि आगे कहते हैं कि तेज हवाओं के कारण घर के दरवाजे व खिड़की खुलने लगती हैं। लोग अपने घरों से बाहर निकल कर उत्सुकुतावश आकाश की तरफ देखने लगते हैं। और आकाश में काले-काले धने बादलों को देखकर सबके मन उल्लास व प्रसन्नता से भर जाते हैं।

उस समय ऐसा प्रतीत होता है मानो शहर से रहने वाला बादल रूपी दामाद बड़े बड़े लंबे समय बाद बन सँवर कर गांव लौटा हो। “पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के” में उत्तेक्ष्णा अलंकार हैं। गली-गली में पुनरुक्ति अलंकार हैं।

काव्यांश 2.

पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए,
 आंधी चली, धूल भागी घाघरा उठाये,
 बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूंघट सरके।
 मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

भावार्थ –

जब तेज हवाएं बहने लगती हैं तो पेड़ कभी नीचे की तरफ झुक जाते हैं तो कभी ऊपर की तरफ उठ जाते हैं। उन पेड़ों को देखकर ऐसा लगता हैं जैसे गांव के लोग (यहां पर पेड़ों की तुलना गांव के लोग से की हैं) अपने उस मेहमान को गरदन उचका-उचका कर देख रहे हैं। यानि गांव के सभी लोग शहर से आये अपने उस मेहमान को एक नजर भर देख लेना चाहती हो।

तेज आंधी के आने से धूल एक जगह से उड़ कर तेजी से दूसरी जगह पहुंच जाती है। कवि ने उस धूल की तुलना गांव की उस किशोरी से की हैं जो मेहमान के आने की खबर गांव के लोगों को देने के लिए अपना घागरा उठा कर तेजी से भागती हैं। कवि को ऐसा लगता है कि जैसे गांव की किशोरी मेहमान आने की खबर गांव वालों को देने के लिए अपना घागरा उठाए दौड़ रही है।

अगली पंक्तियों में कवि नदी को गांव की एक बहू के रूप में देखते हैं। जो गांव में दामाद के आने की खबर सुनकर, थोड़ा रुक कर और अपने घुंघट को थोड़ा सरका कर, तिरछी निगाहों से, उस दामाद की झलक पाना चाहती है। यानि आकाश में बादलों के आने से नदी में भी हलचल शुरू हो जाती हैं। क्योंकि बादल रूपी दामाद बड़े बन सँवर कर लौटे हैं।





काव्यांश 3.

बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की,
 'बरस बाद सुधि लीन्हों' –
 बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की,
 हरसाया ताल लाया पानी परात भर के।
 मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

भावार्थ –

तेज हवाओं के चलने के कारण बूढ़ा पीपल का पेड़ कभी झुक जाता है तो कभी ऊपर उठ जाता है। पीपल के पेड़ की बहुत लंबी उम्र होती है। इसीलिए यहां पर उसे बूढ़ा कहा गया है।

उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि जैसे गांव में कोई मेहमान आता हैं तो गांव के बड़े -बुजुर्ग आगे बढ़ कर उसका स्वागत करते हैं। उसको प्रणाम करते हैं। ठीक उसी प्रकार बादलों के आने पर बूढ़े पीपल के पेड़ ने झुक कर उसका स्वागत किया। और उसको प्रणाम किया।

कवि आगे कहते हैं कि उस बूढ़े पीपल के पेड़ से लिपटी लता (बेल) भी धोड़ी हरकत में आ गई। कवि ने यहां पीपल से लिपटी हुई लता को उस घर की बेटी के रूप में माना है जो घर आये उस मेहमान को किवाड़ की ओट से देख रही है। यानि भीषण गर्मी में प्यासी लता बादलों के आने से बेहद खुश हैं।

साथ ही साथ वह (लता) मेहमान (बादल) से शिकायत भी कर रही है कि पूरे एक साल के बाद तुमने मेरी खबर ली। क्योंकि बरसात का मौसम साल भर के बाद आता है।

जैसे पुराने समय में दामाद के आने पर परात में उसके पैर रखकर , घर के किसी सदस्य द्वारा पानी से उसके पैर धोये जाते थे। यहां पर तालाब को उसी सदस्य के रूप में माना गया है। कवि कहते हैं कि तालब खुश होकर परात के पानी से उस मेहमान के पैर धोता है। तालाब इसलिये खुश हैं क्योंकि बरसात में पानी से वह फिर से भर जायेगा।

काव्यांश 4.

क्षितिज अटारी गहराई दमकी,
 'क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की',
 बाँध टूटा झार-झार मिलन के अश्रु ढरके।
 मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

भावार्थ –

उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि जिस प्रकार अटारी (ऊंची जगह) पर पहुंचे अपने पति को देखकर पल्ली का तन-मन खुशी से भर जाता है। उसके मन में जो संदेह था कि उसका पति नहीं लौटेगा। अब वह भी दूर हो चुका हैं क्योंकि अब उसका पति लौट चुका है। वह मन ही मन उससे माफी मांगती है और दोनों के मिलन से खुशी के आंसू छलक पड़ते हैं।

ठीक उसी प्रकार बादल (पति) क्षितिज (जहाँ धरती आसमान मिलते हुए प्रतीत होते हैं) में छा चुके हैं। और बिजली जोर जोर



से चमकती हैं। क्षितिज पर छाये बादलों को देखकर धरती (पत्नी) बेहद प्रसन्न हैं। उसका यह संदेह भी समाप्त हो जाता कि वर्षा नहीं होगी। यानि अब धरती को पक्का विश्वास हो जाता है कि बादल बरसेंगे। और फिर बादल और बिजली के मिलने से झर-झर कर पानी बरसने लगता है। और धरती का आँचल भीग जाता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 बादलों के आने पर प्रकृति में गतिशील क्रियाओं को कवि ने चित्रित किया है, उन्हें लिखिए।

उत्तर- बादलों के आने पर प्रकृति के निम्नलिखित क्रियाओं को कवि ने चित्रित किया है-

1. बादल मेहमान की तरह बन-ठन कर, सज-धज कर आते हैं।
2. उसके आगमन की सूचना देते हुए आगे-आगे बयार चलती है।
3. उनके आगमन की सूचना पाते ही लोग अतिथि सत्कार के लिए घर के दरवाजे तथा खिड़कियाँ खोल देते हैं।
4. वृक्ष कभी गर्दन झुकाकर तो कभी उठाकर उनको देखने का प्रयत्न कर रहे हैं।
5. आँधी के आने से धूल का घाघरा उठाकर भागना।
6. प्रकृति के अन्य रूपों के साथ नदी ठिठक गई तथा धूँधट सरकाकर आँधी को देखने का प्रयास करती है।
7. सबसे बड़ा सदस्य होने के कारण बूँदा पीपल आगे बढ़कर आँधी का स्वागत करता है।
8. ग्रामीण स्त्री के रूप में लता का किवाड़ की ओट से देर से आने पर उलाहना देना।
9. तालाब मानो स्वागत करने के लिए परात में पानी लेकर आया हो।

10. इसके बाद आकाश में बिजली चमकने लगी तथा वर्षा के रूप में उसके मिलन के अशु बहने लगे।

प्रश्न 2 निम्नलिखित किसके प्रतीक हैं?

- धूल,
- पेड़,
- नदी,
- लता,
- ताल

उत्तर-

- धूल - स्त्री
- पेड़ - नगरवासी
- नदी - स्त्री
- लता - मेघ की प्रतिक्षा करती नायिका
- ताल - सेवक

प्रश्न 3 लता ने बादल रूपी मेहमान को किस तरह देखा और क्यों?

उत्तर- लता ने बादल रूपी मेहमान को किवाड़ की ओट से देखा क्योंकि वह मेघ के देर से आने के कारण व्याकुल हो रही थी तथा संकोचवश उसके सामने नहीं आ सकती थी।

प्रश्न 4 भाव स्पष्ट कीजिए-

- i. क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की।
- ii. बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, धूँधट सरके।

**उत्तर-**

- भाव-** नायिका को यह श्रम था कि उसके प्रिय अर्थात् मेघ नहीं आएँगे परन्तु बादल रूपी नायक के आने से उसकी सारी शंकाएँ मिट जाती हैं और वह क्षमा याचना करने लगती है।
- भाव-** मेघ के आने का प्रभाव सभी पर पड़ा है। नदी ठिठककर कर जब ऊपर देखने की चेष्टा करती है तो उसका धूँधट सरक जाता है और वह तिरछी नज़र से आए हुए आंगतुक को देखने लगती है।

प्रश्न 5 मेघ रूपी मेहमान के आने से वातावरण में क्या परिवर्तन हुए?

उत्तर- मेघ के आगमन से दरवाज़े-खिड़कियाँ खुलने लगे। हवा के तेज बहाव के कारण आँधी चलने लगती है जिससे पेड़ अपना संतुलन खो बैठते हैं, कभी उठते हैं तो कभी झुक जाते हैं। धूल रूपी आँधी चलने लगती है। हवा के चलने से संपूर्ण वातावरण प्रभावित होता है - नदी की लहरें भी उठने लगती हैं, पीपल का पुराना वृक्ष भी झुक जाता है, तालाब के पानी में उथल-पुथल होने लगती है। अन्ततः बिजली कड़कती है और आसमान से मेघ पानी के रूप में बरसने लगते हैं।

प्रश्न 6 मेघों के लिए 'बन-ठन के, सँवर के' आने की बात क्यों कही गई है?

उत्तर- बहुत दिनों तक न आने के कारण गाँव में मेघ की प्रतीक्षा की जाती है। जिस प्रकार मेहमान (दामाद) बहुत दिनों बाद आते हैं, उसी प्रकार मेघ भी बहुत समय बाद आए हैं। अतिथि जब घर आते हैं तो सम्भवतः उनके देर होने का कारण उनका बन-ठन कर आना ही होता है। कवि ने मेघों में सजीवता डालने के लिए मेघों के 'बन-ठन के, सँवर के' आने की बात कही है।

प्रश्न 7 कविता में आए मानवीकरण तथा रूपक अलंकार के उदाहरण खोजकर लिखिए।

उत्तर- मानवीकरण अलंकार:

- आगे-आगे नाचती बयार चली। यहाँ बयार का स्त्री के रूप में मानवीकरण हुआ है।
- मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के। मेघ का दामाद के रूप में मानवीकरण हुआ है।
- पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए। पेड़ों का नगरवासी के रूप में मानवीकरण किया गया है।
- धूल भागी घाघरा उठाए। धूल का स्त्री के रूप में मानवीकरण किया गया है।
- बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की। पीपल का पुराना वृक्ष गाँव के सबसे बुजर्ग आदमी के रूप में है।
- बोली अकुलाई लता। लता स्त्री की प्रतीक है।

रूपक अलंकार:

- क्षितिज अटारी। यहाँ क्षितिज को अटारी के रूपक द्वारा प्रस्तुत किया गया है।
- दामिनी दमकी। दामिनी दमकी को बिजली के चमकने के रूपक द्वारा प्रस्तुत किया गया है।
- बाँध टूटा झार-झार मिलन के अश्रु ढरके। झार-झार मिलन के अश्रु द्वारा बारिश को पानी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

प्रश्न 8 कविता में जिन रीति-रिवाजों का मार्मिक चित्रण हुआ है, उनका वर्णन कीजिए।

उत्तर- गाँव में मेहमान चाहे किसी के भी घर आए परन्तु उत्सुकता और उल्लास पूरे गाँव में होता है। सभी लोग अपने-अपने तरीकों से मेहमान के स्वागत में जुट जाते हैं। गाँव की स्त्रियाँ मेहमान से पर्दा करने लगती हैं, बुजुर्ग झुककर उनका स्वागत करते हैं, पैरों को धोने के लिए परात में पानी लाया जाता है। इस प्रकार से इस कविता में कुछ ग्रामीण रीति-रिवाजों का चित्रण हुआ है।

प्रश्न 9 कविता में कवि ने आकाश में बादल और गाँव में मेहमान (दामाद) के आने का जो रोचक वर्णन किया है, उसे लिखिए।

उत्तर- कविता में कवि ने मेघों के आगमन तथा गाँव में दामाद के आगमन में काफी समानता बताई है। जब गाँव में मेघ दिखते हैं तो गाँव के सभी लोग उत्साह के साथ उसके आने की खुशियाँ मनाते हैं। हवा के तेज़ बहाव से पेड़ अपना संतुलन खो बैठते हैं, नदियों तथा तालाबों के जल में उथल-पुथल होने लगती हैं। मेघों के आगमन पर प्रकृति के अन्य अव्यव भी प्रभावित होते हैं।

ठीक इसी प्रकार किसी गाँव में जब कोई दामाद आता है तो गाँव के सभी सदस्य उसमें बढ़ चढ़कर भाग लेते हैं। स्त्रियाँ चिक की आड़ से दामाद को देखने का प्रयत्न करती हैं, गाँव के सबसे बुजर्ग आदमी सर्वप्रथम उसके समक्ष जाकर उसका आदर-सत्कार करते हैं। पूरी सभा का केन्द्रिय पात्र वहों होता है।

प्रश्न 10 काव्य-सौंदर्य लिखिए-

पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियों में पाहुन अर्थात् दामाद के रूप में प्रकृति का मानवीकरण हुआ है। कवि ने प्रस्तुत कविता में चित्रात्मक शैली का उपयोग किया है। इसमें बादलों के सौंदर्य का मनोरम चित्रण हुआ है। कविता की भाषा सरल तथा सहज होने के साथ ग्रामीण भाषा जैसे पाहुन शब्द का भी इस्तेमाल किया गया है। यहाँ पर बन ठन में ब वर्ण की आवृत्ति होने के कारण अनुप्रास अलंकार है।

रचना और अभिव्यक्ति प्रश्न

प्रश्न 1 वर्षा के आने पर अपने आसपास के वातावरण में हुए परिवर्तनों को ध्यान से देखकर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर- वर्षा के आने पर वातावरण में ठंड बढ़ जाती है। पेड़ पौधे ताजा दिखाई देने लगते हैं। गह्रों में पानी भर जाता है। सड़के चमकने लगती हैं। बच्चों का झुण्ड बारिश का मजा लेते दिखाई देने लगता है। सड़कों पर पानी जमा होने कारण चलने में असुविधा भी होती है और यातायात सम्बन्धी दिक्कते भी होती हैं। वातावरण में गरमी की समाप्ति होने से लोगों को राहत मिलती है।

प्रश्न 2 कवि ने पीपल को ही बड़ा बुजुर्ग क्यों कहा है? पता लगाइए।

उत्तर- पीपल वृक्ष की आयु सभी वृक्षों से बड़ी होती है। गाँवों में पीपल की पूजा की जाती है इसी कारण गाँव में पीपल वृक्ष का होना अनिवार्य माना जाता है इसीलिए पुराना और पूजनीय होने के कारण पीपल को बड़ा बुजुर्ग कहना उचित है।

प्रश्न 3 कविता में मेघ को 'पाहुन' के रूप में चित्रित किया गया है। हमारे यहाँ अतिथि (दामाद) को विशेष महत्व प्राप्त है, लेकिन आज इस परंपरा में परिवर्तन आया है। आपको इसके क्या कारण नज़र आते हैं, लिखिए।



उत्तर- हमारी संस्कृति में अतिथि को देव तुल्य माना जाता रहा है - 'अतिथि देवो भवः'। परन्तु आज के समाज में इस विषय को लेकर बहुत परिवर्तन आए हैं। इसका प्रमुख कारण भारत में पाश्चात्य संस्कृति का आगमन है। पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करते-करते आज का मनुष्य इतना आत्मकेन्द्रित होता जा रहा है कि उसके पास दूसरों के लिए समय का अभाव हो गया है। इसी कारण आज संयुक्त परिवार की संख्या धीरे-धीरे घटती जा रही है। ऐसी अवस्था में अतिथि का सत्कार करने की परम्परा प्रायः लुप्त होती जा रही है।

भाषा-अध्ययन प्रश्न

प्रश्न 1 कविता में आए मुहावरों को छाँटकर अपने वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए।

उत्तर-

- बन-ठन के - (तैयारी के साथ) मेहमान हमेशा बन-ठन के हैं।
- सुधि लेना - (खबर लेना) मैंने अपने प्रिया मित्र की कई दिनों तक सुधि नहीं ली है।
- गाँठ खुलना - (समस्या का समाधान होना) आपसी बातचीत द्वारा मन की कई गाँठे खुल जाती हैं।

iv. बाँध टूटना - (धैर्य समाप्त होना) कई घंटे बिजली कटी होने से मोहन के सब्र का बाँध टूट गया।

प्रश्न 2 कविता में प्रयुक्त आँचलिक शब्दों की सूची बनाइए।

उत्तर- बयार, पाहुन, उचकाना, जुहार, सुधि-लीन्हीं, किवार, अटारी, बन ठन, बाँकी, परात।

प्रश्न 3 मेघ आए कविता की भाषा सरल और सहज है - उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- निम्न उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है कि मेघ आए कविता की भाषा सरल और सहज है-

- पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के।
- मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर।
- बरस बाद सुधि लीन्हीं।
- पेड़ झुककर झाँकने लगे गर्दन उचकाए।

आदि उपर्युक्त पंक्तियों में अधिकतर आम बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग हुआ है। ग्रामीण परिवेश को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण भाषा का भी उचित प्रयोग हुआ है जैसे सुधि पाहुन भरम आदि। कहीं पर भी भाषा को समझने में कोई मुश्किल नहीं होती है।





बच्चे काम पर जा रहे हैं

-राजेश जोशी

सारांश

इस कविता में बच्चों से बचपन छीन लिए जाने की पीड़ा व्यक्त हुई है। कवि ने उस सामाजिक – आर्थिक विडंबना की ओर इशारा किया है जिसमें कुछ बच्चे खेल, शिक्षा और जीवन की उमंग से वंचित हैं। कवि कहता है कि बच्चों का काम पर जाना आज के ज़माने में बड़ी भ्यानक बात है। यह उनके खेलने-कूदने और पढ़ने-लिखने के दिन हैं। फिर भी वे काम करने को मजबूर हैं। उनके विकास के लिए सभी चीज़ों के रहते हुए भी उनका काम पर जाना कितनी भ्यानक बात है। अपनी कविता के माध्यम से वह समाज को जागृत करना चाहते हैं ताकि बच्चों के बचपन को काम की भट्टी में झाँकने से रोका जा सके।

बच्चे काम पर जा रहे हैं का भावार्थ

काव्यांश 1.

कोहरे से ढँकी सङ्क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं

सुबह सुबह

बच्चे काम पर जा रहे हैं

हमारे समय की सबसे भ्यानक पंक्ति है यह

भ्यानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना

लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह

काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे ?

भावार्थ –

उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि सुबह-सुबह की कड़ाके की ठंड में, जब पूरी सङ्क परोक्ती से ढकी है। उस समय बच्चे काम पर जा रहे हैं। मजदूरी करने के लिए या रोजी-रोटी कमाने के लिए घर से निकल कर, वो इस भ्यानक ठंड में काम पर जा रहे हैं।

कवि आगे कहते हैं कि बच्चे काम पर जा रहे हैं। यह हमारे समय की सबसे भ्यानक पंक्ति है अर्थात् जिस उम्र में बच्चों को खेलना-कूदना चाहिए, स्कूल जाना चाहिए, मौज मस्ती करनी चाहिए। उस समय वो इतनी बड़ी जिम्मेदारी भरा काम कर रहे हैं। अपने गरीब मां-बाप की जिम्मेदारियां बांटने के लिए, अपने घर की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए अपना बचपन कुर्बान कर रहे हैं। और वो ऐसा करने के लिए विवश है, मजबूर हैं। इससे ज्यादा और क्या भ्यानक होगा।

अगली पंक्तियों में बच्चों को काम पर जाता देखकर कवि का मन बहुत दुखी है, व्यथित हैं। वो कहते हैं कि “बच्चे काम पर क्यों जा रहे हैं”, इसे एक गंभीर प्रश्न की तरह हमें अपनी जिम्मेदार सरकार से पूछना चाहिए, समाज के तथाकथित ठेकेदारों



से पूछना चाहिए। बजाय इसे एक विवरण की तरह लिखने के। यानि कागजों में आंकड़े इकट्ठे करने से कुछ भी हासिल नहीं होगा।

हमें यह बात पूछनी चाहिए कि ऐसी क्या स्थितियां बन गई कि छोटे-छोटे बच्चों को पढ़ने लिखने, खेलने कूदने की उम्र में काम पर जाना पड़ रहा है। अपने घर की जिम्मेदारियों में हाथ बटाँना पड़ा है। स्कूल जाना छोड़ कर, मजदूरी करने जाना पड़ रहा है। आखिर क्यों उनसे उनका बचपन इस बेरहमी से छीना जा रहा है।

काव्यांश 2.

क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें
 क्या दीमकों ने खा लिया है
 सारी रंग बिरंगी किताबों को
 क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने
 क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं
 सारे मदरसों की इमारतें
 क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन
 खत्म हो गए हैं एकाएक

भावार्थ –

उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि आखिर ऐसा क्या हो गया है कि बच्चों को काम पर जाना पड़ा है। यहां पर कवि एक साथ कई सारे सवाल करते हैं। वो कहते हैं कि क्या बच्चों के खेलने वाली सारी गेंदें अंतरिक्ष में गिर गयी हैं या फिर उनकी रंग-बिरंगी कार्टून वाली सारी कहानियां की किताबें दीमकों ने खा ली हैं।

क्या बच्चों के सारे खिलौने किसी काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं या फिर सारे स्कूलों के भवन किसी भूकंप की वजह से गिर गये हैं। यानी सारे स्कूल खत्म हो चुके हैं।

कवि आगे और सवाल करते हैं कि वो सारे खेल के मैदान, जहां बच्चे दिनभर खूब खेलते हैं। वो सारे बाग-बगीचे जिनमें बच्चे दौड़-दौड़ कर तितलियों पकड़ते हैं या फल-फूल खाने के लिए धूमते फिरते हैं।

और घरों के वो आँगन, जहां बच्चे दिनभर धमाचौकड़ी करते रहते हैं। वो कहाँ गये। क्या वह सब खत्म हो गए हैं ? जिस वजह से इन बच्चों को अब काम पर जाना पड़ रहा है। कवि पूछते हैं कि आखिर क्यों इन बच्चों को काम पर जाना पड़ रहा है।

काव्यांश 3.

तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में ?
 कितना भयानक होता अगर ऐसा होता
 भयानक है लेकिन इससे भी ज्यादा यह
 कि हैं सारी चीजें हस्तमामूल
 पर दुनिया की हजारों सड़कों से गुजरते हुए
 बच्चे, बहुत छोटे छोटे बच्चे
 काम पर जा रहे हैं।

**भावार्थ –**

उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि अगर सच में बच्चों की सारी गेंदें अंतरिक्ष में गिर गई हैं। और खेल के सभी मैदान खत्म हो गए हैं या बच्चों की कहानी की किताबें दीमकों ने खा ली हैं। तो फिर दुनिया में बचा ही क्या हैं ?

और अगर यह सब सच होता, तो यह वाकई में बहुत भयानक होता। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ है। सब पहले जैसा (हस्तमामूल) ही, अपनी जगह यथावत है। और सब पहले जैसा होने के बावजूद भी, बच्चों को काम पर जाना पड़ रहा है। यह उससे भी ज्यादा भयानक है।

कवि आगे कहते हैं कि सब कुछ यथावत होते हुए भी दुनिया की हजारों सड़कों से, हर रोज हजारों बच्चे काम करने के लिए जा रहे हैं। बहुत छोटे बच्चे काम करने के लिए जा रहे हैं। अपना बचपन भुलाकर, वो काम करने जा रहे हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 कविता की पहली दो पंक्तियों को पढ़ने तथा विचार करने से आपके मन-मस्तिष्क में जो चित्र उभरता है उसे लिखकर व्यक्त कीजिए।

उत्तर- कविता की पहली दो पंक्तियों को पढ़ने से हमारे मन में कुछ गरीब बच्चों की अत्यंत दयनीय स्थिति का चित्र उभरता है। आर्थिक स्थिति के खराब होने के कारण उनका बचपन खो गया है। अपनी तथा अपने परिवार की जिम्मेदारियों को उठाते ये दो हाथ निरंतर क्रियाशील हैं। इनकी आँखों में कुछ सपने हैं जिन्हें पूरा करने में ये असमर्थ हैं।

प्रश्न 2 कवि का मानना है कि बच्चों के काम पर जाने की भयानक बात को विवरण की तरह न लिखकर सवाल के रूप में पूछा जाना चाहिए कि 'काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?' कवि की वृष्टि में उसे प्रश्न के रूप में क्यों पूछा जाना चाहिए?

उत्तर- बच्चों की इस स्थिति का जिम्मेवार समाज है। कवि द्वारा विवरण मात्र देकर उनके जरूरी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं की जा सकती। इसके लिए लिए समाज को इस समस्या से जागरूक करने के लिए तथा ठोस समाधान ढूँढ़ने के लिए बात को प्रश्न रूप में ही पूछा जाना उचित होगा। लोगों को बैठ विमर्श कर इस समस्या का उचित समाधान करना होगा।

प्रश्न 3 सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चे वंचित क्यों हैं?

उत्तर- सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चों के वंचित रहने के मुख्य कारण सामाजिक व्यवस्था और आर्थिक मज़बूरी है। समाज के गरीब तबके के बच्चों को न चाहते हुए भी अपने माता-पिता का हाथ बँटाना पड़ता है। जहाँ जीविका के लिए इतनी मेहनत करनी पड़े तब सुख-सुविधाओं की कल्पना करना असंभव सा लगता है।

प्रश्न 4 दिन-प्रतिदिन के जीवन में हर कोई बच्चों को काम पर जाते देख रहा/ रही है, फिर भी किसी को कुछ अटपटा नहीं लगता। इस उदासीनता के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर- इस प्रकार की उदासीनता के कई कारण हो सकते हैं जैसे-

- आज के मनुष्य का आत्मकेंद्रित होना। वे केवल अपने और अपने बच्चों के बारे में ही सोचते हैं।
- जागरूकता तथा जिम्मेदारी की कमी के कारण लोग सोचते हैं कि यह उनका नहीं सरकार का काम है।



- iii. व्यस्तता के कारण भी आज के लोग अपनी ही परेशानियों में इस कदर खोये हुए हैं कि उन्हें दूसरे की समस्या से कोई सरोकार नहीं होता है।
- iv. लोगों को कम कीमत में अच्छे श्रमिक मिल जाते हैं इसलिए भी वे इसके विरुद्ध कोई कदम नहीं उठाना चाहते हैं।

प्रश्न 5 आपने अपने शहर में बच्चों को कब-कब और कहाँ-कहाँ काम करते हुए देखा हैं?

उत्तर- शहर में अक्सर बच्चे-

- i. दुकानों में काम करते नज़र आते हैं।
- ii. ढाबों में बरतन साफ़ करते नज़र आते हैं।
- iii. बड़े-बड़े दफ्तरों में चाय देते नज़र आते हैं।
- iv. बस में भी काम करते हैं।
- v. घरों में अक्सर कम उम्र के बच्चे ही काम करते देखे गए हैं।

प्रश्न 6 बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान क्यों है?

उत्तर- बच्चे इस देश का भविष्य हैं। यदि बच्चे पढ़ लिख नहीं पाते तब हमारे देश की आने वाली पीढ़ी भी पिछड़ी होगी, देश का भविष्य अंधकारपूर्ण होगा। उन्हें उनके बचपन से वंचित रखना अपराध तथा अमानवीय कर्म है। इसलिए बच्चों का काम पर जाना धरती के एक बड़े हादसे के समान है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 काम पर जाते किसी बच्चे के स्थान पर अपने-आप को रखकर देखिए। आपको जो महसूस होता है उसे लिखिए।

उत्तर- मुझे यदि इस तरह बाल मजदूरी करनी पड़े तो मैं अपने आप को हीन समझने लगूँगा। जिस घर में मैं काम कर रहा हूँगा जब मैं वहाँ अपनी ही उम्र के बच्चों को देखूँगा कि वे किस तरह मजे और आराम का जीवन व्यतीत कर रहे हैं तो मुझे अत्यंत खेद होगा। माता-पिता की आर्थिक परेशानियों के प्रति सहानुभूति की अपेक्षा रोष उत्पन्न होने लगेगा मेरा आन्मविश्वास कमज़ोर पड़ने लगेगा। मेरे मन में तरह-तरह के प्रश्न उभरने लगेंगे। मेरा मन हमेशा अशांत और दुखी रहने लगेगा।

प्रश्न 2 आपके विचार से बच्चों को काम पर क्यों नहीं भेजा जाना चाहिए? उन्हें क्या करने के मौके मिलने चाहिए?

उत्तर- हमारे विचार से बच्चों को काम पर नहीं भेजना चाहिए क्योंकि उनके छोटे से मस्तिष्क में इस घटना का दुखद प्रभाव पड़ सकता है, जो धीरे-धीरे बढ़कर विद्रोह का रूप धारण कर सकता है। इसी तरह के बच्चे आर्थिक अभाव तथा सामाजिक असमानता के कारण आगे चलकर आतंकवादी, चोरी जैसे गलत कामों को अंजाम दे सकते हैं। इससे समाज की हानि हो सकती है।

सबसे पहले तो समाज की यह कोशिश होनी चाहिए कि ऐसे बच्चों को अन्य सभी बच्चों की तरह पढ़ने-लिखने तथा समाज के साथ आगे बढ़ने का मौका मिलना चाहिए या फिर उनकी सहायता करने के लिए सरकार तथा समाज से सहायता की माँग करनी चाहिए।



संचयन भाग 1



संचयन भाग – 1

गिल्लू

-महादेवी वर्मा

सारांश

इस पाठ में लेखिका महादेवी वर्मा का एक छोटे, चंचल जीव गिलहरी के प्रति प्रेम झलकता है। उन्होंने इस पाठ में उसके विभिन्न क्रियाकलापों और लेखिका के प्रति उसके प्रेम से हमें अवगत कराया है। उन्होंने गिलहरी जैसे लघु जीव के जीवन का बड़ा अच्छे ढंग से चित्रण किया है।

एक दिन लेखिका की नजर बरामदे में गिलहरी के एक छोटे से बच्चे पर पड़ी जो शायद घोंसले से गिर गया होगा जिसे दो कौवे मिलकर अपना शिकार बनाने की तैयारी में थे। लेखिका गिलहरी के बच्चे को उठाकर अपने रूम ले गयी और कौवे की चौंच से घायल बच्चे का मरहम-पट्टी किया। कई घंटे के उपचार के बाद मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा हो गया कि लेखिका की ऊँगली अपने पंजो से पकड़ने लगा।

तीन चार महीने में उसके चिकने रोएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकती आँखें सभी को आश्वर्य में डालने लगीं। लेखिका ने उसका नाम गिल्लू रखा। लेखिका ने फूल रखने की एक हल्की डलिया में रुई बिछाकर तार से खिड़की पर लटका दिया जो दो साल तक गिल्लू का घर रहा।

गिल्लू ने लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए वह लेखिका के पैर तक आकर सर्व से पर्दे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से उतरता। वह दौड़ लगाने का काम तब तक करता जब तक लेखिका उसे पकड़ने के लिए न उठती। वह अपनी चमकीली आँखों से लेखिका के क्रियाकलापों को भी देखा करता। भूख लगने पर वह लेखिका को चिक-चिक कर सूचना देता था।

गिल्लू के जीवन में पहला बसंत आया। अन्य गिलहरियाँ जाली खिड़की के जाली के पास आकर चिक-चिक करने लगीं और गिल्लू भी जाली के पास जाकर बैठा रहता। इसे देखकर लेखिका ने जाली के एक कोना खोलकर गिल्लू को मुक्त कर दिया।

लेखिका के कमरे से बाहर जाने पर गिल्लू भी जाली से बाहर चला जाता। वह दिन भर अन्य गिलहरियों के साथ उछलता-कूदता और शाम होते ही अपने झूले में वापस आ जाता। लेखिका के खाने के कमरे में पहुँचते ही गिल्लू भी वहाँ पहुँच जाता और थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी मुश्किल से लेखिका ने उसे थाली के पास बैठना सिखाया। वह वहीं बैठकर चावल का एक-एक दानासफाई से खाता।

गिल्लू का प्रिय खाद्य पदार्थ काजू था। कई दिन काजू नहीं मिलने पर वह अन्य खानें की चीजें लेना बंद कर देता या झूले से नीचे फेंक देता था।



उसी बीच लेखिका मोटर दुर्घटना में आहत हो गयीं जिससे उन्हें कुछ दिन अस्पताल में रुकना पड़ा। उन दिनों में गिल्लू ने अपना प्रिय पदार्थ काजू लेना काफी कर दिया था। लेखिका के घर लौटने पर वह तकिये पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हे पंजों से लेखिका सर और बालों को हौले-हौले सहलाता और एक सेविका की भूमिका निभाता।

गर्मियों में वह लेखिका के पास रखी सुराही पर लेट जाता और लेखिका के समीप रहने के साथ-साथ ठंडक में भी रहता।

चूँकि गिलहरियों की उम्र दो वर्ष से अधिक नहीं होती इसलिए उसके जीवन का भी अंत आ गया। दिन भर उसने कुछ नहीं खाया-पीया। रात में वह झूले से उत्तरकर लेखिका के बिस्तर पर आया और ठंडे पंजों से उनकी उँगली पकड़कर चिपक गया। लेखिका ने हीटर जलाकर उसे ऊषा देने का प्रयास किया परन्तु प्रयास व्यर्थ रहा और सुबह की पहली किरण के साथ सदा के लिए सो गया।

लेखिका ने उसे सोनजुही की लता के नीचे उसे समाधि दी। सोनजुही में एक पीली कली को देखकर लेखिका को गिल्लू की याद आ गयी।

बोध-प्रश्न प्रश्न

प्रश्न 1 सोनजुही में लगी पीली कली को देख लेखिका के मन में कौन से विचार उमड़ने लगे?

उत्तर- सोनजुही में लगी पीली कली को देखकर लेखिका के मन में यह विचार आया कि गिल्लू सोनजुही के पास ही मिट्टी में दबाया गया था। इसलिए अब वह मिट्टी में विलीन हो गया होगा और उसे चौंकाने के लिए सोनजुही के पीले फूल के रूप में फूट आया होगा।

प्रश्न 2 पाठ के आधार पर कौए को एक साथ समादरित और अनादरित प्राणी क्यों कहा गया है?

उत्तर- हिंदू संस्कृति में ऐसी मान्यता है कि पितृपक्ष में हमारे पूर्वज हमसे कुछ पाने के लिए कौए के रूप में हमारे सामने आते हैं। इसके अलावा कौए हमारे दूरस्थ रिश्तेदारों के आगमन की सूचना भी देते हैं, जिससे उसे आदर मिलता है। दूसरी ओर कौए की कर्कश भरी काँव-काँव को हम अवमानना के रूप में प्रयुक्त करते हैं। इससे वह तिरस्कार का पात्र बनता है। इस प्रकार एक साथ आदर और अनादर पाने के कारण कौए को समादरित और अनादरित कहा गया है।

प्रश्न 3 गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार किस प्रकार किया गया?

उत्तर- महादेवी वर्मा ने गिलहरी के घायल बच्चे का उपचार बड़े ध्यान से ममतापूर्वक किया। पहले उसे कमरे में लाया गया। उसका खून पोंछकर घावों पर पैसिलिन लगाई गई। उसे रुई की बत्ती से दूध पिलाने की कोशिश की गई। परंतु दूध की बूंदें मुँह के बाहर ही लुढ़क गईं। कुछ समय बाद मुँह में पानी टपकाया गया। इस प्रकार उसका बहुत कोमलतापूर्वक उपचार किया गया।

प्रश्न 4 लेखिकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था?

उत्तर- लेखिका का ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू-

- उसके पैर तक आकर सर्द से परदे पर चढ़ जाता और उसी तेज़ी से उत्तरता था। वह ऐसा तब तक करता था, जब तक लेखिका उसे पकड़ने के लिए न उठ जाती।
- भूख लगने पर वह चिक-चिक की आवाज़ करके लेखिका का ध्यान खींचता था।



प्रश्न 5 गिल्लू को मुक्त करने की आवश्यकता क्यों समझी गई और उसके लिए लेखिका ने क्या उपाय किया?

उत्तर- महादेवी ने देखा कि गिल्लू अपने हिसाब से जवान हो गया था। उसका पहला वसंत आ चुका था। खिड़की के बाहर कुछ गिलहरियाँ भी आकर चिकचिक करने लगी थीं। गिल्लू उनकी तरफ प्यार से देखता रहता था। इसलिए महादेवी ने समझ लिया कि अब उसे गिलहरियों के बीच स्वच्छंद विहार के लिए छोड़ देना चाहिए।

लेखिका ने गिल्लू की जाली की एक कील इस तरह उखाड़ दी कि उसके आने-जाने का रास्ता बन गया। अब वह जाली के बाहर अपनी इच्छा से आ-जा सकता था।

प्रश्न 6 गिल्लू किन अर्थों में परिचारिका की भूमिका निभा रहा था?

उत्तर- लेखिका एक मोटर दुर्घटना में आहत हो गई थी। अस्वस्थता की दशा में उसे कुछ समय बिस्तर पर रहना पड़ा था। लेखिका की ऐसी हालत देख गिल्लू परिचारिका की तरह उसके सिरहाने तकिए पर बैठा रहता और अपने नन्हें-नन्हें पंजों से उसके (लेखिका के) सिर और बालों को इस तरह सहलाता मानो वह कोई परिचारिका हो।

प्रश्न 7 गिल्लू की किन चेष्टाओं से यह आभास मिलने लगा था कि अब उसका अंत समय समीप है?

उत्तर- गिल्लू की निम्नलिखित चेष्टाओं से महादेवी को लगा कि अब उसका अंत समीप है-

- उसने दिनभर कुछ भी नहीं खाया।
- वह रात को अपना झूला छोड़कर महादेवी के बिस्तर पर आ गया और उनकी उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया।

प्रश्न 8 ‘प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया’ का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- आशय यह है गिल्लू का अंत समय निकट आ गया था। उसके पंजे ठंडे हो गए थे। उसने लेखिका की अँगुली पकड़ रखा था। उसने उष्णता देने के लिए हीटर जलाया। रात तो जैसे-तैसे बीती परंतु सवेरा होते ही गिल्लू के जीवन का अंत हो गया।

प्रश्न 9 सोनजुही की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि से लेखिकों के मन में किस विश्वास का जन्म होता है?

उत्तर- सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू की समाधि बनी थी। इससे लेखिका के मन में यह विश्वास जम गया कि एक-न-एक दिन यह गिल्लू इसी सोनजुही की बेल पर पीले चटक फूल के रूप में जन्म ले लेगा।





स्मृति

-श्रीराम शर्मा जी

सारांश

प्रस्तुत पाठ या संस्मरण स्मृति लेखक श्रीराम शर्मा जी के द्वारा लिखित है। इस पाठ के माध्यम से लेखक ने अपने बाल्यावस्था के अविस्मरणीय घटना का वर्णन किया है। प्रस्तुत संस्मरण में लेखक ने उस घटना का चित्रण किया है, जिसमें उन्होंने साँप से लड़कर चिट्ठीयों को सुरक्षा प्रदान किया था।

आगे प्रस्तुत पाठ या संस्मरण के अनुसार, ठंड का मौसम गतिमान था। एक रोज शाम में जब लेखक अपने दोस्तों के साथ क्रीड़ा अथवा खेल-कूद कर रहे थे, तभी एक आदमी ने उन्हें आवाज़ दी कि तुम्हारे भाई बुला रहे हैं। लेखक

पने छोटे भाई के साथ डरे-सहमे घर की तरफ़ चल पड़ते हैं। लेखक के मन में किसी गलती के कारण पिटने का खौफ़ सता रहा था। जब लेखक अपने घर पहुँचते हैं तो वे देखते हैं कि उनके बड़े भाई चिट्ठी लिख रहे हैं। तत्पश्चात्, लेखक को उनके बड़े भाई ने चिट्ठीयों सौंपी तथा उन्हें मक्खनपुर पोस्ट ऑफिस में पोस्ट करने को कहा। लेखक और उनके छोटे भाई ने चिट्ठीयों को टोपी में रखा और अपने-अपने डंडे पकड़कर चल दिए। आगे पाठ के अनुसार, वे लोग गाँव से चार फर्लांग दूर उस कुएँ के पास आ पहुँचे, जहाँ पर एक भयंकर काला साँप मौजूद था। देखा जाए तो कुआँ कच्चा था तथा लगभग चौबीस हाथ गहरा था। पानी के नाम पर उस कुएँ में कुछ भी नहीं था। वास्तव में, जब लेखक और उसके सहपाठी स्कूल के लिए जाते थे, तब उस वक्त वे लोग कुएँ में ढेला मारते और साँप की आवाज़ सुनकर मजे लेते थे। आज भी कुछ ऐसा ही दृश्य देखने को मिला। लेखक ने ढेला उठाया और एक हाथ से टोपी उतारते हुए साँप पर ढेला मार दिया। टोपी के हाथ में लेते ही तीनों चिट्ठीयों कुएँ में गिर पड़ी। लेखक को ऐसा लगा मानों उसकी जान ही निकल गई हो। तत्पश्चात्, लेखक और उनके छोटे भाई दोनों कुएँ के समीप बैठकर दहाड़े मार-मार कर रोने लगते हैं। कुछ समय गुजर जाने के पश्चात् दोनों के मध्य यह भयमुक्त फैसला लिया गया कि लेखक कुएँ के अंदर जाकर चिट्ठीयों निकाल कर लाएँगे।

आगे प्रस्तुत पाठ के अनुसार, उन लोगों ने धोतियों और रस्सियों में गाठे लगाकर एक बड़ी रस्सी तैयार की। तत्पश्चात्, रस्सी के एक छोर पर डंडा बाँधा गया और उसे कुएँ में डाल दिया गया। लेखक ने रस्सी के दूसरे छोर को लकड़ी से बाँधकर अपने छोटे भाई के हाथ में थमा दिया। कुएँ के अंदर साँप फ़न फैलाकर बैठा था। लेखक भी अपने साहस का परिचय देते हुए धीरे-धीरे कुएँ के अंदर उतरने लगे। लेखक अपनी आँखें साँप के फ़न की तरफ़ ही टिकाकर रखे थे। लेकिन जहाँ साँप था, वहाँ पर डंडा चलाने का स्थान भी नहीं था। इन्हीं सब वजहों से लेखक को अपनी योजना कहीं न कहीं असफल होते लगने लगी थीं। अभी तक साँप ने लेखक पर किसी प्रकार का हमला नहीं किया था। इसलिए लेखक ने भी अपने डंडे से फ़न को दबाने की कोई कोशिश नहीं की थी। तत्पश्चात्, ज्यों ही लेखक ने डंडे को साँप के दायीं ओर पड़ी चिट्ठी की तरफ़ बढ़ाया, साँप ने अपना विष डंडे पर छोड़ दिया। लेकिन इसके बाद लेखक के हाथ से डंडा छूट गया। तत्पश्चात्, साँप ने डंडे के ऊपर लगातार तीन प्रहर किए। इस दृश्य को देखकर लेखक के छोटे भाई को अंदेशा हुआ कि कहीं लेखक को साँप ने डस तो नहीं लिया है। यह सोचकर लेखक का भाई चीखता है। आगे पाठ के अनुसार, लेखक ने डंडे को पुनः उठाकर चिट्ठीयों उठाने का प्रयत्न किया, परन्तु साँप



ने फिर से वार किया। लेकिन इस बार लेखक ने अपने हाथों से डंडा नहीं गिरने दिया। पर तत्पश्चात् जैसे ही साँप का पिछला भाग लेखक के हाथों में स्पर्श हुआ, लेखक ने फ़ौरन डंडा पटक दिया। इसी उठा-पटक में साँप का जगह बदल गया। तभी लेखक ने तुरंत चिट्ठीयों को उठाया और रस्सी में बाँध दिया। तत्पश्चात्, लेखक के भाई ने रस्सी से बंधे चिट्ठीयों को ऊपर की ओर खींच लिया।

आगे पाठ के अनुसार, नीचे गिरे अपने डंडे को साँप के पास से लेने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा। आगे लेखक के साथ और भी मुश्किल सामने आई, उसे अब अपने हाथों के बल पर ऊपर चढ़ना था। लेखक ने ग्यारह वर्ष की उम्र में 36 फुट चढ़ने का कारनामा किया था। वो भी जान हथेली पर रखकर उन्होंने ऐसे साहस भरे काम को अंजाम दिया था। तत्पश्चात्, लेखक और उनके छोटे भाई ने वहीं पर विश्राम किया। जब लेखक 10वीं की परीक्षा पास किए तो उन्होंने यह साहसिक घटना अपनी माँ को सुनाई। उस वक्त लेखक की माँ ने उन्हें अपनी गोद में बैठाकर लेखक के प्रति प्रशंसा के पुल बाँधे।

बोध-प्रश्न प्रश्न

प्रश्न 1 भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक के मन में किस बात का डर था?

उत्तर- भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक डर गया था। उसे लगा कि उसके बड़े भाई झारबेरी से बेर तोड़-तोड़कर खाने के लिए डाँटेंगे और उसे खूब पीटेंगे।

प्रश्न 2 मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली रास्ते में पड़ने वाले कुएँ में ढेला क्यों फेंकती थी?

उत्तर- लेखक के गाँव से मक्खनपुर जाने वाली राह में 36 फीट के करीब गहरा एक कच्चा कुआँ था। उसमें एक साँप न जाने कैसे गिर गया था। मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली बच्चों की टोली उस कुएँ में इसलिए ढेले फेंकती थी ताकि साँप क्रुद्ध होकर फुफकारे और बच्चे उस फुफकार को सुन सकें।

प्रश्न 3 ‘साँप ने फुसकार मारी या नहीं, ढेला उसे लगा या नहीं, यह बात अब तक स्मरण नहीं’—यह कथन लेखक की किस मनोदशा को स्पष्ट करता है?

उत्तर- यह कथन लेखक की बदहवास मनोदशा को स्पष्ट करता है। जैसे ही लेखक ने टोपी उतारकर कुएँ में ढेला फेंका, उसकी ज़रूरी चिट्ठीयाँ कुएँ में जा गिरी।

उन्हें कुएँ में गिरता देखकर वह भौंचका रह गया। उसका ध्यान चिट्ठीयों को बचाने में लग गया। वह यह देखना भूल गया कि साँप को ढेला लगा या नहीं और वह फुसकारा या नहीं।

प्रश्न 4 किन कारणों से लेखक ने चिट्ठीयों को कुएँ से निकालने का निर्णय लिया?

उत्तर- लेखक द्वारा चिट्ठीयों को कुएँ से निकालने के निम्नलिखित कारण हैं-

- लेखक को झूठ बोलना नहीं आता था।
- चिट्ठीयों को डाकखाने में डालना लेखक अपनी जिम्मेदारी समझता था।
- लेखक को अपने भाई से रुई की तरह पिटाई होने का भय था।
- वह साँप को मारना बाँह हाथ का काम समझता था, जिससे चिट्ठीयाँ उठाना उसे आसान लग रहा था।

प्रश्न 5 साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने क्या-क्या युक्तियाँ अपनाई?

उत्तर- साँप का ध्यान बँटाने के लिए लेखक ने निम्नलिखित युक्तियाँ अपनाई-



- उसने मुट्ठीभर मिट्टी फेंककर साँप का ध्यान उधर लगा दिया।
- उसने अपने हाथ का प्रहार करने की बजाय उसकी तरफ डंडा बढ़ा दिया, जिससे साँप ने सारा विष डंडे पर उगल दिया।

प्रश्न 6 कुएँ में उत्तरकर चिट्ठियों को निकालने संबंधी साहसिक वर्णन को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- कुएँ में चिट्ठियाँ गिर जाने पर लेखक ने रोना-धोना छोड़कर भयानक निर्णय लिया। उसने अपनी और अपने छोटे भाई की पाँचों धोतियों को एक-दूसरे से बाँधा। इसके एक छोर में डंडा बाँधकर उसे कुएँ में उतार दिया और दूसरे सिरे को कुएँ की डेंग में बाँधकर भाई को पकड़ा दिया। अब उन धोतियों के सहारे लेखक कुएँ में उतर गया और कुएँ के धरातल से चार पाँच गज ऊपर लटककर साँप को देखने लगा। साँप भी फन फैलाए लेखक की प्रतीक्षा कर रहा था। लेखक ने कुएँ की दीवार में पैर जमाकर कुछ मिट्टी गिराई। इससे साँप का ध्यान बँट गया। वह मिट्टी पर मुँह मार बैठा।

इस बीच लेखक ने डंडे से जब चिट्ठियाँ सरकाई तो साँप ने जोरदार प्रहार किया और अपनी शक्ति के प्रमाण स्वरूप डंडे पर तीन-चार जगह विषवमन कर दिया। इससे लेखक का साहस बढ़ा। उसने चिट्ठियाँ उठाने का प्रयास किया तो साँप ने वार किया और डंडे से लिपट गया। इस क्रम में साँप की पूँछ का पिछला भाग लेखक को छू गया। यह देख लेखक ने डंडे को पटक दिया और चिट्ठियाँ उठाकर धोती में बाँध दिया, जिन्हें उसके भाई ने ऊपर खींच लिया। अब लेखक ने कुएँ की दीवार से कुछ मिट्टी साँप की दाहिनी ओर फेंकी। साँप उस पर झापटा। अब लेखक ने डंडा खींच लिया। लेखक ने मौका देखा और जैसे-तैसे हाथों के सहरे सरककर छत्तीस फुट गहरे कुएँ से ऊपर आ गया।

प्रश्न 7 इस पाठ को पढ़ने के बाद किन-किन बाल-सुलभ शरारतों के विषय में पता चलता है?

उत्तर- बालक प्रायः शरारती होते हैं। उन्हें छेड़छाड़ करने में आनंद मिलता है। यदि उनकी छेड़छाड़ से कोई हलचल होती हो तो वे उसमें बहुत मज़ा लेते हैं। साँप को व्यर्थ में ही फॅफकारते देखकर वे बड़े खुश होते हैं।

बालकों को प्रकृति के स्वच्छंद वातावरण में विहार करने में भी असीम आनंद मिलता है। वे झारबेरी के बेर तोड़-तोड़कर खाते हैं तथा मन में आनंदित होते हैं। वे आम के पेड़ पर चढ़कर डंडे से आम तोड़कर खाने में खूब आनंद लेते हैं।

प्रश्न 8 मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी-कभी कितनी मिथ्या और उलटी निकलती हैं – का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- मनुष्य किसी कठिन काम को करने के लिए अपनी बुद्धि से योजनाएँ तो बनाता है, किंतु समस्याओं का वास्तविक सामना होते ही ये योजनाएँ धरी की धरी रह जाती हैं। तब उसे यथार्थ स्थिति को देखकर काम करना पड़ता है। इस पाठ में लेखक ने सोचा था कि कुएँ में उत्तरकर वह डंडे से साँप को मार देगा और चिट्ठियाँ उठा लेगा, परंतु कुएँ का कम व्यास देखकर उसे लगा कि यहाँ तो डंडा चलाया ही नहीं जा सकता है। उसने जब साँप को फन फैलाए अपनी प्रतीक्षा करते पाया तो साँप को मारने की योजना उसे एकदम मिथ्या और उलटी लगने लगी।

प्रश्न 9 ‘फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है’-पाठ के संदर्भ में इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- लेखक ने कुएँ से चिट्ठियाँ निकालने के लिए कुएँ में उतरने का दृढ़ निश्चय कर लिया। इस दृढ़ निश्चय के सामने फल की चिंता समाप्त हो गई। उसे लगा कि कुएँ में उतरने तथा साँप से लड़ने का फल क्या होगा, यह सोचना उसका काम नहीं है। परिणाम तो प्रभु-इच्छा पर निर्भर है। इसलिए वह फल की चिंता छोड़कर कुएँ में घुस गया।





कल्लू कुम्हार की उनाकोटी

-के. विक्रम सिंह

सारांश

इस पाठ में लेखक ने अपनी त्रिपुरा यात्रा का वर्णन किया है। इन्होंने त्रिपुरा के व्यक्तियों, धर्मों, दर्शनीय स्थलों आदि का वर्णन किया है। यह पाठ हमें छोटे से राज्य त्रिपुरा के बारे में कई जानकारियाँ देता है।

लेखक सूर्योदय के समय उठते हैं, चाय और अखबार लेकर सुबह का आनंद लेते हैं। एक दिन लेखक की नींद बिजलियाँ चमकने और बादलों के गर्जना की कानफोड़ आवाज से खुली। इस दृश्य ने उन्हें दिसम्बर 1999 की घटना जब वह 'ऑन द रोड' शीर्षक की टीवी श्रृंखला बनाने के सिलसिले में त्रिपुरा की राजधानी अगरतला की यात्रा पर गए थे की याद दिला दी। श्रृंखला का मुख्य उद्देश्य त्रिपुरा की राष्ट्रीय राजमार्ग-44 से यात्रा करने और राज्य के विकास संबंधी गतिविधियों की बारे में जानकारी देना था।

त्रिपुरा राज्य की जनसंख्या 34 प्रतिशत है, जो काफी ऊँची है। यह राज्य बांग्लादेश से तीन तरफ से घिरा है और एक तरफ से भारत के दो राज्य मिजोरम और असम सटे हैं। सोनुपुरा, बेलोनिया, सबरूम, कैलासशहर त्रिपुरा के महत्वपूर्ण शहर हैं, जो बांग्लादेश करीब है। अगरतला भी सीमा चौकी से दो किलोमीटर दूर है। बांग्लादेश, असमा, पश्चिम बंगाल के क्षेत्रों से लोगों की भारी आवाक ने यहाँ के जनसंख्या को असंतुलित कर दिया है, जो त्रिपुरा में आदिवासी असंतोष की मुख्य वजह है।

पहले तीन दिनों में लेखक ने अगरतला और उसके नजदीक स्थित जगहों की शूटिंग की। उज्जयंत महल अगरतला का मुख्य महल है जिसमें अब वहाँ की राज्य विधानसभा बैठती है। त्रिपुरा में बाहरी लोगों के आने से समस्याएँ पैदा हुई हैं, लेकिन इस कारण यह राज्य बहुधार्मिक समाज का उदाहरण भी बना है। त्रिपुरा में उन्नीस अनुसूचित जनजातियों और विश्व के चार बड़े धर्मों का प्रतिनिधित्व मौजूद है।

अगरतल्ला के बाद लेखक टीलियामुरा कस्बा पहुँचे जो एक विशाल गाँव है। यहाँ लेखक की मुलाकात हेमंत कुमार जमातिया से हुई। जिन्हें 1996 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है। ये कोकबारोक बौली में गाते हैं जो त्रिपुरा की कबीलाई बोलियों में से है। हेमंत ने हथियारबंद संघर्ष का रास्ता छोड़कर चुनाव लड़ा और जिला परिषद के सदस्य बने गए थे। जिला परिषद ने लेखक के शूटिंग यूनिट के लिए एक भोज का आयोजन भी किया जिसमें उन्हें सीधा-सादा खाना परोसा गया। भोज के बाद लेखक ने हेमंत से गीत सुनाने के अनुरोध किया और उन्होंने लेखक को धरती पर बहती शक्तिशाली नदियों, ताजगी भरी हवाओं और शांति का एक गीत गाया। बॉलीवुड के सबसे मौलिक संगीतकारों में एक एस. डी. बर्मन त्रिपुरा से ही थे।

टीलियामुरा शहर के वार्ड नं. 3 में लेखक की मुलाकात एक और गायक मंजू ऋषिदास से हुई। ऋषिदास मोचियों के एक समुदाय का नाम है जो जूते बनाने के अलावा तबला और ढोल जैसे वाद्यों का निर्माण भी करते हैं। ऋषिदास रेडियो कलाकार होने के अतिरिक्त नगर पंचायत में अपने वार्ड का प्रतिनिधित्व भी करती थीं। उन्होंने लेखक को दो गीत सुनाए जिनका लेखक ने शूटिंग किया।



टीलियामुरा के बाद त्रिपुरा का हिंसाग्रस्त इलाका शुरू होता है। लेखक वहाँ से सी.आर.पी.एफ. की हथियारबन्द गाड़ी में मनु कस्बे और चल पड़े। मनु कस्बा मनु नदी के किनारे स्थित है। शाम के समय वे लोग मनु कस्बा पहुँचे। वे लोग उत्तरी त्रिपुरा जिले में पहुँच चुके थे। वहाँ लोकप्रिय घरेलू गतिविधियों में से एक है अगरबत्तियों के लिए बाँस की पतली सींकें तैयार करना। अगरबत्तियाँ बनाने के लिए इन्हें कर्नाटक और गुजरात भेजा जाता है।

उत्तरी त्रिपुरा जिले का मुख्यालय कैलासशहर है जो बांग्लादेश की सीमा से करीब है। यहाँ के जिलाधिकारी से लेखक ने टी.पी.एस (टरु पोटेटो सीड़) के बारे में जाना जो मात्र 100 ग्राम में ही एक हेक्टेयर की बुआई कर देती है।

लेखक को बाद में उनकोटि के बारे में पता चला जो देश के सबसे बड़े तीर्थों में से एक है। उनाकोटी का अर्थ होता है एक करोड़ से कम। दंतकथा के अनुसार उनकोटि में शिव की एक करोड़ में से एक मूर्ति कम है। विद्वानों के अनुसार यह जगह दस वर्ग से किलोमीटर इलाके से ज्यादा में फैली हुयी है। पहाड़ों को अंदर से काटकर मूर्तियों का निर्माण किया गया है। एक विशाल चट्टान पर गंगा अवतरण की कथा को चित्रित किया गया है।

इन आधार-मूर्तियों का निर्माता कौन है यह नहीं पता है। आदिवासियों के अनुसार इन मूर्तियों का निर्माता कल्लू कुम्हार था। कल्लू पार्वती का बड़ा भक्त था और शिव-पार्वती के साथ कैलाश जाना चाहता था। पार्वती के जोर देने पर शिव कल्लू को ले जाने के लिए तैयार हो गए परन्तु उन्होंने शर्त रखी कि एक रात में कल्लू कुम्हार को शिव की एक कोटि मूर्तियाँ बनानी होंगी। कल्लू रात भर काम करता रहा परन्तु सुबह में उसकी मूर्तियों की संख्या एक करोड़ में से एक कम निकली। इसी बात का बहाना बनाते हुए शिव ने कल्लू कुम्हार से अपना पीछा छुड़ा लिया और कैलाश चले गए।

इस जगह की शूटिंग करते हुए लेखक को चार बजे गए। उनाकोटी में अँधेरा छा गया और बादल गरज-गरज कर बरसने लगे। आज का गर्जन ने लेखक को तीन साल पहले वाले उनाकोटी के गर्जन का याद दिला दिया।

STEP UP

ACADEMY

प्रश्न 1 'उनाकोटी' का अर्थ स्पष्ट करते हुए बतलाएँ कि यह स्थान इस नाम से क्यों प्रसिद्ध है?

उत्तर- उनाकोटी का अर्थ है-एक कोटी अर्थात् एक करोड़ से एक कम। इस स्थान पर भगवान शिव की एक करोड़ से एक कम मूर्तियाँ हैं। इतनी अधिक मूर्तियाँ एक ही स्थान पर होने के कारण यह स्थाने प्रसिद्ध हैं।

प्रश्न 2 पाठ के संदर्भ में उनाकोटी में स्थित गंगावतरण की कथा को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- उनाकोटी में पहाड़ों को अंदर से काटकर विशाल आधार मूर्तियाँ बनाई गई हैं। अवतरण के धक्के से कहीं पृथ्वी धंसकर पाताल लोक में न चली जाए,

इसके लिए शिव को राजी किया गया कि वे गंगा को अपनी जटाओं में उलझा लें और बाद में धीरे-धीरे बहने दें। शिव का चेहरा एक समूची चट्टान पर बना हुआ है। उनकी जटाएँ दो पहाड़ों की चोटियों पर फैली हैं। यहाँ पूरे साल बहने वाला जल प्रपात है, जिसे गंगा जल की तरह ही पवित्र माना जाता है।

प्रश्न 3 कल्लू कुम्हार का नाम उनाकोटी से किस प्रकार जुड़ गया?

उत्तर- स्थानीय आदिवासियों के अनुसार कल्लू कुम्हार ने ही उनाकोटी की शिव मूर्तियों का निर्माण किया है। वह शिव का भक्त था। वह उनके साथ कैलाश पर्वत पर जाना चाहता था। भगवान शिव ने शर्त रखी कि



वह एक रात में एक करोड़ शिव मूर्तियों का निर्माण करे। सुबह होने पर एक मूर्ति कम निकली। इस प्रकार शिव ने उसे वहीं छोड़ दिया। इसी मान्यता के कारण कल्लू कुम्हार का नाम उनाकोटी से जुड़ गया।

प्रश्न 4 मेरी रीढ़ में एक झुरझारी-सी दौड़ गई'-लेखक के इस कथन के पीछे कौन-सी घटना जुड़ी है?

उत्तर- लेखक राजमार्ग संख्या 44 पर टीलियामुरा से 83 किलोमीटर आगे मनु नामक स्थान पर शूटिंग के लिए जा रहा था। इ यात्रा में वह सी.आर.पी.एफ. की सुरक्षा में चल रहा था। लेखक और उसका कैमरा मैन हथियार बंद गाड़ी में चल रहे। थे। लेखक अपने काम में इतना व्यस्त था कि उसके मन में डर के लिए जगह न थी। तभी एक सुरक्षा कर्मी ने निचली पहाड़ियों पर रखे दो पत्थरों की ओर ध्यान आकृष्ट करके कहा कि दो दिन पहले उनका एक जवान विद्रोहियों द्वारा मार डाला गया था। यह सुनकर लेखक की रीढ़ में एक झुरझारी-सी दौड़ गई।

प्रश्न 5 त्रिपुरा 'बहुधार्मिक समाज' का उदाहरण कैसे बना?

उत्तर- त्रिपुरा में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग बाहरी क्षेत्रों से आकर बस गए हैं। इस प्रकार यहाँ अनेक धर्मों का समावेश हो गया है। तब से यह राज्य बहुधार्मिक समाज का उदाहरण बन गया है।

प्रश्न 6 टीलियामुरा कस्बे में लेखक का परिचय किन दो प्रमुख हस्तियों से हुआ? समाज-कल्याण के कार्यों में उनका क्या योगदान था?

उत्तर- टीलियामुरा कस्बे में लेखक का परिचय जिन दो प्रमुख हस्तियों से हुआ उनमें एक हैं- हेमंत कुमार जमातिया, जो त्रिपुरा के प्रसिद्ध लोक गायक हैं।

जमातिया 1996 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कृत किए जा चुके हैं। अपनी युवावस्था में वे पीपुल्स लिबरेशन आर्गनाइजेशन के कार्यकर्ता थे, पर अब वे चुनाव लड़ने के बाद जिला परिषद के सदस्य बन गए हैं।

लेखक की मुलाकात दूसरी प्रमुख हस्ती मंजु ऋषिदास से हुई, जो आकर्षक महिला थी। वे रेडियो कलाकार होने के साथसाथ नगर पंचायत की सदस्या भी थीं। लेखक ने उनके गाए दो गानों की शूटिंग की। गीत के तुरंत बाद मंजु ने एक कुशल गृहिणी के रूप में चाय बनाकर पिलाई।

प्रश्न 7 कैलासशहर के जिलाधिकारी ने आलू की खेती के विषय में लेखक को क्या जानकारी दी?

उत्तर- कैलासशहर के जिलाधिकारी ने लेखक को बताया कि यहाँ बुआई के लिए पारंपरिक आलू के बीजों के बजाय टी.पी.एस. नामक अलग किस्म के आलू के बीज का प्रयोग किया जाता है। इस बीज से कम मात्रा में ज्यादा पैदावार ली जा सकती है। यहाँ के निवासी इस तकनीक से काफी लाभ कमाते हैं।

प्रश्न 8 त्रिपुरा के घरेलू उद्योगों पर प्रकाश डालते हुए अपनी जानकारी के कुछ अन्य घरेलू उद्योगों के विषय में बताइए?

उत्तर- त्रिपुरा के लघु उद्योगों में मुख्यतः बाँस की पतली-पतली सीकें तैयार की जाती हैं। इनका प्रयोग अगरबत्तियाँ बनाने में किया जाता है। इन्हें कर्नाटक और गुजरात भेजा जाता है ताकि अगरबत्तियाँ तैयार की जा सकें। त्रिपुरा में बाँस बहुतायत मात्रा में पाया जाता है। इस बाँस से टोकरियाँ सजावटी वस्तुएँ आदि तैयार की जाती हैं।





मेरा छोटा सा निजी पुस्तकालय

-धर्मवीर भारती

सारांश

यह पाठ लेखक 'धर्मवीर भारती' की आत्मकथा है। सन् 1989 में लेखक को लगातार तीन हार्ट अटैक आए। उनकी नब्ज, साँसें, धड़कन सब बंद हो चुकी थीं। डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया परन्तु डॉक्टर बोर्जेस ने हिम्मत नहीं हारी और उनके मृत पड़ चुके शरीर को नौ सौ वॉल्ड्र के शॉक दिए जिससे उनके प्राण तो लौटे परन्तु हार्ट का चालीस प्रतिशत हिस्सा नष्ट हो गया और उसमें में भी तीन अवरोध थे। तय हुआ कि उनका ऑपरेशन बाद में किया जाएगा। उन्हें घर लाया गया। लेखक की जिद पर उन्हें उनकी किताबों वाले कमरे में लिटाया गया। उनका चलना, बोलना, पढ़ना सब बन्द हो गया।

लेखक को सामने रखीं किताबें देखकर ऐसा लगता मानो उनके प्राण किताबों में ही बसें हों। उन किताबों को लेखक ने पिछले चालीस-पचास सालों में जमा किया था जो अब एक पुस्तकालय का रूप ले चुका था।

उस समय आर्य समाज का सुधारवादी पुरे ज़ोर पर था। लेखक के पिता आर्यसमाज रानीमंडी के प्रधान थे और माँ ने स्त्री-शिक्षा के लिए आदर्श कन्या पाठशाला की स्थापना की थी। पिता की अच्छी खासी नौकरी थी लेकिन लेखक के जन्म से पहले उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी थी। लेखक के घर में नियमित पत्र-पत्रिकाएँ आर्तीं थीं जैसे 'आर्यमित्र साप्ताहिक', 'वेदोदम', 'सरस्वती', 'गृहिणी'। उनके लिए 'बालसखा' और 'चमचम' दो बाल पत्रिकाएँ भी आर्तीं थीं जिन्हें पढ़ना लेखक को बहुत अच्छा लगता था। लेखक बाल पत्रिकाओं के अलावा 'सरस्वती' और 'आर्यमित्र' भी पढ़ने की कोशिश करते। लेखक को 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ना बहुत पसंद था। वे पाठ्यक्रम की किताबों से अधिक इन्हीं किताबों और पत्रिकाओं को पढ़ते थे।

लेखक के पिता नहीं चाहते थे की लेखक बुरे संगति में पड़े इसलिए उन्हें स्कूल नहीं भेजा गया और शुरू की पढाई के लिए घर पर मास्टर रखे गए। तीसरी कक्षा में उनका दाखिला स्कूल में करवाया गया। उस दिन शाम को पिता लेखक को घुमाने ले गए और उनसे वादा करवाया कि वह पाठ्यक्रम की पुस्तकें भी ध्यान से पढ़ेंगे। पांचवीं में लेखक फर्स्ट आये और अंग्रेजी में उन्हें सबसे ज्यादा नंबर आया। इस कारण उन्हें स्कूल से दो किताबें इनाम में मिलीं। एक किताब में लेखक को विभिन्न पक्षियों के बारे में जानकारी मिली तथा दूसरे पानी की जहाजों की जानकारी मिली। लेखक के पिता ने अलमारी के खाने से अपनी चीज़ें हटाकर जगह बनाई और बोले 'यह अब तुम्हारी लाइब्रेरी। यहाँ से लेखक की निजी लाइब्रेरी की शुरुआत हुई।

लेखक के मुहल्ले में एक लाइब्रेरी थी जिसमें लेखक बैठकर किताबें पढ़ते थे उन्हें साहित्यिक किताबें पढ़ने में बहुत आनंद आता। उन दिनों विश्व साहित्य के किताबों के हिंदी में खूब अनुवाद हो रहे थे जिससे लेखक को विश्व का भी अनुभव होता था। चूँकि लेखक के पिता की मृत्यु हो चुकी थी इसलिए वे किताबें घर नहीं ले जा पाते थे जिसका उन्हें बहुत दुःख होता था। लेखक का आर्थिक संकट बहुत बढ़ गया था। वे अपने प्रमुख पाठ्यक्रम की पुस्तकें भी सेकंड-हैंड ही लेते थे और बाकी के पुस्तकों का सहपाठियों से लेकर नोट्स बनाते थे।



लेखक ने किस तरह से अपनी पहली साहित्यिक पुस्तक खरीदी उसका वर्णन किया है। उन्होंने उस साल इंटरमीडिएट पास किया था और अपनी पुरानी पाठ्यपुस्तकें बेचकर बी.ए की पुस्तकें लेने सेकंड-हैण्ड पुस्तकों की दूकान पर खड़े थे। पाठ्यपुस्तकें खरीद कर लेखक के पास दो रूपए बचे। सामने के सिनेमाघर में 'देवदास' लगी थी। लेखक उस फिल्म के एक गाना हमेशा गुनगुनाते रहते थे जिसे सुनकर एक दिन माँ ने कहा 'जा फिल्म देख आ।' लेखक बचे दो रूपए लेकर सिनेमा घर गए। फिल्म शुरू होने में देरी थी। लेखक सामने एक परिचित की पुस्तकों की दूकान के सामने चक्कर लगाने लगे। तभी वहाँ उन्हें 'देवदास' की पुस्तक दिखाई दी। लेखक ने उस पुस्तक को ले लिया चूँकि पुस्तक की कीमत केवल दस आने थी जबकि फिल्म देखने में डेढ़ रूपए लगते हुए। बचे हुए पैसे लेखक ने माँ को दे दिए। यह उनकी निजी लाइब्रेरी की पहली किताब थी।

आज लेखक के लाइब्रेरी में उपन्यास, नाटक, कथा संकलन, जीवनियाँ, संस्मरण सभी प्रकार की किताबें हैं लेखक देश-विदेश के महान लेखकों-चिंतकों के कृतियों के बीच अपने को भरा-भरा महसूस करते हैं।

लेखक मानते हैं कि उनके ऑपरेशन के सफल होने के बाद उनसे मिलने आये मराठी के वरिष्ठ कवि विंदा करंदीकर ने उस दिन सच कहा था कि ये सैकड़ों महापुरुषों के आश्रीवाद के कारण ही उन्हें पुनर्जीवन मिला है।

बोध-प्रश्न प्रश्न

प्रश्न 1 लेखक का ऑपरेशन करने से सर्जन क्यों हिचक रहे थे?

उत्तर- लेखक को तीन-तीन हार्ट अटैक हुए थे। बिजली के झटकों से प्राण तो लौटे, मगर दिल को साठ प्रतिशत भाग नष्ट हो गया। बाकी बचे चालीस प्रतिशत में भी रुकावटें थीं। सर्जन इसलिए हिचक रहे थे कि चालीस प्रतिशत हृदय ऑपरेशन के बाद हरकत में न आया तो लेखक की जान भी जा सकती थी।

प्रश्न 2 'किताबों वाले कमरे में रहने के पीछे लेखक के मन में क्या भावना थी?

उत्तर- 'किताबों वाले कमरे में रहने के पीछे लेखक के मन में यह भावना थी कि जिस प्रकार परी कथाओं के अनुसार राजा के प्राण उसके शरीर में नहीं बल्कि तोते में रहते हैं, वैसे ही उसके (लेखक) निकले प्राण अब इन हजारों किताबों में बसे हैं, जिन्हें उसने जमा किया है।

प्रश्न 3 लेखक के घर कौन-कौन-सी पत्रिकाएँ आती थीं?

उत्तर- लेखक के घर वेदोदम, सरस्वती, गृहिणी, बालसखा और चमचम आदि पत्रिकाएँ आती थीं।

प्रश्न 4 लेखक को किताबें पढ़ने और सहेजने का शौक कैसे लगा?

उत्तर- लेखक के घर में पहले से ही बहुत-सी पुस्तकें थीं। दयानंद की एक जीवनी, बालसखा और 'चमचम' पुस्तकें पढ़ते-पढ़ते उसे पढ़ने का शौक लगा। पाँचवीं कक्षा में प्रथम आने पर पुरस्कार स्वरूप मिली दो पुस्तकों को पिताजी की प्रेरणा से उसे सहेजने का शौक लग गया।

प्रश्न 5 माँ लेखक की स्कूली पढ़ाई को लेकर क्यों चिंतित रहती थी?

उत्तर- माँ लेखक की स्कूली पढ़ाई को लेकर इसलिए चिंतित रहती थी, क्योंकि लेखक हर समय



कहानियों की पुस्तकें ही पढ़ता रहता था। माँ सोचती थी कि लेखक पाठ्यपुस्तकों को भी इसी तरह रुचि लेकर पढ़ेगा या नहीं।

प्रश्न 6 स्कूल से ईनाम में मिली अंग्रेजी की पुस्तकों ने किस प्रकार लेखक के लिए नई दुनिया के द्वारा खोल दिए?

उत्तर- पाँचवीं कक्षा में फर्स्ट आने पर लेखक को दो पुस्तकें पुरस्कारस्वरूप मिली। उनमें से एक में विभिन्न पक्षियों की जातियों, उनकी बोलियों, उनकी आदतों की जानकारी थी। दूसरी किताब 'टस्टी दे रग' में पानी के जहाजों, नाविकों की जिंदगी, विभिन्न प्रकार के द्वीप, वेल और शार्क के बारे में थी। इस प्रकार इन पुस्तकों ने लेखक के लिए नई दुनिया का द्वारा खोल दिया।

प्रश्न 7 'आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का। यह तुम्हारी अपनी लाइब्रेरी है'-पिता के इस कथन से लेखक को क्या प्रेरणा मिली?

उत्तर- पिता के इस कथन से लेखक के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। लेखक को पुस्तक सहेजकर रखने तथा पुस्तक संकलन करने की प्रेरणा मिली।

प्रश्न 8 लेखक द्वारा पहली पुस्तक खरीदने की घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर- लेखक पुरानी पुस्तकें खरीदकर पढ़ता और उन्हें बेचकर अगली कक्षा की पुरानी पुस्तकें खरीदता। ऐसे ही एक बार उसके पास दो रुपए बच गए। माँ की आजा से वह देवदास फ़िल्म देखने गया। शो छूटने में देर होने के कारण वह पुस्तकों की दुकान पर चला गया। वहाँ देवदास पुस्तक देखी। उसने डेढ़ रुपए में फ़िल्म देखने के बजाए दस आने में पुस्तक खरीदकर बचे पैसे माँ को दे दिए। इस प्रकार लेखक ने पुस्तकालय हेतु पहली पुस्तक खरीदी।

प्रश्न 9 'इन कृतियों के बीच अपने को कितना भरा-भरा महसूस करता हूँ'-को आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- लेखक के पुस्तकालय में अनेक भाषाओं के अनेक लेखकों, कवियों की पुस्तकें हैं। इनमें उपन्यास, नाटक, कथा। संकलन, जीवनियाँ, संस्मरण, इतिहास, कला, पुस्तात्विक, राजनीतिक आदि अनगिनत पुस्तकें हैं। वह देशी-विदेशी लेखकों, चिंतकों की पुस्तकों के बीच स्वयं को अकेला महसूस नहीं करता। वह स्वयं को भरा-भरा महसूस करता है।



संपर्क भाग 1



स्पर्श भाग – 1

दुःख का अधिकार

-यशपाल

सारांश

प्रस्तुत पाठ या कहानी दुःख का अधिकार लेखक यशपाल जी के द्वारा लिखित है। इस कहानी के माध्यम से लेखक देश या समाज में फैले अंधविश्वासों और ऊँच-नीच के भेद भाव को बेनकाब करते हुए यह बताने का प्रयास किए हैं कि दुःख की अनुभूति सभी को समान रूप से होती है। प्रस्तुत कहानी धनी लोगों की अमानवीयता और गरीबों की मजबूरी को भी पूरी गहराई से चित्रण करती है।

पाठ के अनुसार, लेखक कहते हैं कि मानव की पोशाकें या पहनावा ही उन्हें अलग-अलग श्रेणियों में विभाजित करती हैं। वास्तव में पोशाक ही समाज में मनुष्य का अधिकार और उसका दर्जा निश्चित करती है। जिस तरह वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिरने देतीं, ठीक उसी प्रकार जब हम झुककर निचली श्रेणियों या तबके की अनुभूति को समझना चाहते हैं तो यह पोशाक ही बंधन और अङ्गचन बन जाती है।

पाठ के अनुसार, आगे लेखक कहते हैं कि बाजार में खरबूजे बेचने आई एक अधेड़ उम्र की महिला कपड़े में मुँह छिपाए और सिर को घुटनों पर रखे फफक-फफककर रो रही थी। आस-पड़ोस के लोग उसे घृणित नजरों से देखते हुए बुरा-भला कहते नहीं थक रहे थे।

लेखक आगे कहते हैं कि आस-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर पता चला कि उस महिला का तेईस बरस का लड़का परसों सुबह साँप के डसने के कारण मृत्यु को प्राप्त हुआ था। जो कुछ भी घर में बचा था, वह सब मृत बेटे को विदा करने में चला गया। घर में उसकी बहू और पोते भूख से परेशान थे।

इन्हीं सब कारणों से वह वृद्ध महिला बेबस होकर भगवाना के बटोरे हुए खरबूजे बेचने बाजार चली आई थी, ताकि वह घर के लोगों की मदद कर सके। परन्तु, बाजार में सब मजाक उड़ा रहे थे। इसलिए वह रो रही थी। बीच-बीच में बेहोश भी हो जाती थी। वास्तव में, लेखक उस महिला के दुःख की तुलना अपने पड़ोस के एक संभ्रांत महिला के दुःख से करने लगता है, जिसके दुःख से शहर भर के लोगों के मन उस पुत्र-शोक से द्रवित हो उठे थे। लेखक अपने मन में यही सोचता चला जा रहा था कि दुःखी होने और शोक करने का भी एक अधिकार होना चाहिए...॥



प्रश्न-अभ्यास (मौखिक)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1 किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें क्या पता चलता है?

उत्तर- किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें समाज में उसका दर्जा और अधिकार का पता चलता है तथा उसकी अमीरी-गरीबी श्रेणी का पता चलता है।

प्रश्न 2 खरबूजे बेचनेवाली स्त्री से कोई खरबूजे क्यों नहीं खरीद रहा था?

उत्तर- उसके बेटे की मृत्यु के कारण लोग उससे खरबूजे नहीं खरीद रहे थे।

प्रश्न 3 उस स्त्री को देखकर लेखक को कैसा लगा?

उत्तर- उस स्त्री को देखकर लेखक का मन व्यथित हो उठा। उनके मन में उसके प्रति सहानुभूति की भावना उत्पन्न हुई थी।

प्रश्न 4 उस स्त्री के लड़के की मृत्यु का कारण क्या था?

उत्तर- उस स्त्री का लड़का एक दिन मुँह-अंधेरे खेत में से बेलों से तरबूजे चुन रहा था की गीली मेड़ की तरावट में आराम करते साँप पर उसका पैर पड़ गया और साँप ने उस लड़के को डस लिया। ओझा के झाड़-फूँक आदि का उस पर कोई प्रभाव न पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई।

प्रश्न 5 बुढ़िया को कोई भी क्यों उधार नहीं देता?

उत्तर- बुढ़िया के परिवार में एकमात्र कमाने वाला बेटा मर गया था। ऐसे में पैसे वापस न मिलने के डर के कारण कोई उसे उधार नहीं देता।

प्रश्न-अभ्यास (लिखित)

निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1 मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्व है?

उत्तर- मनुष्य के जीवन में पोशाक का बहुत महत्व है। पोशाकें ही व्यक्ति का समाज में अधिकार व दर्जा निश्चित करती हैं। पोशाकें व्यक्ति को ऊँच-नीच की श्रेणी में बाँट देती है। कई बार अच्छी पोशाकें व्यक्ति के भाग्य के बंद दरवाजे खोल देती हैं। सम्मान दिलाती हैं।

प्रश्न 2 पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अङ्गचन बन जाती है?

उत्तर- जब हमारे सामने कभी ऐसी परिस्थिति आती है कि हमें किसी दुखी व्यक्ति के साथ सहानुभूति प्रकट करनी होती है, परन्तु उसे छोटा समझकर उससे बात करने में संकोच करते हैं। उसके साथ सहानुभूति तक प्रकट नहीं कर पाते हैं। हमारी पोशाक उसके समीप जाने में तब बंधन और अङ्गचन बन जाती है।

प्रश्न 3 लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया?

उत्तर- वह स्त्री घुटनों में सिर गड़ाए फफक-फफककर रो रही थी। इसके बेटे की मृत्यु के कारण लोग इससे खरबूजे नहीं ले रहे थे। उसे बुरा-भला कह रहे थे। उस स्त्री को देखकर लेखक का मन व्यथित हो उठा। उनके मन में उसके प्रति सहानुभूति की भावना उत्पन्न हुई थी। परंतु लेखक उस स्त्री के रोने का कारण इसलिए नहीं जान पाया क्योंकि उसकी पोशाक रुकावट बन गई थी।

प्रश्न 4 भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था?

उत्तर- भगवाना शहर के पास डेढ़ बीघा भर जमीन में खरबूजों को बोकर परिवार का निर्वाह करता था। खरबूजों की डलियाँ बाजार में पहुँचाकर लड़का स्वयं सौदे के पास बैठ जाता था।



प्रश्न 5 लड़के के मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूजे बेचने क्यों चल पड़ी?

उत्तर- लड़के के मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूजे बेचने क्यों चल पड़ी?

प्रश्न 6 बुढ़िया के दुःख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई?

उत्तर- लेखक को बुढ़िया के दुःख को देखकर अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद इसलिए आई क्योंकि उसके बेटे का भी ठेहांत हुआ था। वह दोनों के दुखों के तुलना करना चाहता था। दोनों के शोक मानाने का ढंग अलग था। धनी परिवार के होने की वजह से वह उसके पास शोक मनाने को असीमित समय था और बुढ़िया के पास शोक का अधिकार नहीं था।

निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1 बाजार के लोग खरबूजे बेचने वाली स्त्री के बारे में क्या-क्या कह रहे थे? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- बाजार के लोग खरबूजेबेचने वाली स्त्री के बारे में तरह-तरह की बातें कह रहे थे। कोई घृणा से थूककर बेहया कह रहा था, कोई उसकी नीयत को दोष दे रहा था, कोई कमीनी, कोई रोटी के टुकड़े पर जान देने वाली कहता, कोई कहता इसके लिए रिश्तों का कोई मतलब नहीं है, परचून वाला लाला कह रहा था, इनके लिए अगर मरने-जीने का कोई मतलब नहीं है तो दुसरों का धर्म ईमान क्यों खराब कर रही है।

प्रश्न 2 पास पड़ोस की दूकान से पूछने पर लेखक को क्या पता चला?

उत्तर- पास पड़ोस की दूकान से पूछने पर लेखक को पता चला कि बुढ़िया का जवान बेटा सांप के काटने से मर गया है। वह परिवार में एकमात्र कमाने वाला था। उसके घर का सारा सामान बेटे को बचाने में खर्च हो गया। घर में दो पोते भूख से बिलख रहे थे। इसलिए वो खरबूजे बेचने बाजार आई है।

प्रश्न 3 लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या-क्या उपाय किए?

उत्तर- लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया जो कुछ वह कर सकती थी उसने वह सब सभी उपाय किए। वह पागल सी हो गई। झाड़-फूँक करवाने के लिए ओझा को बुला लाई, साँप का विष निकल जाए इसके लिए नाग देवता की भी पूजा की, घर में जितना आटा अनाज था वह दान दक्षिणा में ओझा को दे दिया परन्तु दुर्भाग्य से लड़के को नहीं बचा पाई।

प्रश्न 4 लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाजा कैसे लगाया?

उत्तर- लेखक उस पुत्र-वियोगिनी के दुःख का अंदाजा लगाने के लिए पिछले साल अपने पड़ोस में पुत्र की मृत्यु से दुःखी माता की बात सोचने लगा। वह महिला अढ़ाई मास से पलंग पर थी, उसे १५ - १५ मिनट बाद पुत्र-वियोग से मूर्छा आ जाती थी। डॉक्टर सिरहाने बैठा रहता था। शहर भर के लोगों के मन पुत्र-शोक से द्रवित हो उठे थे।

प्रश्न 5 इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अधिकार' कहाँ तक सार्थक है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अधिकार' पूरी तरह से सार्थक सिद्ध होता है क्योंकि यह अभिव्यक्त करता है कि दुःख प्रकट करने का अधिकार व्यक्ति की परिस्थिति के अनुसार होता है। यद्यपि दुःख का अधिकार सभी को है। गरीब बुढ़िया और संभ्रांत महिला दोनों का दुख एक समान ही था। दोनों के पुत्रों की मृत्यु हो गई थी परन्तु संभ्रांत महिला के पास सहूलियतें थीं, समय था। इसलिए वह दुःख मना सकी परन्तु बुढ़िया गरीब थी, भूख से बिलखते बच्चों के लिए पैसा कमाने के लिए निकलना था। उसके पास न सहूलियतें थीं न समय। वह दुःख न मना सकी। उसे दुःख मनाने का अधिकार नहीं था। इसलिए शीर्षक पूरी तरह सार्थक प्रतीत होता है।



निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1 जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती हैं।

उत्तर- प्रस्तुत कहानी समाज में फैले अंधविश्वासों और अमीर-गरीबी के भेदभाव को उजागर करती है। यह कहानी अमीरों के अमानवीय व्यवहार और गरीबों की विवशता को दर्शाती है। मनुष्यों की पोशाकें उन्हें विभिन्न श्रेणियों में बाँट देती हैं। प्रायः पोशाक ही समाज में मनुष्य का अधिकार और उसका दर्जा निश्चित करती है। वह हमारे लिए अनेक बंद दरवाजे खोल देती है, परंतु कभी ऐसी भी परिस्थिति आ जाती है कि हम ज़रा नीचे झुककर समाज की निचली श्रेणियों की अनुभूति को समझना चाहते हैं। उस समय यह पोशाक ही बंधन और अङ्गचन बन जाती है। जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देतीं, उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें झुक सकने से रोके रहती हैं।

प्रश्न 2 इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।

उत्तर- समाज में रहते हुए प्रत्येक व्यक्ति को नियमों, कानूनों व परंपराओं का पालन करना पड़ता है। दैनिक आवश्यकताओं से अधिक महत्व जीवन मूल्यों को दिया जाता है। यह वाक्य गरीबों पर एक बड़ा व्यंग्य है। गरीबों को अपनी भूख के लिए पैसा कमाने रोज़ ही जाना पड़ता है चाहे घर में मृत्यु ही क्यों न हो गई हो। परन्तु कहने वाले उनसे सहानुभूति न रखकर यह कहते हैं कि रोटी ही इनका ईमान है, रिश्ते-नाते इनके लिए कुछ भी नहीं है।

प्रश्न 3 शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और... दुखी होने का भी एक अधिकार होता है।

उत्तर- शोक करने, गम मनाने के लिए सहूलियत चाहिए। यह व्यंग्य अमीरी पर है क्योंकि अमीर लोगों के पास दुख मनाने का समय और सुविधा दोनों होती हैं। इसके लिए वह दुःख मनाने का दिखावा भी कर पाता है और उसे अपना अधिकार समझता है। जबकि गरीब विवश होता है। वह रोज़ी रोटी कमाने की उलझन में ही लगा रहता है। उसके पास दुःख मनाने का न तो समय होता है और न ही सुविधा होती है। इसलिए उसे दुःख का अधिकार भी नहीं होता है।

भाषा - अध्ययन प्रश्न

प्रश्न 1 निम्नांकित शब्द-समूहों को पढ़ो और समझो-

(क) कड़ा-घा, पतड़ा-ग, चञ्चल, ठण्डा, सम्बन्ध।

(ख) कंधा, पतंग, चंचल, ठंडा, संबंध।

(ग) अक्षुण, समिमलित, दुअन्नी, चवन्नी, अन्न।

(घ) संशय, संसद, संरचना, संवाद, संहार।

(ड) अंधेरा, बाँट, मुँह, ईंट, महिलाएँ, में, में।

ध्यान दो कि इ., ज., ण., न., म् ये पाँचों पंचमाक्षर कहलाते हैं। इनके लिखने की विधियाँ तुमने ऊपर देखीं – इसी रूप में या अनुस्वार के रूप में। इन्हें दोनों में से किसी भी तरीके से लिखा जा सकता है और दोनों ही शुद्ध हैं। हाँ, एक पंचमाक्षर जब दो बार आए तो अनुस्वार का प्रयोग नहीं होगा, जैसे – अम्मा, अन्न आदि। इसी प्रकार इनके बाद यदि अंतस्थ य, र, य, व और ऊष्म श, ष, स, ह आदि हों तो अनुस्वार का प्रयोग होगा,

परंतु उसका उच्चारण पंचम वर्णों में से किसी भी एक वर्ण की भाँति हो सकता है ; जैसे – संशय, संरचना में ‘न्’, संवाद में ‘म्’ और संहार में ‘ङ्’। (०) यह चिह्न है अनुस्वार का और (०) यह चिह्न है अनुनासिका का। इन्हें क्रमशः बिंदु और चंद्र-बिंदु



भी कहते हैं। दोनों के प्रयोग और उच्चारण में अंतर है। अनुस्वार का प्रयोग व्यंजन के साथ होता है अनुनासिका का स्वर के साथ।

उत्तर- छात्रों के स्वयं के समझने के लिए।

प्रश्न 2 निम्नलिखित शब्द के पर्याय लिखिए-

ईमान, बदन, अंदाज़ा, बेचैनी, गम, दर्जा, ज़मीन, ज़माना, बरकत

उत्तर-

ईमान - ज़मीर, विवेक
बदन - शरीर, तन, देह
अंदाज़ा - अनुमान
बेचैनी - व्याकुलता, अधीरता
गम - दुख, कष्ट, तकलीफ
दर्जा - स्तर, कक्षा
ज़मीन - धरती, भूमि, धरा
ज़माना - संसार, जग, दुनिया
बरकत - वृद्धि, बढ़ना

प्रश्न 3 निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार पाठ में आए शब्द-युग्म को छाँटकर लिखिए-

उदाहरण : बेटा-बेटी

उत्तर-

- i. फफक - फफककर
- ii. दुअन्नी - चवन्नी
- iii. ईमान - धर्म
- iv. आते - जाते
- v. छन्नी - ककना
- vi. पास - पड़ोस
- vii. झाड़ना - फूँकना
- viii. पोता - पोती
- ix. दान - दक्षिणा
- x. मुँह - अँधेरे

प्रश्न 4 पाठ के संदर्भ के अनुसार निम्नलिखित वाक्यांश की व्याख्या कीजिए-

- i. बंद दरवाज़े खोल देना
- ii. निर्वाह करना
- iii. भूख से बिलबिलाना
- iv. कोई चारा न होना
- v. शोक से द्रवित हो जाना

उत्तर-

- i. **बंद दरवाज़े खोल देना** - प्रगति में बाधक तत्व हटने से बंद दरवाज़े खुल जाते हैं।
- ii. **निर्वाह करना** - परिवार का भरण-पोषण करना।
- iii. **भूख से बिलबिलाना** - बहुत तेज भूख लगना।
- iv. **कोई चारा न होना** - कोई और उपाय न होना।
- v. **शोक से द्रवित हो जाना** - दूसरों का दुःख देखकर भावुक हो जाना।

प्रश्न 5 निम्नलिखित शब्द-युग्मों और शब्द-समूहों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

- i. छन्नी-ककना अढ़ाई-मास पास-पड़ोस दुअन्नी-चवन्नी मुँह-अँधेरे झाड़ना-फूँकना।
- ii. फफक-फफककर बिलख-बिलखकर तड़प-तड़पकर लिपट-लिपटकर।

उत्तर-

- i.
 - a. **छन्नी-ककना** - गरीब माँ ने अपना छन्नी-ककना बेचकर बच्चों को पढ़ाया-लिखाया।
 - b. **अढ़ाई-मास** - वह विदेश में अढ़ाई - मास के लिए गया है।





- c. **पास-पड़ोस-** पास-पड़ोस के साथ मिल-जुलकर रहना चाहिए, वे ही सुख-दुःख के सच्चे साथी होते हैं।
- d. **दुअन्नी-चवन्नी-** आजकल दुअन्नी-चवन्नी का कोई मोल नहीं है।
- e. **मुँह-अँधेरे-** वह मुँह-अँधेरे उठ कर काम ढूँढने चला जाता है।
- f. **झाइ-फूँकना-** आज के जमाने में भी कई लोग झाँड़ने-फूँकने पर विश्वास करते हैं।
- ii.
- a. **फफक-फफककर-** भूख के मारे गरीब बच्चे फफक-फफककर रो रहे थे।
- b. **तड़प-तड़पकर-** अंधविश्वास और इलाज न करने के कारण साँप के काटे जाने पर गाँव के लोग तड़प-तड़पकर मर जाते हैं।
- c. **बिलख-बिलखकर-** बेटे की मृत्यु पर वह बिलख-बिलखकर रो रही थी।
- d. **लिपट-लिपटकर-** बहुत दिनों बाद मिलने पर दोनों सहेलियाँ लिपट-लिपटकर मिली।
- प्रश्न 6** निम्नलिखित वाक्य संरचना को ध्यान से पढ़िए और इस प्रकार के कुछ और वाक्य बनाइए:
- i. लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लगे।
- ii. उसके लिए तो बजाज की दुकान से कपड़ा लाना ही होगा।
- iii. चाहे उसके लिए माँ के हाथों के छन्नी-ककना ही क्यों न बिक जाएँ।
- iv. अरे जैसी नीयत होती है, अल्ला भी वैसी ही बरकत देता है।
- v. भगवाना जो एक दफे चुप हुआ तो फिर न बोला।
- उत्तर-**
- i. लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लगे। बुढ़िया के पोता-पोती भूख से बिलबिला रहे।
- ii. उसके लिए तो बजाज की दुकान से कपड़ा लाना ही होगा। बच्चों के लिए खिलौने लाने ही होंगे।
- iii. चाहे उसके लिए माँ के हाथों के छन्नी-ककना ही क्यों न बिक जाएँ। उसने बेटी की शादी के लिए खर्चा करने का इरादा किया चाहे इसके लिए उसका सब कुछ ही क्यों न बिक जाए।
- iv. अरे जैसी नीयत होती है, अल्ला भी वैसी ही बरकत देता है। जैसा दूसरों के लिए करोगे वैसा ही फल पाओगे।
- v. भगवाना जो एक दफे चुप हुआ तो फिर न बोला। जो समय निकल गया तो फिर मौका नहीं मिलेगा।





एवरेस्ट मेरी शिखर यात्रा

-बचेंट्री पाल

सारांश

लेखिका बचेंट्री पाल एवरेस्ट विजय के जिस अभियान दल में एक सदस्य थीं, लेखिका उस अभियान दल के साथ 7 मार्च, 1984 को दिल्ली से काठमांडू के लिए हवाई जहाज से गयी। एक मजबूत अग्रिम दल हमारे पहुंचने से पहले 'बेस कैम्प' पहुंच गया जो उस उबड़-खाबड़ हिमपात के रास्ते को साफ कर सके, लेखिका एक स्थान का जिक्र किया जिसका नाम नमचे बाज़ार है और वहाँ से एवरेस्ट की प्राकृतिक छटा का बहुत सुंदर निरीक्षण किया जा सकता है। लेखिका ने बहुत भारी बड़ा सा बर्फ का फूल (प्लूम) देखा जो उन्हें आश्चर्य में डाल दिया। लेखिका केअनुसार वह बर्फ का फूल 10 कि.मी. तक लंबा हो सकता था।

इस अभियान दल के सदस्य पैरिच नामक स्थान पर 26 मार्च को पहुंचे, जहाँ से आरोहियों और काफिलों के दल पर प्राकृतिक आपदा मँडराने लगी। यह संयोग की बात था कि 26 मार्च को अग्रिम दल में शामिल प्रेमचंद पैरिच लौट आए थे। उनसे खबर मिली कि 6000 मी. की ऊँचाई पर कैंप-1 तक जाने का रास्ता पुरी तरह से साफ़ कर दिया गया है। दूसरे-तीसरे दिन पार कर चौथे दिन दल के सदस्य अंगदोरजी, गगन बिस्सा और लोपसांग साउथ कोल पहुंच गए। 29 अप्रैल को 7900 मीटर की ऊँचाई पर उन लोगों ने कैंप-4 लगाया। लेखिका 15-16 मई, 1984 को बुद्ध पूर्णिमा के दिन ल्होत्से की बर्फिली सीधी ढलान पर लगाए गए सुंदर रंग के नाइलोन के बने टैंट के कैंप-3 में थी। कैंप में 10 और व्यक्ति थे। साउथ कोल कैंप पहुंचने पर लेखिका ने अपनी महत्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी। सारी तैयारियों के बीच अभियान चल रही थी, पर्वतारोही दल आगे बढ़ता रहा और 23 मई, 1984 दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर लेखिका एवरेस्ट की चोटी पर पहुंच गई।

एवरेस्ट की चोटी पर खड़ी होकर लेखिका ने अद्भुत अनुभव किया। लेखिका ने उन छोटी-छोटी भावों को भी लिपिबद्ध किया, जिन भावों को अभिव्यक्त कर पाना बहुत कठिन है। इस सफलता के बाद लेखिका को बहुत सारी बधाईयाँ मिली। लेखिका ने उस स्थान को फरसे से काटकर चौड़ा किया, जिस पर वह खड़ी हो सके। उन्होंने वहाँ राष्ट्रध्वज फहराया, और कुछ संक्षिप्त पूजा-अर्चना भी किया। विजय दल का वर्णन किया, लेखिका ने वर्णनात्मक शैली को एकरूप बनाए रखा कि पाठक को इन घटनाओं का वर्णन आँखों देखा वृश्य जैसा लगने लगा।





प्रश्न-अभ्यास (मौखिक)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1 अग्रिम दल का नेतृत्व कौन कर रहा था?

उत्तर- अग्रिम दल का नेतृत्व प्रेमचंद कर रहा था।

प्रश्न 2 लेखिका को सागरमाथा नाम क्यों अच्छा लगा?

उत्तर- एवरेस्ट को नेपाली भाषा में सागरमाथा नाम से जाना जाता है। लेखिका को सागरमाथा नाम अच्छा लगा क्योंकि सागर के पैर नदियाँ हैं तो सबसे ऊँची चोटी उसका माथा है और यह एक फूल की तरह दिखाई देता है, जैसे माथा हो।

प्रश्न 3 लेखिका को ध्वज जैसा क्या लगा?

उत्तर- लेखिका को एक बड़े भारी बर्फ का बड़ा फूल (प्लूम) पर्वत शिखर पर लहराता हुआ ध्वज जैसा लगा।

प्रश्न 4 हिमस्खलन से कितने लोगों की मृत्यु हुई और कितने लोग घायल हुए?

उत्तर- हिमस्खलन से एक की मृत्यु हुई और चार लोग घायल हुए।

प्रश्न 5 मृत्यु के अवसाद देखकर कर्नल खुल्लर ने क्या कहा?

उत्तर- मृत्यु के अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने कहा कि एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करना चाहिए।

प्रश्न 6 रसोई सहायक की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर- प्रतिकूल जलवायु के कारण एक रसोई सहायक की मृत्यु हो गई है।

प्रश्न 7 कैंप-चार कहाँ और कब लगाया गया?

उत्तर- कैंप-चार २९ अप्रैल को सात हजार नौ सौ मीटर की ऊँचाई पर लगाया गया था।

प्रश्न 8 लेखिका ने शेरपा कुली को अपना परिचय किस तरह दिया?

उत्तर- लेखिका ने शेरपा कुली को अपना परिचय यह कह कर दिया कि वह बिल्कुल ही नौसिखिया है और एवरेस्ट उसका पहला अभियान है।

प्रश्न 9 लेखिका ने शेरपा कुली को अपना परिचय यह कह कर दिया कि वह बिल्कुल ही नौसिखिया है और एवरेस्ट उसका पहला अभियान है।

उत्तर- लेखिका की सफलता पर बधाई देते हुए कर्नल खुल्लर ने कहा, "मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देना चाहूँगा देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में जाओगी जो तुम्हारे अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भिन्न होगा। "

प्रश्न-अभ्यास (लिखित)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1 नजदीक से एवरेस्ट को देखकर लेखिका को कैसा लगा?

उत्तर- नजदीक से एवरेस्ट को देखकर लेखिका को इतना अच्छा लगा कि वह भौंचककी रही गई। वह एवरेस्ट ल्होत्से और नुत्से की ऊँचाइयों से घिरी बर्फीली ढेढ़ी-मेढ़ी नदी को निहारती रही।

प्रश्न 2 डॉ.मीनू मेहता ने क्या जानकारियाँ दीं?

उत्तर-

- अल्पमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का बनाना।
- लट्टों और रस्सियों का उपयोग करना।
- बर्फ की आड़ी -तिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधना।
- अग्रिम दल के आभियांत्रिक कार्यों की जानकारी दी।



प्रश्न 3 तेनजिंग ने लेखिका की तारीफ़ में क्या कहा?

उत्तर- तेनजिंग ने लेखिका की तारीफ़ में कहा कि वह एक पर्वतीय लड़की है। उसे तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए। कठिन और रोमांचक कार्य करना उनका शौक था। वे लेखिका की सफलता चाहते थे और उन्हें पूरी आशा थी कि वे होंगी।

प्रश्न 4 लेखिका को किनके साथ चढ़ाई करनी थी?

उत्तर- लेखिका को अपने दल तथा जय और मीनू के साथ चढ़ाई करनी थी। परन्तु वे लोग पीछे रह गए थे। उनके पास भारी बोझ था और वे बिना ऑक्सीजन के आ रहे थे। इस कारण उनकी गति कम हो गई थी। उनकी स्थिति देखकर लेखिका चिंतित थी।

प्रश्न 5 लोपसांग ने तंबू का रास्ता कैसे साफ़ किया?

उत्तर- लोपसांगने अपनी स्विस छुरी की सहायता से तंबू का रास्ता साफ़ किया क्योंकि तंबू के रास्ते एक बड़ा बर्फ़ पिंड गिरने से हिमपुंज बन गया था और इससे कैंप नष्ट हो गया था, लेखिका भी उसमें दब गई थीं। इसलिए लोपसांग ने छुरी से बर्फ़ काटकर लेखिका को बाहर निकाला।

प्रश्न 6 साउथ कोल कैंप पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी कैसे शुरू की?

उत्तर- साउथ कोल कैंप पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी करने के लिए खाना, कुकिंग गैस, कुछ ऑक्सीजन सिलिंडर इकट्ठे किए, दूसरे सदस्यों की मदद के लिए, थरमसों को जूस व गरम चाय से भरने के लिए नीचे जाने का निश्चय किया।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1 उपनेता प्रेमचंद ने किन स्थितियों से अवगत कराया?

उत्तर- उपनेता प्रेमचंद ने अभियान दल के सदस्यों को निम्न स्थितियों से अवगत कराया-

- पहली बड़ी बाधा खुंभु हिमपात की स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने यह भी बताया कि उनके दल ने कैंप - एक (6000 मीटर), जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया।
- यह भी बताया कि पुल बना दिया गया है, रस्सियाँ बाँध दी गई हैं तथा झंडियों से रास्ते को चिह्नित कर दिया गया है।
- बड़ी कठिनाइयों का जायजा ले लिया गया है।
- ग्लेशियर बर्फ़ की नदी है और बर्फ़ का गिरना जारी है। यदि हिमपात अधिक हो गया तो अभी तक किए गए सारे काम व्यर्थ हो सकते हैं। हमें रास्ते खोलने का काम दोबारा भी करना पड़ सकता है।

प्रश्न 2 हिमपात किस तरह होता है और उससे क्या-क्या परिवर्तन आते हैं?

उत्तर- बर्फ़ के खंडों का अव्यवस्थित ढंग से गिरने को हिमपात कहा जाता है। ग्लेशियर के बहने से अक्सर बर्फ़ में हलचल मच जाती है। इससे बर्फ़ की बड़ी-बड़ी चट्टाने तत्काल गिर जाया करती हैं। अन्य कारणों से भी अचानक खतरनाक स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इससे धरातल पर बड़ी चौड़ी दरारें पड़ जाती हैं। अधिक हिमपात के कारण तापमान में भारी गिरावट आती है। रास्ते बंद हो जाते हैं।

प्रश्न 3 लेखिका के तम्बू में गिरे बर्फ़ पिंड का वर्णन किस तरह किया गया?

उत्तर- लेखिका रात 12.30 बजे अपने तम्बू में गहरी नींद में सो रही थीं तभी एक सख्त चीज़ लेखिका के सिर के पिछले हिस्से से टकराई और वह जाग गई। एक लंबा बर्फ़ पिंड ल्होत्से ग्लेशियर से टूटकर कैंप के ऊपर आ गिरा था। उसमें अनेक हिमखंडों का पुंज था। वह अत्यंत तेज़ गति के साथ और गर्जना के



साथ गिरा था। इसने लेखिका के कैंप को नष्ट कर दिया था। इससे चोट तो सभी को लगी पर मृत्यु किसी की भी नहीं हुई।

प्रश्न 4 लेखिका को देखकर 'की' हक्का-बक्का क्यों रह गया?

उत्तर- लेखिका को देखकर 'की' हक्का बक्का रह गया क्योंकि इतनी बर्फीली हवा में नीचे उतरना जोखिम भरा था फिर भी लेखिका सबके लिए चाय व जूस लेने नीचे उतर रही थी और उसे 'की' से भी मिलना था।

प्रश्न 5 एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए कुल कितने कैंप बनाए गए? उनका वर्णन कीजिए।

उत्तर- एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए कुल सात कैंप बनाए गए।

i. **बेस कैंप-** यह कैंप काठमांडू के शेरपालैंड में लगाया गया था। पर्वतीय दल के नेता कर्नल खुल्लर यहीं रहकर एक-एक गतिविधि का संचालन कर रहे थे। उपनेता प्रेमचंद ने भी हिमपात संबंधी सभी कठिनाइयों का परिचय यहीं दिया।

ii. **कैंप-1-** यह कैंप 6000 मीटर की ऊँचाई पर बनाया गया। यह हिमपात के ठीक ऊपर था। इसमें सामान जमा था।

iii. **कैंप-2-** यह चढ़ाई के रास्ते में था।

iv. **कैंप-3-** इसे ल्होत्से की बर्फीली सीधी ढलान पर लगाया गया था। यह रंगीन नायलॉन से बना था। यहीं ल्होत्से ग्लेशियर से टूटकर बर्फ पिंड कैंप पर आ गिरा था।

v. **कैंप-4-** यह समुद्र तट से 7900 मीटर की ऊँचाई पर था।

vi. **साउथ कोल कैंप-** यहीं से अंतिम दिन की चढ़ाई शुरू है।

vii. **शिखर कैंप-** यह कैंप अंतिम कैंप था। यह एवरेस्ट के ठीक नीचे स्थित था।

प्रश्न 6 चढ़ाई के समय एवरेस्ट की चोटी की स्थिति कैसी थी?

उत्तर- जब लेखिका एवरेस्ट की चोटी पर पहुँची तब वहाँ तेज हवा के कारण बर्फ उड़ रही थी। एवरेस्ट की चोटी शंकु के आकार की थी। वहाँ इतनी भी जगह नहीं थी कि दो व्यक्ति एक साथ खड़े हो सकें। चारों ओर हजारों मीटर लंबी सीधी ढलान थी। चट्टाने इतनी भुरभुरी थी मानो शीशे की चादरें बिछी हों। लेखिका को फावड़े से बर्फ की खुदाई करनी पड़ी ताकि स्वयं को सुरक्षित और स्थिर कर सके।

प्रश्न 7 सम्मिलित अभियान में सहयोग एवं सहायता की भावना का परिचय बचेंद्री के किस कार्य से मिलता है।

उत्तर- जब बचेंद्री अपने दल के सदस्यों के साथ साउथकोल कैंप पहुँची तो केवल वह अपने लिए नहीं सोच रही थी बल्कि अपने दल के प्रत्येक सदस्य के लिए सोच रही थी। लेखिका ने अपने साथियों के लिए जूस और चाय लेने के लिए तेज बर्फीली हवा में भी नीचे उतरकर जोखिम भरा काम किया। इस व्यवहार से कार्य में उसके सहयोग और सहायता की भावना का परिचय मिलता है।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1 एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए।

उत्तर- यह कथन अभियान दल के नेता कर्नल खुल्लर का है। उन्होंने शेरपा कुली की मृत्यु के समाचार के बाद कहा था। उन्होंने सदस्यों के उत्साहवर्धन करते हुए अभियान के दौरान होने वाली दुर्घटनाओं को वास्तविकता से परिचित करना चाहा। एवरेस्ट की



चढ़ाई कोई आसान काम नहीं है, यह जोखिम भरा अभियान होता है। यदि ऐसा कठिन कार्य करते कुए मृत्यु भी हो जाए तो उसे स्वाभाविक घटना के रूप में लेना चाहिए।

प्रश्न 2 सीधे धरातल पर दरार पड़ने का विचार और इस दरार का गहरे-चौड़े हिम-विदर में बदल जाने का मात्र ख्याल ही बहुत डरावना था। इससे भी ज्यादा भयानक इस बात की जानकारी थी कि हमारे संपूर्ण प्रयास के दौरान हिमपात लगभग एक दर्जन आरोहियों और कुलियों को प्रतिदिन छूता रहेगा।

उत्तर- इस कथन का आशय है कि हिमपात के कारण बर्फ के खंडों के दबाव से कई बार धरती के धरातल पर दरार पड़ जाती है। यह दरार गहरी और चौड़ी होती चली जाती है और हिम-विदर में बदल जाती है यह बहुत खतरनाक होते हैं। यह सुनकर लेखिका का भयभीत होना स्वाभाविक था। इससे भी ज्यादा भयानक जानकारी थी कि पूरे प्रयासों के बाद यह भयंकर हिमपात पर्वतारोहियों व कुलियों को परेशान करता है। उन्हें इनका सामना करना पड़ेगा।

प्रश्न 3 इस कथन का आशय है कि हिमपात के कारण बर्फ के खंडों के दबाव से कई बार धरती के धरातल पर दरार पड़ जाती है। यह दरार गहरी और चौड़ी होती चली जाती है और हिम-विदर में बदल जाती है यह बहुत खतरनाक होते हैं। यह सुनकर लेखिका का भयभीत होना स्वाभाविक था। इससे भी ज्यादा भयानक जानकारी थी कि पूरे प्रयासों के बाद यह भयंकर हिमपात पर्वतारोहियों व कुलियों को परेशान करता है। उन्हें इनका सामना करना पड़ेगा।

उत्तर- इस कथन का आशय है कि हिमपात के कारण बर्फ के खंडों के दबाव से कई बार धरती के धरातल पर दरार पड़ जाती है। यह दरार गहरी और चौड़ी होती चली जाती है और हिम-विदर में बदल जाती है यह बहुत खतरनाक होते हैं। यह सुनकर लेखिका का

भयभीत होना स्वाभाविक था। इससे भी ज्यादा भयानक जानकारी थी कि पूरे प्रयासों के बाद यह भयंकर हिमपात पर्वतारोहियों व कुलियों को परेशान करता है। उन्हें इनका सामना करना पड़ेगा।

भाषा - अध्ययन प्रश्न

प्रश्न 1 इस पाठ में प्रयुक्त निम्नलिखित शब्दों की व्याख्या पाठ का संदर्भ देकर कीजिए-

- निहारा है,
- धसकना,
- खिसकना,
- सागरमाथा,
- जायजा लेना,
- नौसिखिया।

उत्तर-

- निहारा है-** यह पाठ एवरेस्ट की चोटी को बचेंद्री पाल ने निहारा है।
- धसकना-खिसकना-** ये दोनों शब्द हिम-खंडों के गिरने के संदर्भ में आए हैं।
- सागरमाथा-** नेपाली एवरेस्ट चोटी को सागरमाथा कहते हैं।
- जायजा लेना-** यह शब्द प्रेमचंद ने कैप के परीक्षण निरीक्षण कर स्थिति के बारे में प्रयुक्त हुआ है।
- नौसिखिया-** बचेंद्री पाल ने तेनजिंग को अपना परिचय देते हुए यह शब्द प्रयुक्त किया है।

प्रश्न 2 निम्नलिखित पंक्तियों में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए-

- उन्होंने कहा तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए



- ii. क्या तुम भयभीत थीं
- iii. तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली बचेंद्री

उत्तर-

- i. उन्होंने कहा, "तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए।"
- ii. "क्या तुम भयभीत थीं?"
- iii. "तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली? बचेंद्री"।

प्रश्न 3 नीचे दिए उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्द-युगमों का वाक्य में प्रयोग कीजिए-

उदाहरण: हमारे पास एक वॉकी-टॉकी था।

- i. टेढ़ी-मेढ़ी
- ii. हक्का-बक्का
- iii. गहरे-चौड़े
- iv. इधर-उधर
- v. आस-पास
- vi. लंबे-चौड़े

उत्तर-

- i. **टेढ़ी-मेढ़ी** - उनके घर के रास्ते में टेढ़ी-मेढ़ी पगड़ंडियाँ हैं।
- ii. **हक्का-बक्का** - मशहूर क्रिकेटर को पार्टी में देखकर मैं हक्का-बक्का रह गया।
- iii. **गहरे-चौड़े** - चौराहे के गहरे-चौड़े नालों में हमेशा पानी भरा रहता है।
- iv. **इधर-उधर** - शिक्षक का ध्यान हटते ही बच्चे इधर-उधर भागने लगे।
- v. **आस-पास** - उसका घर यहीं आस-पास है।
- vi. **लंबे-चौड़े** - रास्ते में लंबे - चौड़े साँप को देखकर मेरी घिग्धी बँध गई।

प्रश्न 4 उदाहरण के अनुसार विलोम शब्द बनाइए-

उदाहरण: अनुकूल - प्रतिकूल

- i. नियमित-
- ii. आरोही-
- iii. सुंदर-
- iv. विष्यात-
- v. निश्चित-

उत्तर-

- i. नियमित - अनियमित
- ii. आरोही - अवरोही
- iii. सुंदर - असुंदर
- iv. विष्यात - अविष्यात
- v. निश्चित - अनिश्चित

प्रश्न 5 निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त उपसर्ग लगाइए-

जैसे: पुत्र - सुपुत्र

- i. वास
- ii. व्यवस्थित
- iii. कूल
- iv. गति
- v. रोहण
- vi. रक्षित

उत्तर-

- i. वास - प्रवास
- ii. व्यवस्थित - अव्यवस्थित
- iii. कूल - प्रतिकूल
- iv. गति - प्रगति
- v. रोहण - आरोहण
- vi. रक्षित - आरक्षित



प्रश्न 6 निम्नलिखित क्रिया विशेषणों का उचित प्रयोग करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अगले दिन, कम समय में, कुछ देर बाद, सुबह तक

- i. मैं _____ यह कार्य कर लूँगा।
- ii. बादल घिरने के _____ ही वर्षा हो गई।
- iii. उसने बहुत कम समय में इतनी तरक्की कर ली।

उत्तर-

- iv. नाड़केसा को _____ गाँव जाना था।
- i. मैं सुबह तक यह कार्य कर लूँगा।
- ii. बादल घिरने के कुछ देर बाद ही वर्षा हो गई।
- iii. उसने बहुत कम समय में इतनी तरक्की कर ली।
- iv. नाड़केसा को अगले दिन गाँव जाना था।





तुम कब जाओगे अतिथि

-शरद जोशी

सारांश

प्रस्तुत पाठ तुम कब जाओगे, अतिथि लेखक शरद जोशी जी के द्वारा लिखित है। इस पाठ में लेखक ने ऐसे व्यक्तियों की व्यंग्यात्मक ढंग से खबर ली है, जो अपने किसी परिचित या रिश्तेदार के घर बिना कोई पूर्व सूचना दिए चले आते हैं और फिर जाने का नाम ही नहीं लेते। भले ही उनका ज्यादा समय तक टिके रहना मेजबान के लिए तकलीफ देय ही क्यूँ न हो।

प्रस्तुत पाठ के अनुसार, लेखक अतिथि सत्कार से ऊबकर उसे अपने मन की भावना से संबोधित करते हुए कहते हैं कि आज तुम्हारे आगमन के चतुर्थ दिवस पर यह प्रश्न बार-बार मन में घुमड़ रहा है — तुम कब जाओगे, अतिथि ? तुम जानते हो, अगर तुम्हें हिसाब लगाना आता है कि यह चौथा दिन है, तुम्हारे सतत् आतिथ्य का चौथा भारी दिन ! पर तुम्हारे जाने की कोई सम्भावना प्रतीत नहीं होती। अब तुम लौट जाओ, अतिथि ! तुम्हारे जाने के लिए यह उच्च समय है। क्या तुम्हें तुम्हारी पृथकी नहीं पुकारती ?

आगे प्रस्तुत पाठ के अनुसार, लेखक कहते हैं कि अतिथि ! तुम्हें देखते ही मेरा बटुआ काँप गया था। फिर भी हमने मुस्कुराहट के साथ तुम्हारा स्वागत किया था। मेरी पत्नी ने तुम्हें सादर नमस्ते किया था। रात के भोजन को मध्यम-वर्गीय डिनर में बदल दिया था। सोचा था कि तुम दूसरे दिन किसी रेल से एक शानदार मेहमाननवाजी की छाप अपने हृदय में बसाकर एक अच्छे अतिथि की तरह चले जाओगे। परन्तु, ऐसा नहीं हुआ। तुम यहाँ आराम से सिगरेट के छल्ले उड़ा रहे। उधर मैं तुम्हारे सामने कैलेण्डर की तारीखें बदल-बदलकर तुम्हें जाने का संकेत दे देता रहा हूँ।

आगे प्रस्तुत पाठ के अनुसार, लेखक कहते हैं कि तीसरे दिन तो तुमने कपड़े धुलवाने की फ़रमाइश कर दी। पत्नी ने सुना तो वह भी आँखें तरेरने लगी। जब चौथे दिन कपड़े धुलकर आ गए, तो फिर भी तुम डटे रहे। अतिथि ! तुम्हें देखकर फूट पड़ने वाली मुस्कुराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब लुप्त होने लगी है। ठहाकों के रंगीन गुब्बारे, जो कल तक इस कमरे के आकाश में उड़ते थे, अब नज़र नहीं आते। बार-बार यह प्रश्न उठ रहा है — तुम कब जाओगे, अतिथि ?

आगे प्रस्तुत पाठ के अनुसार, बातचीत के सभी विषय समाप्त हो गए हैं। दोनों खुद में मग्न होकर पढ़ रहे हैं। आपसी सौहार्द समाप्ति के कगार पर है। सत्कार की ऊषा समाप्त हो चुकी है। अब भोजन में खिचड़ी बनने लगी है। लेखक कहते हैं कि घर को स्वीट होम कहा गया है, परन्तु तुम्हारे होने से घर का स्वीटनेस खत्म हो गया है। अब तुम चले जाओ वर्ना मुझे मजबूरन 'गेट आउट' कहना पड़ेगा। माना कि तुम देवता हो, किंतु मैं तो आदमी हूँ। मनुष्य और देवता अधिक देर तक साथ नहीं रह सकते। तुम लौट जाओ अतिथि ! इसी में तुम्हारा देवत्व सुरक्षित रहेगा। उफ ! तुम कब जाओगे, अतिथि... ?



प्रश्न-अभ्यास (मौखिक)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1 अतिथि कितने दिनों से लेखक के घर पर रहा है?

उत्तर- अतिथि लेखक के घर चार दिनों से अधिक समय तक रहता है।

प्रश्न 2 कैलेंडर की तारीखें किस तरह फ़ड़फ़ड़ा रही हैं?

उत्तर- कैलेंडर की तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फ़ड़फ़ड़ा रही थी।

प्रश्न 3 पति-पत्नी ने मेहमान का स्वागत कैसे किया?

उत्तर- पति ने स्नेह-भीगी मुस्कराहट के साथ गले मिलकर तथा पत्नी ने सादर नमस्ते कहकर मेहमान का स्वागत किया।

प्रश्न 4 दोपहर के भोजन को कौन-सी गरिमा प्रदान की गयी?

उत्तर- दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की गयी।

प्रश्न 5 तीसरे दिन सुबह अतिथि ने क्या कहा?

उत्तर- तीसरे दिन अतिथि ने कपड़े धुलवाने हैं कहकर धोबी के बारे में पूछा।

प्रश्न 6 सत्कार की ऊषा समाप्त होने पर क्या हुआ?

उत्तर- सत्कार की ऊषा समाप्त होने पर लंच डिनर की जगह खिचड़ी बनने लगी। खाने में सादगी आ गई और अब भी अतिथि नहीं जाता तो उपवास तक रखना पड़ सकता था। ठहाकों के गुब्बारों की जगह एक चुप्पी हो गई। सौहार्द अब धीरे-धीरे बोरियत में बदलने लगा।

प्रश्न-अभ्यास (लिखित)

निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1 लेखक अतिथि को कैसी विदाई देना चाहता था?

उत्तर- लेखक अतिथि को एक भावभीनी विदाई देना चाहता था। वह चाहता था कि जब अतिथि जाए तो पति-पत्नी उसे स्टेशन तक छोड़ने जाए। उन्हें सम्मानजनक विदाई देना चाहते थे परंतु उनकी यह मनोकामना पूर्ण नहीं हो पाई।

प्रश्न 2 पाठ में आए निम्नलिखित कथनों की व्याख्या कीजिए-

- अंदर ही अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया।
- अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।
- लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें।
- मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी।

v. एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते।

उत्तर-

- जब लेखक ने अतिथि को देखा था तब उन्हें लगा उनका खर्च बढ़ जायेगा इसलिए उनका बटुआ काँप गया यानी अत्यधिक खर्च होने का एहसास हुआ।
- हमारी संस्कृति में अतिथि को देवता समान माना गया है। परन्तु यही अतिथि जब ज्यादा दिन रह जाए तो वह बोझ लगने लगता और थोड़े अंशों में राक्षस प्रतीत होता है।



- iii. हर व्यक्ति अपने घर को सजाता है, सुख शान्ति स्थापित करता है। अपने घर को स्वीट होम बनाता है। लेकिंग जब कोई अनचाहा व्यक्ति आकर रहने लगता है तो वह स्वीटनेस को काटने दौड़ने जैसा लगता है।
- iv. अतिथि लेखक के घर पर चार दिनों से रह रहा था। कल पाँचवा दिन हो जाएगा। यदि कल भी अतिथि नहीं गया तो लेखक अपनी सहनशीलता खो बैठेगा और अतिथि सत्कार भूलकर गेट आउट बोलने में देर नहीं लगाएगा।
- v. हम अतिथि को देवता मानते हैं इसलिए लेखक अपने अतिथि को बताना चाह रहा कि देवता और मनुष्य कभी एक साथ हैं। आप कृपा कर हमारे कर हमारे घर से प्रस्थान करें।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50 -60 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1 कौन-सा आघात अप्रत्याशित था और उसका लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर- तीसरे दिन जब अतिथि ने धोबी से कपड़े धुलवाने की इच्छा प्रकट की तो लेखक के लिए ये अप्रत्याशित आघात था चूँकि उन्हें लगा था वे चले जाएंगे। धोबी को कपड़े धुलने देने का मतलब था कि अतिथि अभी जाना नहीं चाहता। इस आघात का लेखक पर यह प्रभाव पड़ा कि वह अतिथि को राक्षस समझने लगा। उनके सत्कार की ऊषा समाप्त हो गयी।

प्रश्न 2 'संबंधों का संक्रमण के दौर से गुजरना' – इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं? विस्तार से लिखिए।

उत्तर- 'संबंधों का संक्रमण के दौर से गुजरना' – इस पंक्ति का आशय है संबंधों में परिवर्तन आना। जो संबंध आत्मीयतापूर्ण थे अब घृणा और तिरस्कार में बदलने लगे। जब लेखक के घर अतिथि आया था तो उसके संबंध सौहार्द पूर्ण थे। उसने उसका स्वागत

प्रसन्नता पूर्वक किया था। लेखक ने अपनी ढीली-ढाली आर्थिक स्थिति के बाद भी उसे शानदार डिनर खिलाया और सिनेमा दिखाया। लेकिन अतिथि चार पाँच दिन रुक गया तो स्थिति में बदलाव आने लगा और संबंध बदलने लगे। मधुर संबंध कटुता में परिवर्तित हो गए। सत्कार की ऊषा समाप्त हो गई। डिनर से खिचड़ी तक पहुँचकर अतिथि के जाने का चरम क्षण समीप आ गया था।

प्रश्न 3 जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो लेखक के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन आए?

उत्तर- जब अतिथि चार दिन तक नहीं गया तो स्थिति में बदलाव आने लगा और संबंध बदलने लगे। लेखक ने उसके साथ मुस्कुराकर बात करना छोड़ दिया, बातचीत के विषय समाप्त हो गए। सौहार्द व्यवहार अब बोरियत में बदल गया। मधुर संबंध कटुता में परिवर्तित हो गए। सत्कार की ऊषा समाप्त हो गई। डिनर से खिचड़ी तक पहुँचकर अतिथि के जाने का चरम क्षण समीप आ गया था। इसके बाद लेखक उपवास तक जाने की तैयारी करने लगा। लेखक अतिथि को 'गेट आउट' तक कहने के लिए तैयार हो गया।

भाषा - अध्ययन प्रश्न

प्रश्न 1 निम्नलिखित शब्द के दो-दो पर्याय लिखिए – चाँद, ज़िक्र, आघात, ऊषा, अंतरंग

उत्तर-

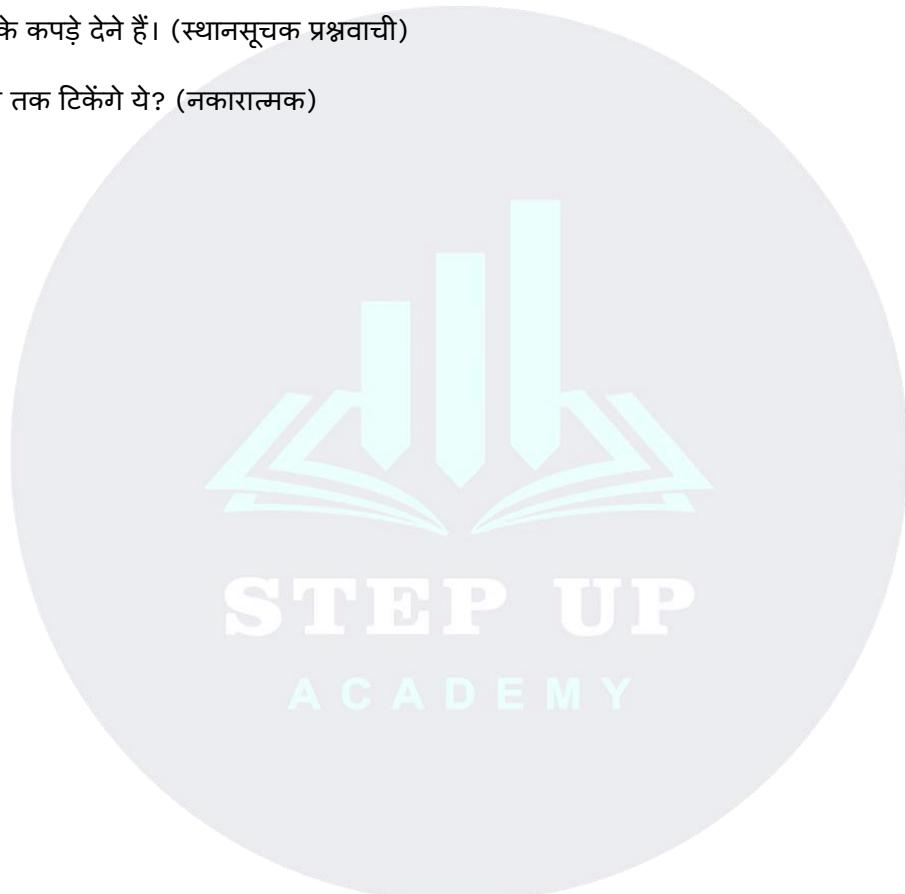
- i. चाँद = राकेश, शशि
- ii. ज़िक्र = उल्लेख, वर्णन
- iii. आघात = हमला, चोट
- iv. ऊषा = गर्मी, घनिष्ठता
- v. अंतरंग = घनिष्ठ, आंतरिक





प्रश्न 2 निम्नलिखित वाक्य को निर्देशानुसार परिवर्तित उत्तर-
कीजिए-

- i. हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने जाएँगे।
(नकारात्मक वाक्य)
- ii. किसी लॉण्ड्री पर दे देते हैं, जल्दी धूल जाएँगे।
(प्रश्नवाचक वाक्य)
- iii. सत्कार की ऊमा समाप्त हो रही थी।
(भविष्यत् काल)
- iv. इनके कपड़े देने हैं। (स्थानसूचक प्रश्नवाची)
- v. कब तक टिकेंगे ये? (नकारात्मक)
- i. हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने नहीं जाएँगे।
- ii. किसी लॉण्ड्री पर दे दे देने से क्या जल्दी धूल जाएँगे?
- iii. सत्कार की ऊमा समाप्त हो जाएगी।
- iv. इनके कपड़े यहाँ देने हैं।
- v. ये अब नहीं टिकेंगे।





वैज्ञानिक चेतना के वाहक

-धीरंजन मालवे

सारांश

यह लेख वैज्ञानिक चन्द्रशेखर वेंकट रामन की संघर्षमय जीवन यात्रा तथा उनकी उपलब्धियों की जानकारी बखूबी कराता है। रामन ग्यारह साल की उम्र में मैट्रिक, विशेष योग्यता की साथ इंटरमीडिएट, भौतिकी और अंग्रेजी में स्वर्ण पदक के साथ बी. ए. और प्रथम श्रेणी में एम. ए. करके मात्र अठारह साल की उम्र में कोलकाता में भारत सरकार के फाइंनेस डिपार्टमेंट में सहायक जनरल एकाउटेंट नियुक्त कर लिए गए थे। इनकी प्रतिभा से इनके अध्यापक तक अभिभूत थे। इस दौरान वे बहुबाजार स्थित प्रयोगशाला में कामचलाऊ उपकरणों का इस्तेमाल करके शोध कार्य करते थे।

फिर उन्होंने अनेक भारतीय वाद्ययंत्रों का अध्ययन किया और वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर पश्चिम देशों की इस भ्रांति को तोड़ने का प्रयास किया कि भारतीय वाद्ययंत्र विदेशी वाद्यों की तुलना में घटिया हैं। बाद में वे सरकारी नौकरी छोड़कर कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद को स्वीकार किया। यहां वे अपना सारा समय अध्ययन, अध्यापन और शोध में बिताने लगे। सन 1921 में जब रामन समुद्री यात्रा पर थे तो समुद्र के नीले रंग को देखकर उसके वजह का सवाल हिलोरे मारने लगा। उन्होंने इस दिशा में आगे प्रयोग किए तथा इसका परिणाम 'रामन प्रभाव' की खोज के रूप में सामने लाया। रामन की खोज की वजह से पदार्थों में अणुओं और परमाणुओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन सहज हो गया।

उन्हें 'भारत रत्न' तथा 'नोबल पुरस्कारों' सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाजा गया। भारतीय संस्कृति से रामन को हमेशा ही लगाव रहा। उन्होंने अपनी भारतीय पहचान को हमेशा बनाए रखा। वे देश में वैज्ञानिक दृष्टि और चिंतन के विकास के प्रति समर्पित थे। उन्होंने बैंगलोर में एक अत्यंत उन्नत प्रयोगशाला और शोध-संस्थान 'रामन रिसर्च इंस्टीट्यूट' की स्थापना की। रामन वैज्ञानिक चेतना और दृष्टि की साक्षात प्रतिमुर्ति थे। उन्होंने हमेशा प्राकृतिक घटनाओं की छानबीन वैज्ञानिक दृष्टि से करने का संदेश दिया।



प्रश्न-अभ्यास (मौखिक)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1 रामन् भावुक प्रकृति प्रेमी के अलावा और क्या थे?

उत्तर- रामन् भावुक प्रकृति प्रेमी के अलावा एक सुयोग्य और जिज्ञासु वैज्ञानिक एवं अनुसंधानकर्ता थे।

प्रश्न 2 समुद्र को देखकर रामन् के मन में कौन-सी दो जिज्ञासाएँ उठीं?

उत्तर- समुद्र को देखकर रामन् के मन में दो जिज्ञासाएँ उठीं-

- समुद्र के पानी का रंग नीला ही क्यों होता है?
- पानी का रंग कोई और क्यों नहीं होता है?

प्रश्न 3 रामन् के पिता ने उनमें किन विषयों की सशक्त नींव डाली?

उत्तर- रामन् के पिता गणित और भौतिकी के शिक्षक थे। उन्होंने ने रामन् में गणित और भौतिकी की सशक्त नींव डाली।

प्रश्न 4 वाद्ययंत्रों की ध्वनियों के अध्ययन के द्वारा रामन् क्या करना चाहते थे?

उत्तर- रामन् वाद्ययंत्रों की ध्वनियों के द्वारा उनके कंपन के पीछे छिपे रहस्य की परतें खोलना चाहते थे।

प्रश्न 5 सरकारी नौकरी छोड़ने के पीछे रामन् की क्या भावना थी?

उत्तर- सरकारी नौकरी छोड़ने के पीछे रामन् की भावना थी कि वह पढ़ाई करके विश्वविद्यालय के शिक्षक बनकर, अध्ययन अध्यापन और शोध कार्यों में अपना पूरा समय लगाए।

प्रश्न 6 ‘रामन् प्रभाव’ की खोज के पीछे कौन-सा सवाल हिलोरें ले रहा था?

उत्तर- रामन् का सवाल था कि आखिर समुद्र के पानी का रंग नीला ही क्यों है? इसके लिए उन्होंने तरल पदार्थ

पर प्रकाश की किरणों का अध्ययन किया। उनके प्रयोग की परिणति ‘रामन् प्रभाव’ की महत्त्वपूर्ण खोज के रूप में हुई।

प्रश्न 7 प्रकाश तरंगों के बारे में आइंस्टाइन ने क्या बताया?

उत्तर- प्रकाश तरंगों के बारे में आइंस्टाइन ने बताया था कि प्रकाश अति सूक्ष्म कणों की तीव्र धारा के समान है। उन्होंने इन कणों की तुलना बुलेट से की और इन्हें ‘फोटॉन’ नाम दिया।

प्रश्न 8 रामन् की खोज ने किन अध्ययनों को सहज बनाया?

उत्तर- रामन् की खोज ने पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं के बारे में खोज के अध्ययन को सहज बनाया।

प्रश्न-अभ्यास (लिखित)

निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1 कॉलेज के दिनों में रामन् की दिली इच्छा क्या थी?

उत्तर- कॉलेज के दिनों में रामन् की दिली इच्छा थी कि वे नए-नए वैज्ञानिक प्रयोग करें, पूरा जीवन शोधकार्यों में लगा दें। उनका मन और दिमाग विज्ञान के रहस्यों को सुलझाने के लिए बैचेन रहता था। उनका पहला शोधपत्र फिलॉसॉफिकल मैगजीन में प्रकाशित हुआ।

प्रश्न 2 वाद्ययंत्रों पर की गई खोजों से रामन् ने कौन-सी श्रांति तोड़ने की कोशिश की?

उत्तर- रामन् ने देशी और विदेशी दोनों प्रकार के वाद्ययंत्रों का अध्ययन किया। इस अध्ययन के द्वारा वे पश्चिमी देशों की श्रांति को तोड़ना चाहते थे कि भारतीय वाद्ययंत्र विदेशी वाद्ययंत्रों की तुलना में घटिया है।

प्रश्न 3 रामन् के लिए नौकरी संबंधी कौन-सा निर्णय कठिन था?





उत्तर- रामन् के लिए नौकरी संबंधी यह निर्णय कठिन था, जब एक दिन प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री सर आशुतोष मुखर्जी ने रामन् से नौकरी छोड़कर कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रोफेसर का पद लेने के लिए आग्रह किया। सरकारी नौकरी की बहुत अच्छी तनखावाह अनेकों सुविधाएँ छोड़कर कम वेतन, कम सुविधाओं वाली नौकरी का फैसला मुश्किल था। परन्तु रामन् ने सरकारी नौकरी छोड़कर विश्वविद्यालय की नौकरी कर ली क्योंकि सरस्वती की साधना उनके लिए महत्वपूर्ण थी। इसलिए यह काम सचमुच हिम्मत का काम था।

प्रश्न 4 सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् को समय-समय पर किन-किन पुरस्कारों से सम्मानित किया गया?

उत्तर- सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् को समय-समय पर अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 1924 में 'रॉयल सोसायटी' की सदस्यता प्रदान की गई। 1929 में उन्हें 'सर' की उपाधि दी गई। 1930 में विश्व का सर्वोच्च पुरस्कार 'नोबल पुरस्कार' प्रदान किया गया। रॉयल सोसायटी का हूँज पदक प्रदान किया गया। फ़िलोडेल्फिया इंस्टीट्यूट का 'फ्रैंकलिन पदक' मिला। सोवियत संघ का अंतर्राष्ट्रीय 'लेनिन पुरस्कार' मिला। 1954 में उन्हें देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

प्रश्न 5 रामन् को मिलनेवाले पुरस्कारों ने भारतीय-चेतना को जाग्रत किया। ऐसा क्यों कहा गया है?

उत्तर- रामन् को समय-समय पर मिलने वाले पुरस्कारों ने भारतीय-चेतना को जाग्रत किया। इनमें से अधिकांश पुरस्कार विदेशी थे और प्रतिष्ठित भी। अंग्रेजों की गुलामी के दौर में एक भारतीय वैज्ञानिक को इतना सम्मान दिए जाने से भारत को आत्मविश्वास और आत्मसम्मान मिला और लोगों को प्रेरणा भी।

निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1 रामन् के प्रारंभिक शोधकार्य को आधुनिक हठयोग क्यों कहा गया है?

उत्तर- रामन् के समय में शोधकार्य करने के लिए परिस्थितियाँ बिल्कुल विपरीत थीं। वे सरकारी नौकरी करते थे, वे बहुत व्यस्त रहते थे। परन्तु फिर भी रामन् फुर्सत पाते इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ साइंस की प्रयोगशाला में काम करते। इस प्रयोगशाला में साधनों का अभाव था लेकिन रामन् इन काम चलाऊ उपकरणों से भी शोध कार्य करते रहे। ऐसे में अपनी इच्छाशक्ति के बलबूते पर अपना शोधकार्य करना आधुनिक हठयोग ही कहा जा सकता है। यह हठयोग विज्ञान से सम्बन्धित था इसलिए आधुनिक कहना उचित था।

प्रश्न 2 रामन् की खोज रामन् प्रभाव क्या है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- रामन् की खोज को रामन् प्रभाव के नाम से जाना जाता है। रामन् के मस्तिष्क में समुद्र के नीले रंग को लेकर जो सवाल 1921 की समुद्र यात्रा के समय आया, वह ही रामन् प्रभाव खोज बन गया। अर्थात् रामन् द्वारा खोजा गया सिद्धांत, इसमें जब एक वर्णीय प्रकाश की किरण किसी तरल या ठोस रवेदार पदार्थ से गुजरती है तो उसके वर्ण में परिवर्तन आ जाता है। एक वर्णीय प्रकाश की किरण के फोटोन जब तरल ठोस रवे से टकराते हैं तो उर्जा का कुछ अंश खो देते हैं या पा लेते हैं। दोनों ही स्थितियाँ प्रकाश के वर्ण में (रंग में) बदलाव लाती हैं।

प्रश्न 3 'रामन् प्रभाव' की खोज से विज्ञान के क्षेत्र में कौन-कौन से कार्य संभव हो सके?

उत्तर- 'रामन् प्रभाव' की खोज से विज्ञान के क्षेत्र में अनेक कार्य संभव हो सके। विभिन्न पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन सहज



हो गया। रामन् की खोज के बाद पदार्थों की आणविक और परमाणविक संरचना के अध्ययन के लिए रामन् स्पेक्ट्रोस्कोपी का सहारा लिया जाने लगा। रामन् की तकनीक एकवर्णीय प्रकाश के वर्ण में परिवर्तन के आधार पर पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की संरचना की सटीक जानकारी देने लगी। अब पदार्थों का संक्षेषण प्रयोगशाला में करना तथा अनेक उपयोगी पदार्थों का कृत्रिम रूप में निर्माण संभव हो गया।

प्रश्न 4 देश को वैज्ञानिक दृष्टि और चिंतन प्रदान करने में सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् ने देश को वैज्ञानिक दृष्टि और चिंतन प्रदान करने में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़कर वैज्ञानिक कार्यों के लिए जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने रामन् प्रभाव की खोज कर नोबल पुरस्कार प्राप्त किया। बंगलोर में शोध संस्थान की स्थापना की, इसे रामन् रिसर्च इंस्टीट्यूट के नाम से जाना जाता है। भौतिक शास्त्र में अनुसंधान के लिए इंडियन जनरल ॲफ फिजिक्स नामक शोध पत्रिका आरंभ की, करेंट साइंस नामक पत्रिका भी शुरू की, प्रकृति में छिपे रहस्यों का पता लगाया।

प्रश्न 5 सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् के जीवन से प्राप्त होने वाले संदेश को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- सर चंद्रशेखर वेंकट रामन् के जीवन से हमें सदैव आगे बढ़ते रहने का संदेश मिलता है। व्यक्ति को अपनी प्रतिभा का सदुपयोग करना चाहिए। भले ही इसके लिए रामन् की तरह सुख-सुविधाओं को छोड़ना पड़े। इच्छा शक्ति हो तो राह निकल आती है। रामन् ने संगीत के सुर-ताल और प्रकाश की किरणों की आभा के अंदर से वैज्ञानिक सिद्धांत खोज निकाले। इस तरह रामन् ने संदेश दिया है कि हमें

अपने आसपास घट रही विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं की छानबीन वैज्ञानिक दृष्टि से करनी चाहिए। हमें प्रकृति के बीच छुपे वैज्ञानिक रहस्य का भेदन करना चाहिए।

निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 1 उनके लिए सरस्वती की साधना सरकारी सुख-सुविधाओं से कहीं अधिक महत्वपूर्ण थी।

उत्तर- जब सर आशुतोष मुखर्जी ने रामन् से नौकरी छोड़कर कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रोफेसर का पद लेने के लिए आग्रह किया तब उन्होंने यह सहर्ष स्वीकार किया जबकि वे तनख्वाह और सुख सुविधाओं वाले पद पर कार्यरत थे जो की उन्हें प्रोफेसर रहते नहीं मिलने वाला था। इससे पता चलता है कि उनके लिए सरस्वती की साधना सरकारी सुख-सुविधाओं से कहीं अधिक महत्वपूर्ण थी।

प्रश्न 2 हमारे पास ऐसी न जाने कितनी ही चीजें बिखरी पड़ी हैं, जो अपने पात्र की तलाश में हैं।

उत्तर- रामन् ने संगीत के सुर-ताल और प्रकाश की किरणों की आभा के अंदर से वैज्ञानिक सिद्धांत खोज निकाले। इस तरह रामन् ने संदेश दिया है कि हमें अपने आसपास घट रही विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं की छानबीन वैज्ञानिक दृष्टि से करनी चाहिए। हमें प्रकृति के बीच छुपे वैज्ञानिक रहस्य का भेदन करना चाहिए। हमारे आस-पास के वातावरण में अनेक प्रकार की चीजें बिखरी होती हैं। उन्हें सही ढंग से सँवारने वाले व्यक्ति की आवश्यकता होती है। वही उनको नया रूप देता है।

प्रश्न 3 यह अपने आपमें एक आधुनिक हठयोग का उदाहरण था।

उत्तर- रामन् के समय में शोधकार्य करने के लिए परिस्थितियाँ बिल्कुल विपरीत थीं। रामन् किसी न





किसी प्रकार अपना कार्य सिद्ध कर लेते थे। वे हठ की स्थिति तक चले जाते थे। योग साधना में हठ का अंश रहता है। वे सरकारी नौकरी करते थे, वे बहुत व्यस्त रहते थे। परन्तु फिर भी रामन् फुर्सत पाते इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ साइंस की प्रयोगशाला में काम करते। इस प्रयोगशाला में साधनों का अभाव था लेकिन रामन् मामूली उपकरणों से भी अपनी प्रयोगशाला का काम चला लेते थे। यह एक प्रकार का हठयोग ही था।

उपयुक्त शब्द का चयन करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

प्रश्न 1 इंफ्रा रेड स्पेक्ट्रोस्कोपी, इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ साइंस, फिलॉसॉफिकल मैग्जीन, भौतिकी, रामन् रिसर्च इंस्टीट्यूट

- i. रामन् का पहला शोध पत्र में प्रकाशित हुआ था।
- ii. रामन् की खोज के क्षेत्र में एक क्रांति के समान थी।
- iii. कलकत्ता की मामूली-सी प्रयोगशाला का नाम था।
- iv. रामन् द्वारा स्थापित शोध संस्थान नाम से जानी जाती है।
- v. पहले पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन करने के लिए इंफ्रा रेड स्पेक्ट्रोस्कोपी का सहारा लिया जाता था।

उत्तर-

- i. रामन् का पहला शोध पत्र **फिलॉसॉफिकल मैग्जीन** में प्रकाशित हुआ था।
- ii. रामन् की खोज **भौतिकी** के क्षेत्र में एक क्रांति के समान थी।

- iii. कलकत्ता की मामूली-सी प्रयोगशाला का नाम **इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ साइंस** था।
- iv. रामन् द्वारा स्थापित शोध संस्थान **रामन् रिसर्च इंस्टीट्यूट** नाम से जानी जाती है।
- v. पहले पदार्थों के अणुओं और परमाणुओं की आंतरिक संरचना का अध्ययन करने के लिए **इंफ्रा रेड स्पेक्ट्रोस्कोपी** का सहारा लिया जाता था।

भाषा - अध्ययन प्रश्न

प्रश्न 1 नीचे कुछ समानदर्शी शब्द दिए जा रहे हैं जिनका अपने वाक्य में इस प्रकार प्रयोग करें कि उनके अर्थ का अंतर स्पष्ट हो सके।

- i. प्रमाण
- ii. प्रणाम
- iii. धारणा
- iv. धारण
- v. पूर्ववर्ती
- vi. परवर्ती
- vii. परिवर्तन
- viii. प्रवर्तन

उत्तर-

- i. **प्रमाण** – मैं यह बात प्रमाण सहित कह सकता हूँ।
- ii. **प्रणाम** - अपने से बड़ों को प्रणाम करना चाहिए।
- iii. **धारणा** - धर्म के प्रति हमारी धारणा बदलनी चाहिए।
- iv. **धारण** - सदा स्वच्छ वस्त्र धारण करो।



v. **पूर्ववर्ती** - कई किले पूर्ववर्ती राजाओं ने बनाए।

vi. **पूर्ववर्ती** - कई किले पूर्ववर्ती राजाओं ने बनाए।

vii. **परिवर्तन** - अब सृष्टि में भी अनेकों परिवर्तन हो रहे हैं।

viii. **प्रवर्तन** - प्रवर्तन कार्यालय में जाना है।

प्रश्न 2 रेखांकित शब्द के विलोम शब्द का प्रयोग करते हुए रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

i. मोहन के पिता मन से सशक्त होते हुए भी तन से _____ हैं।

ii. अस्पताल के अस्थायी कर्मचारियों को _____ रूप से नौकरी दे दी गई है।

iii. रामन् ने अनेक ठोस रवों और _____ पदार्थों पर प्रकाश की किरण के प्रभाव का अध्ययन किया।

iv. आज बाजार में देशी और _____ दोनों प्रकार के खिलौने उपलब्ध हैं।

v. सागर की लहरों का आकर्षण उसके विनाशकारी रूप को देखने के बाद परिवर्तित हो जाता है।

उत्तर-

i. मोहन के पिता मन से सशक्त होते हुए भी तन से अशक्त हैं।

ii. अस्पताल के अस्थायी कर्मचारियों को स्थायी रूप से नौकरी दे दी गई है।

iii. रामन् ने अनेक ठोस रवों और तरल पदार्थों पर प्रकाश की किरण के प्रभाव का अध्ययन किया।

iv. आज बाजार में देशी और विदेशी दोनों प्रकार के खिलौने उपलब्ध हैं।

v. सागर की लहरों का आकर्षण उसके विनाशकारी रूप को देखने के बाद परिवर्तित हो जाता है।

प्रश्न 3 नीचे दिए उदाहरण में रेखांकित अंश में शब्द-युग्म का प्रयोग हुआ है-

उदाहरण: चाऊतान को गाने-बजाने में आनंद आता है।

उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्द-युग्मों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

i. सुख-सुविधा

ii. अच्छा-खासा

iii. प्रचार-प्रसार

iv. आस-पास

i. सुख-सुविधा- रोहन को सुख-सविधा में रहने की आदत है।

ii. अच्छा-खासा- माँ ने अच्छा-खासा खाना बनाया था।

iii. प्रचार-प्रसार- नेताजी प्रचार-प्रसार में लगे हैं।

iv. आस-पास- हमारे आस-पास हरियाली है।

प्रश्न 4 प्रस्तुत पाठ में आए अनुस्वार और अनुनासिक शब्दों को निम्न तालिका में लिखिए -

	अनुस्वार		अनुनासिक
(क)	अंदर	(क)	ढूँढ़ते
(ख)	(ख)
(ग)	(ग)
(घ)	(घ)
(ड)	(ड)



उत्तर-

	अनुस्वार		अनुनासिक
(क)	अंदर	(क)	दूँढ़ते
(ख)	सदियों	(ख)	पहुँचता
(ग)	असंख्य	(ग)	सुविधाएँ
(घ)	रंग	(घ)	स्थितियाँ
(ड)	नींव	(ड)	वहाँ

प्रश्न 5 पाठ में निम्नलिखित विशिष्ट भाषा प्रयोग आए हैं। सामान्य शब्दों में इनका आशय स्पष्ट कीजिए-

- घंटों खोए रहते
- स्वाभाविक रुझान बनाए रखना
- अच्छा खासा काम किया
- हिम्मत का काम था
- सटीक जानकारी
- काफी ऊँचे अंक हासिल किए
- कड़ी मेहनत के बाद खड़ा किया था,
- मोटी तनख्वाह।

उत्तर-

- घंटों खोए रहते – बहुत देर तक ध्यान में लीन रहते।
- स्वाभाविक रुझान बनाए रखना – सहज रूप से रुचि बनाए रखना।
- अच्छा खासा काम किया – अच्छी मात्रा में देर सारा काम किया।
- हिम्मत का काम था – कठिन काम था।
- सटीक जानकारी – बिल्कुल सही और प्रामाणिक जानकारी।

vi. काफ़ी ऊँचे अंक हासिल किए – बहुत अच्छे अंक पाए।

- vii. कड़ी मेहनत के बाद खड़ा किया था – बहुत मेहनत करने के बाद शोध संस्थान की स्थापना की थी।
- viii. मोटी तनख्वाह – बहुत अधिक आय या वेतन।

प्रश्न 6 पाठ के आधार पर मिलान कीजिए-

नीला	कामचलाऊ
पिता	रव
तैनाती	वैज्ञानिक रहस्य
उपकरण	भारतीय वाद्ययंत्र
घटिया	समुद्र
फोटान	नींव
भेदन	कलकत्ता

नीला	समुद्र
पिता	नींव
तैनाती	कलकत्ता
उपकरण	कामचलाऊ
घटिया	भारतीय वाद्ययंत्र
फोटान	वैज्ञानिक रहस्य
भेदन	रव

प्रश्न 7 पाठ में आए रंगों की सूची बनाइए। इनके अतिरिक्त दस रंगों के नाम और लिखिए।

उत्तर- पाठ में आए रंग – बैंजनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी, लाल।

अन्य रंग – काला, सफेद, गुलाबी, संतरिया, महरून, मुँगिया, तोतिया, फिरोजी, भूरा, सलेटी।



प्रश्न 8 नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार 'ही' का प्रयोग करते हुए पाँच वाक्य बनाइए।

उदाहरण : उनके ज्ञान की सशक्ति नींव उनके पिता ने ही तैयार की थी।

उत्तर-

i. समुद्र को निहारना रामन् को अच्छा लगता ही था।

- ii. आखिर समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है?
- iii. रामन् के पिता गणित और भौतिकी के शिक्षक ही थे।
- iv. कलकत्ता के शोध संस्थान की स्थापना एक डॉक्टर ने ही की थी।
- v. रामन् ने आखिरकार सरकारी नौकरी त्याग ही दी।





शुक्र तारे के समान

-स्वामी आनंद

सारांश

प्रस्तुत पाठ 'शुक्र तारे के समान' में लेखक ने गांधी जी के निजी सचिव महादेव भाई देसाई की बेजोड़ प्रतिभा और व्यस्ततम दिनचर्या को उकेरा है। उन्होंने महादेव भाई की तुलना शुक्र तारे से की है जो सारे आकाश को जगमगा कर, दुनिया को मुग्ध करके अस्त हो जाता है। सन 1917 में मैं वे गांधीजी से मिले तब गांधीजी ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी का पद सौंप दिया। सन 1919 में जलियाँवाला बाग हत्याकांड के दिनों में गांधीजी ने गिरफ्तार होते समय महादेव जी को अपना वारिस कहा था। उन दिनों गांधीजी के सामने अंग्रेजों द्वारा अत्याचारों और जुल्मों की जो दल कहानियाँ सुनाने आते थे, महादेव भाई उनकी संक्षिप्त टिप्पणियाँ बनाकर उन्हें रु-बू-रु मिलवाते थे।

'क्रॉनिकल' के संपादक हार्नीमैन को देश निकाले की सजा मिलने पर 'यंग इंडिया' साप्ताहिक में लेखों की कमी पड़ने लगी चूँकि हार्नीमैन ही मुख्य रूप से लेख लिखते थे। इसीलिए ये जिमेदारी गांधीजी ने ले ली, बाद में उनका काम बढ़ने के कारण इस अखबार को सप्ताह में दो बार निकालना पड़ा। कुछ दिन बाद अखबार की जिमेवारी लेखक के हाथों में आ गयी। महादेव भाई और गांधीजी का सारा समय देश-भ्रमण में बीतने लगा, परन्तु महादेव जी जहाँ भी होते समय निकालकर लेख लिखते और भेजते। महादेव भाई गांधीजी के यात्राओं और दिन प्रतिदिन की गतिविधियों के बारे में लिखते, साथ ही देश-विदेश के समाचारों को पढ़कर उसपर टिका-टिप्पणियाँ भी लिखते। अपने तीर्व बुद्धि के कारण देसी-विदेशी समाचार पत्र वालों के ये लाइले बन गए। गांधीजी के पास आने से पहले ये सरकार के अनुवाद विभाग में नौकरी करते थे। इन्होंने कई साहित्यों का अनुवाद किया था।

गांधीजी के पत्रों में महादेव भाई की लिखावट होती थी। उनकी लिखावट लम्बी सी जेट की गति सी लिखी जाती थी, वे शॉट्हैंड नहीं जानते थे, परन्तु उनकी लेखनी में कॉमा मात्र की भी गलती नहीं होती थी इसलिए गांधीजी भी अपने मिलने वालों से बातचीत को उनकी नोटबुक से मिलान करने को कहते थे। वे अपने बड़े-बड़े झोलों में ताजे समाचार पात्र और पुस्तकें रखा करते जिसे वे रेलगाड़ी, रैलियों तथा सभाओं में पढ़ते थे या फिर 'नवजीवन' या 'यंग इंडिया' के लिए लेख लिखते रहते। वे इतने वयस्थ समय में अपने लिए कब वक्त निकालते पता नहीं चलता, एक घंटे में चार घंटों का काम निपटा देते। महादेव भाई गांधीजी के जीवन में इतने रच-बस-गए थे की उनके बिना महादेव भाई की अकेले कल्पना नहीं की जा सकती।

उन्होंने गांधीजी की पुस्तक 'सत्य का प्रयोग' का अंग्रेजी अनुवाद भी किया। सन 1934-35 में गांधीजी मगनवाड़ी से चलकर सेगांव चले गए परन्तु महादेव जी मगंवादी में ही रहे। वे रोज वहां से पैदल चलकर सेगांव जाते तथा शाम को काम निपटाकर वापस आते, जो की कुल 11 मिल था। इस कारण उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा और वे अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए। इनके मृत्यु का दुःख गांधीजी को आजीवन रहा।



प्रश्न-अभ्यास (मौखिक)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए

प्रश्न 1 महादेव भाई अपना परिचय किस रूप में देते थे?

उत्तर- महादेव भाई दूसरों से अपना परिचय गांधी जी का हम्माल तथा पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर के रूप में देते थे।

प्रश्न 2 ‘यंग इंडिया’ साप्ताहिक में लेखों की कमी क्यों रहने लगी थी?

उत्तर- ‘यंग इंडिया’ नामक पत्र में अधिकतर लेख हॉर्नीमैन लिखा करते थे। अंग्रेजों ने उन्हें देश निकाला दे दिया। परिणामस्वरूप इस पत्र में लेख लिखने वालों की कमी हो गई।

प्रश्न 3 गांधी जी ने ‘यंग इंडिया’ प्रकाशित करने के विषय में क्या निश्चय किया?

उत्तर- ‘यंग इंडिया’ के प्रकाशन में गांधी जी ने यह निश्चय किया कि इसे सप्ताह में दो बार निकाला जाए क्योंकि काम बहुत अधिक बढ़ गया है।

प्रश्न 4 गांधी जी से मिलने से पहले महादेव भाई कहाँ नौकरी करते थे?

उत्तर- गांधी जी से मिलने से पहले महादेव भाई सरकार के अनुवाद विभाग में नौकरी किया करते थे।

प्रश्न 5 महादेव भाई के झोलों में क्या भरा रहता था?

उत्तर- महादेव भाई के झोलों में ताजे-से-ताजे समाचार पत्र, मासिक पत्र और पत्रिकाएँ भरे रहते थे, जिन्हें वे सफर के दौरान पढ़ते थे।

प्रश्न 6 महादेव भाई ने गांधी जी की कौन-सी प्रसिद्ध पुस्तक का अनुवाद किया था?

उत्तर- महादेव भाई ने गांधी जी की आत्मकथा ‘सत्य के प्रयोग’ को अंग्रेजी अनुवाद किया।

प्रश्न 7 अहमदाबाद से कौन-से दो साप्ताहिक निकलते थे?

उत्तर- अहमदाबाद से ‘यंग इंडिया’ और ‘नवजीवन’ नामक साप्ताहिक निकलते थे।

प्रश्न 8 महादेव भाई दिन में कितनी देर काम करते थे?

उत्तर- महादेव भाई रात होने तक काम करते रहते थे।

प्रश्न 9 महादेव भाई से गांधी जी की निकटता किस वाक्य से सिद्ध होती है?

उत्तर- “ए रे जखम जोगे नहि जशे।” अर्थात यह धाव कभी योग से नहीं भरेगा। गांधी जी द्वारा कहे गए इस वाक्य से उनकी और महादेव भाई की निकटता सिद्ध होती है।

प्रश्न-अभ्यास (लिखित)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में लिखिए)

प्रश्न 1 गांधी जी ने महादेव को अपना वारिस कब कहा था?

उत्तर- 1919 में पंजाब जाते समय गांधी जी को पलवल स्टेशन पर अंग्रेज सरकार ने गिरफ्तार कर लिया। गांधी जी ने उसी समय महादेव भाई को अपना वारिस कहा था।

प्रश्न 2 गांधी जी से मिलने आनेवालों के लिए महादेव भाई क्या करते थे?

उत्तर- पंजाब में हो रहे अत्याचारों को बताने के लिए आनेवालों की बातों को महादेव भाई संक्षिप्त टिप्पणियों के रूप में तैयार करते और गांधी जी के सामने प्रस्तुत करते। इसके अलावा वे आनेवालों के साथ गांधी जी के साथ उनकी मुलाकात भी कराते थे।

प्रश्न 3 महादेव भाई की साहित्यिक देन क्या है?

उत्तर- महादेव भाई ने टैगोर द्वारा रचित ‘विदाई का अभिशाप’ शीर्षक नाटिका और ‘शरद बाबू की कहानियाँ’ का अनुवाद किया। उन्होंने महान्मा गांधी की आत्मकथा ‘सत्य के प्रयोग’ का अंग्रेजी अनुवाद किया।





प्रश्न 4 महादेव भाई की अकाल मृत्यु का कारण क्या था?

उत्तर- महादेव भाई मगनवाड़ी में रहते थे। उसी समय से गाँव की सीमा पर मकान बनवाए जा रहे थे। वर्धा की असह्य गरमी में मगनवाड़ी से गाँव जाते, दिनभर काम करके शाम को फिर पैदल आते। इससे उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। जो उनकी मृत्यु का कारण बन गया।

प्रश्न 5 महादेव भाई के लिखे नोट के विषय में गाँधी जी क्या कहते थे?

उत्तर- गाँधी जी अन्य टिप्पणीकारों को विश्वासपूर्वक यह कहते थे कि महादेव के लिखे नोट से अपने नोट का मिलान कर लो, गलती का पता चल जाएगा। उन्हें विश्वास था कि महादेव जो लिखेंगे, सही लिखेंगे।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

प्रश्न 1 पंजाब में फ़ौजी शासन ने क्या कहर बरसाया?

उत्तर- पंजाब में फ़ौजी शासन ने घोर कहर बरपाया और पंजाब के अधिकतर नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। इन नेताओं को फ़ौजी कानून के अंतर्गत जन्म कैद की सजाएँ देकर काला पानी (अंडमान-निकोबार द्वीप समूह पर) भेज दिया। लाहौर के मुख्य राष्ट्रीय अंग्रेजी दैनिक पत्र ट्रिब्यून के संपादक श्री कालीनाथ राम को दस साल जेल की सजा दी गई।

प्रश्न 2 महादेव जी के किन गुणों ने उन्हें सबका लाइला बना दिया था?

उत्तर- महादेव जी जो लिखते थे, वह बड़ा सुंदर व सटीक होता था। वह चाहे साधारण लेख हो या विरोधी समाचार पत्रों की प्रतिक्रियाओं का जवाब, सभी में उनकी शिष्टाचार भरी शैली होती थी। उनके कॉलम सीधी-सादी भाषा में सुस्पष्ट व उच्च भावों से भरे होते थे। वे विरोधियों की बातों का जवाब उदार हृदय से देते थे। यही कारण था कि वे सबके लाइले बन गए।

प्रश्न 3 महादेव जी की लिखावट की क्या विशेषताएँ थीं?

उत्तर- महादेव भाई द्वारा लिखे गए अक्षर मोती जैसे सुंदर और त्रुटिरहित होते थे। पूरे भारत में उनकी लिखावट का सानी न था। वाइसराय को लिखे जाने वाले पत्र उन्हीं की लिखावट में लिखे जाते थे। उनकी लिखावट देख वाइसराय भी सोचने पर विवश हो जाते थे। वे सुंदर लिखते हुए भी तेज़ गति से लिख सकते थे। इन लेखों में इतनी शुद्धता होती थी कि लोग अपने लेख का मिलान महादेव द्वारा लिखे लेख से करते थे। उनकी लिखावट पढ़ने वाले को मंत्रमुग्ध कर देने वाली तथा मनोहारी थी।

निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1 अपना परिचय उनके 'पीर बावर्ची-भिश्ती-खर' के रूप में देने में वे गौरवान्वित महसूस करते थे।

उत्तर- महादेव भाई मज़ाक में अपने आपको गाँधीजी का सेवक, रसोइया, पानी भरने वाला भिश्ती और गधा कहते थे। यह कहने में वे गौरव का अनुभव करते थे। गाँधी जी की सेवा करने में उन्हें आनंद आता था। वे गौरव का अनुभव इसलिए करते थे क्योंकि उन्हें गाँधी जी का सान्निध्य प्राप्त था।

प्रश्न 2 इस पेशे में आमतौर पर स्याह को सफेद और सफेद को स्याह करना होता था।

उत्तर- आशय-महादेव भाई और उनके मित्र नरहरि भाई ने वकालत की पढ़ाई के साथ वकालत भी साथ-साथ शुरू की थी। इस पेशे में सच्चाई और ईमानदारी के लिए कोई जगह नहीं होती। यहाँ तो बुधिकौशल और वाक्पटुता के बल पर सच को झूठ और झूठ को सच साबित किया जाता है। इसी सच और झूठ के चक्कर में कई बार निर्दोष को सजा और दोषी को बाइज्जत बरी कर दिया जाता है।

प्रश्न 3 देश और दुनिया को मुग्ध करके शुक्रतारे की तरह ही अचानक अस्त हो गए।

उत्तर- इसका आशय यह है कि महादेव की मृत्यु अल्पायु में ही हो गई थी। इस संसार से जाने से पहले उन्होंने



ऐसा काम किया था कि सारी दुनिया उन पर मुर्ध हो गई थी। वे शुक्रतारे की तरह अल्प समय में अपनी चमक बिखेरकर अस्त हो गए।

प्रश्न 4 उन पत्रों को देख-देखकर दिल्ली और शिमला में बैठे वाइसराय लंबी साँस-उसाँस लेते रहते थे।

उत्तर- आशय- महादेव भाई की लिखावट अत्यंत सुंदर थी। यह लिखावट इतनी शुद्ध होती थी कि उसमें कोमा और मात्रा की भी गलती नहीं होती थी। उनकी लेखन शैली मनोहारी होती थी। शिमला में बैठे वाइसराय को लिखे जाने वाले पत्र महादेव की लिखावट में भेजे जाते थे। इन पत्रों की लिखावट देख वाइसराय लंबी-लंबी साँसें लेने लग जाते थे क्योंकि ब्रिटिश सर्विस में उनके समान अक्षर लिखने वाला मिलना कठिन था।

भाषा-अध्ययन प्रश्न

प्रश्न 1 ‘इक’ प्रत्यय लगाकर शब्दों का निर्माण कीजिए-

सप्ताह - **साप्ताहिक**

1. अर्थ	-
2. साहित्य	-
3. धर्म	-
4. व्यक्ति	-
5. मास	-
6. राजनीति	-
7. वर्ष	-

उत्तर:

1. अर्थ – आर्थिक
2. साहित्य – साहित्यिक
3. व्यक्ति – वैयक्तिक
4. धर्म -धार्मिक
5. मास – मासिक
6. राजनीति – राजनीतिक
7. वर्ष – वार्षिक

प्रश्न 2 नीचे दिए गए उपसर्गों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए शब्द बनाइए-

अ, नि, अन, दुर, वि, कु, पर, सु, अधि

1. आर्य -
2. आगत -
3. डर -
4. आकर्षण -
5. क्रय -
6. मार्ग -
7. उपस्थित -
8. लोक -
9. नायक -
10. भाग्य -

उत्तर

1. आर्य – अनार्य
2. आगत – अनागत
3. डर – निडर
4. आकर्षण – विकर्षण
5. क्रये – विक्रय
6. मार्ग – कुमार्ग
7. उपस्थित – अनुपस्थित
8. लोक – परलोक
9. नायक – अधिनायक
10. भाग्य – दुर्भाग्य।

प्रश्न 3 निम्नलिखित मुहावरों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए,

- i. आड़े हाथों लेना
- ii. अस्त हो जाना
- iii. दाँतों तले अंगुली दबाना
- iv. मंत्र-मुर्ध करना
- v. लोहे के चने चबाना



उत्तर-

- i. **आड़े हाथों लेना** – जब दुश्मन सामने आए तो नरमी न बरतना। उसे आड़े हाथों लेना।
- ii. **अस्त हो जाना** – कभी कांग्रेस में सेवा का भाव था। आज वह पवित्र भावना **अस्त हो गई** है।
- iii. **दाँतों तले अँगुली दबाना** – नट को एक रस्सी पर चढ़ते देखकर सब लोग दाँतों तले अँगुली दबाने लगे।
- iv. **मंत्र मुग्ध करना** – लता मंगेशकर की मधुर आवाज ने सबको **मंत्र मुग्ध कर दिया**।
- v. **लोहे के चने चबाना** – सैनिकों का जीवन आसान नहीं होता। उन्हें युद्ध के मैदान में लोहे के चने चबाने पड़ते हैं।

प्रश्न 4 निम्नलिखित शब्दों के पर्याय लिखिए

- i. वारिस –
- ii. जिगरी –
- iii. कहर –
- iv. मुकाम –
- v. रुबरू –
- vi. फ़र्क –
- vii. तालीम –
- viii. गिरफ्तार –

उत्तर-

- i. वारिस – उत्तराधिकारी
- ii. जिगरी – हार्दिक
- iii. कहर – जुल्म, अत्याचार
- iv. मुकाम – लक्ष्य
- v. रुबरू – प्रत्यक्ष

vi. फ़र्क – अंतर

vii. तालीम – शिक्षा

viii. गिरफ्तार – कैद, बंधक

प्रश्न 5 उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए-

उदाहरण:

गाँधीजी ने महादेव भाई को अपना वारिस कहा था। गाँधीजी महादेव भाई को अपना वारिस कहा करते थे।

- i. महादेव भाई अपना परिचय ‘पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर’ के रूप में देते थे।
- ii. पीड़ितों के दल-के-दल गामदेवी के मणिभवन पर उमड़ते रहते थे।
- iii. दोनों साप्ताहिक अहमदाबाद से निकलते थे।
- iv. देश-विदेश के समाचार-पत्र गाँधीजी की गतिविधियों पर टीका-टिप्पणी करते थे।
- v. गाँधीजी के पत्र हमेशा महादेव की लिखावट में जाते थे।

उत्तर:

- i. महादेव भाई ने अपना परिचय ‘पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर’ के रूप में दिया था।
- ii. पीड़ितों के दल-के-दल गामदेवी के मणिभवन पर उमड़े थे।
- iii. दोनों साप्ताहिक अहमदाबाद से निकला करते थे।
- iv. देश-विदेश के समाचार पत्रों ने गाँधीजी की गतिविधियों पर टीका-टिप्पणी की।
- v. गाँधीजी के पत्र हमेशा महादेवी की लिखावट में जाया करते थे।





रैदास

-रैदास

सारांश

अब कैसे छूटै राम नाम रट लागी ।

प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अँग-अँग बास समानी ।

प्रभु जी, तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा ।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती ।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ।

प्रभु जी, तुम तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा ।

प्रभु! हमारे मन में जो आपके नाम की रट लग गई है, वह कैसे छूट सकती है? अब मैं आपका परम भक्त हो गया हूँ। जिस तरह चंदन के संपर्क में रहने से पानी में उसकी सुगंध फैल जाती है, उसी प्रकार मेरे तन मन में आपके प्रेम की सुगंध व्याप्त हो गई है। आप आकाश में छाए काले बादल के समान हो, मैं जंगल में नाचने वाला मोर हूँ। जैसे बरसात में घुमडते बादलों को देखकर मोर खुशी से नाचता है, उसी भाँति मैं आपके दर्शन को पा कर खुशी से भावमुग्ध हो जाता हूँ। जैसे चकोर पक्षी सदा अपने चंद्रामा की ओर ताकता रहता है उसी भाँति मैं भी सदा आपका प्रेम पाने के लिए तरसता रहता हूँ।

हे प्रभु! आप दीपक हो और मैं उस दिए की बाती जो सदा आपके प्रेम में जलता है। प्रभु आप मोती के समान उज्ज्वल, पवित्र और सुंदर हो और मैं उसमें पिरोया हुआ धागा हूँ। आपका और मेरा मिलन सोने और सुहागे के मिलन के समान पवित्र है। जैसे सुहागे के संपर्क से सोना खरा हो जाता है, उसी तरह मैं आपके संपर्क से शुद्ध हो जाता हूँ। हे प्रभु! आप स्वामी हो मैं आपका दास हूँ।

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।

गरीब निवाजु गुसाईआ मेरा माथै छनु धरै॥

जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै।

नीचउ ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै॥

नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै।

कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरिजीउ ते सभै सरै॥

हे प्रभु! आपके बिना कौन कृपालु है। आप गरीब तथा दिन – दुखियों पर दया करने वाले हैं। आप ही ऐसे कृपालु स्वामी हैं जो मुझ जैसे अछूत और नीच के माथे पर राजाओं जैसा छत्र रख दिया। आपने मुझे राजाओं जैसा सम्मान प्रदान किया। मैं अभागा



हूँ। मुझ पर आपकी असीम कृपा है। आप मुझ पर द्रवित हो गए। हे स्वामी आपने मुझ जैसे नीच प्राणी को इतना उच्च सम्मान प्रदान किया। आपकी दया से नामदेव, कबीर जैसे जुलाहे, त्रिलोचन जैसे सामान्य, सधना जैसे कसाई और सैन जैसे नाई संसार से तर गए। उन्हें ज्ञान प्राप्त हो गया। अंतिम पंक्ति में रैदास कहते हैं – हे संतों, सुनो! हरि जी सब कुछ करने में समर्थ हैं। वे कुछ भी करने में सक्षम हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

उत्तर-

- पहले पद में भगवान और भक्त की जिन-जिन चीजों से तुलना की गई है, उनका उल्लेख कीजिए।
- पहले पद की प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से नाद सौंदर्य आ गया है, जैसे-पानी, समानी आदि। इस पद में से अन्य तुकांत शब्द छाँटकर लिखिए।
- पहले पद में कुछ शब्द अर्थ की दृष्टि से परस्पर संबद्ध हैं। ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखिए-

उदाहरण:

दीपक	बाती
.....
.....
.....
.....

- दूसरे पद में कवि ने 'गरीब निवाजु' किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए। [CBSE]
- दूसरे पद की 'जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढैरै' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
- 'रैदास' ने अपने स्वामी को किन-किन नाम से पुकारा है? [CBSE]
- निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए- मोरा, चंद, बाती, जोति, बैरै, राती, छत्रु, धैरै, छोति, तुहीं, गुर्सईआ।

- पहले पद में भगवान और भक्त की तुलना करते हुए कवि ने अपने प्रभु को चंदन, बताते हुए अपनी तुलना पानी से, घन बताते हुए उसे देखकर प्रसन्न होने वाले मोर से, दीपक के साथ जलकर प्रकाश फैलाने वाली बाती से, मोती। के साथ जुड़कर माला बनाने वाले धागे से और सोने में मिलकर उसको मूल्य बढ़ाने वाले सुहागे से की है।
- नाद सौंदर्य प्रस्तुत करने वाले इस पद के अन्य शब्द हैं- मोरा-चकोरा, बाती-राती, धागा-सुहागा, दासा-रैदासा।
- पहले पद में अर्थ की दृष्टि से परस्पर संबद्ध पद हैं-
 - चंदन – पानी
 - दीपक – बाती
 - घन – मोर
 - मोती – धागा
 - चाँद – चकोर
 - सोना – सोहागा
 - स्वामी – दास
- दूसरे पद में कवि ने अपने आराध्य प्रभु को 'गरीब निवाजु' कहा है। कवि को पता है कि उसके प्रभु ने समाज के उस वर्ग का भी उधार किया है जिसे कोई स्पर्श भी नहीं करना चाहता



- है। उन्होंने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना, सैन आदि का उद्धार किया जो समाज के अत्यंत पिछड़े एवं दबे वर्ग से थे। समाज में इस वर्ग का सहायक ईश्वर के अलावा कोई और नहीं होता है। प्रभु द्वारा ऐसे लोगों का उद्धार करने के कारण कवि ने उन्हें गरीब नवाजु कहा है।
- v. “जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढैरै पंक्ति का आशय है कि संत कवि रैदास समाज में फैली अस्पृश्यता को पसंद नहीं करते हैं। समाज के लोग इस वर्ग से दूरी बनाकर रहना चाहते हैं। वे छुआछूत के कारण उनके करीब भी नहीं जाते हैं, परंतु कवि के प्रभु इस भेदभाव को नहीं मानते हैं और अपने स्पर्श से उसका भी कल्याण करते हैं। प्रभु अपनी समर्दिता, दयालुता, उदारता के कारण किसी भक्त से भेदभाव नहीं करते हैं।
- vi. रैदास ने अपने स्वामी को गरीब निवाजु, गुसाई हरिजीउ आदि नामों से पुकारा है।

शब्द	प्रचलित रूप
मोरा	मोर, मयूर
बाती	बत्ती
जोति	ज्योति
बरै	जले (जलना)
राती	रात्रि, रात
छत्रु	छत्र
धरै	धारण करना, धरना
छोति	छूत, छुआछूत
तुहीं	तुम ही
गुसईआ	गोसाई

प्रश्न 2 नीचे लिखी पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

- i. जाकी अँग-अँग बास समानी

- ii. जैसे चितवत चंद चकोरा
 iii. जाकी जोति बरै दिन राती
 iv. ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करे ।
 v. नीचहु ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै

उत्तर-

- i. जिसकी सुगंध मेरे अंग-अंग में समा चुकी है अर्थात् मेरे जीवन रूपी जल में परमात्मा रूपी चंदन की सुगंध समा गई है।
 ii. जिस प्रकार चकोर पक्षी दिन-रात चाँद की ओर निहारता रहता है, वैसे ही मैं अपने प्रभु की ओर निहारता रहता हूँ।
 iii. रैदास कहते हैं कि उसके जीवन में दिन-रात उसी प्रभु की ज्योति जल रही है।
 iv. रैदास कहते हैं कि प्रभु ही सर्वसमर्थ हैं, दीनदयालु और कृपालु हैं। उन्होंने रैदास जैसे अछूत को महान संत बना दिया। ऐसी असीम कृपा ईश्वर ही कर सकता है।
 v. रैदास कहते हैं-गोबिंद सर्वसमर्थ है। वह निडर है। वह रैदास जैसे नीच प्राणी को उच्च कोटि का संत बना सकता है।

प्रश्न 3 रैदास के इन पदों का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

- उत्तर- संत कवि रैदास अपने आराध्य प्रभु से अत्यंत धनिष्ठ प्रेम करते हुए अनन्य भक्ति भाव रखते हैं। वे अपने प्रभु से मिलकर उसी प्रकार एकाकार हो जाते हैं; जैसे-चंदन के साथ पानी, घन के साथ मोर, चाँद के साथ चकोर और सोने के साथ सुहागा। वे अपने प्रभु से अनन्य भक्ति करते हैं। उनका प्रभु गरीबों को उद्धार करने वाला है। वह गरीब निवाज गरीबों के माथे पर भी छत्र सुशोभित करने वाला है, अछूतों का उद्धार करने वाला, नीचों को ऊँचा करने वाला तथा अपनी कृपा से सभी का उद्धार करने वाला है।





दोहे

-रहीम

सारांश

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।

टूटे पे फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय॥

अर्थ – रहीम के अनुसार प्रेम रूपी धागा अगर एक बार टूट जाता है तो दोबारा नहीं जुड़ता। अगर इसे जबरदस्ती जोड़ भी दिया जाए तो पहले की तरह सामान्य नहीं रह जाता, इसमें गाँठ पड़ जाती है।

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।

सुनी इठलैहैं लोग सब, बांटी न लैहैं कोय॥

अर्थ – रहीम कहते हैं कि अपने दुःख को मन के भीतर ही रखना चाहिए क्योंकि उस दुःख को कोई बाँटता नहीं है बल्कि लोग उसका मजाक ही उड़ाते हैं।

एके साथे सब सधै, सब साथे सब जाय।

रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फूलै अगाय॥

अर्थ – रहीम के अनुसार अगर हम एक-एक कर कार्यों को पूरा करने का प्रयास करें तो हमारे सारे कार्य पूरे हो जाएंगे, सभी काम एक साथ शुरू कर दियें तो तो कोई भी कार्य पूरा नहीं हो पायेगा। वैसे ही जैसे सिर्फ जड़ को सींचने से ही पूरा वृक्ष हराभरा, फूल-फलों से लदा रहता है।

चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवध नरेस।

जा पर बिपदा परत है, सो आवत यह देश॥

अर्थ – रहीम कहते हैं कि चित्रकूट में अयोध्या के राजा राम आकर रहे थे जब उन्हें 14 वर्षों के वनवास प्राप्त हुआ था। इस स्थान की याद दुःख में ही आती है, जिस पर भी विपत्ति आती है वह शांति पाने के लिए इसी प्रदेश में खिंचा चला आता है।

दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं।

ज्यों रहीम नट कुंडली, सिमिट कूदि चढिं जाहिं॥

अर्थ – रहीम कहते हैं कि दोहा छंद ऐसा है जिसमें अक्षर थोड़े होते हैं किंतु उनमें बहुत गहरा और दीर्घ अर्थ छिपा रहता है। जिस प्रकार कोई कुशल बाजीगर अपने शरीर को सिकोड़कर तंग मुँह वाली कुंडली के बीच में से कुशलतापूर्वक निकल जाता है उसी प्रकार कुशल दोहाकार दोहे के सीमित शब्दों में बहुत बड़ी और गहरी बातें कह देते हैं।



धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पिअत अधाय।

उदधि बड़ाई कौन है, जगत पिआसो जाय॥

अर्थ- रहीम कहते हैं कि कीचड़ का जल सागर के जल से महान है क्योंकि कीचड़ के जल से कितने ही लघु जीव प्यास बुझा लेते हैं। सागर का जल अधिक होने पर भी पीने योग्य नहीं है। संसार के लोग उसके किनारे आकर भी प्यासे के प्यासे रह जाते हैं। मतलब यह कि महान वही है जो किसी के काम आए।

नाद रीझि तन देत मृग, नर धन हेत समेत।
ते रहीम पशु से अधिक, रीझेहु कछु न दे॥

अर्थ – रहीम कहते हैं कि संगीत की तान पर रीझकर हिरन शिकार हो जाता है। उसी तरह मनुष्य भी प्रेम के वशीभूत होकर अपना तन, मन और धन न्यौछावर कर देता है लेकिन वह लोग पशु से भी बदतर हैं जो किसी से खुशी तो पाते हैं पर उसे देते कुछ नहीं हैं।

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करो किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय॥

अर्थ – रहीम कहते हैं कि मनुष्य को सोच समझ कर व्यवहार करना चाहिए क्योंकि किसी कारणवश यदि बात बिगड़ जाती है तो फिर उसे बनाना कठिन होता है, जैसे यदि एक बार दूध फट गया तो लाख कोशिश करने पर भी उसे मथकर मक्खन नहीं निकाला जा सकेगा।

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि॥

अर्थ – रहीम के अनुसार हमें बड़ी वस्तु को देख कर छोटी वस्तु अनादर नहीं करना चाहिए, उनकी भी अपना महत्व होता। जैसे छोटी सी सुई का काम बड़ा तलवार नहीं कर सकता।

रहिमन निज संपति बिना, कोउ न बिपति सहाय।
बिनु पानी ज्यों जलज को, नहिं रवि सकै बचाय॥

अर्थ – रहीम कहते हैं कि संकट की स्थिति में मनुष्य की निजी धन-दौलत ही उसकी सहायता करती है। जिस प्रकार पानी का अभाव होने पर सूर्य कमल की कितनी ही रक्षा करने की कोशिश करे, फिर भी उसे बचाया नहीं जा सकता, उसी प्रकार मनुष्य को बाहरी सहायता कितनी ही क्यों न मिले, किंतु उसकी वास्तविक रक्षक तो निजी संपत्ति ही होती है।

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे, मोती, मानुष, चून॥

अर्थ – रहीम कहते हैं कि पानी का बहुत महत्व है। इसे बनाए रखो। यदि पानी समाप्त हो गया तो न तो मोती का कोई महत्व है, न मनुष्य का और न आटे का। पानी अर्थात चमक के बिना मोती बेकार है। पानी अर्थात सम्मान के बिना मनुष्य का जीवन व्यर्थ है और जल के बिना रोटी नहीं बन सकती, इसलिए आटा बेकार है।



अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

- i. प्रेम का धागा टूटने पर पहले की भाँति क्यों नहीं हो पाता?
- ii. हमें अपना दुःख दूसरों पर क्यों नहीं प्रकट करना चाहिए? अपने मन की व्यथा दूसरों से कहने पर उनका व्यवहार कैसा हो जाता है?
- iii. रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को धन्य क्यों कहा है?
- iv. एक को साधने से सब कैसे सध जाता है?
- v. जलहीन कमल की रक्षा सूर्य भी क्यों नहीं कर पाता?
- vi. अवध नरेश को चित्रकूट क्यों जाना पड़ा?
- vii. 'नट' किस कला में सिद्ध होने के कारण ऊपर चढ़ जाता है?
- viii. "मोती, मानुष, चून" के संदर्भ में पानी के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

- i. प्रेम का धागा टूटने पर पहले जैसा इसलिए नहीं हो पाता है, क्योंकि टूटने पर जब प्रेम-संबंधों को जोड़ने की कोशिश की जाती है तो उसमें गाँठ पड़ जाती है। ऐसा करने पर भी मन की मलिनता पूरी तरह समाप्त नहीं हो पाती है। इससे प्रेम संबंधों में पहले जैसी घनिष्ठता नहीं आ पाती है।
- ii. हमें अपना दुख दूसरों पर इसलिए प्रकट नहीं करना चाहिए क्योंकि जिस अपेक्षा के कारण हम दूसरों को अपना दुख सुनाते हैं, सुनने वाले की प्रतिक्रिया उसके विपरीत होती है। जो

व्यक्ति हमारे दुखों के बारे में सुनता है वह मटद करने के बजाय हँसी उड़ाने लगता है।

- iii. रहीम ने सागर की अपेक्षा पंक जल को धन्य इसलिए कहा है क्योंकि कीचड़ के बीच स्थित थोड़ा-सा पानी दूसरों के काम आता है। विभिन्न पक्षी, कीड़े-मकोड़े और अन्य छोटे-छोटे जीव इसे पीकर अपनी प्यास बुझाते हैं, जबकि सागर का जल जो असीमित मात्रा में होता है, खारा होने के कारण किसी के काम नहीं आता है।
- iv. एक को साधने अर्थात् एक काम में मन लगाकर पूरा प्रयास करने से काम उसी तरह सध जाता है जिस प्रकार पेड़ की पत्तियों, तना, शाखा आदि को पानी देने के बजाय केवल उसकी जड़ों को पानी देने पर वह भरपूर मात्रा में फल देता है। इसके विपरीत जड़ के अलावा हर जगह पानी देने पर भी वह सूख जाता है।
- v. जलहीन कमल की रक्षा सूर्य इसलिए नहीं कर पाता है क्योंकि जल ही कमल की अपनी संपत्ति होती है जिसके सहारे वह जीवित रहता है। इस जल रूपी संपत्ति के अभाव में सूर्य भी कमल की रक्षा करने में असमर्थ हो जाता। है और कमल सूख जाता है।
- vi. अवध नरेश अर्थात् श्रीराम को चित्रकूट इसलिए जाना पड़ा था, क्योंकि अपने पिता के वचनों की रक्षा करने एवं उन्हें निभाने के लिए चौदह वर्ष के वनवास के लिए गए। वनवास जाते हुए उन्होंने अपने वनवास के कुछ दिन चित्रकूट में बिताए थे।



- vii. नट अपने शरीर को सिकोड़कर छोटा बनाने और कुंडली मारने की कला में पारंगत होने के कारण ऊपर चढ़ जाता। है, जहाँ जन सामान्य के लिए पहुँचना कठिन होता है।
- viii. मोती के संदर्भ में 'पानी' का अर्थ है-उसकी चमक, जिसके कारण मोती बहुमूल्य मानी जाती है और आभूषण बनती है। मनुष्य के संदर्भ में 'पानी' का अर्थ है-इज्जत, प्रतिष्ठा और मान-सम्मान। इसके कारण ही व्यक्ति समाज में आदर का पात्र समझा जाता है। चून (आटा) के संदर्भ में 'पानी' का अर्थ जल है जिसके मेल से वह रोटियों के रूप में वह प्राणियों का पोषण करता है।

प्रश्न 2 निम्नलिखित को भाव स्पष्ट कीजिए-

- टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।
- सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँट न लैहैं कोय।
- रहिमन मूलहिं सचिबो, फूलै फलै अघाय।।
- दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आहिं।
- नाद रीङ्गि तन देत मृग, नर धन हेत समेत।
- जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि।
- पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष, चून। ‘

उत्तर-

- प्रेम संबंध एक बार टूटने से दुबारा नहीं बनते। यदि दुबारा बनते भी हैं तो उनमें पहले के समान घनिष्ठता नहीं रहती। मन में अविश्वास बना रहता है।
- मनुष्य को अपना दुख सबके सामने प्रकट नहीं करना चाहिए बल्कि उन्हें अपने हृदय में छिपाकर रखना चाहिए। लोग उसे जानकर केवल मजाक उड़ाते हैं। कोई भी उन दुःखों को बाँटता नहीं है।

- अनेक देवी-देवताओं की भक्ति करने की अपेक्षा अपने इष्टदेव के प्रति आस्था रखना अधिक अच्छा होता है। जिस प्रकार जड़ को सींचने से पेड़ के फूल-पत्तों तक का पोषण हो जाता है। उसी प्रकार इष्ट के प्रति ध्यान कर लें तो सांसारिक सुख स्वयं मिल जाते हैं।
- दोहा छंद आकार में छोटा है, परंतु अर्थ बहुत गहरा लिए हुए होता है। उसका गूढ़ अर्थ ही उसकी गागर में सागर भरने की प्रवृत्ति को स्पष्ट कर देता है। ठीक वैसे ही जैसे नट कुंडली को समेटकर रस्सी पर चढ़ जाता है।
- हिरण संगीत पर मुग्ध होकर शिकारियों को अपना जीवन तक दे देता है अर्थात् अपनी अस्तित्व समर्पित कर देता है तथा मनुष्य दूसरों पर प्रसन्न होकर उसे धन देता है और उसका हित भी करता है। किंतु जो दूसरों पर प्रसन्न होकर भी उसे कुछ नहीं देता, वह पशु तुल्य होता है।
- प्रत्येक मनुष्य का अपना महत्त्व होता है। समयानुसार उसकी उपयोगिता है। कवि ने तलवार और सुई के उदाहरण द्वारा यह तथ्य सिद्ध किया है। जहाँ छोटी वस्तु का उपयोग होता है वहाँ बड़ी वस्तु किसी काम की नहीं होती और जहाँ बड़ी वस्तु उपयोगी सिद्ध होती है वहाँ छोटी वस्तु बेकार साबित होती है। सुई जो काम करती है वह काम तलवार नहीं कर सकती और जिस काम के लिए तलवार है वह काम सुई नहीं कर सकती। हर चीज़ की अपनी उपयोगिता है।
- मोती में यदि चमक न रहे, वह व्यर्थ है। मनुष्य यदि आत्म-सम्मान न बनाए रखे तो बेकार है। सूखा आटा पानी के बिना किसी का पेट भरने



में सहायक नहीं होता। पानी के बिना मोती, मनुष्य और चून नहीं उबर सकते। मोती की चमक, मनुष्य को आत्म-सम्मान व आटे की गुँथना सभी पानी के द्वारा ही संभव है।

प्रश्न 3 निम्नलिखित भाव को पाठ में किन पंक्तियों द्वारा अभिव्यक्त किया गया है

- i. जिस पर विपदा पड़ती है वही इस देश में आता है।
- ii. कोई लाख कोशिश करे पर बिगड़ी बात किर बन नहीं सकती।
- iii. पानी के बिना सब सूना है अतः पानी अवश्य रखना चाहिए।

उत्तर-

- i. जा पर विपदा पड़त है, सो आवत यह देश।
- ii. बिगड़ी बात बनत नहिं, लाख करौ किन कोय।
- iii. रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून।

प्रश्न 4 उदाहरण के आधार पर पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए-

उदाहरणः

कोय – कोई, जे – जो

ज्यों	–	कछु	–
नहिं	–	कोय	–
धनि	–	आखर	–
जिय	–	थोरे	–
होय	–	माखन	–
तरवारि	–	सचिबो	–
मूलहिं	–	पिअत	–
पिआसो	–	बिगरी	–
आवे	–	सहाय	–
ऊबरै	–	बिनु	–
बिथा	–	अठिलैहैं	–
परिजाये	–		

उत्तर-

ज्यों – ज्यों	कछु – कुछ
नहिं – नहीं	कोय – कोई
धनि – धन्य	आखर – अक्षर
जिय – जीव	थोरे – थोड़े
होय – होता	माखन – मक्खन
तरवारि – तलवार	सचिबो – सींचना
मूलहिं – मूल को	पिअत – पीते ही
पिआसो – प्यासा	बिगरी – बिगड़ी
आवे – आए	सहाय – सहायक
ऊबरे – ऊबरे	बिना – बिथा
बिथा – व्यथा	अठिलैहैं – इठलाँगे
परिजाय – पड़ जाए।	





गीत

-रामधारी सिंह दिनकर

सारांश

गाकर गीत विरह के तटिनी

वेगवती बहती जाती है,

दिल हलका कर लेने को

उपलों से कुछ कहती जाती है।

तट पर एक गुलाब सोचता,

“देते स्वर यदि मुझे विधाता,

अपने पतझर के सपनों का

मैं भी जग को गीत सुनाता।

गा-गाकर बह रही निझरी,

पाटल मूक खड़ा तट पर है।

गीत, अगीत, कौन सुंदर है?

रामधारी सिंह दिनकर की कविता गीत अगीत भावार्थ : रामधारी सिंह दिनकर जी की कविता गीत अगीत की इन पंक्तियों में कवि ने जंगलों एवं पहाड़ों के बीच बहती हुई एक नदी का बड़ा ही आकर्षक वर्णन किया है। उन्होंने कहा है कि विरह अर्थात् बिछड़ने का गीत गाती हुई नदी, अपने मार्ग में बड़ी तेजी से बहती जाती है।

अपने दिल से विरह का बोझ हल्का करने के लिए नदी, अपने किनारों पर उगी धास व उपलों से बात करते हुए आगे बढ़ती चली जा रही है। वहीं दूसरी ओर, नदी के किनारे तट पर उगा हुआ एक गुलाब का फूल यह सोच रहा है कि अगर भगवान् उसे भी बोलने की शक्ति देता, तो वह भी गा-गा कर सारे जगत को अपने पतझड़ के सपनों का गीत सुनाता।

तो इस प्रकार, जहाँ एक ओर नदी अपनी विरह के गीत गाते हुए, कल-कल की आवाज करते हुए बह रही है, वहीं दूसरी ओर, गुलाब का पौधा चुपचाप अपने गीत को अपने मन में दबाये किनारे पर खड़ा हुआ नदी को बहते देख रहा है।

बैठा शुक उस घनी डाल पर

जो खोंते को छाया देती।

पंख फुला नीचे खोंते में

शुकी बैठ अंडे हैं सेती।

गाता शुक जब किरण वसंती



छूती अंग पर्ण से छनकर।
 किंतु, शुकी के गीत उमड़कर
 रह जाते सनेह में सनकर।
 गूँज रहा शुक का स्वर वन में,
 फूला मग्न शुकी का पर है।
 गीत, अगीत, कौन सुंदर है?

रामधारी सिंह दिनकर की कविता गीत अगीत भावार्थ : खेतों में एक घने वृक्ष पर तोता बैठा हुआ है और उसी वृक्ष की छांव में उसका घोंसला है। जिसमें मैना बड़े प्यार से अपने पंखों को फैलाये अंडे से रही है। ऊपर पेड़ की डाल पर तोता बैठा हुआ है, जिसके ऊपर पेड़ के पत्तों से छनकर सूर्य की किरणें पड़ रही हैं।

वह गाते हुए ऐसा प्रतीत हो रहा है, मानो सूर्य की किरणों को शब्द प्रदान कर रहा हो। पूरा का पूरा खेत तोते के स्वर से गूँज उठता है। जिसे सुनकर मैना भी गाने को उमड़ पड़ती है, परन्तु उसके स्वर बाहर नहीं निकल पाते और वह चुप रहकर ही पंख फैलाते हुए अपनी खुशी का इजहार करती है।

दो प्रेमी हैं यहाँ, एक जब
 बड़े साँझ आल्हा गाता है,
 पहला स्वर उसकी राधा को
 घर से यहीं खींच लाता है।
 चोरी-चोरी खड़ी नीम की
 छाया में छिपकर सुनती है,
 हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की
 बिधना', यों मन में गुनती है।
 वह गाता, पर किसी वेग से
 फूल रहा इसका अंतर है।
 गीत, अगीत कौन सुंदर है?

रामधारी सिंह दिनकर की कविता गीत अगीत भावार्थ : रामधारी सिंह दिनकर की कविता गीत-अगीत की इन पंक्तियों में कवि ने दो प्रेमियों का वर्णन किया है। एक प्रेमी जब शाम के समय अपनी प्रेमिका को बुलाने के लिए गीत गाता है, तो वो उसके स्वर को सुनकर खिंची चली आती है और पेड़ों के पीछे छुपकर चुपचाप अपने प्रेमी को गाते हुए सुनती है। वह सोचती है कि मैं इस गाने का हिस्सा क्यों नहीं हूँ। नीम के पेड़ों के नीचे अपने प्रेमी के गीत को सुनकर उसका हृदय फूला नहीं समाता। वह चुपचाप अपने प्रेमी के गीत का आनंद लेती रहती है।

इस प्रकार जहाँ एक ओर प्रेमी गीत गाकर अपनी सुंदरता का बखान कर रहा है, वहीं दूसरी ओर, चुप रहकर भी प्रेमिका उतने ही प्रभावशाली रूप से अपने प्यार को व्यक्त कर रही है। इसलिए उसका अगीत भी किसी मधुर गीत से कम नहीं है।



अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

- I. नदी का किनारों से कुछ कहते हुए बह जाने पर गुलाब क्या सोच रहा है? इससे संबंधित पंक्तियों को लिखिए।
- II. जब शुक गाता है, तो शुकी के हृदय पर क्या प्रभाव पड़ता है?
- III. प्रेमी जब गीत गाता है, तो प्रेमी की क्या इच्छा होती है?
- IV. प्रथम छंद में वर्णित प्रकृति-चित्रण को लिखिए।
- V. प्रकृति के साथ पशु-पक्षियों के संबंध की व्याख्या कीजिए।
- VI. मनुष्य को प्रकृति किस रूप में आंदोलित करती है? अपने शब्दों में लिखिए।
- VII. सभी कुछ गीत हैं, अगीत कुछ नहीं होता। कुछ अगीत भी होता है क्या? स्पष्ट कीजिए।
- VIII. “गीत-अगीत” के केंद्रीय भाव को लिखिए।

उत्तर-

- I. जब नदी किनारों से कुछ कहते हुए बह जाती है तो गुलाब सोचता है- ‘यदि परमात्मा ने मुझे भी स्वर दिए होते तो मैं भी अपने पतझड़ के दिनों की वेदना को शब्दों में सुनाता। निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए-

गाकर गीत विरहं के तटिनी

वेगवती बहती जाती है,
दिल हलको कर लेने को
उपलों से कुछ कहती जाती है।
तट पर एक गुलाब सोचता,
“देते स्वर यदि मुझे विधाता,

**अपने पतझड़ के सपनों का
मैं भी जग को गीत सुनाता।”**

- II. जब शुकः गाता है तो शुकी का हृदय प्रसन्नता से फूल जाता है। वह उसके प्रेम में मग्न हो जाती है।
- III. जब प्रेमी प्रेम के गीत गाता है तो प्रेमी (प्रेमिका) की इच्छा होती है कि वह उस प्रेम गीत की पंक्ति में डूब जाए, उसमें लयलीन हो जाए। उसके शब्दों में –
‘हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की बिधना’।
- IV. सामने नदी बह रही है। वह मानो अपनी विरह वेदना को कलकल स्वर में गाती हुई चली जा रही है। वह किनारों को अपनी व्यथा सुनाती जा रही है। उसके किनारे के पास एक गुलाब का फूल अपनी डाल पर हिल रहा है। वह मानो सोच रहा है कि यदि परमात्मा ने उसे स्वर दिया होता तो वह भी अपने दुख को व्यक्त करता।
- V. प्रकृति का पशु-पक्षियों के साथ गहरा रिश्ता है। पशु-पक्षी प्रकृति की उमंग के साथ उमंगित होते हैं। कविता में कहा गया है

गाता शुक जब किरण वसंती,

छूती अंग पर्ण से छनकर।

- जब सूर्य की वासंती किरणें शुक के अंगों को छूती हैं तो वह प्रसन्नता से गा उठता है।
- VI. प्रकृति मनुष्य को भी आह्वादित करती है। साँझ के समय स्वाभाविक रूप से प्रेमी का मन आल्हा गाने के लिए ललचा उठता है। यह साँझ की ही मधुरिमा है जिसके कारण प्रेमी के हृदय में प्रेम उमड़ने लगता है।





- VII. गीत और अगीत में थोड़ा-सा अंतर होता है।
मन के भावों को प्रकट करने से गीत बनता है
और उन्हें मन-ही-मन ।

अनुभव करना 'अगीत' कहलाता है। यद्यपि
'अगीत' को प्रकट रूप से कोई अस्तित्व नहीं
होता, किंतु वह होता अवश्य है।

जिस भावमय मनोदशा में गीत का जन्म होता
है, उसे 'अगीत' कहा जाता है।
- VIII. "गीत अगीत" का मूल भाव यह है कि गीत के
साथ-साथ गीत रचने की मनोदशा भी
महत्वपूर्ण होती है। मन-ही-मन भावानुभूति
को अनुभव करना भी कम सुंदर नहीं होता।
उसे 'अगीत' कहा जा सकता है। माना कि
गीत सुंदर होता है, परंतु गीत के भावों को मन
में अनुभव करना भी सुंदर होता है।

प्रश्न 2 संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए-

- I. अपने पतझर के सपनों का
में भी जग को गीत सुनाता
- II. गाता शुक जब किरण वसंती
छूती अंग पर्ण से छनकर
- III. हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की
बिधना यों मन में गुनती है

उत्तर-

- I. **संदर्भ-** प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ पाठ्यपुस्तक
स्पर्श भाग- 1 में संकलित कविता 'गीत-
अगीत' से ली गई हैं। इसके कवि रामधारी
सिंह दिनकर हैं।

व्याख्या- नदी के तट पर खड़ा गुलाब सोचता
है कि यदि विधाता उसे भी स्वर देते तो वह भी
अपने पतझर की व्यथा सुनाता।

- II. **संदर्भ-** प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ पाठ्यपुस्तक
स्पर्श भाग- 1 में संकलित कविता 'गीत-

'अगीत' से ली गई हैं। इसके कवि रामधारी
सिंह दिनकर हैं।

व्याख्या- जब सूरज की वासंती किरणें पत्तों
से छनकर आती हैं और शुक के अंगों को छूती
हैं तो वह प्रसन्न होकर गा उठता है।

- III. **संदर्भ-** प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ पाठ्यपुस्तक
स्पर्श भाग- 1 में संकलित कविता 'गीत-
अगीत' से ली गई हैं। इसके कवि रामधारी
सिंह दिनकर हैं।

व्याख्या- यहाँ पर जब प्रेमिका अपने प्रेमी के
गीत को छिपकर सुनती है तो वह विधाता से
यही कहती है कि काश वह भी इस गीत की
कड़ी बन पाती।

प्रश्न 3 निम्नलिखित उदाहरण में 'वाक्य-विचलन' को
समझने का प्रयास कीजिए। इसी आधार पर
प्रचलित वाक्य-विन्यास लिखिए-

उदाहरण-

तट पर गुलाब सोचता

एक गुलाब तट पर सोचता है।

- I. देते स्वर यदि मुझे विधाता
- II. उस धनी डाल पर शुक बैठा है।
- III. शुक का स्वर वन में गूँज रहा है।
- IV. मैं गीत की कड़ी क्यों न हो सकी।
- V. शुकी बैठ कर अंडे सेती है।

उत्तर-

- I. यदि विधाता मुझे स्वर देते।
- II. उस धनी डाल पर शुक बैठा है।
- III. शुक का स्वर वन में गूँज रहा है।
- IV. मैं गीत की कड़ी क्यों न हो सकी।
- V. शुकी बैठ कर अंडे सेती है।





अग्निपथ

-हरिवंश राय बच्चन

सारांश

प्रस्तुत कविता में कवि ने संघर्षमय जीवन को 'अग्नि पथ' कहते हुए मनुष्य को यह संदेश दिया है कि राह में सुख रूपी छाँह की चाह न कर अपनी मंजिल की ओर कर्मठापूर्वक बिना थकान महसूस किए बढ़ते ही जाना चाहिए। कवि कहते हैं कि जीवन संघर्षपूर्ण है। जीवन का रास्ता कठिनाइयों से भरा हुआ है। परन्तु हमें अपना रास्ता खुद तय करना है। किसी भी परिस्थिति में हमें दूसरों का सहारा नहीं लेना है। हमें कष्ट-मुसीबतों पर जीत पाकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है।

अग्नि पथ कविता का भावार्थ व्याख्या:

अग्नि पथ! अग्नि पथ! अग्नि पथ!

वृक्ष हों भले खड़े,

हों धने, हों बड़े,

एक पत्र छाँह भी माँग मत, माँग मत, माँग मत!

अग्नि पथ! अग्नि पथ! अग्नि पथ!

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ 'अग्नि पथ' कविता से उद्धृत हैं, जो कवि 'हरिवंशराय बच्चन' जी के द्वारा रचित है। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहते हैं कि, जीवन संघर्ष से भरा है, रास्ते अंगारों से बना है, लेकिन हमें इस कठिन राह पर निरन्तर आगे बढ़ते रहना है। पेड़ भले ही कितना भी मजबूत बने खड़े हो, चाहे वह कितना भी धना हो, कितना भी विशाल हो, लेकिन उससे कभी एक पत्ते की भी छाया नहीं माँगना चाहिए। अर्थात् मनुष्य को अपने कर्म के रास्ते पर किसी का भी सहारा नहीं लेना चाहिए, चाहे रास्ते पर आग ही क्यों न बिछा हो। मनुष्य को अपना मार्ग स्वयं सुनिश्चित कर निरन्तर आगे बढ़ना होगा, यही जीवन का सार है। जीवन के मार्ग बहुत कठिन है।

तू न थकेगा कभी!

तू न थमेगा कभी!

तू न मुड़ेगा कभी! कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ!

अग्निपथ! अग्निपथ! अग्निपथ!

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ 'अग्नि पथ' कविता से उद्धृत हैं, जो कवि 'हरिवंशराय बच्चन' जी के द्वारा रचित है। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहते हैं कि मनुष्य को अपने कर्म के रास्ते पर कभी थकना नहीं चाहिए, चाहे जितनी भी कठिनाई क्यूँ न हो, डर कर कभी बीच में रुकना नहीं चाहिए, और ना ही अपने कर्म के मार्ग से कभी लौटना है, निरन्तर आगे बढ़ना है, यह प्रतिज्ञा कर लेना चाहिए। बेशक, जीवन संघर्ष से भरा हुआ है। जीवन के रास्ते अंगारों से भरे हैं। हमें हरदम निडर होकर जीवन में आगे बढ़ते रहना चाहिए।



यह महान् दृश्य है

चल रहा मनुष्य है

अशु-स्वेद-रक्त से लथपथ, लथपथ, लथपथ

अग्नि पथ! अग्नि पथ! अग्नि पथ!

भावार्थ – प्रस्तुत पंक्तियाँ ‘अग्नि पथ’ कविता से उद्भूत हैं, जो कवि ‘हरिवंशराय बच्चन’ जी के द्वारा रचित है। इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहते हैं कि जब मनुष्य अपने कर्म के रास्ते पर कड़ी मेहनत या परिश्रम करके, बिना रुके, बिना थके आगे बढ़ता है, तो वह दृश्य अद्भुत होता है। वह मनुष्य महान् होता है, जब अंगारों के रास्तों पर आँसु, पसीना, और रक्त से भीग कर सदैव मेहनत करके ऊँची शिखर तक पहुँचता है तथा जीवन के संघर्ष में हमेशा जीत हासिल करता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

- I. कवि ने ‘अग्नि पथ’ किसके प्रतीक स्वरूप प्रयोग किया है?
- II. ‘माँग मत’, ‘कर शपथ’, ‘लथपथ’ इन शब्दों का बार-बार प्रयोग कर कवि क्या कहना चाहता है?
- III. “एक पत्र-छाँह भी माँग मत” इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

- I. कवि ने ‘अग्नि पथ’ का प्रयोग मनुष्य के जीवन में आने वाली नाना प्रकार की कठिनाइयों के कारण कठिन एवं संघर्षपूर्ण जीवन के लिए किया है। कवि का मानना है कि मनुष्य को जीवन में कठिनाइयाँ ही कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती हैं। ऐसे में उसका जीवन किसी अग्नि पथ से कम नहीं है।
- II. ‘माँग मत’, ‘कर शपथ’ और ‘लथपथ’ शब्दों को बार-बार प्रयोग कर कवि क्रमशः कहना चाहता है कि जीवन में संघर्ष करते हुए लोगों से सुख की माँग मत करो, संघर्ष को बीच में छोड़कर कठिनाइयों से हार मान कर वापस न

लौटने की कसम लेने तथा कठिनाइयाँ से जूँड़ते हुए कर्मशील बने रहने की प्रेरणा दे रहा है।

- III. ‘एक पत्र-छाँह भी माँग मत’ का आशय है कि मनुष्य जब कठिनाइयों से लगातार संघर्ष करता है तो थककर, निराश होकर संघर्ष का मार्ग त्यागकर सुख की कामना करने लगता है तथा सुख पाकर लक्ष्य प्राप्ति को भूल जाता है, अतः मंजिल मिले बिना सुख की लालसा नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 2 निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

- I. तू न थमेगा कभी
तू न मुड़ेगा कभी
 - II. चल रहा मनुष्य है।
- अशु-स्वेद-रक्त से लथपथ, लथपथ, लथपथ

उत्तर-

- I. इसका आशय यह है कि मनुष्य को कष्टों से भ्रे मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए कभी पीछे नहीं मुड़ना चाहिए। इस मार्ग पर केवल अपने लक्ष्य को ध्यान में रखकर आगे बढ़ना चाहिए। उसके जीवन में अकर्मण्यता का कोई स्थान नहीं



होना चाहिए क्योंकि आगे बढ़ते रहना ही उसके जीवन का लक्ष्य है। वह संघर्षों से भी न घबराए। वह सुख त्यागकर अग्निपथ को चुनौती देता रहे।

- II. कवि के अनुसार मनुष्य को अपना जीवन सफल बनाने के लिए निरंतर संघर्ष करते हुए आगे बढ़ते जाना चाहिए। इस मार्ग पर चलते हुए व्यक्ति को कई बार आँसू बहाने पड़ते हैं। शरीर से पसीने बहाते हुए खून से लथपथ होते हुए भी उसे निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए क्योंकि संघर्ष करनेवाला मनुष्य ही सफलता प्राप्त करता है और महान कहलाता है।

प्रश्न 3 इस कविता का मूलभाव क्या है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'अग्नि पथ' कविता का मूलभाव यह है कि मानव जीवन में कठिनाइयाँ ही कठिनाइयाँ हैं। इस पथ पर बढ़ने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। जीवन पथ पर आगे बढ़ते हुए मनुष्य को सुख की कामना नहीं चाहिए। उसे कठिनाइयों से हार मानकर न रुकना चाहिए और न वापस लौटना चाहिए। जीवन में सफल होने के लिए भले ही आँसू, खून और पसीने से लथपथ होना पड़े, पर संघर्ष का मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए।





नए इलाके में, खुशबू रचते हैं हाथ

-अरुण कमल

सारांश

भावार्थ : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने शहर में हो रहे अंधा-धुंध निर्माण के बारे में बताया है। रोज कुछ न कुछ बदल ही रहा है। आज अगर कुछ टूटा हुआ है, या कहीं कोई खाली मैदान है, तो कल वहाँ बहुत ही बड़ा मकान बन चुका होगा। नए-नए मकान बनने के कारण रोज नए-नए इलाके भी बन जा रहे हैं। जहाँ पहले सुनसान रास्ता हुआ करता था। आज वहाँ काफी लोग रहने लगे हैं और चहल-पहल दिखने लगी है। यही कारण है कि लेखक को रास्ते पहचानने में तकलीफ़ होती है और वह अक्सर रास्ता भूल जाता है।

धोखा दे जाते हैं पुराने निशान

खोजता हूँ ताकता पीपल का पेड़

खोजता हूँ ढहा हुआ घर

और ज़मीन का खाली टुकड़ा जहाँ से बाएँ

मुड़ना था मुझे

फिर दो मकान बाद बिना रंगवाले लोहे के फाटक का

घर था एकमंजिला

भावार्थ : इन पंक्तियों में लेखक हमें अपने रास्ते भूल जाने का कारण बताते हैं। लेखक ने जिस घर, जिस मैदान और जिस फाटक को अपने लिए चिन्ह बनाकर रखा था। जिन्हें देख कर उन्हें यह पता चलता था कि वह सही रास्ते पर चल रहे हैं, उन चिन्हों में से अब कोई भी अपनी जगह पर नहीं है। अब लेखक के खोजने के बाद भी उन्हें पुराना पीपल का पेड़ नहीं दिखाई देता है और ना ही अब उन्हें टूटा हुआ घर दिखता है, जिसे देख कर वे रास्ता पहचानते थे। ना ही अब उन्हें वह खाली ज़मीन कहीं दिखाई दे रही है, जहाँ से लेखक को बांये मुड़ना होता था। उसके बाद ही तो उनका जाना-पहचाना एक बिना रंग के लोहे के फाटक वाला एक मंजिला घर था।

और मैं हर बार एक घर पीछे

चल देता हूँ

या दो घर आगे ठकमकाता

भावार्थ : इन्हीं कारणों की वजह से लेखक हमेशा रास्ता भटक जाता है। वह कभी भी सही ठिकाने तक नहीं पहुँच पाता। या तो वह एक-दो घर आगे निकल जाता है या फिर एक-दो घर पहले ही रुक जाता है।

यहाँ रोज़ कुछ बन रहा है

रोज़ कुछ घट रहा है

यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं





भावार्थ : यहाँ रोज कुछ न कुछ बन रहा है। किसी न किसी इमारत का निर्माण हो रहा है। जिसकी वजह से आप अपने रास्ते को पहचानने के लिए किसी इमारत या पेड़ को स्मृति नहीं बना सकते। क्या पता कल उसकी जगह पर कुछ और बन जाए और आप रास्ता भटक जाएं।

एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
 जैसे वसंत का गया पतझड़ को लौटा हूँ
 जैसे बैसाख का गया भाद्रों को लौटा हूँ
 अब यही है उपाय कि हर दरवाज़ा खटखटाओ
 और पूछो – क्या यही है वो घर?

भावार्थ : कवि ने शीघ्र होते हुए परिवर्तन के बारे में बताया है। ऐसा नहीं है कि कवि बहुत समय के बाद यहाँ लौटा है, इसलिए उसे सब बदला हुआ प्रतीत हो रहा है। ऐसा नहीं है कि वह वसंत के बाद पतझड़ को लौटा है, ऐसा नहीं है कि वह वैसाख को गया और भाद्रों को लौटा है। वह तो कुछ ही दिनों में वापस आया, लेकिन फिर भी उसे सब बदला हुआ दिख रहा है और वह अपना घर भी नहीं पहचान पा रहा। अब तो एक उपाय यही है कि कवि हर घर में खट-खटाये और पूछे की क्या यही वह घर है?

समय बहुत कम है तुम्हारे पास
 आ चला पानी ढहा आ रहा अकास
 शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देखकर।

भावार्थ : भटक जाने के कारण कवि अभी तक घर नहीं ढूँढ पाया है और अब ऐसा प्रतीत हो रहा है कि बारिश भी होने वाली है। कवि के पास समय बहुत ही कम है। अब तो कवि इसी आस में बैठा है कि काश कोई जान-पहचान का व्यक्ति उन्हें देखकर पहचान ले।

कई गलियों के बीच
STEP UP
 कई नालों के पार
 कूड़े-करकट
 के ढेरों के बाद
 बदबू से फटते जाते इस
 टोले के अंदर
 खुशबू रचते हैं हाथ
 खुशबू रचते हैं हाथ।

भावार्थ : कवि ने अपनी इन पंक्तियों में जीवन के कठोर यर्थाथ को दर्शाया है। जिस प्रकार कमल कीचड़ में ही खिलते हैं, उसी प्रकार कवि ने बताया है कि वातावरण को सुगन्धित कर देने वाली अगरबत्ती गंदी झुग्गी एवं झोपड़ियों में बनायी जाती है। ऐसी बस्तियाँ जहाँ से गंदे नाले निकलते हैं। जहाँ पर कूड़े-करकट का ढेर लगा होता है। बदबू से भरी गंदी बस्तियों में रहने वाले लोग ही खुशबूदार अगरबत्ती बनाते हैं। इसीलिए कवि ने इस कविता में कहा है “खुशबू रचते हैं हाथ”।

उभरी नसोंवाले हाथ
 धिसे नाखूनोंवाले हाथ
 पीपल के पत्ते-से नए-नए हाथ
 जूही की डाल-से खुशबूदार हाथ



गंदे कटे-पिटे हाथ

ज़ख्म से फटे हुए हाथ

खुशबू रचते हैं हाथ

खुशबू रचते हैं हाथ।

भावार्थ : अगरबत्ती बनाते-बनाते अधिकतर कारीगरों के हाथ घायल हो गए हैं। किसी कारीगर के हाथों की नसें उभरी हुई दिख रही हैं, तो किसी के नाखून अगरबत्ती बनाते-बनाते घिस गए हैं। वहीं दूसरी ओर नए-नए बच्चे जिन्होंने अभी-अभी अगरबत्ती बनाना शुरू किया है, उनके हाथ पीपल के पत्ते की तरह बहुत ही मुलायम और नाजुक प्रतीत होते हैं। उन्हीं बच्चों में से कुछ लड़कियों के हाथ तो जूही की डाल की तरह पतले हैं। बहुत दिनों से काम करते हुए कई कारीगरों के हाथ कट-फट चुके हैं। उनके ज़ख्म भी गंदगी से भरे हुए हैं। ऐसे हाथ ही हमारे घर में खुशबू फैलाने वाली सुगंधित अगरबत्तियों का निर्माण करते हैं।

यहीं इस गली में बनती हैं

मुल्क की मशहूर अगरबत्तियाँ

इन्हीं गंदे मुहल्लों के गंदे लोग

बनाते हैं केवड़ा गुलाब खस और रातरानी

अगरबत्तियाँ

दुनिया की सारी गंदगी के बीच

दुनिया की सारी खुशबू

रचते रहते हैं हाथ

खुशबू रचते हैं हाथ

खुशबू रचते हैं हाथ।

भावार्थ : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने हमें यही बताया है कि शहर के बड़े से बड़े घरों में जलने वाली खुशबूदार अगरबत्तियाँ इन्हीं गंदी बस्तियों की झुगियों में बनती हैं। जहाँ पर हमेशा बदबू भरी रहती है। चाहे कोई भी मशहूर अगरबत्ती हो, जैसे केवड़ा, गुलाब या रातरानी सभी यहीं इस गंदी बस्ती में रहने वाले गंदे लोगों के गंदे हाथों से बनाई जाती हैं। ये लोग खुद तो इतनी गंदगी एवं बदबू के बीच में रहते हैं, लेकिन दूसरों के घर को महकाने के लिए खुशबूदार अगरबत्तियों का निर्माण करते हैं। इसीलिए लेखक ने कहा है “सारी गंदगी के बीच भी खुशबू रचते हैं हाथ”।



अभ्यास (नए इलाके में)

प्रश्न 1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

- नए बसते इलाके में कवि रास्ता क्यों भूल जाता है?
- कविता में कौन-कौन से पुराने निशानों का उल्लेख किया गया है?
- कवि एक घर पीछे या दो घर आगे क्यों चल देता है?
- “वसंत का गया पतझड़” और ‘बैसाख का गया भादों को लौटा’ से क्या अभिप्राय है?
- कवि ने इस कविता में समय की कमी की ओर क्यों इशारा किया है?
- इस कविता में कवि ने शहरों की किस विडंबना की ओर संकेत किया है?

उत्तर-

- नए इलाके में कवि इसलिए रास्ता भूल जाता है, क्योंकि-
 - यहाँ रोज़ नए मकान बनते रहते हैं।
 - पुराने मकान ढहाकर नए मकान बनाए जाते हैं।
 - नए मकान बनाने के लिए पुराने पेड़ काटने से निशानी नष्ट हो जाती है।
 - खाली जमीन पर कोई नया मकान बन जाता है।
- कविता में निम्नलिखित पुराने निशानों का उल्लेख हुआ है-
 - पीपल का पेड़
 - ढहा घर या खंडहर
 - जमीन का खाली टुकड़ा
 - बिना रंग वाले लोहे के फाटक वाला इकमंजिला मकान

- कवि एक घर आगे या दो घर पीछे इसलिए चल देता है, क्योंकि नए बस रहे उस इलाके में एक ही दिन में काफ़ी बदलाव आ जाता है। वह अपने घर को पहचान नहीं पाता है कि वह सबेरे किस घर से गया था।
- ‘वसंत का गया पतझड़’ और ‘बैसाख का गया भादों को लौटा’ से यह अभिप्राय है कि वहाँ एक ही दिन में इतना कुछ नया बन गया है, जितना बनने में पहले नौ-दस महीने या साल भर लगते थे। सुबह का निकला कवि जब शाम को वापस आता है तो एक ही दिन में नौ-दस महीने के बराबर का बदलाव दिखाई देता है।
- कवि ने कविता में समय की कमी की ओर इसलिए संकेत किया है क्योंकि तेजी से आ रहे बदलाव के कारण मनुष्य की व्यस्तता भी बढ़ती जा रही है। इससे उसके पास समय की कमी होती जा रही है।
- इस कविता में कवि ने शहरों की उस विडंबना की ओर संकेत किया है, जिसमें शहरों में हो रहे बदलाव, खाली जमीनों में टूटे मकानों की जगह इतने नित नए मकान बनते जा रहे हैं कि सुबह घर से निकले आदमी को शाम के समय अपना मकान खोजना पड़ता है, फिर भी उसे अपना मकान नहीं मिल पाता है।

प्रश्न 2 व्याख्या कीजिए-

- यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया
- समय बहुत कम है तुम्हारे पास। आ चला पानी ढहा आ रहा अकास शायद पुकार ले कोई पहचाना ऊपर से देखकर



उत्तर-

- नगरों में बसने वाली नई बस्तियाँ इस तरह तेजी से बढ़ती चली जा रही हैं कि आदमी को अपना घर तक ढूँढ़ना कठिन हो गया है। वह कुछ ही दिन बाद अपनी बस्ती में लौटकर आए तो रास्ते तक भूल जाता है। उसकी पुरानी निशानियाँ देखते ही देखते नष्ट हो जाती हैं। इसलिए उसकी पुरानी स्मृतियाँ और निशानियाँ किसी काम नहीं आतीं। दुनिया इतनी तेजी से बदल-बन रही है कि जो निर्माण एक दिन पहले किया जाता है, दूसरे दिन तक पुराना पड़ चुका होता है। उसके बाद नए-नए निर्माण और खड़े हो जाते हैं।
- देखिए व्याख्या क्र. 2..

प्रश्न-अभ्यास (खुशबू रचते हैं हाथ)

प्रश्न 1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

- “खुशबू रचनेवाले हाथ” कैसी परिस्थितियों में तथा कहाँ-कहाँ रहते हैं?
- कविता में कितने तरह के हाथों की चर्चा हुई है?
- कवि ने यह क्यों कहा है कि ‘खुशबू रचते हैं हाथ’?
- जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं, वहाँ का माहौल कैसा होता है?
- इस कविता को लिखने का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर-

- खुशबू रचनेवाले हाथ अत्यंत कठोर परिस्थितियों में गंदी बस्तियों में, गलियों में, कूड़े के ढेर के इर्द-गिर्द तथा नाले के किनारे रहते हैं। वे अस्वच्छ एवं प्रदूषित वातावरण में जीवन बिताते हैं। वे इस दुर्गंधमय वातावरण में रहने को विवश हैं। वे सामाजिक और

आर्थिक विषमता के शिकार हैं। दूसरों को खुशबू देने का काम करने। वाले इस प्रकार बदहाली का जीवन बिताते हैं।

- कविता में निम्नलिखित तरह के हाथों की चर्चा हुई है-
 - उभरी नसोंवाले अर्थात् वृद्ध हाथ।
 - घिसे नाखूनोंवाले हाथ श्रमिक वर्ग को प्रतीक है।
 - पीपल के पत्ते जैसे नए-नए हाथ अर्थात् छोटे बच्चों के कोमल हाथ।
 - जूही की डाल जैसे खुशबूदार हाथ अर्थात् नवयुवतियों के सुंदर हाथ।
 - गंदे कटे-पिटे हाथ।
 - जखम से फटे हुए हाथ।
- कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि इन गरीब मजदूरों के हाथ सुगंधित अगरबत्तियों का निर्माण करते हैं। तथा हमारे जीवन को सुख-सुविधाएँ उपलब्ध कराकर खुशबू से महकाते हैं जिससे ऐसा लगता है कि अत्यंत प्रदूषित वातावरण में रहकर भी इनके हाथ हमारे लिए सुख-सुविधाओं से भरी वस्तुओं का निर्माण करते हैं। जिससे समस्त प्राणियों के जीवन में सुगंध फैल जाती है। ये लोग स्वयं बदहाली का जीवन बिताकर दूसरे लोगों के जीवन में खुशहाली लाते हैं। इन शब्दों द्वारा कवि ने श्रमिकों के श्रम का गुणगान किया है।
- जहाँ अगरबत्तियाँ बनती हैं वहाँ का वातावरण अत्यंत गंदगी भरा होता है। चारों ओर नालियाँ तथा कूड़े-करकट का ढेर जमा होता है। चारों ओर बदबू फैली होती है। ये सुगंधित अगरबत्तियाँ बनाने वाले ऐसे गंदे वातावरण में रहकर भी दूसरों के जीवन में खुशबू बिखेरते हैं पर ऐसे वातावरण में, ऐसी भयावह स्थितियों में रहनी इनकी विवशता है।



v. इस कविता को लिखने का मुख्य उद्देश्य यह है कि हमारे समाज में सुंदरता की रचना करनेवाले गरीब और उपेक्षित लोगों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करना है ताकि आम लोग इन गरीब मजदूरों के जीवन की वास्तविकता को जान लें और समाज में फैली विषमताओं तथा भेदभावों को मिटाने की कोशिश करें। मजदूरों और कारीगरों की दुर्दशा का वित्रण करना तथा लोगों में उनके उद्धार की चेतना जगाना भी है। कवि अगरबत्तियाँ बनानेवाले कारीगरों का प्रदूषित वातावरण में रहना दिखाकर यह कहना चाहता है कि इनके जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए हम सबको मिलकर प्रयास करना चाहिए ताकि इन्हें भी जीवन जीने के लिए स्वच्छ वातावरण मिल सके।

प्रश्न 2 व्याख्या कीजिए-

- पीपल के पत्ते-से नए-नए हाथ जूही की डाल-से खुशबूदार हाथ
 - दुनिया की सारी गंदगी के बीच दुनिया की सारी खुशबू रचते रहते हैं हाथे
- कवि ने इस कविता में 'बहुवचन' का प्रयोग अधिक किया है? इसका क्या कारण है?
- कवि ने हाथों के लिए कौन-कौन से विशेषणों का प्रयोग किया है?

उत्तर-

- अगरबत्ती बनाने वाले हाथों में कुछ के हाथ पीपल के नए-नए पत्तों के समान कोमल हैं। आशय यह है कि कुछ नन्हे-नन्हे बच्चे भी अगरबत्ती बनाने के काम में लगे हुए हैं। कुछ हाथ ऐसे हैं जिनमें से जूही की डालों जैसी खुशबू आती है। आशय यह है कि कुछ सुंदर युवतियाँ भी अगरबत्तियाँ बनाने में लगी हुई हैं।
 - यद्यपि अगरबत्ती बनाने वाले कारीगर दुनिया भर को सुगंधित अगरबत्ती प्रदान करते हैं और वातावरण में सुगंध फैलाते हैं किंतु उन्हें स्वयं दुनिया भर की गंदगी के बीच रहना पड़ता है। उनके चारों ओर गंदगी का ही साम्राज्य रहता है। वे शोषित हैं, पीड़ित हैं।
 - कविता में 'हाथ' के लिए बहुवचन का प्रयोग किया गया है। इसके माध्यम से कवि बताना चाहता है कि यहाँ एक कारीगर या एक मजदूर की बात नहीं की जा रही। यह समस्या सब मजदूरों की है।
 - कवि ने हाथों के लिए निम्नलिखित विशेषणों का प्रयोग किया है-

उभरी नसोंवाले
घिसे नाखूनोंवाले
पीपल के पत्ते-से नए-नए
जूही की डाल-से खुशबूदार
गंदे कटे-पिटे
ज़र्ज़म से फटे हुए।



व्याकरण



हिन्दी व्याकरण

अलंकार

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले उपकरणों को अलंकार कहते हैं। जैसे अलंकरण धारण करने से शरीर की शोभा बढ़ जाती है, वैसे ही अलंकरण के प्रयोग से काव्य में चमक उत्पन्न हो जाती है। संस्कृत आचार्य दंडी के अनुसार ‘अलंकार काव्य का शोभाकारक धर्म है’ और आचार्य वामन के अनुसार ‘अलंकार ही सौंदर्य है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, “कथन की रोचक, सुंदर और प्रभावपूर्ण प्रणाली अलंकार है। गुण और अलंकार में यह अंतर है कि गुण सीधे रस का उत्कर्ष करते हैं, अलंकार सीधे रस का उत्कर्ष नहीं करते हैं।

अलंकार की परिभाषा –

अलंकार दो सब्दों से मिलकर बना है- ‘अलम’ और ‘कार’। जहाँ ‘अलम’ का शाब्दिक अर्थ है, आभूषण और ‘कार’ का अर्थ है धारण करना।

जिस प्रकार स्त्रिया अपने शरीर की शोभा बढ़ाने के लिए आभूषण को पहनती है उसी प्रकार किसी भाषा या कविता को सुन्दर बनाने के लिए अलंकार का प्रयोग किया जाता है।

दूसरे सब्दों में कहे तो जो ” शब्द काव्य की शोभा को बढ़ाते हैं उसे अलंकार कहते हैं।”

उदाहरण: “चारु चंद्र की चंचल किरणें ”

अलंकार के भेद -

- 1) शब्दालंकार
- 2) अर्थालंकार
- 3) उभयालंकार

1. शब्दालंकार

शब्दालंकार दो शब्दों से मिलकर बना होता है – शब्द + अलंकार। शब्द के दो रूप होते हैं – ध्वनी और अर्थ। ध्वनि के आधार पर शब्दालंकार की सृष्टि होती है। जब अलंकार किसी विशेष शब्द की स्थिति में ही रहे और उस शब्द की जगह पर कोई और पर्यायवाची शब्द के रख देने से उस शब्द का अस्तित्व न रहे उसे शब्दालंकार कहते हैं।

शब्दालंकार के भेद –

1. अनुप्रास अलंकार
2. यमक अलंकार



3. पुनरुक्ति अलंकार
4. विष्णा अलंकार
5. वक्रोक्ति अलंकार
6. शलेष अलंकार

1. अनुप्रास अलंकार -

अनुप्रास शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है – अनु + प्रास | यहाँ पर अनु का अर्थ है- बार-बार और प्रास का अर्थ होता है, – वर्ण। जब किसी वर्ण की बार – बार आवर्ती हो तब जो चमत्कार होता है उसे अनुप्रास अलंकार कहते हैं।

अनुप्रास अलंकार के उदाहरण -

- 1) “मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो”
[यहाँ पर ‘म’ वर्ण की आवृत्ति बार बार हो रही है।]
- 2) “चारु चंद्र की चंचल किरणें”
[यहाँ पर ‘च’ वर्ण की आवृत्ति बार बार हो रही है।]
- 3) “कन्हैया किसको कहेगा तू मैया”
[यहाँ पर ‘क’ वर्ण की आवृत्ति बार बार हो रही है।]

अनुप्रास के भेद -

- 1) छेकानुप्रास अलंकार
- 2) वृत्यानुप्रास अलंकार
- 3) लाटानुप्रास अलंकार
- 4) अन्त्यानुप्रास अलंकार
- 5) श्रुत्यानुप्रास अलंकार

1. **छेकानुप्रास अलंकार :-** जहाँ पर स्वरूप और क्रम से अनेक व्यंजनों की आवृत्ति एक बार हो वहाँ छेकानुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण :-

रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठै।
साँसें भरि आँसू भरि कहत दई दई।

2. **वृत्यानुप्रास अलंकार:-** जब एक व्यंजन की आवर्ती अनेक बार हो वहाँ वृत्यानुप्रास अलंकार कहते हैं।

उदाहरण :-

“चामर-सी, चन्दन – सी, चंद – सी,
चाँदनी चमेली चारु चंद-सुधर है।”

3. **लाटानुप्रास अलंकार :-**

जहाँ शब्द और वाक्यों की आवर्ती हो तथा प्रत्येक जगह पर अर्थ भी वही पर अन्वय करने पर भिन्नता आ जाये वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है। अर्थात् जब एक शब्द या वाक्य खंड की आवर्ती उसी अर्थ में हो वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है।

**उदाहरण :-**

तेगबहादुर, हाँ, वे ही थे गुरु-पदवी के पात्र समर्थ,
तेगबहादुर, हाँ, वे ही थे गुरु-पदवी थी जिनके अर्थ।

4. **अन्त्यानुप्रास अलंकार :-** जहाँ अंत में तुक मिलती हो वहाँ पर अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण :-

“लगा दी किसने आकर आग।
कहाँ था तू संशय के नाग?”

5. **श्रुत्यानुप्रास अलंकार:-** जहाँ पर कानों को मधुर लगने वाले वर्णों की आवर्ती हो उसे श्रुत्यानुप्रास अलंकार कहते हैं।

उदाहरण:-

“टिनान्त था, थे दीननाथ डुबते,
सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे।”

2. **यमक अलंकार –**

यमक शब्द का अर्थ होता है – दो। जब एक ही शब्द ज्यादा बार प्रयोग हो पर हर बार अर्थ अलग-अलग आये वहाँ पर यमक अलंकार होता है।

यमक अलंकार के उदाहरण –**उदाहरण :-**

कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाये बौराए नर, वा पाये बौराये।

3. **पुनरुक्ति अलंकार**

पुनरुक्ति अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना है – पुनः + उक्ति। जब कोई शब्द दो बार दोहराया जाता है वहाँ पर पुनरुक्ति अलंकार होता है।

4. **विप्सा अलंकार**

जब आदर, हर्ष, शोक, विस्मयादिबोधक आदि भावों को प्रभावशाली रूप से व्यक्त करने के लिए शब्दों की पुनरावृत्ति को ही विप्सा अलंकार कहते हैं।

उदाहरण :-

मोहि-मोहि मोहन को मन भयो राधामय।
राधा मन मोहि-मोहि मोहन मयी-मयी।।

5. **वक्रोक्ति अलंकार**

जहाँ पर वक्ता के द्वारा बोले गए शब्दों का श्रोता अलग अर्थ निकाले उसे वक्रोक्ति अलंकार कहते हैं।





वक्रोक्ति अलंकार के भेद :-

काकु वक्रोक्ति अलंकार

श्लेष वक्रोक्ति अलंकार

1. **काकु वक्रोक्ति अलंकार:-** जब वक्ता के द्वारा बोले गये शब्दों का उसकी कंठ ध्वनी के कारण श्रोता कुछ और अर्थ निकाले वहाँ पर काकु वक्रोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण :- मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू।

2. **श्लेष वक्रोक्ति अलंकार :-** जहाँ पर श्लेष की वजह से वक्ता के द्वारा बोले गए शब्दों का अलग अर्थ निकाला जाये वहाँ श्लेष वक्रोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण :-

को तुम हौ इत आये कहाँ धनस्याम हौ तौ कितहूँ बरसो।

चितचोर कहावत है हम तौ तहाँ जाहुं जहाँ धन सरसों।।

6. **श्लेष अलंकार -**

जहाँ पर कोई एक शब्द एक ही बार आये पर उसके अर्थ अलग अलग निकलें वहाँ पर श्लेष अलंकार होता है।

श्लेष अलंकार के उदाहरण -

उदाहरण :-

रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।

पानी गए न उबरै मोती मानस चून।।

श्लेष अलंकार के भेद -

अभंग श्लेष अलंकार

सभंग श्लेष अलंकार

1. **अभंग श्लेष अलंकार :-** जिस अलंकार में शब्दों को बिना तोड़े ही एक से अधिक या अनेक अर्थ निकलते हों वहाँ पर अभंग श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण :-

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुस, चून।।

2. **सभंग श्लेष अलंकार :-** जिस अलंकार में शब्दों को तोड़ना बहुत अधिक आवश्यक होता है क्योंकि शब्दों को तोड़े बिना उनका अर्थ न निकलता हो वहाँ पर सभंग श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण :- सखर सुकोमल मंजु, दोषरहित दूषण सहित।

2. अर्थालंकार

जहाँ पर अर्थ के माध्यम से काव्य में चमत्कार होता हो वहाँ अर्थालंकार होता है।





अर्थालंकार के भेद –

1. उपमा अलंकार
2. रूपक अलंकार
3. उत्तेक्षा अलंकार
4. द्रष्टान्त अलंकार
5. संदेह अलंकार
6. अतिश्योक्ति अलंकार
7. उपमेयोपमा अलंकार
8. प्रतीप अलंकार
9. अनन्वय अलंकार
10. भ्रांतिमान अलंकार
11. दीपक अलंकार
12. अपहृति अलंकार
13. व्यतिरेक अलंकार
14. विभावना अलंकार
15. विशेषोक्ति अलंकार
16. अर्थान्तरन्यास अलंकार
17. उल्लेख अलंकार
18. विरोधाभाष अलंकार
19. असंगति अलंकार
20. मानवीकरण अलंकार
21. अन्योक्ति अलंकार
22. काव्यलिंग अलंकार
23. स्वभावोती अलंकार

1. उपमा अलंकार –

उपमा शब्द का अर्थ होता है – तुलना। जब किसी व्यक्ति या वस्तु की तुलना किसी दूसरे यक्ति या वस्तु से की जाए वहाँ पर उपमा अलंकार होता है।

उपमा अलंकार के उदाहरण –

उदाहरण :-

सागर-सा गंभीर हृदय हो,
गिरी-सा ऊँचा हो जिसका मन।



उपमा अलंकार के अंग -

- 1) उपमेय
 - 2) उपमान
 - 3) वाचक शब्द
 - 4) साधारण धर्म
1. **उपमेय** :- उपमेय का अर्थ होता है – उपमा देने के योग्य। अगर जिस वस्तु की समानता किसी दूसरी वस्तु से की जाये वहाँ पर उपमेय होता है।
 2. **उपमान** :- उपमेय की उपमा जिससे दी जाती है उसे उपमान कहते हैं। अर्थात् उपमेय की जिस के साथ समानता बताई जाती है उसे उपमान कहते हैं।
 3. **वाचक शब्द** :- जब उपमेय और उपमान में समानता दिखाई जाती है तब जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है उसे वाचक शब्द कहते हैं।
 4. **साधारण धर्म** :- दो वस्तुओं के बीच समानता दिखाने के लिए जब किसी ऐसे गुण या धर्म की मदद ली जाती है जो दोनों में वर्तमान स्थिति में हो उसी गुण या धर्म को साधारण धर्म कहते हैं।

2. रूपक अलंकार -

जहाँ पर उपमेय और उपमान में कोई अंतर न दिखाई दे वहाँ रूपक अलंकार होता है अर्थात् जहाँ पर उपमेय और उपमान के बीच के भेद को समाप्त करके उसे एक कर दिया जाता है वहाँ पर रूपक अलंकार होता है।

रूपक अलंकार के उदाहरण -

उदाहरण :-

“उदित उदय गिरी मंच पर, रघुवर बाल पतंग।

विगसे संत-सरोज सब, हरषे लोचन श्रंग॥”

रूपक अलंकार की निम्न बातें :-

STEP UP ACADEMY

उपमेय को उपमान का रूप देना।

वाचक शब्द का लोप होना।

उपमेय का भी साथ में वर्णन होना।

3. उत्प्रेक्षा अलंकार -

जहाँ पर उपमान के न होने पर उपमेय को ही उपमान मान लिया जाए। अर्थात् जहाँ पर अप्रस्तुत को प्रस्तुत मान लिया जाए वहाँ पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। अगर किसी पंक्ति में मनु, जनु, मेरे जानते, मनहु, मानो, निश्चय, इव आदि आते हैं वहाँ पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

उत्प्रेक्षा अलंकार के उदाहरण -

उदाहरण :-

सरिं सोहत गोपाल के, उर गुंजन की माल

बाहर सोहत मनु पिये, दावानल की ज्वाल॥



**उत्प्रेक्षा अलंकार के भेद –****वस्तुप्रेक्षा अलंकार****हेतुप्रेक्षा अलंकार****फलोत्प्रेक्षा अलंकार**

1. **वस्तुप्रेक्षा अलंकार** :- जहाँ पर प्रस्तुत में अप्रस्तुत की संभावना दिखाई जाए वहाँ पर वस्तुप्रेक्षा अलंकार होता है।

उदाहरण:-

“सखि सोहत गोपाल के, उर गुंजन की माल।

बाहर लसत मनो पिये, दावानल की ज्वाल।।”

2. **हेतुप्रेक्षा अलंकार** :- जहाँ अहेतु में हेतु की सम्भावना देखी जाती है। अर्थात् वास्तविक कारण को छोड़कर अन्य हेतु को मान लिया जाए वहाँ हेतुप्रेक्षा अलंकार होता है।

3. **फलोत्प्रेक्षा अलंकार** :- इसमें वास्तविक फल के न होने पर भी उसी को फल मान लिया जाता है वहाँ पर फलोत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

उदाहरण:-

खंजरीर नहीं लखि परत कुछ दिन साँची बात।

बाल द्रगन सम हीन को करन मनो तप जात।।

दृष्टान्त अलंकार

जहाँ दो सामान्य या दोनों विशेष वाक्यों में बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव होता हो वहाँ पर दृष्टान्त अलंकार होता है। इस अलंकार में उपमेय रूप में कहीं गई बात से मिलती-जुलती बात उपमान रूप में दुसरे वाक्य में होती है। यह अलंकार उभयालंकार का भी एक अंग है।

उदाहरण :-

‘एक म्यान में दो तलवारें, कभी नहीं रह सकती हैं।

किसी और पर प्रेम नारियाँ, पति का क्या सह सकती हैं।।

संदेह अलंकार

जब उपमेय और उपमान में समता देखकर यह निश्चय नहीं हो पाता कि उपमान वास्तव में उपमेय है या नहीं। जब यह दुविधा बनती है, तब संदेह अलंकार होता है अर्थात् जहाँ पर किसी व्यक्ति या वस्तु को देखकर संशय बना रहे वहाँ संदेह अलंकार होता है। यह अलंकार उभयालंकार का भी एक अंग है।

उदाहरण :-

यह काया है या शेष उसी की छाया,

क्षण भर उनकी कुछ नहीं समझ में आया।

संदेह अलंकार की मुख्य बातें :-

विषय का अनिश्चित ज्ञान।

यह अनिश्चित समानता पर निर्भर हो।

अनिश्चय का चमत्कारपूर्ण वर्णन हो।





6. अतिश्योक्ति अलंकार –

जब किसी व्यक्ति या वस्तु का वर्णन करने में लोक समाज की सीमा या मर्यादा टूट जाये उसे अतिश्योक्ति अलंकार कहते हैं अर्थात् जब किसी वस्तु का बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाये वहां पर अतिश्योक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण:-

हनुमान की पूँछ में लगन न पायी आगि।

सगरी लंका जल गई, गये निसाचर भागि।

7. उपमेयोपमा अलंकार

इस अलंकार में उपमेय और उपमान को परस्पर उपमान और उपमेय बनाने की कोशिश की जाती है इसमें उपमेय और उपमान की एक दूसरे से उपमा दी जाती है।

उदाहरण :- तौ मुख सोहत है ससि सो अरु सोहत है ससि तो मुख जैसो।

8. प्रतीप अलंकार

इसका अर्थ होता है उल्टा। उपमा के अंगों में उल्ट – फेर करने से अर्थात् उपमेय को उपमान के समान न कहकर उलट कर उपमान को ही उपमेय कहा जाता है वहाँ प्रतीप अलंकार होता है। इस अलंकार में दो वाक्य होते हैं एक उपमेय वाक्य और एक उपमान वाक्य। लेकिन इन दोनों वाक्यों में सदृश्य का साफ कथन नहीं होता, वह व्यंजित रहता है। इन दोनों में साधारण धर्म एक ही होता है परन्तु उसे अलग-अलग ढंग से कहा जाता है।

उदाहरण :- “नेत्र के समान कमल है।”

9. अनन्वय अलंकार

जब उपमेय की समता में कोई उपमान नहीं आता और कहा जाता है कि उसके समान वही है, तब अनन्वय अलंकार होता है।

उदाहरण :- “यद्यपि अति आरत – मारत है। भारत के सम भारत है।

10. श्रांतिमान अलंकार

जब उपमेय में उपमान के होने का ध्रम हो जाये वहाँ पर श्रांतिमान अलंकार होता है अर्थात् जहाँ उपमान और उपमेय दोनों को एक साथ देखने पर उपमान का निश्चयात्मक ध्रम हो जाये मतलब जहाँ एक वस्तु को देखने पर दूसरी वस्तु का ध्रम हो जाए वहाँ श्रांतिमान अलंकार होता है। यह अलंकार उभयालंकार का भी अंग माना जाता है।

उदाहरण :-

पायें महावर देन को नाईन बैठी आय ।

फिरि-फिरि जानि महावरी, एडी भीड़त जाये ।।

11. दीपक अलंकार

जहाँ पर प्रस्तुत और अप्रस्तुत का एक ही धर्म स्थापित किया जाता है वहाँ पर दीपक अलंकार होता है।

उदाहरण:-

चंचल निशि उदवस रहें, करत प्रात वसिराज ।

अरविंदन में इंदिरा, सुन्दरि नैनन लाज ।।



12. अपहृति अलंकार

अपहृति का अर्थ होता है छिपाव। जब किसी सत्य बात या वस्तु को छिपाकर उसके स्थान पर किसी झूठी वस्तु की स्थापना की जाती है वहाँ अपहृति अलंकार होता है। यह अलंकार उभयालंकार का भी एक अंग है।

उदाहरण :-

“सुनहु नाथ रघुवीर कृपाला,
बन्धु न होय मोर यह काला।”

13. व्यतिरेक अलंकार

व्यतिरेक का शाब्दिक अर्थ होता है आधिक्य। व्यतिरेक में कारण का होना जरुरी है। अतः जहाँ उपमान की अपेक्षा अधिक गुण होने के कारण उपमेय का उत्कर्ष हो वहाँ पर व्यतिरेक अलंकार होता है।

उदाहरण :- का सरवरि तेहिं देतं मयंकू। चांद कलंकी वह निकलंकू।

मुख की समानता चन्द्रमा से कैसे दूँ?

14. विभावना अलंकार

जहाँ पर कारण के न होते हुए भी कार्य का हुआ जाना पाया जाए वहाँ पर विभावना अलंकार होता है।

उदाहरण :-

बिनु पग चलै सुनै बिनु काना।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु वाणी वक्ता बड़ जोगी।

15. विशेषोक्ति अलंकार

काव्य में जहाँ कार्य सिद्धि के समस्त कारणों के विद्यमान रहते हुए भी कार्य न हो वहाँ पर विशेषोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण :-

नेह न नैनन को कछु, उपजी बड़ी बलाय।
नीर भरे नित-प्रति रहें, तऊ न प्यास बुझाई।

16. अर्थान्तरन्यास अलंकार

जब किसी सामान्य कथन से विशेष कथन का अथवा विशेष कथन से सामान्य कथन का समर्थन किया जाये वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है।

उदाहरण :-

बड़े न हूजे गुनन बिनु, बिरद बडाई पाए।
कहत धतूरे सों कनक, गहनो गढ़ो न जाए।।

17. उल्लेख अलंकार

जहाँ पर किसी एक वस्तु को अनेक रूपों में ग्रहण किया जाए, तो उसके अलग-अलग भागों में बटने को उल्लेख अलंकार कहते हैं। अर्थात् जब किसी एक वस्तु को अनेक प्रकार से बताया जाये वहाँ पर उल्लेख अलंकार होता है।

उदाहरण :- विन्दु में थीं तुम सिन्धु अनन्त एक सुर में समस्त संगीत।



18. विरोधाभाष अलंकार

जब किसी वस्तु का वर्णन करने पर विरोध न होते हुए भी विरोध का आभाष हो वहाँ पर विरोधाभास अलंकार होता है।

उदाहरण :-

‘आग हूँ जिससे डुलकते बिंदु हिमजल के।
शून्य हूँ जिसमें बिछे हैं पांवड़े पलकें।’

19. असंगति अलंकार

जहाँ आपतातः विरोध दृष्टिगत होते हुए, कार्य और कारण का वैयाधिकरन्य रणित हो वहाँ पर असंगति अलंकार होता है।

उदाहरण :- “हृदय धाव मेरे पीर रघुवीरै।”

20. मानवीकरण अलंकार

जहाँ पर काव्य में जड़ में चेतन का आरोप होता है वहाँ पर मानवीकरण अलंकार होता है अर्थात् जहाँ जड़ प्रकृति पर मानवीय भावनाओं और क्रियाओं का आरोप हो वहाँ पर मानवीकरण अलंकार होता है। जब प्रकृति के द्वारा निर्मित चीजों में मानवीय भावनाओं के होने का वर्णन किया जाए वहाँ पर मानवीकरण अलंकार होता है।

उदाहरण :- बीती विभावी जागरी, अम्बर पनघट में डुबो रही तास घट उषा नगरी।

21. अन्योक्ति अलंकार

जहाँ पर किसी उक्ति के माध्यम से किसी अन्य को कोई बात कही जाए वहाँ पर अन्योक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण :- फूलों के आस-पास रहते हैं, फिर भी काँटे उदास रहते हैं।

22. काव्यलिंग अलंकार

जहाँ पर किसी युक्ति से समर्थित की गयी बात को काव्यलिंग अलंकार कहते हैं अर्थात् जहाँ पर किसी बात के समर्थन में कोई-न-कोई युक्ति या कारण जरुर दिया जाता है।

उदाहरण :-

कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
उहि खाय बौरात नर, इहि पाए बौराए।।

23. स्वभावोक्ति अलंकार

किसी वस्तु के स्वाभाविक वर्णन को स्वभावोक्ति अलंकार कहते हैं।

उदाहरण :-

सीस मुकुट कटी काछनी, कर मुरली उर माल।
इहि बानिक मो मन बसौ, सदा बिहारीलाल।।

3. उभयालंकार

जो अलंकार शब्द और अर्थ दोनों पर आधारित रहकर दोनों को चमत्कारी करते हैं वहाँ उभयालंकार होता है।

उदाहरण :- ‘कजरारी अंखियन में कजरारी न लखाय।’





अव्यय

अव्यय ऐसे शब्द क्यों कहते हैं जिन शब्दों में लिंग, कारक, वचन आदि के कारण कोई भी परिवर्तन नहीं आता हो, उन्हें अव्यय अविकारी शब्द के नाम से जाना जाता है। यह शब्द हमेशा परिवर्तित होते हैं।

परिभाषा-

जो शब्द लिंग, वचन, कारक, पुरुष और काल के कारण नहीं बदलते, वे अव्यय कहलाते हैं।

ऐसे शब्द जिसमें लिंग, वचन, पुरुष, कारक आदि के कारण कोई विकार नहीं आता अव्यय कहलाते हैं।

यह सदैव अपरिवर्तित, अविकारी एवं अव्यय रहते हैं। इनका मूल रूप स्थिर रहता है, वह कभी बदलता नहीं है जैसे – इधर, किंतु, क्यों, जब, तक, इसलिए, आदि।

अव्यय के प्रकार –

1. क्रिया विशेषण
 2. सम्बन्ध बोधक
 3. समुच्चय बोधक
 4. विस्मयादि बोधक
1. **क्रिया विशेषण –**

वे शब्द जो क्रिया की विशेषता प्रकट करें, उन्हें क्रिया-विशेषण कहते हैं।

इसके चार भेद हैं

1. कालवाचक :-

जिससे क्रिया के करने या होने के समय (काल) का ज्ञान हो, वह कालवाचक क्रिया विशेषण कहलाता है।

जैसे – परसों मंगलवार हैं, आपको अभी जाना चाहिए, आजकल, कभी, प्रतिदिन, रोज, सुबह, अक्सर, रात को, चार बजे, हर साल आदि।

2. स्थान वाचक :-

जिससे क्रिया के होने या करने के स्थान का बोध हो, वह स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहलाता है।

जैसे – यहाँ, वहाँ, इधर, उधर, नीचे, ऊपर, बाहर, भीतर, आसपास आदि।

3. परिमाणवाचक :-

जिन शब्दों से क्रिया के परिमाण या मात्रा से सम्बन्धित विशेषता का पता चलता है। परिमाणवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।



जैसे -

- वह दूध बहुत पीता है।
- वह थोड़ा ही चल सकी।
- उतना खाओ जितना पचा सको।

4. रीतिवाचक :- जिससे क्रिया के होने या करने के ढग का पता चले, वे रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

जैसे -

- शनैः शनैः जाता है।
- सहसा बम फट गया।
- निश्चिय पूर्वक करूँगा।

2. सम्बन्ध बोधक -

जिस अव्यय शब्द से संज्ञा अथवा सर्वनाम का सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ प्रकट होता है, उसे सम्बन्ध बोधक अव्यय कहते हैं।

जैसे-

- उसके सामने मत ठहरो।
- पेड़ के नीचे बैठो

से पहले, के भीतर, की ओर, की तरफ, के बिना, के अलावा, के बगैर, के बदले, की जगह, के साथ, के संग, के विपरीत आदि।

3. समुच्चय बोधक या योजक -

जो अव्यय दो शब्दों अथवा दो वाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं उन्हें समुच्चय बोधक अव्यय कहते हैं।

जैसे- और, तथा, एवं, मगर, लेकिन, किन्तु, परन्तु, इसलिए, इस कारण, अतः, क्योंकि, ताकि, या, अथवा, चाहे आदि।

4. विस्मयादि बोधक -

जिन अविकारी शब्दों से हर्ष, शोक, आश्वर्य घृणा, दुख, पीड़ा आदि का भाव प्रकट हो उन्हे विस्मयादि बोधक अव्यय कहते हैं।

जैसे - ओह!, हे!, वाह!, अरे!, अति सुंदर!, उफ!, हाय!, धिक्कार!, सावधान!, बहत अच्छा!, तौबा-तौबा!, अति सुन्दर आदि।





उपसर्ग

यह दो शब्दों (उप+सर्ग) के योग से बनता है। 'उप' का अर्थ 'समीप', 'निकट' या 'पास में' है। 'सर्ग' का अर्थ है सृष्टि करना। 'उपसर्ग' का अर्थ है पास में बैठकर दूसरा नया अर्थ वाला शब्द बनाना। 'हार' के पहले 'प्र' उपसर्ग लगा दिया गया, तो एक नया शब्द 'प्रहार' बन गया, जिसका नया अर्थ हुआ 'मारना'।

आसान अर्थ : उपसर्ग उप +सर्ग के योग से बना है यह एक संयोग का पद है। उप का मतलब है सहायक या समीप का और सर्ग का मतलब है:- भाग या अंग

अतः उपसर्ग का मतलब हुआ "सहायक या समीप का अंग या भाग"

उपसर्ग शब्दांश होते हैं अर्थात यह शब्दों का अंग होते हैं। वह शब्दांश जो शब्दों के आगे जुड़ कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं या अर्थ में विशेषता ला देते हैं अथवा अन्य शब्द बना देते हैं वह उपसर्ग कहलाते हैं।

उपसर्गों का स्वतंत्र अस्तित्व न होते हुए भी वे अन्य शब्दों के साथ मिलकर उनके एक विशेष अर्थ का बोध कराते हैं। उपसर्ग शब्द के पहले आते हैं।

जैसे - 'अन' उपसर्ग 'बन' शब्द के पहले रख देने से एक शब्द 'अनबन' बनता है, जिसका विशेष अर्थ 'मनमुटाव' है। कुछ उपसर्गों के योग से शब्दों के मूल अर्थ में परिवर्तन नहीं होता, बल्कि तेजी आती है।

जैसे - 'भ्रमण' शब्द के पहले 'परि' उपसर्ग लगाने से अर्थ में अंतर न होकर तेजी आई। कभी-कभी उपसर्गों के प्रयोग से शब्द का बिल्कुल उलटा अर्थ निकलता है।

उपसर्ग किसी शब्द के आरम्भ मे जुड़ कर अर्थवान हो जाते हैं जैसे अ उपसर्ग नहीं का अर्थ देता है

जैसे :

- अ+ भाव = अभाव
- अ+थाह = अथाह

इसी प्रकार नि उपसर्ग

नि + डर = निडर

जैसे :-

- अ + सुंदर = असुंदर (यहां अर्थ बदल गया है)
- अति +सुंदर = अतिसुन्दर (यहां शब्द मे विशेषता आई है)

इसी तरह हम अन्य उदाहरण देखेंगे

- आ+हार = आहार (नया शब्द बना है)
- प्रति+हार = प्रतिहार (नया शब्द बना है)
- प्र+हार = प्रहार (नया शब्द बना है)





- अति+अल्प = अत्यल्प
- अधि + अक्ष = अध्यक्ष

उपसर्गों के प्रयोग से शब्दों की तीन स्थितियाँ होती हैं -

- शब्द के अर्थ में एक नई विशेषता आती है,
- शब्द के अर्थ में प्रतिकूलता उत्पन्न होती है,
- शब्द के अर्थ में कोई विशेष अंतर नहीं आता।

यहाँ 'उपसर्ग' और 'शब्द' का अंतर समझ लेना चाहिए। शब्द अक्षरों का एक समूह है, जो अपने में स्वतंत्र है, अपना अर्थ रखता है और वाक्यों में स्वतंत्रापूर्वक प्रयुक्त होता है।

लेकिन, उपसर्ग अक्षरों का समूह होते हुए भी स्वतंत्र नहीं हैं और न स्वतंत्ररूप से उसका प्रयोग ही होता है। जब तक किसी शब्द के साथ उपसर्ग की संगति नहीं बैठती, तब तक उपसर्ग अर्थवान् नहीं होता।

संस्कृत में शब्दों के पहले लगने वाले कुछ निश्चित शब्दांशों को ही उपसर्ग कहते हैं और शेष को अव्यय। हिंदी में इस तरह का कोई अंतर नहीं है। हिंदी भाषा में 'उपसर्ग' की योजना व्यापक अर्थ में हुई है।

उपसर्गों की संख्या

हिंदी में जो उपसर्ग मिलते हैं, वे संस्कृत, हिंदी और उर्दू भाषा के हैं। इन भाषाओं से प्राप्त उपसर्गों की संख्या इस तरह निश्चित की गई है:

- संस्कृत उपसर्ग – 19
- हिंदी उपसर्ग – 10
- उर्दू उपसर्ग – 12

इनमें से प्रत्येक इस प्रकार है –

संस्कृत-हिंदी उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	शब्दरूप
अति	अधिक, ऊपर, उस पार	अतिकाल, अतिरिक्त, अतिशय, अत्यंत, अत्याचार, अत्युक्ति, अतिव्याप्ति, अतिक्रमण इत्यादि।
अधि	श्रेष्ठ, ऊपर, सामीप्य	अधिकरण, अधिकार, अधिराज, अध्यात्म, अध्यक्ष, अधिपति इत्यादि।
अनु	क्रम, पश्चात्, समानता	अनुशासन, अनुकरण, अनुवाद, अनुचर, अनुज, अनुक्रम, अनुपात, अनुरूप, अनुस्वार, अनुकूल, अनुशीलन इत्यादि।
अप	लघुता, हीनता, अभाव, विरुद्ध	अपमान, अपशब्द, अपहरण, अपराध, अपकार, अपश्रंश, अपकीर्ति, अपयश, अप्रयोग, अपव्यय, अपवाद, अपकर्ष
अभि	सामीप्य, आधिक्य, ओर, इच्छा प्रकट करना	अभिभावक, अभियान, अभिशाप, अभिप्राय, अभियोग, अभिसार, अभिमान, अभिनव, अभ्युदय, अभ्यागत, अभिमुख, अभ्यास, अभिलाषा इत्यादि।



अव	हीनता, अनादर, पतन	अवगत, अवलोकन, अवनत, अवस्था, अवसान, अवज्ञा, अवरोहण, अवतार, अवनति, अवशेष इत्यादि।
आ	सीमा, और, समेत, कमी, विपरीत	आरक्त, आगमन, आकाश, आकर्षण, आजन्म, आरंभ, आक्रमण, आदान, आचरण, आजीवन, आरोहण, आमुख, आमरण, आक्रोश इत्यादि।
उत्+उद्	ऊपर, उत्कर्ष	उत्तम, उत्कण्ठा, उत्कर्ष, उत्पन्न, उन्नति, उद्देश्य, उद्गम, उत्थान, उद्धव, उत्साह, उद्गार, उद्यम, उद्घृत इत्यादि।
उप	निकटता, सट्टश, गौण, सहायक, हीनता	उपकार, उपकूल, उपनिवेश, उपदेश, उपस्थिति, उपमंत्री, उपवन, उपनाम, उपासना, उपभेद इत्यादि।
दुर-दुस्	बुरा, कठिन, दुष्ट, हीन	दुरवस्था, दुर्दशा, दुर्लभ, दुर्जन, दुर्लध्य, दुर्दमनीय, दुराचार, दुस्साहस, दुष्कर्म, दुःसाध्य, दुष्प्राप्य, दुःसह, दुर्गुण, दुर्गम इत्यादि।
नि	भीतर, नीचे, अतिरिक्त	निदर्शन, निकृष्ट, निपात, नियुक्त, निवास, निरूपण, निमग्न, निवारण, निम्न, निषेध, निरोध, निदान, निबंध इत्यादि।
निर्-निस्	बाहर, निषेध, रहित	निर्वास, निराकरण, निर्भय, निरपराध, निर्वाह, निर्दोष, निर्जीव, नीरोग, निर्मल इत्यादि।
परा	उलटा, अनादर, नाश	पराजय, पराक्रम, पराभव, परामर्श, पराभूत इत्यादि।
परि	आसपास, चारों ओर, पूर्ण, अतिशय, त्याग	परिक्रमा, परिजन, परिणाम, परिधि, परिपूर्ण, परिवर्तन, परिणय, पर्याप्त, परिशीलन, परिदोष, परिदर्शन, परिचय इत्यादि।
प्र	अधिक, आगे, ऊपर, यश	प्रकाश, प्रख्यात, प्रचार, प्रबल, प्रभु, प्रयोग, प्रगति, प्रसार, प्रस्थान, प्रलय, प्रमाण, प्रसन्न, प्रसिद्धि प्रताप, प्रपंच इत्यादि।
प्रति	विरोध, बराबरी, प्रत्येक, परिवर्तन	प्रतिक्षण, प्रतिध्वनि, प्रतिनिधि, प्रतिकार, प्रत्येक, प्रतिदान, प्रतिकूल, प्रतिवादी, प्रत्यक्ष, प्रत्युपकार इत्यादि।
वि	भिन्नता, हीनता, असमानता, विशेषता	विकास, विज्ञान, विदेश, विधवा, विवाद, विशेष, विस्मरण, विराम, विभाग, विकार, विमुख, विनय, विभिन्न, विनाश, इत्यादि।
सम्	पूर्णता, संयोग	संकल्प, संग्रह, संतोष, संन्यास, संयोग, संस्कार, संरक्षण, संहार, सम्मेलन, संस्कृत, सम्मुख, संग्राम, संसर्ग इत्यादि।
सु	सुखी, अच्छा भाव, सहज, सुंदर	सुकर्म, सुकृत, सुगम, सुलभ, सुदूर, स्वागत, सुयश, सुभाषित, सुवास, सुकिव, सुजन इत्यादि।



अ-अन	निषेध के अर्थ में	अमोल, अपढ़, अजान, अगाध, अथाह, अलग, अनमोल, अनजान इत्यादि
अध	आधे के अर्थ में	अधजला, अधपका, अधखिला, अधमरा, अधपई, अधसेरा इत्यादि
उन	एक कम	उन्नीस, उनतीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर इत्यादि।
औ (अव)	हीनता, निषेध	औगुन, औघट, औसर, औढर इत्यादि
दु	बुरा, हीन	दुकाल, दुबला इत्यादि
नि	निषेध, अभाव, विशेष	निकम्मा, निखरा, निडर, निहत्था, निधडक, निगोडा इत्यादि
विन	निषेध	बिनजाना, बिनब्याहा, बिनबोया, बिनदेखा, बिनखाया, बिनचखा, बिनकाम इत्यादि।
भर	पूरा, ठीक	भरपेट, भरसक, भरपूर, भरदिन इत्यादि
कु-क	बुराई, हीनता	कुखेत, कुपात्र, कुघडी, कुकाठ, कपूत, कुढंग इत्यादि।
सु-स	श्रेष्ठता और साथ के अर्थ में	सुडौल, सुधड, सुजान, सुपात्र, सपूत, सजग, सगोत्र, सरस, सहित इत्यादि।

उर्दू-उपसर्ग (अरबी-फारसी)

उपसर्ग	अर्थ	शब्दरूप
अल	निश्चित	अलबत्ता, अलगरज इत्यादि
कम	हीन, थोड़ा	कमउम्र, कमखयाल, कमसिन इत्यादि
खुश	श्रेष्ठता के अर्थ में	खुशबू, खुशदिल, खुशकिस्मत, खुशहाल, खुशखबरी इत्यादि।
गैर	निषेध	गैरहाजिर, गैरवाजिब, गैरकानूनी, गैरसरकारी इत्यादि।
दर	में	दरकार, दरमियान इत्यादि।
ना	अभाव	नापसंद, नामुमकिन, नाराज, नालायक, नादान इत्यादि।
बद	बुरा	बदमाश, बदनाम, बदकार, बदकिस्मत, बदबू, बदहजमी इत्यादि।
बर	ऊपर, पर, बाहर	बरखास्त, बरदाशत, बरवक्त इत्यादि
बिल	साथ	बिलकुल
बे	बिना	बेईमान, बेवकूफ, बेरहम, बेतरह, बेइज्जत, इत्यादि।
ला	बिना	लाचार, लाजवाब, लावारिस, लापरवाह, लापता इत्यादि।
हम	बराबर, समान	हमउम्र, हमदर्दी, हमपेशा इत्यादि





काल

काल का अर्थ हम “समय “से लेते हैं। अर्थात क्रिया के जिस रूप से हमें काम के होने के समय का बोध हो उसे काल कहते हैं। सरल शब्दों में जब हम या कोई भी व्यक्ति कोई भी कार्य करता है , उस कार्य से हमें उस समय का पता चलता है जिस समय में वह काम हो रहा है या किया जा रहा है। तो उसे हम काल कहेंगे । काल से हमें कार्य के समय का ज्ञान होता है। और कार्य के सही समय का पता चलता है कि काम अभी हो रहा है या पहले हुआ था या आने वाले समय में होगा।

उदहारण-

1. राधा ना गाना गया था।

इससे हमें पता चल रहा है कि गाना गया जा चूका है। काम खत्म हो चूका है। जब कार्य पूर्ण होता है तो था, थे, थी का प्रयोग होता है ।

2. मीरा कपड़े धो रही थी।

यहां मीरा कपड़े धो रही थी । मतलब काम कर रही थी काम को बीते समय में यह बताने कि कोशिश की जा रही है। रहा था, रही थी शब्दों से कार्य हो रहा था का पता चलता है ।

3. मैं खाना बनाता हूँ।

यहां खाना बनाना वर्तमान समय में होना बताया जा रहा है । खाना अभी बन रहा है।

4. श्याम पत्र लिखता होगा।

श्याम पत्र लिखता होगा यहां वर्तमान में काम कर रहा है ।

5. हम घूमने जायेगे।

इस वाक्य से स्पष्ट होता है कि हम घूमने जायेगे, अभी गए नहीं हैं।

भविष्य में होने वाले समय का पता चल रहा है।

हम उम्मीद करतें हैं कि आप काल के बारे में समझें होंगे

काल की परिभाषा –

क्रिया के उस रूपांतर को 'काल' कहते हैं, जिससे कार्य-व्यापार का समय और उसकी पूर्ण अथवा अपूर्ण अवस्था का बोध हो।

काल के भेद

काल के तीन भेद हैं –

- वर्तमानकाल
- भूतकाल
- भविष्यतकाल





वर्तमानकाल: क्रियाओं के व्यापार की निरंतरता को 'वर्तमानकाल' कहते हैं। इसमें क्रिया का आरंभ हो चुका होता है।

जैसे-

- वह खाता है।
- यहाँ 'खाने' का कार्य-व्यापार चल रहा है, समाप्त नहीं हुआ है।
- वह पढ़ रहा है।
- पक्षी आकाश में उड़ते हैं।
- वह अभी गया है।
- उसने खाना खा लिया है।

वर्तमान काल के पाँच भेद हैं -

1. सामान्य वर्तमान
2. तात्कालिक वर्तमान
3. पूर्ण वर्तमान
4. संदिग्ध वर्तमान
5. संभाव्य वर्तमान।

1. सामान्य वर्तमान -

क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया का वर्तमानकाल में होना पाया जाए, 'सामान्य वर्तमान' कहलाता है।

जैसे -

- वह आता है।
- वह देखता है।
- पक्षी आकाश में उड़ते हैं।
- वह अभी गया है।
- उसने खाना खा लिया है।

2. तात्कालिक वर्तमान - इससे यह पता चलता है कि क्रिया वर्तमानकाल में हो रही है।

जैसे -

- मैं पढ़ रहा हूँ।
- वह जा रहा है।
- हम घूमने जा रहे हैं।
- विद्या कपड़े धो रही है।
- टंकी से पानी बह रहा है।
- बच्चे खिलौनों से खेल रहे हैं।
- बाघ हरिण का पीछा कर रहा है।
- कुछ लोग पंडाल में आ रहे हैं, कुछ बाहर जा रहे हैं।



3. **पूर्ण वर्तमान** – इससे वर्तमानकाल में कार्य की पूर्ण सिद्धि का बोध होता है।

जैसे –

- वह आया है।
- लड़के ने पुस्तक पढ़ी है।
- वह चला गया है।
- उसने भोजन कर लिया है।
- मैं तो सुबह ही नहा चुका हूँ।
- घड़ा पानी से भर गया है।

4. **संदिग्ध वर्तमान** – जिससे क्रिया के होने में संदेह प्रकट हो, पर उसकी वर्तमानता में संदेह न हो।

जैसे –

- राम खाता होगा।
- वह पढ़ता होगा।
- वह सो रहा होगा।
- उल्लास खेलता होगा।
- छात्र कहानियाँ सुन रहे होंगे।
- पहरेदार जाग रहा होगा।

5. **संभाव्य वर्तमान** – इससे वर्तमानकाल में काम के पूरा होने की संभावना रहती है।

जैसे –

- वह आया हो।
- वह लौटा हो।
- सुधाकर आता है तो काम हो जाना चाहिए।
- वह स्वस्थ होता लगता है।
- वह पढ़े तो पढ़ने देना।
- अब तो देश आगे बढ़ना ही चाहिए।

भूतकाल

परिभाषा – जिस क्रिया से कार्य की समाप्ति का बोध हो, उसे भूतकाल की क्रिया कहते हैं।

जैसे –

- लड़का आया था।
- वह खा चुका था।
- मैंने गाया।
- दो दिन पहले जोर की वर्षा हुई थी।
- नेता जी का प्रचार-रथ बड़ी भीड़ के साथ जा रहा था।



भूतकाल के छः भेद हैं -

1. सामान्य भूत
2. आसन्न भूत
3. पूर्ण भूत
4. अपूर्ण भूत
5. संदिग्ध भूत
6. हेतुहेतुमद्भूत।

1. सामान्य भूत -

जिससे भूतकाल की क्रिया के विशेष समय का ज्ञान न हो।

जैसे -

- मोहन आया।
- सीता गई।
- मोहन आया, सीता गई।
- विनय घर गया।
- मैंने खाना खाया।
- वे कल यहाँ आए थे।
- उसने पिछले वर्ष परीक्षा दी।

2. आसन्न भूत -

इससे क्रिया की समाप्ति निकट भूत में या तत्काल ही सूचित होती है।

जैसे-

- मैंने आम खाया है।
- मैं चला हूँ।
- वे अभी आए हैं।
- बच्चा सो गया है।
- प्रभा बस अभी गयी है।
- वृक्ष गिर गया है।
- वह पिछले सप्ताह गाँव आया है।
- विद्यालय घण्टे भर पहले बन्द हुआ है।
- वे घर आ गए हैं।
- अनुराधा अभी घर गई है।
- बहुत गर्मी हो गई है।
- मैंने विचार किया है।





3. पूर्ण भूत -

क्रिया के उस रूप को पूर्ण भूत कहते हैं, जिससे क्रिया की समाप्ति के समय का स्पष्ट बोध होता है कि क्रिया को समाप्त हुए काफी समय बीता है।

जैसे -

- उसने मुरारी को मारा था।
- वह आया था।
- व्यास जी ने महाभारत रचा था।
- वर्षा न होने से खेती सूख गई थी।
- पुलिस के आने से पहले ही लुटेरे भाग चुके थे।
- अब पछताए होत का, चिडियाँ चुग गई खेत।
- मैंने दो वर्ष पहले बी. ए. किया था।
- शिवशंकर ने 2009 में यह बच्चा गोद लिया।
- इस मकान में आप कब आए थे।
- अपराधी तो दुर्घटना में मर चुका था।
- ओलों से फसल नष्ट हो चुकी थी।
- सभी सहेलियाँ घरों को जा चुकी थीं।

4. अपूर्ण भूत -

इससे यह ज्ञात होता है कि क्रिया भूतकाल में हो रहा थी, किंतु उसकी समाप्ति का पता नहीं चलता।

जैसे-

- सुरेश गीत गा रहा था।
- गीता सो रही थी।
- वह सोता था।
- चुनावी रंग निरन्तर बढ़ रहा था।
- रोम जलता था नीरों बंशी बजाता था।
- वे अंधेरे में ही आगे बढ़ रहे थे।
- अँग्रेज झाँसी को हड्डपने का षड्यंत्र रच रहे थे।
- सीमा पर हमारे जवान दिन-रात पहरा देते थे।
- हम बचपन में इस पार्क में खेला करते थे।
- बहुत पहले पृथ्वी पर डायनासोर रहा करते थे।
- वह प्रायः शुक्रवार को आता था।



- चिड़ियाँ इन्हीं झाड़ियों में चहकती थीं।
- वह हर महीने उधार चुकाती थी।
- झारना मंदगति से बह रहा था।
- शत्रु घात लगाकर आगे बढ़ रहा था।
- बेचारी गाय सड़क पर दम तोड़ रही थी।
- डाकू धीरे-धीरे आगे बढ़ते आ रहे थे।
- पुजारी रोज शाम को आरती किया करता था।
- याद है, हम दोनों नदी किनारे घण्टों घूमा करते थे।

5. संदिग्ध भूत -

इसमें यह संदेश बना रहता है कि भूतकाल में कार्य पूरा हुआ था या नहीं।

जैसे-

- तुमने गाया होगा।
- तू गाया होगा।
- वह चला गया होगा।
- किसान काम बंद करके घर जा चुके होंगे।
- लगता है वह ठीक समय पर पहुँच गया होगा।
- अवश्य ही मरने से पहले, उसने मुझे याद किया होगा।
- शायद सभी छात्र, तब तक जा चुके होंगे।

6. हेतुहेतुमज्जूत -

इससे यह पता चलता है कि क्रिया भूतकाल में होनेवाली थी, पर किसी कारण(reason) न हो सकी।

जैसे –

- मैं आता।
- तू जाता।
- वह खाता।
- मैं घर पर होता, तो वह अवश्य रुकती।
- दिव्या प्रथम आई होती, तो उसे पुरस्कार मिलता।
- बाढ़ आ गई होती, तो सारा गाँव डूब जाता।
- यदि समय पर चिकित्सा मिल जाती है, तो अनेक घायलों की जानें बच जातीं।
- आतंकवादी सफल हो गए होते, तो सैकड़ों निर्दोष लोगों मारे जाते।
- सही निर्णय लिया गया होता, तो कश्मीर की समस्या उसी समय सुलझ गई होती।



भविष्यत काल

भविष्य में होने वाली क्रिया को भविष्यत काल की क्रिया कहते हैं।

जैसे –

वह कल घर जाएगा।

भविष्यत काल के तीन भेद हैं –

1. सामान्य भविष्य
2. संभाव्य भविष्य
3. हेतुहेतुमद् भविष्य।

1. सामान्य भविष्य –

इससे यह प्रकट होता है कि क्रिया सामान्यतः भविष्य में होगी।

जैसे-

- मैं पढ़ूँगा।
- वह जाएगा।
- वह आएगा।
- हम पढ़ेंगे।
- दालें और सस्ती होंगी।
- उसका विवाह होगा।
- भवेश पढ़ेगा।
- बच्चे खेलेंगे।
- मनीषा पढ़ेगी।
- लड़कियाँ नाचेंगी।
- मैं लिखूँगा।
- मैं लिखूँगी।

2. संभाव्य भविष्य –

जिससे भविष्य में किसी कार्य के होने की संभावना हो।

जैसे –

- संभव है।
- रमेश कल आया।
- लगता है वे आएँगे।
- सम्भव है पीयूष वहाँ मिले।
- हो सकता है भारत फिर विश्व गुरु हो जाए।



- सम्भावना है कि फसल अच्छी होगी।
- सम्भव है, वर्षा आए।
- लगता है, मजदूर न मिले।
- हो सकता है, हम तुम्हें स्टेशन पर मिलें।
- लगता है, सभी कार्यकर्ता चैराहे पर एकत्र हों।
- सम्भावना है, मैं उससे मिलने जाऊँ।
- लगता है कि तुम सच बोलो।

3. हेतुहेतुमद् भविष्य –

इसमें एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर करता है।

जैसे –

- वह आए तो मैं जाऊँ।
- वह कमाए तो खाए।





क्रिया

हिंदी व्याकरण में चार विकारी शब्द होते हैं संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया। क्रिया को अंग्रेजी में Action Word कहते हैं। क्रिया का अर्थ होता है करना। जो भी काम हम करते हैं, वो क्रिया कहलाती है।

क्रिया की परिभाषा

जिस शब्द के द्वारा किसी क्रिया के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं।

or

वाक्य में प्रयुक्त जिस शब्द अथवा शब्द समूह के द्वारा किसी कार्य के होने अथवा उसकी पूर्णता या अपूर्णता का बोध होता हो, उसे 'क्रिया' कहते हैं।

जैसे: पढ़ना, लिखना, खाना, पीना, खेलना, सोना आदि।

क्रिया के उदाहरण -

- विक्रम पढ़ रहा है।
- शास्त्री जी भारत के प्रधानमंत्री थे।
- महेश क्रिकेट खेल रहा है।
- सुरेश खेल रहा है।
- राजा राम पुस्तक पढ़ रहा है।
- बच्चे क्रिकेट खेल रहे हैं।
- लड़कियाँ गाना गा रही हैं।
- गीता चाय बना रही है।
- महेश पत्र लिखता है।
- उसी ने बोला था।
- राम ही सदा लिखता है।

क्रिया के भेद -

क्रिया का वर्गीकरण तीन आधार पर किया गया है- कर्म के आधार पर, प्रयोग एवं संरचना के आधार पर तथा काल के आधार पर।

- कर्म के आधार पर
- प्रयोग एवं संरचना के आधार पर
- काल के आधार पर क्रिया का वर्गीकरण





कर्म के आधार पर क्रिया के भेद

1. सकर्मक क्रिया
2. अकर्मक क्रिया

सकर्मक क्रिया

वे क्रियाएँ जिनका प्रभाव वाक्य में प्रयुक्त कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं। सकर्मक क्रिया का अर्थ कर्म के साथ में होता है, अर्थात् सकर्मक क्रिया में कर्म पाया जाता है। सकर्मक क्रिया दो प्रकार की होती है।

सकर्मक शब्द 'स' और 'कर्मक' से मिलकर बना है, जहाँ 'स' उपसर्ग का अर्थ 'साथ में' तथा 'कर्मक' का अर्थ 'कर्म के' होता है।

सकर्मक क्रिया के उदाहरण -

1. गीता चाय बना रही है।
2. महेश पत्र लिखता है।
3. हमने एक नया मकान बनाया।
4. वह मुझे अपना भाई मानती है।
5. राधा खाना बनाती है।
6. रमेश सामान लाता है।
7. रवि ने आम खरीदे।
8. हम सब से शरबत पीया।

अकर्मक क्रिया

वे क्रियाएँ जिनका प्रभाव वाक्य में प्रयुक्त कर्ता पर पड़ता है उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं। अकर्मक क्रिया का अर्थ कर्म के बिना होता है, अर्थात् अकर्मक क्रिया के साथ कर्म प्रयुक्त नहीं होता है।

अकर्मक शब्द अ और कर्मक से मिलकर बना है, जहाँ अ उपसर्ग का अर्थ बिना तथा कर्मक का अर्थ कर्म के होता है।

अकर्मक क्रिया के उदाहरण -

- रमेश दौड़ रहा है।
- मैं एक अध्यापक था।
- वह मेरा मित्र है।
- मैं रात भर नहीं सोया।
- मुकेश बैठा है।
- बच्चा रो रहा है।

रचना की दृष्टि से क्रिया के भेद :

1. सामान्य क्रिया
2. सहायक क्रिया



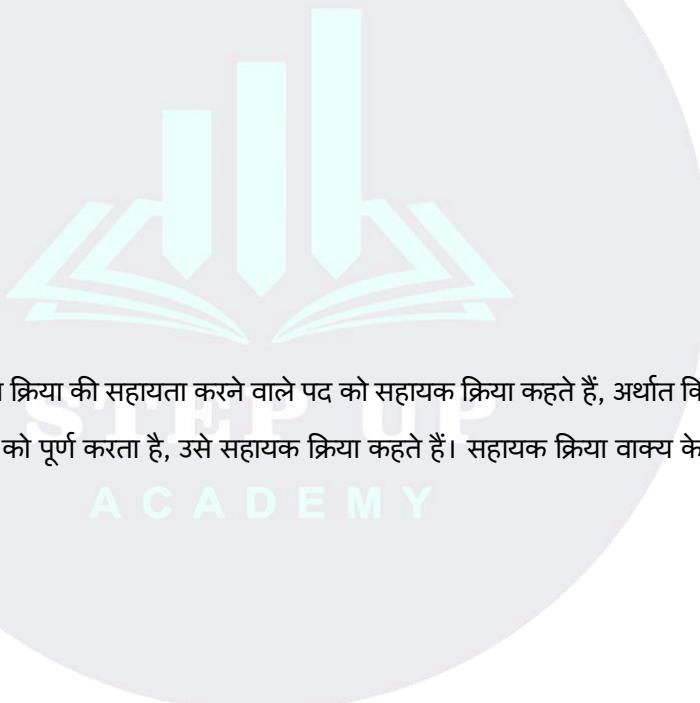
3. संयुक्त क्रिया
4. सजातीय क्रिया
5. कृदंत क्रिया
6. प्रेरणार्थक क्रिया
7. पूर्वकालीन क्रिया
8. नाम धातु क्रिया
9. नामिक क्रिया
10. विधि क्रिया

सामान्य क्रिया

सामान्य क्रिया – यह क्रिया का सामान्य रूप होता है, जिसमें एक कार्य एवं एक ही क्रिया पद प्रयुक्त किया गया हो तो, उसे सामान्य क्रिया कहते हैं।

सामान्य क्रिया के उदाहरण

- रवि पुस्तक पढ़ता है।
- श्याम आम खाता है।
- श्याम जाता है।



सहायक क्रिया

सहायक क्रिया – किसी वाक्य में मुख्य क्रिया की सहायता करने वाले पद को सहायक क्रिया कहते हैं, अर्थात् किसी वाक्य में वह पद जो मुख्य क्रिया के साथ लगकर वाक्य को पूर्ण करता है, उसे सहायक क्रिया कहते हैं। सहायक क्रिया वाक्य के काल का परिचायक होती है।

सहायक क्रिया के उदाहरण

- रवि पढ़ता है।
- मैंने पुस्तक पढ़ ली है।
- विजय ने अपना खाना मेज पर रख दिया है।

संयुक्त क्रिया

संयुक्त क्रिया – वह क्रिया जो दो अलग-अलग क्रियाओं के योग से बनती है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं।

संयुक्त क्रिया के उदाहरण

- रजनी ने खाना खा लिया।
- मैंने पुस्तक पढ़ डाली है।
- शंकर ने खाना बना लिया।



संयुक्त क्रिया के भेद

- आरंभबोधक** :- जिस संयुक्त क्रिया से क्रिया के आरंभ होने का बोध होता है, उसे 'आरंभबोधक संयुक्त क्रिया' कहते हैं।
जैसे - वह पढ़ने लगा, पानी बरसने लगा, राम खेलने लगा।
- समाप्तिबोधक** :- जिस संयुक्त क्रिया से मुख्य क्रिया की पूर्णता, व्यापार की समाप्ति का बोध हो, वह 'समाप्तिबोधक संयुक्त क्रिया' है।
जैसे - वह खा चुका है, वह पढ़ चुका है। धातु के आगे 'चुकना' जोड़ने से समाप्तिबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।
- अवकाशबोधक** :- जिस क्रिया को निष्पन्न करने के लिए अवकाश का बोध हो, वह 'अवकाशबोधक संयुक्त क्रिया' कहते हैं।
जैसे - वह मुश्किल से सो पाया, जाने न पाया।
- अनुमतिबोधक** :- जिससे कार्य करने की अनुमति दिए जाने का बोध हो, वह 'अनुमतिबोधक संयुक्त क्रिया' है।
जैसे - मुझे जाने दो; मुझे बोलने दो। यह क्रिया 'देना' धातु के योग से बनती है।
- नित्यताबोधक** :- जिससे कार्य की नित्यता, उसके बंद न होने का भाव प्रकट हो, वह 'नित्यताबोधक संयुक्त क्रिया' है।
जैसे - हवा चल रही है; पेड़ बढ़ता गया, तोता पढ़ता रहा। मुख्य क्रिया के आगे 'जाना' या 'रहना' जोड़ने से नित्यताबोधक संयुक्त क्रिया बनती है।
- आवश्यकताबोधक** :- जिससे कार्य की आवश्यकता या कर्तव्य का बोध हो, वह 'आवश्यकताबोधक संयुक्त क्रिया' है।
जैसे - यह काम मुझे करना पड़ता है; तुम्हें यह काम करना चाहिए। साधारण क्रिया के साथ 'पड़ना', 'होना' या 'चाहिए' क्रियाओं को जोड़ने से आवश्यकताबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।
- निश्चयबोधक** :- जिस संयुक्त क्रिया से मुख्य क्रिया के व्यापार की निश्चयता का बोध हो, उसे 'निश्चयबोधक संयुक्त क्रिया' कहते हैं।
जैसे - वह बीच ही में बोल उठा, उसने कहा - मैं मार बैठूँगा, वह गिर पड़ा, अब दे ही डालो। इस प्रकार की क्रियाओं में पूर्णता और नित्यता का भाव वर्तमान है।
- इच्छाबोधक** :- इससे क्रिया के करने की इच्छा प्रकट होती है।
जैसे - वह घर आना चाहता है, मैं खाना चाहता हूँ। क्रिया के साधारण रूप में 'चाहना' क्रिया जोड़ने से 'इच्छाबोधक संयुक्त क्रियाएँ' बनती हैं।
- अभ्यासबोधक** :- इससे क्रिया के करने के अभ्यास का बोध होता है। सामान्य भूतकाल की क्रिया में 'करना' क्रिया लगाने से अभ्यासबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।
जैसे - यह पढ़ा करता है, तुम लिखा करते हो, मैं खेला करता हूँ।
- शक्तिबोधक** :- इससे कार्य करने की शक्ति का बोध होता है।
जैसे - मैं चल सकता हूँ, वह बोल सकता है। इसमें 'सकना' क्रिया जोड़ी जाती है।
- पुनरुक्त संयुक्त क्रिया** :- जब दो समानार्थक अथवा समान ध्वनि वाली क्रियाओं का संयोग होता है, तब उन्हें 'पुनरुक्त संयुक्त क्रिया' कहते हैं।
जैसे - वह पढ़ा-लिखा करता है, वह यहाँ प्रायः आया-जाया करता है, पड़ोसियों से बराबर मिलते-जुलते रहो।





तत्सम-तद्व शब्द

‘तत्’ तथा ‘सम’ के मेल से तत्सम शब्द बना है। ‘तत्’ का अर्थ होता है-‘उसके’ तथा ‘सम’ का अर्थ है ‘समान’। अर्थात् उसके समान, ज्यों का त्यों। अतः किसी भाषा में प्रयुक्त उसकी मूल भाषा के शब्द जब ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।

तत्सम शब्द की परिभाषा :-

“हिन्दी की मूल भाषा संस्कृत है, अतः संस्कृत भाषा के जो शब्द हिन्दी भाषा में अपरिवर्तित रूप में ज्यों के त्यों प्रयुक्त हो रहे हैं,

हिन्दी भाषा के तत्सम शब्द कहलाते हैं।”

जैसे- अग्नि, आग्र, कर्ण, दुर्ग, कर्म, कृष्ण।

तद्व शब्द

तद्व शब्द संस्कृत विकास से उत्पन्न होने वाला शब्द है। तद्व शब्द दो बहुत ही महत्वपूर्ण शब्दों से मिलकर बना हुआ है। तद्व शब्द तत् और भव शब्द के मिलाप से बना हुआ है। जहां तत् शब्द का अर्थ उससे और भव शब्द का अर्थ उत्पन्न होता है, अर्थात् तद्व शब्द का शाब्दिक अर्थ किसी अन्य प्राचीन शब्द से उत्पन्न हुआ शब्द है।

संस्कृत भाषा के शब्दों में निरंतर धीरे-धीरे परिवर्तन आता गया और संस्कृत भाषा के नए-नए शब्द प्रचलित होने लगे। तद्व शब्द संस्कृत भाषा की ओर संकेत करता है, अर्थात् तद्व शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से ही हुई है।

तद्व शब्द की परिभाषा

ऐसे शब्द जिन्हें संस्कृत भाषा से उठाकर किसी अन्य भाषा में प्रयुक्त कर लिया जाता है और इन शब्दों के ध्वनि में कुछ गंभीर परिवर्तन नहीं होता, परंतु इन शब्दों की लेखनी बदल जाती है, ऐसे शब्द तद्व शब्द कहलाते हैं।

तद्व शब्द के उदाहरण

तद्व शब्द	प्राचीन शब्द
आधा	अर्ध
अनजान	अज्ञान
आसिस	आशीष
अच्छर	अक्षर
अंगुली	अंगुलि
उल्लू	उलूक





तत्सम तद्वाव शब्द को पहचानने के नियम

1. तत्सम शब्दों के पीछे 'क्ष' वर्ण का प्रयोग होता है और तद्वाव शब्दों के पीछे 'ख' या 'छ' शब्द का प्रयोग होता है।

जैसे -

अक्षर = अक्षर, आखर

पक्षी = पंछी

2. तत्सम शब्दों में 'र' की मात्रा का प्रयोग होता है।

जैसे -

अमृत = अमीर

आम्र = आम

3. तत्सम शब्दों में 'ऋ' की मात्रा का उपयोग होता है।

जैसे -

4. तत्सम शब्दों में 'श्र' का प्रयोग होता है और तद्वाव शब्दों में 'स' का प्रयोग हो जाता है।

जैसे -

धन्नश्रेष्ठी = धन्नासेठी

5. तत्सम शब्दों में 'व' का प्रयोग होता है और तद्वाव शब्दों में 'ब' का प्रयोग होता है।

जैसे -

वन = बन

6. तत्सम शब्दों में 'ष' वर्ण का प्रयोग होता है।

जैसे -

कृषक = किसान

7. तत्सम शब्दों में 'श' का प्रयोग होता है और तद्वाव शब्दों में 'स' का प्रयोग हो जाता है।

जैसे -

दिपशलाका = दिया सलाई

तत्सम	तद्वाव	तत्सम	तद्वाव
चन्द्र	चाँद	ग्राहक	गाहक
मयूर	मोर	विद्युत	बिजली
वधू	बहू	नृत्य	नाच
चर्म	चमड़ा	गौ	गाय
ग्रीष्म	गर्मी	अज्ञानी	अज्ञानी
अकस्मात्	अचानक	आग्नि	आग
आलस्य	आलस	उज्ज्वल	उजला
कर्म	काम	नवीन	नया



तत्सम	तद्वाव	तत्सम	तद्वाव
स्वर्ण	सोना	शत	सौ
श्रंगार	सिंगार	सर्प	साँप
कूप	कुआँ	कोकिल	कोयल
मृत्यु	मौत	सप्त	सात
घृत	घी	दधि	दही
दुर्घ	दूध	धूम्र	धुआँ
दन्त	दाँत	छिद्र	छेद
अमूल्य	अमोल	आश्वर्य	अचरज
अश्रु	आँसू	कर्ण	कान
कृषक	किसान	ग्राम	गाँव
हस्ती	हाथी	आम्र	आम
मक्षिका	मक्खी	शर्कर	शक्कर
सत्य	सच	हस्त	हाथ
हरित	हरा	शिर	सिर
गृह	घर	चूर्ण	चूरन
कुम्भकार	कुम्हार	कटु	कड़वा
नम्न	नंगा	भगिनी	बहिन
वार्ता	बात	भगिनी	बहिन
मृत्तिका	मिट्टी	पुत्र	पूत
कपाट	किवाड़	छत्र	छाता
धैर्य	धीरज	कर्ण	कान

अ से तत्सम शब्द -

तत्सम-तद्वाव

अंक - आँक

अंगरक्षक - अँगरखा

अंगुलि - ऊँगली

अंगुष्ठ - अंगूठा

अंचल - आँचल

अंजलि - अँजुरी

अंध - अँधा

अकस्मात - अचानक

अकार्य - अकाज

अक्षत - अच्छत

अक्षर - अच्छर / आखर

अक्षि - आँख

अक्षोट - अखरोट

अगणित - अनगिनत

अगम्य - अगम

अग्नि - आग

अग्र - आगे

अग्रणी - अगाड़ी / अगुवा

अच्युत - अचूक

अज्ञान - अजान / अनजाना

अद्वालिका - अटारी

अद्य - आज

अन्धकार - अँधेरा

अन्न - अनाज

अमावस्या - अमावस



अमूल्य – अमोल

अमृत – अमिय

अम्बा – अम्मा

अम्लिका – इमली

अर्क – आक

अर्द्ध – आधा

अर्पण – अरपन

अवगुण – औगुण

अवतार – औतार

अश्रु – आँसू

अष्ट – आठ

अष्टादश – अठारह

आ से तत्सम शब्द –

तत्सम-तद्वच

आदित्यवार – इतवार

आभीर – अहीर

आमलक – आँवला

आम्र – आम

आम्रचूर्ण – अमचूर

आरात्रिका – आरती

आलस्य – आलस

आशीष – असीस

आश्वर्य – अचरज

आश्रय – आसरा

आश्विन – आसोज

इ, ई से तत्सम शब्द –

तत्सम-तद्वच

इक्षु – ईख

इषिका – ईंट

ईप्सा – इच्छा

ईर्ष्या – इरषा

उ, ऊ, ऋ से तत्सम शब्द –

तत्सम-तद्वच

उच्च – ऊँचा

उच्छ्वास – उसास

उज्ज्वल – उजला

उत्साह – उछाह

उदघाटन – उघाड़ना

उपरि – ऊपर

उपालम्भ – उलाहना

उलूक – उल्लू

उलूखल – ओखली

उष्ट – ऊँट

उष्ण – उमस

ऋक्ष – रीछ

ए, ऐ, ओ, औ से तत्सम शब्द –

तत्सम-तद्वच

एकत्र – इकट्ठा

एकादश – ग्यारह

ओष्ठ – ओँठ

क से तत्सम शब्द –

तत्सम-तद्वच

कंकण – कंगन

कर्छप – कछुआ

कज्जल – काजल

कटु – कडवा

कण्टक – काँटा

कदली – केला

कन्दुक – गेंद

कपाट – किवाड़

कपोत – कबूतर

कर्ण – कान

कर्तव्य – करतब

कर्पट – कपड़ा

कर्पूर – कपूर

कर्म – काम

कल्लोल – कलोल

काक – काग / कौआ

कार्तिक – कातिक

कार्य – काज / कारज

काष्ठ – काठ

कास – खाँसी

किंचित – कुछ

किरण – किरन

कीट – कीड़ा

कीर्ति – कीरति

कुंभकार – कुम्हार

कुक्कुर – कुत्ता

कुक्षि – कोख

कुपुत्र – कपूत

कुब्ज – कुबड़ा

कुमार – कुआँरा

कुमारी – कुँवारी

कुष्ठ – कोढ़

कूप – कुँआ

कृपा – किरपा

कृषक – किसान

कृष्ण – कान्हा / किसन

केरव्त – केवट

कोकिला – कोयल

कोटि – करोड़

कोण – कोना

कोषिका – कोठी

क्लेश – कलेश

क्ष से तत्सम शब्द –

तत्सम-तद्वच

क्षण – छिन

क्षत – छत



क्षति – छति

क्षत्रिय – खत्री

क्षार – खार

क्षीण – छीन

क्षीर – खीर

क्षेत्र – खेत

ख से तत्सम शब्द –**तत्सम-तद्वाव**

खनि – खान

ग से तत्सम शब्द –**तत्सम-तद्वाव**

गम्भीर – गहरा

गर्जर – गाजर

गर्त – गड्ढा

गर्दभ – गधा

गर्भिणी – गाभिन

गर्मी – घाम

गहन – घना

गात्र – गात

गायक – गवैया

गुण – गुन

गुम्फन – गूंथना

गुहा – गुफा

गृध – गीध

गृह – घर

गृहिणी – घरनी

गौ – गाय

गोधूम – गेंहू

गोपालक – ग्वाल

गोमय – गोबर

गोस्वामी – गुसाँई

गौत्र – गोत

गौर – गोरा

ग्रन्थि – गाँठ

ग्रहण – गहन

ग्राम – गाँव

ग्रामीण – गँवार

ग्राहक – गाहक

ग्रीवा – गर्दन

ग्रीष्म – गर्मी

चुंबन – चूमना

चूर्ण – चून / चूरन

चैत्र – चैत

चौर – चोर

छ से तत्सम शब्द –**तत्सम-तद्वाव**

छत्र – छाता

छाया – छाँह

छित्र – छेद

ज, झ से तत्सम शब्द –**तत्सम-तद्वाव**

जंघा – जाँघ

जन्म – जनम

जव – जौ

जामाता – जँवाई

जिह्वा – जीभ

जीर्ण – झीना

ज्येष्ठ – जेठ

ज्योति – जोत

झरण – झर

त से तत्सम शब्द –**तत्सम-तद्वाव**

तड़ाग – तालाब

तण्डुल – तन्दुल

तपस्वी – तपसी

तप्त – तपन

ताम्बूलिक – तमोली

ताम्र – ताँबा

तिथिवार – त्यौहार

तिलक – टीका

तीक्ष्ण – तीखा

तीर्थ – तीरथ

घ से तत्सम शब्द –**तत्सम-तद्वाव**

घंटिका – घंटी

घट – घडा

घटिका – घड़ी

घृणा – घिन

घृत – घी

घोटक – घोडा

च से तत्सम शब्द –**तत्सम-तद्वाव**

चंचु – चौँच

चंद्र – चाँद

चंद्रिका – चाँदनी

चक्र – चक्कर / चाक

चतुर्थ – चौथ

चतुर्दश – चौदह

चतुर्दिक – चहुंओर

चतुर्विंश – चौबीस

चतुष्कोण – चौकोर

चतुष्पद – चौपाया

चर्म – चमडा / चमड़ी / चाम

चर्मकार – चमार

चर्वण – चबाना

चिक्कण – चिकना

चित्रक – चीता

चित्रकार – चितेरा



तुंद – तोंद
 तृण – तिनका
 तैल – तेल
 त्रय – तीन
 त्रयोदश – तेरह
 त्वरित – तुरंत / तुरत

द से तत्सम शब्द –
तत्सम-तद्वाव
 दंड – डंडा
 दंत – दाँत
 दंतधावन – दातुन
 दक्ष – दक्ष
 दक्षिण – दाहिना
 दद्रु – दाद
 दधि – दही
 दाह – डाह
 दिशान्तर – दिसावर
 दीप – दीया
 दीपशलाका – दीयासलाई
 दीपावली – दिवाली
 दुःख – दुख
 दुग्ध – दूध
 दुर्बल – दुबला
 दुर्लभ – दूल्हा
 दूर्वा – दूब
 दृष्टि – दीठि
 दौहित्र – दोहिता
 द्वादश – बारह
 द्विगुणा – दुगुना
 द्वितीय – दूजा
 द्विपट – दुपट्टा
 द्विप्रहरी – दुपहरी
 द्विवर – देवर

ध से तत्सम शब्द –
तत्सम-तद्वाव
 धनश्रेष्ठी – धन्नासेठ
 धरणी – धरती
 धरित्री – धरती
 धर्तूर – धतूरा
 धर्म – धरम
 धान्य – धान
 धूम – धुँआ
 धूलि – धूल
 धृष्ट – ढीठ
 धैर्य – धीरज

न से तत्सम शब्द –
तत्सम-तद्वाव
 नकुल – नेवला
 नक्षत्र – नखत
 नग्न – नंगा
 नप्तृ – नाती
 नम्र – नरम
 नयन – नैन
 नव – नौ
 नवीन – नया
 नापित – नाई
 नारिकेल – नारियल
 नासिका – नाक
 निद्रा – नींद
 निपुण – निपुन
 निम्ब – नीम
 निम्बुक – नींबू
 निर्वाह – निबाह
 निशि – निसि
 निषुर – निन्हर
 नृत्य – नाच
 नौका – नाव

प से तत्सम शब्द –
तत्सम-तद्वाव
 पंक्ति – पंगत
 पंच – पाँच
 पंचदश – पन्द्रह
 पक्व – पका / पक्का
 पक्वान्न – पक्वान
 पक्ष – पंख
 पक्षी – पंछी
 पट्टिका – पाटी
 पत्र – पत्ता
 पथ – पंथ
 पद्म – पदम
 परमार्थ – परमारथ
 परशु – फरसा
 परश्वः – परसों
 परीक्षा – परख
 पर्षट – पापड
 पर्यंक – पलंग
 पवन – पौन
 पश्चाताप – पछतावा
 पाद – पैर
 पानीय – पानी
 पाश – फन्दा
 पाषाण – पाहन
 पितृ – पितर / पिता
 पितृश्वसा – बुआ
 पिपासा – प्यास
 पिष्पल – पीपल
 पीत – पीला
 पुच्छ – पूँछ
 पुत्र – पूत
 पुत्रवधू – पतोहू
 पुष्कर – पोखर
 पुष्प – पुहुप



पूर्ण – पूरा
 पूर्णिमा – पूनम
 पूर्व – पूरब
 पृष्ठ – पीठ
 पौत्र – पोता
 पौष – पूस
 प्रकट – प्रगट
 प्रतिच्छया – परछाई
 प्रतिवासी – पड़ोसी
 प्रत्यभिज्ञान – पहचान
 प्रस्तर – पत्थर
 प्रस्वेद – पसीना
 प्रहर – पहर
 प्रहरी – पहरेदार
 प्रहेलिका – पहेली
 प्रिय – पिय
 फणी – फण
 फाल्गुन – फागुन

ब से तत्सम शब्द –
तत्सम-तद्वच
 बंध – बांध
 बंध्या – बांझ
 बधिर – बहरा
 बर्कर – बकरा
 बलिवर्द – बैल
 बालुका – बालू
 बिंदु – बूंद
 बुभुक्षित – भूखा

भ से तत्सम शब्द –
तत्सम-तद्वच
 भक्त – भगत
 भगिनी – बहन
 भद्र – भला

भल्लुक – भालू
 भस्म – भसम
 भागिनेय – भानजा
 भाद्रपद – भादो
 भिक्षा – भीख
 भिक्षुक – भिखारी
 भुजा – बाँह
 भत्जा – भतीजा
 भ्रमर – भौंरा
 भ्राता – भाई
 भ्रातृजा – भतीजी
 भ्रातृजाया – भौजाई
 भू – भौं

म से तत्सम शब्द –
तत्सम-तद्वच
 मकर – मगर
 मक्षिका – मक्खी
 मणिकार – मणिहार
 मत्स्य – मछली
 मदोन्मत्त – मतवाला
 मद्य – मद
 मनीचिका – मिर्च
 मनुष्य – मानुष
 मयूर – मोर
 मरीच – मिर्च
 मर्कटी – मकड़ी
 मल – मैल
 मशक – मच्छर
 मशकहरी – मसहरी
 मश्रु – मूछ
 मस्तक – माथा
 महिषी – भैंस
 मातुल – मामा
 मातृ – माता

मार्ग – मारग
 मास – माह
 मित्र – मीत
 मिष्ट – मीठ
 मिष्टान्न – मिठाई
 मुख – मुँह
 मुषल – मूसल
 मुष्टि – मुट्ठी
 मूत्र – मूत
 मूल्य – मोल
 मूषक – मूसा
 मृग – मिरग
 मृतघट – मरघट
 मृत्तिका – मिट्टी
 मृत्यु – मौत
 मेघ – मेह
 मौकितिक – मोती

य से तत्सम शब्द –
तत्सम-तद्वच
 यजमान – जजमान
 यत्न – जतन
 यमुना – जमुना
 यश – जस
 यशोदा – जसोदा
 युक्ति – जुगत
 युवा – जवान
 योग – जोग
 योगी – जोगी
 यौवन – जोबन

र से तत्सम शब्द –
तत्सम-तद्वच
 रक्षा – राखी
 रज्जु – रस्सी



राजपुत्र – राजपूत

वर्ण – बरन

शिला – सिल

रात्रि – रात

वर्ष – बरस

शीतल – सीतल

राशि – रास

वर्षा – बरसात

शीर्ष – सीस

रिक्त – रीता

वल्स – बछड़ा

शुक – सुआ

रुदन – रोना

वाणी – बानी

शुण्ड – सूंड

रुष्ट – रुठा

वानर – बंदर

शुष्क – सूखा

ल से तत्सम शब्द –

तत्सम-तद्वाव

लक्ष – लाख

विंश – बीस

शमशान – मसान

लक्षण – लक्खन

विकार – बिगड़

शमश्रु – मूँछ

लक्ष्मण – लखन

विद्युत – बिजली

शमषान – समसान

लक्ष्मी – लछमी

विवाह – व्याह

श्यामल – सांवला

लज्जा – लाज

विष्टा – बीट

श्यालस – साला

लवंग – लौंग

वीणा – बीना

श्याली – साली

लवण – नौन / नून

वीरवर्णिनी – बीरबानी

श्रावण – सावन

लवणता – लुनाई

वृक्ष – बिरख

श्रृंग – सींग

लेपन – लीपना

वृद्ध – बुद्धा / बूढ़ा

श्रृंगार – सिंगार

लोक – लोग

वृश्चिक – बिच्छू

श्रृगाल – सियार

लोमशा – लोमड़ी

वृषभ – बैल

श्रेष्ठी – सेठ

लौह – लोहा

वैर – बैर

श्वश्रु – सास

लौहकार – लुहार

व्यथा – विथा

श्वसुर – ससुर

व से तत्सम शब्द –

तत्सम-तद्वाव

वंश – बाँस

शकट – छकड़ा

स से तत्सम शब्द –

वंशी – बाँसुरी

शत – सौ

तत्सम-तद्वाव

वक – बगुला

शप्तशती – सतसई

संधि – सेंध

वचन – बचन

शय्या – सेज

सत्य – सच

वज्रांग – बजरंग

शर्करा – शक्कर

सन्ध्या – साँझ

वट – बड़

शलाका – सलाई

सपल्नी – सौत

वणिक – बनिया

शाक – साग

सप्त – सात

वत्स – बच्चा / बछड़ा

श्राप – शाप

सरोवर – सरवर

वधू – बहू

शिक्षा – सीख

सर्प – साँप

वरयात्रा – बरात

शिर – सिर

सर्सप – सरसों



साक्षी – साखी	स्पर्श – परस	हरिण – हिरन
सूची – सुई	स्फोटक – फोड़ा	हरित – हरा
सूत्र – सूत	स्वजन – साजन	हरिद्रा – हल्दी
सूर्य – सूरज	स्वप्न – सपना	हर्ष – हरख
सौभाग्य – सुहाग	स्वर्ण – सोना	हस्त – हाथ
स्कन्ध – कंधा	स्वर्णकार – सुनार	हस्ति – हाथी
स्तन – थन	स्वसुर – ससुर	हस्तिनी – हथिनी
स्तम्भ – खम्भा	ह से तत्सम शब्द –	हास्य – हँसी
स्थल – थल	तत्सम-तद्वाव	हिन्दोला – हिण्डोला
स्थान – थान	हंडी – हांडी	
स्थिर – धिर	हट्ट – हाट	
स्नेह – नेह		





पदबंध

पदबंध की परिभाषा

वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाता है।

पद :- वाक्य से अलग रहने पर 'शब्द' और वाक्य में प्रयुक्त हो जाने पर शब्द 'पद' कहलाते हैं।

पदबंध :- जब दो या अधिक (शब्द) पद नियत क्रम और निश्चित अर्थ में किसी पद का कार्य करते हैं तो उन्हें पदबंध कहते हैं।

कई पदों के योग से बने वाक्यांशों को, जो एक ही पद का काम करता है, 'पदबंध' कहते हैं।

डॉ. हरदेव बाहरी ने 'पदबन्ध' की परिभाषा इस प्रकार दी है- वाक्य के उस भाग को, जिसमें एक से अधिक पद परस्पर सम्बद्ध होकर अर्थ तो देते हैं, किन्तु पूरा अर्थ नहीं देते- पदबन्ध या वाक्यांश कहते हैं।

जैसे -

- सबसे तेज दौड़ने वाला छात्र जीत गया।
- यह लड़की अत्यंत सुशील और परिश्रमी है।
- नदी बहती चली जा रही है।
- नदी कल-कल करती हुई बह रही थी।

उपर्युक्त वाक्यों में काला छपे शब्द पदबंध हैं। पहले वाक्य के 'सबसे तेज दौड़ने वाला छात्र' में पाँच पद हैं, किन्तु वे मिलकर एक ही पद अर्थात् संज्ञा का कार्य कर रहे हैं। दूसरे वाक्य के 'अत्यंत सुशील और परिश्रमी' में भी चार पद हैं, किन्तु वे मिलकर एक ही पद अर्थात् विशेषण का कार्य कर रहे हैं।

तीसरे वाक्य के 'बहती चली जा रही है' में पाँच पद हैं किन्तु वे मिलकर एक ही पद अर्थात् क्रिया का काम कर रहे हैं। चौथे वाक्य के 'कल-कल करती हुई' में तीन पद हैं, किन्तु वे मिलकर एक ही पद अर्थात् क्रिया विशेषण का काम कर रहे हैं।

इस प्रकार रचना की वृष्टि से पदबन्ध में तीन बातें आवश्यक हैं- एक तो यह कि इसमें एक से अधिक पद होते हैं। दूसरे ये पद इस तरह से सम्बद्ध होते हैं कि उनसे एक इकाई बन जाती है। तीसरे, पदबन्ध किसी वाक्य का अंश होता है।

अंगरेजी में इसे phrase कहते हैं। इसका मुख्य कार्य वाक्य को स्पष्ट, सार्थक और प्रभावकारी बनाना है। शब्द-लाघव के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है- खास तौर से समास, मुहावरों और कहावतों में। ये पदबंध पूरे वाक्य नहीं होते, बल्कि वाक्य के टुकड़े हैं, किन्तु निश्चित अर्थ और क्रम के परिचायक हैं। हिंदी व्याकरण में इनपर अभी स्वतन्त्र अध्ययन नहीं हुआ है।

पदबंध के भेद

मुख्य पद के आधार पर पदबंध के पाँच प्रकार होते हैं-

- संज्ञा-पदबंध
- विशेषण-पदबंध





- सर्वनाम पदबंध
- क्रिया पदबंध
- अव्यय पदबंध

1. संज्ञा-पदबंध

वह पदबंध जो वाक्य में संज्ञा का कार्य करे, संज्ञा पदबंध कहलाता है।

दूसरे शब्दों में :- पदबंध का अंतिम अथवा शीर्ष शब्द यदि संज्ञा हो और अन्य सभी पद उसी पर आश्रित हो तो वह 'संज्ञा पदबंध' कहलाता है।

जैसे -

- चार ताकतवर मजदूर इस भारी चीज को उठा पाए।
- राम ने लंका के राजा रावण को मार गिराया।
- अयोध्या के राजा दशरथ के चार पुत्र थे।
- आसमान में उड़ता गुब्बारा फट गया।

उपर्युक्त वाक्यों में काला छपे शब्द 'संज्ञा पदबंध' है।

2. विशेषण पदबंध

वह पदबंध जो संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बतलाता हुआ विशेषण का कार्य करे, विशेषण पदबंध कहलाता है।

दूसरे शब्दों में :- पदबंध का शीर्ष अथवा अंतिम शब्द यदि विशेषण हो और अन्य सभी पद उसी पर आश्रित हों तो वह 'विशेषण पदबंध' कहलाता है।

जैसे -

- तेज चलने वाली गाड़ियाँ प्रायः देर से पहुँचती हैं।
- उस घर के कोने में बैठा हुआ आदमी जासूस है।
- उसका घोड़ा अत्यंत सुंदर, फुरतीला और आज्ञाकारी है।
- बरगद और पीपल की घनी छाँव से हमें बहुत सुख मिला।

उपर्युक्त वाक्यों में काला छपे शब्द 'विशेषण पदबंध' है।

3. सर्वनाम पदबंध

वह पदबंध जो वाक्य में सर्वनाम का कार्य करे, सर्वनाम पदबंध कहलाता है।

उदाहरण

बिजली-सी फुरती दिखाकर आपने बालक को डूबने से बचा लिया।

शरारत करने वाले छात्रों में से कुछ पकड़े गए।

विरोध करने वाले लोगों में से कोई नहीं बोला।

उपर्युक्त वाक्यों में काला छपे शब्द सर्वनाम पदबंध हैं क्योंकि वे क्रमशः 'आपने' 'कुछ' और 'कोई' इन सर्वनाम शब्दों से सम्बद्ध हैं।





4. क्रिया पदबंध

वह पदबंध जो अनेक क्रिया-पदों से मिलकर बना हो, क्रिया पदबंध कहलाता है।

क्रिया पदबंध में मुख्य क्रिया पहले आती है। उसके बाद अन्य क्रियाएँ मिलकर एक समग्र इकाई बनाती है। यही 'क्रिया पदबंध' है।

जैसे -

- a) वह बाजार की ओर आया होगा।
- b) मुझे मोहन छत से दिखाई दे रहा है।
- c) सुरेश नदी में डूब गया।
- d) अब दरवाजा खोला जा सकता है।

उपर्युक्त वाक्यों में काला छपे शब्द 'क्रिया पदबंध' हैं।

5. अव्यय पदबंध

वह पदबंध जो वाक्य में अव्यय का कार्य करे, अव्यय पदबंध कहलाता है।

इस पदबंध का अंतिम शब्द अव्यय होता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्य देखिए-
अपने सामान के साथ वह चला गया।

सुबह से शाम तक वह बैठा रहा।

इन वाक्यों में काला छपे शब्द अव्यय पदबंध हैं।

पदबन्ध और उपवाक्य में अन्तर

उपवाक्य (Clause) भी पदबन्ध (Phrase) की तरह पदों का समूह है, लेकिन इससे केवल आशिक भाव प्रकट होता है, पूरा नहीं। पदबन्ध में क्रिया नहीं होती, उपवाक्य में क्रिया रहती है।

जैसे - 'ज्योंही वह आया, त्योंही में चला गया।' यहाँ 'ज्योंही वह आया' एक उपवाक्य है, जिससे पूर्ण अर्थ की प्रतीति नहीं होती।





पर्यायवाची शब्द

‘पर्याय’ का अर्थ है - ‘समान’ तथा ‘वाची’ का अर्थ है - ‘बोले जाने वाले’ अर्थात् जिन शब्दों का अर्थ एक जैसा होता है, उन्हें ‘पर्यायवाची शब्द’ कहते हैं।

इसे हम ऐसे भी कह सकते हैं - जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो, उन्हें ‘पर्यायवाची शब्द’ कहते हैं।

समान अर्थवाले शब्दों को ‘पर्यायवाची शब्द’ या समानार्थक भी कहते हैं।

जैसे - सूर्य, दिनकर, दिवाकर, रवि, भास्कर, भानु, दिनेश - इन सभी शब्दों का अर्थ है ‘सूरज’।

इस प्रकार ये सभी शब्द ‘सूरज’ के पर्यायवाची शब्द कहलायेंगे।

पर्यायवाची शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या होता है

पर्यायवाची शब्द दो पदों से मिल कर बना है - **पर्याय + वाची**।

- पर्याय का मतलब है - अर्थ

- वाची का मतलब है - बताने वाला

अतः पर्यायवाची शब्द से तात्पर्य है - अर्थ बताने वाला। पर्यायवाची शब्दों से हमें एक ही शब्द के लिए प्रयोग होने वाले अन्य शब्दों का पता चलता है। इन सभी सभी शब्दों का एक ही अर्थ होता है।

इसी प्रकार समानार्थक / समानार्थी शब्द भी दो पदों से मिलकर बना है -

समान + अर्थक / समान + अर्थी

- समान - एक जैसे

- अर्थक / अर्थी - अर्थ वाले

अतः समानार्थक / समानार्थी का शाब्दिक अर्थ है - एक जैसे अर्थ वाले शब्द।

पर्यायवाची शब्द किसे कहते हैं

पर्यायवाची शब्द की व्याकरणीय परिभाषा

- किसी शब्द-विशेष के लिए प्रयोग किए जाने वाले समान अर्थ वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द या समानार्थी शब्द कहते हैं।
- जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द या समानार्थक शब्द कहते हैं।

पर्यायवाची शब्द की परिभाषा (सरल शब्दों में)

जिन शब्दों की ध्वनियाँ (या रूप) अलग-अलग होती हैं, लेकिन अर्थ एक जैसे होते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द या समानार्थक शब्द कहा जाता है। ऐसे शब्द दिखते तो अलग-अलग हैं, लेकिन इनका मतलब एक ही होता है।



पर्यायवाची शब्दों के उदाहरण

(अ)

अतिथि :- मेहमान, अभ्यागत, आगन्तुक, पाहूना।

अमृत :- सुरभोग सुधा, सोम, पीयूष, अमिय, जीवनोदक।

अग्नि :- आग, ज्वाला, दहन, धनंजय, वैश्वानर, रोहिताश्व, वायुसखा, विभावसु, हुताशन, धूमकेतु, अनल, पावक, वहनि, कृशानु, वह्नि, शिखी।

अनुपम :- अपूर्व, अतुल, अनोखा, अनूठा, अद्वितीय, अदभुत, अनन्य।

अनबन :- मतभेद, वैमनस्य, विरोध, असहमति, झगड़ा, तकरार, विवाद, बखेड़ा, टंटा।

अनमना :- उदास, अन्यमनस्क, उन्मन, विमुख, विरक्त, उदास, गतानुराग, अन्यमनस्क।

(आ)

आँख :- लोचन, अक्षि, नैन, अम्बक, नयन, नेत्र, चक्षु, दृग, विलोचन, दृष्टि, अक्षि।

आकाश :- नभ, गगन, द्यौ, तारापथ, पुष्कर, अभ्र, अम्बर, व्योम, अनन्त, आसमान, अंतरिक्ष,

आनंद :- हर्ष, सुख, आमोद, मोद, प्रसन्नता, आहाद, प्रमोद, उल्लास।

आश्रम :- कुटी, स्तर, विहार, मठ, संघ, अखाड़ा।

आम :- रसाल, आग्र, अतिसौरभ, मादक, अमृतफल, चूत, सहकार, च्युत (आम का पेड़)

आंसू :- नेत्रजल, नयनजल, चक्षुजल, अश्रु।

आत्मा :- जीव, देव, चैतन्य, चेतनतत्त्व, अंतःकरण।

(इ)



इंसाफ :- न्याय, फैसला, अदल।

इजाजत :- स्वीकृति, मंजूरी, अनुमति।

इज्जत :- मान, प्रतिष्ठा, आदर, आबरू।

इनाम :- पुरस्कार, पारितोषिक, पारितोषित करना, बरछीश।

इकट्ठा :- समवेत, संयुक्त, समन्वित, एकत्र, संचित, संकलित, संयुहीत।

(ई)

ईश्वर :- परमपिता, परमात्मा, प्रभु, ईश, जगदीश, भगवान, परमेश्वर, जगदीश्वर, विधाता।

ईख :- गन्ना, ऊख, इक्षु।

ईप्सा :- इच्छा, ख्वाहिश, कामना, अभिलाषा।

ईमानदारी :- सच्चा, सत्यपरायण, नेकनीयत, यथार्थता, सत्यता, निश्छलता, दयानतदारी

ईर्ष्या :- विद्वेष, जलन, कुँड़न, ढाह।

ईसा :- यीशु, ईसामसीह, मसीहा।



(उ)

उपवन :- बागः, बगीचा, उद्यान, वाटिका, पुष्पोद्यान, फुलवारी, पुष्पवाटिका, गुलिस्तान, चमन

उक्ति :- कथन, वचन, सूक्ति।

उग्र :- प्रचण्ड, उत्कट, तेज, महादेव, तीव्र, विकट।

उचित :- ठीक, मुनासिब, वाजिब, समुचित, युक्तिसंगत, न्यायसंगत, तर्कसंगत, योग्य।

उच्छृंखल :- उद्धंड, अक्खड़, आवारा, अंडबंड, निरकुंश, मनमर्जी, स्वेच्छाचारी।

उजड़ु :- अशिष्ट, असश्य, गँवार, जंगली, देहाती, उद्धंड, निरकुंश।

उजला :- उज्ज्वल, श्वेत, सफेद, ध्वल।

उजाड़ :- जंगल, बियावान, वन।

उजाला :- प्रकाश, रोशनी, दीप्ति, द्योत, प्रभा, विभा, आलोक, तेज, ओज, चाँदनी।

(ऋ)

ऊँचा :- तुंग, उच्च, बुलंद, उर्ध्व, उत्ताल, उन्नत, ऊपर, शीर्षस्थ, उच्च कोटि का, बढ़िया।

ऊँचाई :- बुलंदी, उठान, उच्चता, तुंगता, बुलन्दी।

ऊँचा करना :- उन्नत करना, उत्थित करना, ऊपर उठाना।

ऊँट :- करभ, उष्ट, लंबोष्ट, साँड़िया।

ऊखल :- ओखली, उलूखल, कूँडी।

ऊसर :- अनुपजाऊ, बंजर, अनुर्वर, वंध्या, भूमि।

(ऋ)

ऋक्ष :- भालू, रीछ, भीलूक, भल्लाट, भल्लूक।

ऋक्षेश :- चंद्रमा, चंदा, चाँद, शशि, राकेश, कलाधर, निशानाथ।

ऋण :- कर्ज, कर्जा, उधार, उधारी।

ऋणी :- कर्जदार, देनदार।

ऋतु :- रुत, मौसम, मासिक धर्म, रजःसाव।

ऋतुराज :- बहार, मधुमास, वसंत, ऋतुपति, मधुऋतु।

ऋषभ :- वृष, वृषभ, बैल, पुंगव, बलीवर्द, गोनाथ।

(ए)

एकतंत्र :- राजतंत्र, एकछत्र, तानाशाही, अधिनायकतंत्र।

एकदंत :- गणेश, गजानन, विनायक, लंबोदर, विष्णेश, वक्रतुंड।

एतबार :- विश्वास, यकीन, भ्रोसा।

एषणा :- इच्छा, आकांक्षा, कामना, अभिलाषा, हसरत।

एहसान :- कृपा, अनुग्रह, उपकार।

एक करना :- एकीकरण करना, सम्मिलित करना, मिलाना, जोड़ना, संघटित करना, संगठन बनाना।



(ऐ)

ऐंठ :- कड़, दंभ, हेकड़ी, ठसक।

ऐबी :- बुरा, खोटा, दुष्ट, अवगुण, गलती, त्रुटि, खामी, खराबी, कमी, अवगुण।

ऐयार :- धूर्त, मक्कार, चालाक।

ऐहिक :- सांसारिक, लौकिक, दुनियावी।

ऐक्य :- एकत्र, एका, एकता, मेल।

ऐश्वर्य :- धन-सम्पत्ति, विभूति, वैभव, समृद्धि, सम्पन्नता, ऋद्धि-सिद्धि।

(ओ)

ओज :- तेज, शक्ति, बल, चमक, कांति, दीप्ति, वीर्य।

ओजस्वी :- बलवान, बलशाली, बलिष्ठ, पराक्रमी, जोरावर, ताकतवर, शक्तिशाली।

ओंठ :- ओष्ठ, अधर, लब, रदनच्छद, होठ।

ओला :- हिमगुलिका, उपल, करका, बिनौरी, तुहिन, जलमूर्तिका, हिमोपल।

(ओौ)

ओौचक :- अचानक, यकायक, सहसा।

ओरत :- स्त्री, जोरू, घरनी, महिला, मानवी, तिरिया, नारी, वनिता, घरवाली।

ओौचित्य :- उपयुक्तता, तर्कसंगति, तर्कसंगतता।

ओौलाद :- संतान, संतति, आसौलाद, बाल-बच्चे।

ओौषधालय :- चिकित्सालय, दवाखाना, अस्पताल, हस्पताल, चिकित्सा भवन, शफाखाना।

(क)

कमल :- नलिन, अरविन्द, उत्पल, अम्भोज, तामरस, पुष्कर, महोत्पल, वनज, कंज।

किरण :- गम्भस्ति, रश्मि, अंशु, अर्चि, गो, कर, मयूरख, मरीचि, ज्योति, प्रभा।

कामदेव :- मदन, मनोज, अनंग, आत्मभू, कंदर्प, दर्पक, पंचशर, मनसिज, काम, रतिपति।

(ख)

खाना :- भोज्य सामग्री, खाद्यय वस्तु, आहार, भोजन।

खग :- पक्षी, द्विज, विहग, नभचर, अण्डज, शकुनि, पखेरू।

खंभा :- स्तूप, स्तम्भ, खंभ।

खद्योत :- जुगनू, सोनकिरवा, पटबिजना, भगजोगिनी।

खर :- गधा, गर्दभ, खोता, रासभ, वैशाखनंदन।

खरगोश :- शशक, शशा, खरहा।

(ग)

गणेश :- विनायक, गजानन, गौरीनंदन, मूषकवाहन, गजवदन, विघ्नाशक, भवानीनन्दन।

गंगा :- देवनदी, मंदाकिनी, भगीरथी, विश्वपगा, देवपगा, ध्रुवनंदा, सुरसरिता, देवनदी।





गज :- हाथी, हस्ती, मतंग, कूम्भा, मदकल।

गाय :- गौ, धेनु, सुरभि, भद्रा, दोग्धी, रोहिणी।

गृह :- घर, सदन, गेह, भवन, धाम, निकेतन, निवास, आगार, आलय, आवास, मंदिर।

गर्मी :- ताप, ग्रीष्म, ऊष्मा, गरमी, निदाघ।

(घ)

घट :- घड़ा, कलश, कुम्भ, निप।

घर :- आलय, आवास, गेह, गृह, निकेतन, निलय, निवास, भवन, वास, वास-स्थान, शाला, सदन।

घटना :- हादसा, वारदात, वाक्या।

घना :- घन, सघन, घनीभूत, घनघोर, गङ्गिन, घनिष्ठ, गहरा, अविरल।

घपला :- गड़बड़ी, गोलमाल, घोटाला।

घमंड :- दंभ, दर्प, गर्व, गरूर, गुमान, अभिमान, अहंकार।

(च)

चिराग :- दीया, दीपक, दीप, शमा।

चेला :- शागिर्द, शिष्य, विद्यार्थी।

चेहरा :- शक्ल, आनन, मुख, मुखड़ा।

चोरी :- स्तेय, चौर्य, मोष, प्रमोष।

चौकन्ना :- सचेत, सजग, सावधान, जागरूक, चौकस।

चौकीदार :- प्रहरी, पहरेदार, रखवाला।

(छ)

छतरी :- छत्र, छाता, छत्ता।

छली :- छलिया, कपटी, धोखेबाज।

छवि :- शोभा, सौंदर्य, कान्ति, प्रभा।

छानबीन :- जाँच, पूछताछ, खोज, अन्वेषण, शोध, गवेषण।

छँटनी :- कटौती, छँटाई, काट-छाँट।

(ज)

जल :- मेघपुष्प, अमृत, सलिल, वारि, नीर, तोय, अम्बु, उदक, पानी, जीवन, पय, पेय।

जहर :- गरल, कालकूट, माहुर, विष।

जगत :- संसार, विश्व, जग, जगती, भव, दुनिया, लोक, भुवन।

जंगल :- विपिन, कानन, वन, अरण्य, गहन, कांतार, बीहड़, विटप।

जेवर :- गहना, अलंकार, भूषण, आभरण, मंडल।

ज्योति :- आभा, छवि, द्युति, दीप्ति, प्रभा, भा, रुचि, रोचि।





(झ)

झरना :- उत्स, स्रोत, प्रपात, निर्झर, प्रस्त्रवण।

झण्डा :- ध्वजा, पताका, केतु।

झंझा :- अंधड़, आँधी, बवंडर, झंझावत, तूफान।

झाँसा :- दगा, धोखा, फरेब, ठगी।

झींगुर :- घुरघुरा, झिल्ली, जंजीरा, झिल्लिका।

झंझट :- झमेला, बखेड़ा, पचड़ा, प्रपंच, कलह, झगड़ा-झंझट, बवंडर, बवाल।

झगड़ा :- कलह, तकरार, कहासुनी, वैमत्य, मतभेद, खटपटा, टंटा, लड़ाई, विवाद, विरोध, संघर्ष।

(ट)

टंकार :- टंकोर, ध्वनि, झनकार।

टकराना :- टक्कर खाना, भिड़ना, चोट खाना, लड़ जाना, ठोकर खाना।

टका :- सिक्का, रुपया, धन, द्रव्य।

टक्कर :- ठोकर, मुठभेड़, भिडंत, समाघात, धक्का, संघर्ष, बराबरी, सामना, घाटा, हानि।

टपकना :- चूना, झारना, रिसना, सावित होना।

टहलना :- सैर-सपाटा, घूमना, भ्रमण करना, चलना, फिरना।

(ठ)

ठंडा :- शीतल, सर्द, शांत, गम्भीर, सुस्त, मंद, धीमा, उदासीन, भावहीन।

ठगना :- छलना, धोखा देना, चकमा देना, भुलावा, लूटना, लूट लेना, चूना लगाना, ऐठना।

ठगी :- कपट, मायाजाल, छल, बेर्इमानी, धोखेबाजी, उचक्कापन, जालासाजी।

ठसक :- नखर, चोंचला, मान, अभिमान, शान, गर्व, घमंड।

ठहरना :- रुकना, थमना, टिकना, विराम, स्थित होना, प्रतीक्षा करना, इंतजार करना।

ठाट :- तड़क-भड़क, शोभा, सजावट, आयोजन, तैयारी, व्यवस्था, प्रबंध, झुंड, दल, समूह।

ठिकाना :- स्थान, जगह, अड्डा, आयोजन, प्रबंध, व्यवस्था।

(ड)

डकारना :- डकार लेना, गरजना, दहाड़ना।

डगमगाना :- डावाँडोल होना, अस्थिर होना, काँपना, हिलना, लड़खड़ाना, थरथराना, विचलित होना।

डफला :- डफ, चंग, खंजरी।

डब्बा :- डिब्बा, ढक्कनदार, बर्टन, केस, कम्पार्टमेन्ट।

डरना :- भयभीत होना, त्रास पाना, आतंकित होना, भय खाना, त्रस्त होना।

डरपोक :- भीरु, भयभीत, त्रस्त, कायर, कापुरुष, आतंकित करना।

(ढ)

ढब :- ढंग, रीति, तरीका, ढर्डा।

ढाँचा :- पंजर, ठठरी।

ढीला-ढाला :- शिथिलता, आलसी, सुस्ती, अतत्परता।

ढिंढोरा :- मुनादी, ढँढोरा, डुगडुगी, डौँड़ी।

ढिंग :- समीप, निकट, पास, आसन्न।



**(त)**

तालाब :- सरोवर, जलाशय, सर, पुष्कर, हृद, पद्माकर, पोखरा, जलवान, सरसी, तड़ाग।

तोता :- सुगगा, शुक, सुआ, कीर, रक्ततुण्ड, दाढ़िमप्रिय।

तरुवर :- वृक्ष, पेड़, द्रुम, तरु, विटप, रँख, पादप।

तलवार :- असि, कृपाण, करवाल, खड्ग, शमशीर चन्द्रहास।

तरकस :- तूण, तूणीर, त्रोण, निषंग, इषुधी।

(थ)

थोड़ा :- अत्प, न्यून, जरा, कम।

थाती :- जमापूँजी, धरोहर, अमानत।

थाक :- ढेर, समूह।

थप्पड़ :- तमाचा, झापड़।

थकान :- थकावट, श्रांति, थकन, परिश्रांति, क्लांति।

थल :- स्थान, स्थल, भूमि, धरती, जमीन, जगह।

(द)

दूध :- दुर्ध, दोहज, पीयूष, क्षीर, पय, गौरस, स्तन्य।

दास :- नौकर, चाकर, सेवक, परिचारक, अनुचर, भृत्य, किंकर।

दासी :- परिचारिका, अनुचरी, बाँटी, नौकरानी।

देवता :- सुर, देव, अमर, वसु, आदित्य, निर्जर, त्रिदश, गीर्वाण, अदितिनंदन, अमर्त्य, अस्वप्न।

(ध)

धन :- दौलत, संपत्ति, सम्पदा, वित्त।

धरती :- धरा, धरती, वसुधा, जमीन, पृथ्वी, भू, भूमि, धरणी, वसुंधरा, अचला, मही।

धंधा :- आजीविका, उद्योग, कामधंधा, व्यवसाय।

धनंजय :- अर्जुन, सव्यसाची, पार्थ, गुड़ाकेश, बृहन्नला।

धनु :- धनुष, पिनाक, शरासन, कोदंड, कमान, धनुही।

(न)

नदी :- तनूजा, सरित, शौवालिनी, स्रोतस्विनी, आपगा, निम्रगा, कूलंकषा, तटिनी, सरि, सारंग, जयमाला, तरंगिणी, दरिया, निझरिणी।

नौका :- नाव, तरिणी, जलयान, जलपात्र, तरी, बेड़ा, डोंगी, तरी, पतंग।

नाग :- विषधर, भुजंग, अहि, उरग, काकोदर, फणीश, सारंग, व्याल, सर्प, साँप।

नर्क :- यमलोक, यमपुर, नरक, यमालय।

(प)

पुत्र :- बेटा, लड़का, आत्मज, सुत, वत्स, तनुज, तनय, नंदन।

पुत्री :- बेटी, आत्मजा, तनूजा, दुहिता, नन्दिनी, लड़की, सुता, तनया।





पृथ्वी :- धरा, धरती, भू, धरित्री, धरणी, अवनि, मेदिनी, मही, वसुंधरा, वसुधा, जमीन, भूमि।

पुष्प :- फूल, सुमन, कुसुम, मंजरी, प्रसून, पुहुप।

पानी :- जल, नीर, सलिल, अंबु, अंभ, उदक, तोय, जीवन, वारि, पय, अमृत, मेघपुष्प, सारंग।

परिवार :- कुटुंब, कुनबा, खानदान, घराना।

परिवर्तन :- बदलाव, हेरफेर, तबदीली, फेरबदल।

(फ)

फल :- फलम, बीजकोश।

फँख :- गौरव, नाज, गर्व, अभिमान।

फजर :- भोर, सवेरा, प्रभात, सहर, सकार।

फतह :- सफलता, विजय, जीत, जफर।

फरमान :- हुक्म, राजादेश, राजाज्ञा।

फलक :- आसमान, आकाश, गगन, नभ, व्योम।

फसल :- शस्य, पैदावार, उपज, खिरमन, कृषि- उत्पाद।

(ब)

बाण :- सर, तीर, सायक, विशिख, आशुग, इषु, शिलीमुख, नाराच।

बिजली :- घनप्रिया, इन्द्रवज्र, चंचला, सौदामनी, चपला, बीजुरी, क्षणप्रभा।

ब्रह्मा :- विधि, विधाता, स्वयंभू, प्रजापति, आत्मभू, लोकेश, पितामह, चतुरानन, विरंचि।

बहुत :- अनेक, अतीव, अति, बहुल, भूरि, बहु, प्रचुर, अपरिमित, प्रभूत, अपार।

बादल :- मेघ, घन, जलधर, जलद, वारिद, नीरद, सारंग, पयोद, पयोधर।

(भ)

भौंग :- अलि, मधुव्रत, शिलीमुख, मधुप, मधुकर, द्विरेप, षष्ठुद, भृंग, भ्रमर।

भोजन :- खाना, भोज्य सामग्री, खाद्यवस्तु, आहार।

भय :- भीति, डर, विभीषिका।

भाई :- तात, अनुज, अग्रज, भ्राता, भ्रातृ।

भंवरा :- भौंग, भ्रमर, मधुकर, मधुप, मिलिंद, अलि, अलिंद, भृंग।

भक्त :- आराधक, अर्चक, पुजारी, उपासक, पूजक।

(म)

मछली :- मीन, मत्स्य, झाख, झष, जलजीवन, शफरी, मकर।

महादेव :- शम्भु, ईश, पशुपति, शिव, महेश्वर, शंकर, चन्द्रशेखर, भव, भूतेश।

मेघ :- घन, जलधर, वारिद, बादल, नीरद, वारिधर, पयोद, अम्बुद, पयोधर।

मुनि :- यती, अवधूत, संन्यासी, वैरागी, तापस, सन्त, भिक्षु, महात्मा, साधु, मुक्तपुरुष।

मित्र :- सखा, सहचर, स्नेही, स्वजन, सुहृदय, साथी, दोस्त।

मोर :- केक, कलापी, नीलकंठ, शिखावल, सारंग, ध्वजी, शिखी, मयूर, नर्तकप्रिय।



**(य)**

यम :- सूर्यपुत्र, जीवितेश, श्राद्धदेव, कृतांत, अन्तक, धर्मराज, दण्डधर, कीनाश, यमराज।

यमुना :- कालिन्दी, सूर्यसुता, रवितनया, तरणि-तनूजा, तरणिजा, अर्कजा, भानुजा।

यंत्रणा :- व्यथा, तकलीफ, वेदना, यातना, पीड़ा।

यकीन :- भरोसा, ऐतबार, आस्था, विश्वास।

यज्ञोपवीत :- जनेऊ, उपवीत, ब्रह्मसूत्र।

यतीम :- बेसहारा, अनाथ, माँ-बापविहीन।

यशस्वी :- मशहूर, विख्यात, नामवर, कीर्तिवान, ख्यातिवान।

(र)

रात्रि :- निशा, क्षया, रैन, रात, यामिनी, रजनी, त्रियामा, क्षणदा, शर्वरी, तमस्विनी।

रात :- रात्रि, रैन, रजनी, निशा, यामिनी, तमी, निशि, यामा, विभावरी।

राजा :- नृपति, भूपति, नरपति, नृप, महीप, राव, सम्राट, भूप, भूपाल, नरेश।

रवि :- सूरज, दिनकर, प्रभाकर, दिवाकर, सविता, भानु, दिनेश, अंशुमाली, सूर्य।

रामचन्द्र :- अवधेश, सीतापति, राघव, रघुपति, रघुवर, रघुनाथ, रघुराज, रघुवीर।

रावण :- दशानन, लंकेश, लंकापति, दशशीश, दशकंध, दैत्येन्द्र।

रक्त :- खून, लहू, रुधिर, शोणित, लोहित।

(ल)

लक्ष्मी :- चंचला, कमला, पद्मा, रमा, हरिप्रिया, श्री, इंदिरा, पद्ममा, सिन्धुसुता, कमलासना।

लड़का :- बालक, शिशु, सुत, किशोर, कुमार।

लड़की :- बालिका, कुमारी, सुता, किशोरी, बाला, कन्या।

लक्ष्मण :- लखन, शेषावतार, सौमित्र, रामानुज, शेष।

लता :- बल्लरी, बल्ली, लतिका, बेली।

लंघन :- उपवास, व्रत, रोजा, निराहार।

(व)

वृक्ष :- तरू, अगम, पेड़, पादप, विटप, गाछ, दरख्त, शाखी, विटप, द्रुम।

विवाह :- शादी, गठबंधन, परिणय, व्याह, पाणिग्रहण।

वायु :- हवा, पवन, समीर, अनिल, वात, मारुत।

वसन :- अम्बर, वस्त्र, परिधान, पट, चीर।

विधवा :- अनाथा, पतिहीना।

विष :- ज़हर, हलाहल, गरल, कालकूट।

विश्व :- जगत, जग, भव, संसार, लोक, दुनिया।

वारिश :- वर्षण, वृष्टि, वर्षा, पावस, बरसात।





(श)

शेर :- हरि, मृगराज, व्याघ्र, मृगेन्द्र, केहरि, केशरी, वनराज, सिंह, शार्दूल, हरि, मृगराज।

शिव :- भोलेनाथ, शम्भू, त्रिलोचन, महादेव, नीलकंठ, शंकर।

शत्रु :- रिपु, दुश्मन, अमित्र, वैरी, प्रतिपक्षी, अरि, विपक्षी, अराति।

शिक्षक :- गुरु, अध्यापक, आचार्य, उपाध्याय।

शेषनाग :- अहि, नाग, भुजंग, व्याल, उरग, पञ्जग, फणीश, सारंग।

(ष)

षंजन :- आर्लिंगन, मिलन।

षंडाली :- तालाब, ताल।

षड्यंत्र :- साजिश, कुचक्र, कूट-योजना।

षडानन :- षटमुख, कातिकेय, षाणमातुर।

(स)

समुद्र :- सागर, पयोधि, उदधि, पारावार, नदीश, नीरनिधि, अर्णव, पयोनिधि, अब्धि, वारीश, जलधाम, नीरधि, जलधि, सिंधु, रत्नाकर, वारिधि।

समूह :- दल, झुंड, समुदाय, टोली, जत्था, मण्डली, वृंद, गण, पुंज, संघ, समुच्चय।

सुमन :- कुसुम, मंजरी, प्रसून, पुष्प, फूल।

सीता :- वैदेही, जानकी, भूमिजा, जनकतनया, जनकनन्दिनी, रामप्रिया।

सर्प :- साँप, अहि, भुजंग, व्याल, फणी, पत्रग, नाग, विषधर, उरग, पवनासन।

(ह)

STEP UP

हंगामा :- कोलाहल, अशांति, शोरगुल, हल्ला, शोर 2. उत्पात, उपद्रव, हुड़दंग।

हँसमुख :- आनंदित, उल्लसित, मगन, प्रसन्नचित्त, खुशमिजाज।

हँसी :- मुस्कान, मुस्कारहट, ठहाका, खिलखिलाहट, मजाक, दिल्लगी, खिल्ली।

हत्या :- वध, हिंसा, कत्ल, खून।

हत्यारा :- हिंसक, खूनी, जीवधाती, कातिल, घातक।





प्रत्यय

जो शब्दांश किसी शब्द के बाद लगकर उसके अर्थ को बदल देते हैं और नए अर्थ का बोध कराते हैं उसे प्रत्यय कहते हैं। भाषा में प्रत्यय का महत्व इसलिए भी है क्योंकि उसके प्रयोग से मूल शब्द के अनेक अर्थों को प्राप्त किया जा सकता है। यौगिक शब्द बनाने में प्रत्यय का महत्वपूर्ण स्थान है।

प्रत्यय के उदाहरण -

खिल + आड़ी	खिलाड़ी
मिल + आवट	मिलावट
पढ़ + आकू	पढ़ाकू
झूल + आ	झूला

प्रत्यय तीन प्रकार -

- संस्कृत प्रत्यय
- हिन्दी प्रत्यय
- विदेशी प्रत्यय

हिन्दी प्रत्यय के दो प्रकार होते हैं -

- कृत् प्रत्यय
 - तद्वित् प्रत्यय
- संस्कृत प्रत्यय -

जैसे -

इत	हर्षित, गर्वित, लज्जित, पल्लवित
इक	मानसिक, धार्मिक, मार्मिक, पारिश्रमिक
ईय	भारतीय, मानवीय, राष्ट्रीय, स्थानीय
एय	आग्नेय, पाथेय, राधेय, कौंतेय
तम	अधिकतम, महानतम, वरिष्ठतम, श्रेष्ठतम
वान्	धनवान, बलवान, गुणवान, दयावान



मान्	श्रीमान्, शोभायमान, शक्तिमान, बुद्धिमान
त्व	गुरुत्व, लघुत्व, बंधुत्व, नेतृत्व
शाली	वैभवशाली, गौरवशाली, प्रभावशाली, शक्तिशाली
तर	श्रेष्ठतर, उच्चतर, निम्नतर, लघूत्तर

2. हिन्दी प्रत्यय -

हिंदी प्रत्यय मुख्यतया दो प्रकार के होते हैं -

1. कृत् प्रत्यय
2. तद्वित प्रत्यय
1. कृत् प्रत्यय

वे प्रत्यय जो धातु अथवा क्रिया के अन्त में लगकर नए शब्दों की रचना करते उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं। कृत् प्रत्ययों से संज्ञा तथा विशेषण शब्दों की रचना होती है।

संज्ञा की रचना करने वाले कृत प्रत्यय -

कृत प्रत्यय उदाहरण -

न	बेलन, बंधन, नंदन, चंदन
ई	बोली, सोची, सुनी, हँसी
आ	झूला, भूला, खेला, मेला
अन	मोहन, रटन, पठन
आहट	चिकनाहट, घबराहट, चिल्लाहट

जैसे -विशेषण की रचना करने वाले कृत प्रत्यय -

आड़ी	खिलाड़ी, अगाड़ी, अनाड़ी, पिछाड़ी
एरा	लुटेरा, बसेरा
आऊ	बिकाऊ, टिकाऊ, दिखाऊ
ऊ	डाकू, चाकू, चालू, खाऊ

कृत् प्रत्यय के भेद

1. कृत् वाचक
2. कर्म वाचक
3. करण वाचक
4. भाव वाचक
5. क्रिया वाचक

1. कृत् वाचक -

कर्ता का बोध कराने वाले प्रत्यय कृत् वाचक प्रत्यय कहलाते हैं।

कृत् वाचक प्रत्यय उदाहरण -

हार	पालनहार, चाखनहार, राखनहार
वाला	रखवाला, लिखनेवाला, पढ़नेवाला
क	रक्षक, भक्षक, पोषक, शोषक
अक	लेखक, गायक, पाठक, नायक
ता	दाता, माता, गाता, नाता

2. कर्म वाचक कृत् प्रत्यय -

कर्म का बोध कराने वाले कृत् प्रत्यय कर्म वाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

कर्म वाचक कृत् प्रत्यय उदाहरण :

औना	खिलौना, बिछौना
नी	ओढ़नी, मथनी, छलनी
ना	पढ़ना, लिखना, गाना

3. करण वाचक कृत् प्रत्यय -

साधन का बोध कराने वाले कृत् प्रत्यय करण वाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

करण वाचक कृत् प्रत्यय उदाहरण :

अन	पालन, सोहन, झाडन
नी	चटनी, कतरनी, सूँघनी
ऊ	झाडू, चालू
ई	खाँसी, धाँसी, फाँसी

4. भाव वाचक कृत् प्रत्यय -

क्रिया के भाव का बोध कराने वाले प्रत्यय भाववाचक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं।

भाववाचक कृत् प्रत्यय उदाहरण :

आप	मिलाप, विलाप
आवट	सजावट, मिलावट, लिखावट
आव	बनाव, खिंचाव, तनाव
आई	लिखाई, खिंचाई, चढ़ाई



5. क्रियावाचक कृत् प्रत्यय -

क्रिया शब्दों का बोध कराने वाले कृत् प्रत्यय क्रिया वाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

क्रिया वाचक कृत प्रत्यय उदाहरण :

या	आया, बोया, खाया
कर	गाकर, देखकर, सुनकर
आ	सूखा, भूला
ता	खाता, पीता, लिखता

तद्वित प्रत्यय -

क्रिया को छोड़कर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में जुड़कर नए शब्द बनाने वाले प्रत्यय तद्वित प्रत्यय कहलाते हैं।

तद्वित प्रत्यय उदाहरण -

मानव + ता	मानवता
जादू + गर	जादूगर
बाल + पन	बालपन
लिख + आई	लिखाई

तद्वित प्रत्यय के भेद

1. कर्तृवाचक तद्वित प्रत्यय
2. भाववाचक तद्वित प्रत्यय
3. सम्बन्ध वाचक तद्वित प्रत्यय
4. गुणवाचक तद्वित प्रत्यय
5. स्थानवाचक तद्वित प्रत्यय
6. ऊनतावाचक तद्वित प्रत्यय
7. स्त्रीवाचक तद्वित प्रत्यय

1. कर्तृवाचक तद्वित प्रत्यय -

कर्ता का बोध कराने वाले तद्वित प्रत्यय कर्तृवाचक तद्वित प्रत्यय कहलाते हैं।

कर्तृवाचक तद्वित प्रत्यय उदाहरण :

आर	सुनार, लुहार, कुम्हार
ई	माली, तेली
वाला	गाड़ीवाला, टोपीवाला, इमलीवाला



2. भाववाचक तद्धित प्रत्यय -

भाव का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय भाववाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

भाववाचक तद्धित प्रत्यय उदाहरण :

आहट	कड़वाहट
ता	सुन्दरता, मानवता, दुर्बलता
आपा	मोटापा, बुढ़ापा, बहनापा
ई	गर्मी, सर्दी, गरीबी

3. सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय -

सम्बन्ध का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

सम्बन्ध वाचक तद्धित प्रत्यय उदाहरण :

इक	शारीरिक, सामाजिक, मानसिक
आलु	कृपालु, श्रद्धालु, ईर्ष्यालु
ईला	रंगीला, चमकीला, भड़कीला
तर	कठिनतर, समानतर, उच्चतर

4. गुणवाचक तद्धित प्रत्यय -

गुण का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय गुणवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

गुणवाचक तद्धित प्रत्यय उदाहरण :

वान	गुणवान, धनवान, बलवान
ईय	भारतीय, राष्ट्रीय, नाटकीय
आ	सूखा, रुखा, भूखा
ई	क्रोधी, रोगी, भोगी

5. स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय -

स्थान का बोध कराने वाले तद्धित प्रत्यय स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय उदाहरण :

वाला	शहरवाला, गाँववाला, कस्बेवाला
इया	उदयपुरिया, जयपुरिया, मुंबइया
ई	रूसी, चीनी, राजस्थानी





6. ऊनतावाचक तद्वित प्रत्यय –

लघुता का बोध कराने वाले तद्वित प्रत्यय ऊनतावाचक तद्वित प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे –

इया	लुटिया
ई	प्याली, नाली, बाली
डी	चमड़ी, पकड़ी
ओला	खटोला, संपोला, मङ्गोला

7. स्त्रीवाचक तद्वित प्रत्यय –

स्त्रीलिंग का बोध कराने वाले तद्वित प्रत्यय स्त्रीवाचक तद्वित प्रत्यय कहलाते हैं।

स्त्रीवाचक तद्वित प्रत्यय उदाहरण :

आइन	पंडिताइन, ठकुराइन
इन	मालिन, कुम्हारिन, जोगिन
नी	मोरनी, शेरनी, नन्दनी
आनी	सेठानी, देवरानी, जेठानी

उर्दू के प्रत्यय

उर्दू भाषा का हिन्दी के साथ लम्बे समय तक प्रचलन में रहने के कारण हिन्दी भाषा में उर्दू भाषा प्रत्यय भी प्रयोग में आने लगे हैं।

जैसे –

गी	ताजगी, बानगी, सादगी
गर	कारीगर, बाजीगर, सौदागर
ची	नकलची, तोपची, अफीमची
दार	हवलदार, जमींदार, किरायेदार
खोर	आदमखोर, चुगलखोर, रिश्तखोर
गार	खिदमतगार, मददगार, गुनहगार
नामा	बाबरनामा, जहाँगीरनामा, सुलहनामा
बाज	धोखेबाज, नशेबाज, चालबाज
मन्द	जरूरतमन्द, अहसानमन्द, अकलमन्द
आबाद	सिकन्दराबाद, औरंगाबाद, मौजमाबादइन्दा – बाशिन्दा, शर्मिन्दा, परिन्दा



इश	साजिश, ख्वाहिश, फरमाइश
गाह	ख्वाबगाह, ईदगाह, दरगाह
गीर	आलमगीर, जहाँगीर, राहगीर
आना	नजराना, दोस्ताना, सालाना
इयत	इंसानियत, खैरियत, आदमियत
ईन	शौकीन, रंगीन, नमकीन
कार	सलाहकार, लेखाकार, जानकार
दान	खानदान, पीकदान, कूडादान
बन्द	कमरबंद, नजरबंद, दस्तबंद





रस

रस का शाब्दिक अर्थ है – निचोड़। काव्य में जो आनन्द आता है वह ही काव्य का रस है। काव्य में आने वाला आनन्द अर्थात् रस लौकिक न होकर अलौकिक होता है। रस काव्य की आत्मा है। संस्कृत में कहा गया है कि “रसात्मकम् वाक्यम् काव्यम्” अर्थात् रसयुक्त वाक्य ही काव्य है।

- भरतमुनि के अनुसार 8 रस हैं।
- शांतरस को 9 वाँ रस माननेवाले – उद्ग्रट
- वात्सल्य रस को 10 वाँ रस माननेवाले – पं. विश्वनाथ
- भक्तिरस को 11 वाँ रस माननेवाले – भानुदत्त, गोस्वामी
- प्रेयान नामक रस के प्रतिष्ठापक – रुद्रट

रस	स्थायी भाव
शृंगार	रति
हास्य	हास
करुण	शोक
रौद्र	क्रोध
वीर	उत्साह
भयानक	भय
वीभत्स	जुगुप्सा
अद्भुत	विस्मय
शांत	निर्वेद
वात्सल्य	वत्सलता
भक्ति	ईश्वर विषयकरति
प्रेयान	स्नेह

भारतीय काव्यशास्त्र के विभिन्न सम्प्रदायों में रस सिद्धान्त सबसे प्राचीन सिद्धान्त है। रस सिद्धान्त का विशद एवं प्रामाणिक विवेचन भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में ही सर्वप्रथम उपलब्ध होता है।

आचार्य विश्वनाथ – 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'

- काव्य के पठन – श्रवण, दर्शन से प्राप्त होने वाला लोकोत्तर आनन्द ही आस्वाद दशा में रस कहलाता है।



- रस की निष्पत्ति सामाजिक के हृदय में तभी होती है, जब उसके हृदय में रजोगुण और तमोगुण का तिरोभाव होकर सत्त्वगुण का उद्ग्रेक होता है। इसमें ममत्व और परत्व की भावना तथा सांसारिक राग-द्वेष का पूर्णतया लोप हो जाता है।
- रस अखण्ड होता है। सहृदय को विभाव अनुभाव व्यभिचारी भावों की पृथक्-पृथक् अनुभूति न होकर समन्वित अनुभूति होती है।

रस की विशेषताएँ

- रस वेद्यान्तर स्पर्श शून्य है।
- रस स्वप्रकाशानन्द तथा चिन्मय है।
- रस को ब्रह्मानन्द सहोदर माना गया है। (साहित्य दर्पण-आचार्य विश्वनाथ)
- रसानुभूति अलौकिक चमत्कार के समान है।
- रस को कुछ आचार्य सुख-दुखात्मक मानते हैं।
- रस मूलतः आस्वाद रूप है, आस्वाद्य पदार्थ नहीं है, फिर भी व्यवहार में 'रस का आस्वाद किया जाता है' ऐसा प्रयोग गौण रूप से प्रचलित है। इसलिए रस अपने रूप से जनित है।
- भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में रस सूत्र दिया है।
'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पति'

इस मत के अनुसार जिस प्रकार नाना व्यंजनों के संयोग से भोजन करते समय पाक रसों का आस्वादन होता है। उसी प्रकार काव्य या नाटक के अनुशीलन से अनेक भावों का संयोग होता है, जो आस्वाद-दशा में 'रस' कहलाता है।

रस के अवयव

STEP UP

1. स्थायी भाव

- मन के भीतर स्थायी रूप से रहने वाला सुषुप्त संस्कार या वासना को स्थायी भाव कहते हैं।
- स्थायी भाव अनुमूल आलम्बन तथा उद्दीपन रूप उद्घोधन सामग्री के संयोग से रस रूप में अभिव्यक्त होते हैं।
- स्थायी भाव ऐसा सागर है जो सभी विरोधी अविरोधी भावों को आत्मसात् करके अपने अनुरूप बना लेता है।
- ममट आदि आचार्यों ने (1) रति (2) हास (3) शोक (4) क्रोध (5) भय (6) जुगुप्सा (7) निर्वेद (8) विस्मय नौ स्थायी भाव माने हैं।

रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहो भयं तथा।

जुगुप्सा विस्मयश्चेति स्थायिभावाः प्रकीर्तिताः।

निर्वेदः स्थायिभावोस्ति शान्तोद्दृष्टि नवमो रसः ॥

- भरत मुनि के समय प्रारम्भ में निर्वेद को छोड़ आठ भाव ही माने गए थे।
- परवर्ती काल में हिन्दी के कवियों एवं आचार्यों ने वात्सल्य रस का स्थायी भाव 'वत्सल' स्वीकार किया है तथा भक्ति रस में भक्तवत्सल्य रति को ग्यारहवाँ स्थायी भाव स्वीकार किया है।



2. विभाव

जो कारण हृदय में स्थित स्थायी भाव को जाग्रत तथा उद्दीप्त करें अर्थात् रसानुभूति के कारण को विभाव कहते हैं।

विभाव के दो भेद हैं –

1. **आलम्बन विभाव** – जिस व्यक्ति या वस्तु के कारण स्थायी भाव जाग्रत होता है उन्हें आलम्बन विभाव कहते हैं।

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार काव्य या नाट्य में वर्णित नायक-नायिका आदि पात्रों को आलम्बन विभाव कहते हैं।

2. **उद्दीपन विभाव** – स्थायी भाव को उद्दीप्त या तीव्र करने वाले कारण उद्दीपन विभाव होते हैं।

नायक नायिका का रूप सौन्दर्य, पात्रों की चेष्टाएँ, ऋतु, उद्यान, चाँदनी, देश-काल आदि उद्दीपन विभाव होते हैं।

इन्हें दो भागों में विभाजित किया जाता है –

1. विषयनिष्ठ उद्दीपन विभाव

2. बाह्य उद्दीपन विभाव।

शारीरिक चेष्टाएँ, हाव-भाव विषयनिष्ठ उद्दीपन विभाव तथा प्राकृतिक वातावरण, देशकाल आदि बाह्य उद्दीपन विभाव होते हैं।

3. अनुभाव

'अनुभावो भाव बोधक' अर्थात् भाव का बोध कराने वाले अनुभाव होते हैं।

रसानुभूति में विभाव कारण रूप हैं तो अनुभाव कार्य रूप होते हैं। अनुभव कराने के कारण ही ये अनुभाव कहलाते हैं।

आलम्बन उद्दीपन विभाव द्वारा रस को पुष्ट करने वाली शारीरिक मानसिक अथवा अनायास होने वाली चेष्टाएँ अनुभाव कहलाती हैं।

भरत मुनि ने अनुभाव के तीन भेद (आंगिक, वाचिक, सात्त्विक) किए हैं। भानुदत्त ने इसके चार भेद माने जो परवर्ती आचार्यों ने स्वीकार किए –

1. **आंगिक या कायिक अनुभाव** – शरीर की चेष्टाओं से व्यक्त कार्य, जैसे-भूर संचालन, आलिंगन, कटाक्षपात, चुम्बन आदि आंगिक अनुभाव होते हैं।
2. **वाचिक अनुभाव** – वाणी के द्वारा मनोभावों की अभिव्यक्ति (परस्परालाप) इसमें होती है, इसे 'मानसिक' अनुभाव भी कहा गया है।
3. **सात्त्विक अनुभाव** – ये अन्तःकरण की वास्तविक दशा के प्रकाशक होते हैं। सत्त्व से उत्पन्न होने के कारण इन्हें सात्त्विक कहा जाता है। सात्त्विक अनुभाव आठ हैं-स्तम्भ, स्वेद, रोमांच, वेपथु, स्वरभंग, वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय।
4. **आहार्य अनुभाव** – नायक-नायिका के द्वारा पात्रानुसार, वेशभूषा, अलंकार आदि को धारण करना अथवा देशकाल का कृत्रिम रूप में उपस्थापन करना आहार्य अनुभाव कहलाता है।

4. व्याभिचारी (संचारी) भाव

विविधम् आभिमुख्येन रसेषु चरन्तीति व्याभिचारिणः

व्याभिचारी (संचारी) भाव स्थायी भाव के साथ-साथ संचरण करते हैं, इनके द्वारा स्थायी भाव की स्थिति की पुष्टि होती है। एक रस के स्थायी भाव के साथ अनेक संचारी भाव आते हैं तथा एक संचारी किसी एक स्थायी भाव के साथ या रस के साथ नहीं रहता है, वरन् अनेक रसों के साथ संचरण करता है, यहीं उसकी व्याभिचार की स्थिति है।



संचारी भाव उसी प्रकार उठते हैं और लुप्त होते हैं जैसे जल में बुद्बुदे और लहरें उठती हैं और विलीन होती रहती है।

भरत मुनि ने तीनों संचारी भावों का उल्लेख किया है –

- | | | | | |
|-----------|----------|------------|------------|----------|
| • निर्वेद | • दैन्य | • हर्ष | • अपस्मार | • व्याधि |
| • ग्लानि | • चिन्ता | • आवेग | • सुप्त | • उन्माद |
| • शंका | • मोह | • जड़ता | • विबोध | • मरण |
| • असूया | • स्मृति | • गर्व | • अमर्ष | • त्रास |
| • मद | • धृति | • विषाद | • अवहिन्था | • वितर् |
| • श्रम | • त्रीडा | • औत्सुक्य | • उग्रता | |
| • आलस्य | • चपलता | • निद्रा | • मति | |

रसों के प्रकार

नाट्यशास्त्र में आठ स्थायी भावों और उन पर आधृत आठ रसों की विवेचना प्रस्तुत की लेकिन पश्चवर्ती आचार्यों ने रसों की संख्या नौ निर्धारित की –

‘शृंगार हास्य करुण रौद्र वीर भयानकः।

वीभत्साद्वृतसंज्ञो चेच्छान्तोऽपि नवमो रसः।’

‘नागानन्द’ रचना के पश्चात् ‘शान्त रस’, महाकवि सूरदास की रचनाओं से ‘वात्सल्य रस’, ‘भक्तिरसामृत सिंधु’ और ‘उज्जवलनीलमणि’ नामक ग्रन्थों की रचना के पश्चात् ‘भक्ति रस’ को स्वीकार किया गया। इस प्रकार रसों की कुल संख्या न्यारह हो गई।

रस के उदाहरण

1. शृंगार रस

शृंगार रस को रसराज कहा जाता है।

स्थायी भाव – रति

आलम्बन विभाव – नायक या नायिका

उद्धीपन विभाव – नायिका के कुच, नितम्बादि अंग, एकान्त, वन-उपवन, चन्द्र-ज्यौत्स्ना, वसन्त, पुष्प, नायिका अथवा अनुभाव के चेष्टाएँ – हावभाव, तिरछी चितवन, मुस्कान।

संचारी भाव – तीनों संचारियों में उग्रता, मरण, आलस्य, जुगुप्सा को छोड़कर शेष सभी संचारी भाव, मुख्यतः लज्जा, शर्म, चपलता।

शृंगार रस दो भागों में विभक्त किया गया है –

1) संयोग शृंगार

आचार्य धनंजय – ‘जहाँ अनुकूल विलासी एक-दूसरे के दर्शन-स्पर्शन इत्यादि का सेवन करते हैं। वह आनन्द से युक्त संयोग शृंगार कहलाता है।’

आचार्य विश्वनाथ – ‘जहाँ एक-दूसरे के प्रेम में अनुरक्त नायक-नायिका दर्शन-स्पर्शन आदि का सेवन करते हैं वह संयोग शृंगार कहलाता है।’



संयोग- शृंगार के वण्ण विषय में प्रेम की उत्पत्ति, आलम्बन एवं क्रीड़ाएँ होती हैं। उत्पत्ति प्रत्यक्ष दर्शन, गुण श्रवण, चित्र दर्शन या स्वप्न दर्शन द्वारा होती है। यथा-

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।

भरे भौंन में करत हैं नैनन ही सौं बात।। (बिहारी)

संयोग शृंगार रस के अन्य उदाहरण -

बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।

सौंह करै भौंहनु हंसे देन कहै नटि जाय।। (बिहारी)

देखन मिस मृग-बिहँग-तरु, फिरति बहोरि-बहोरि।

निरखि-निरखि रघुवीर-छवि, बाढ़ी प्रीति न थोरि।।

देखि रूप लोचन ललचाने। हरखे जनु निज निधि पहिचाने।।

थके नयन रघुपति-छवि देखी। पलकन हूं परहरी निमेखी।।

अधिक सनेह देह भइ भोरी। सरद-ससिहि जनु चितव चकोरी।।

लोचन-मग रामहिं उर आनी। दीन्हे पलक-कपाट सयानी।।

(रामचरितमानस)

2) वियोग शृंगार

आचार्य भोज - ''जहाँ रति नामक भाव प्रकर्ष को प्राप्त हो, लेकिन अभीष्ट को न पा सके। वहाँ विप्रलम्भ शृंगार कहा जाता है।''

आचार्य भानुदत्त - ''युवा और युवती की परस्पर मुदित पंचेन्द्रियों के पारस्परिक सम्बन्ध का अभाव अथवा अभीष्ट की अप्राप्ति विप्रलम्भ है।''

वियोग शृंगार की 10 दशाएँ निर्धारित हैं -

1. अभिलाषा
2. चिन्ता
3. स्मरण
4. गुणकथन
5. उद्गेग
6. प्रलाप
7. उन्माद
8. व्याधि
9. जड़ता
10. मरण।

वियोग शृंगार के चार प्रकार हैं

1. पूर्वराग
2. मान
3. प्रवास
4. भिन्नाप या करुणात्मक।

यथा -

घड़ी एक नहिं आवडै, तुम दरसण बिन मोय।

तुम हो मेरे प्राण जी, काँसू जीवन होय।।

धान न भावै, नींद न आवै, विरह सतावे मोइ।

घायल सी घूमत फिरुं रे, मेरो दरद न जाएै कोइ।।

(मीरा)



वियोग शृंगार रस के अन्य उदाहरण –

बैठि, अटा सर औंधि बिसूरति, पाय सँदेस नी 'श्रीपति' पी के।

देखत छाती फटै निपटै, उछैटै, जब बिज्जु-छटा छबि नीके॥

कोकिल कूकंै, लगें तक लूकें, उँ हिय हूकें बियोगिनि ती के।

बारि के बाहक, देह के दाहक, आये ब्लाहक गाहक जी के॥

(श्रीपति)

अति मलीन बृखभानु-कुमारी,

अथ मुख रहित, उरथ नहिं चितवति, ज्यों गथ हारे थकित जुआरी।

छूटे चिकुर, बदन कुम्हिलानो, ज्यों नलिनी हिमकर की मारी॥

1. हास्य रस

- स्थायी भाव – हास
- आलम्बन विभाव – हास्यास्पद वचन, विकृत वेश या विकृत कार्य
- उद्धीपन विभाव – अनुपयुक्त वचन, अनुपयुक्त वेश, अनुपयुक्त चेष्टा
- अनुभाव – मुख का फुलाना, हँसना, आँखें बन्द होना, ओठ नथूने आदि का स्फुरण।
- संचारी भाव – चापल्य, उत्सुकता, निद्रा, आलस्य, अवहित्था।

हास्य रस में छः प्रकार के हास्य का उल्लेख होता है।

- स्मित – आँखों में खुशी झलकना
- हसित – मुस्कुराना
- विहसित – दंतावली दिखाई देना
- अवहसित – कंधे उचकाना एवं हँसी की आवाज आना
- अतिहसित – जोर-जोर से ठहाके लगाना
- अपहसित – हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाना, इधर-उधर गिरना।

यथा –

नाक चढै सी-सी करै, जितै छबीली छैल।

फिरि फिरि भूलि वही गहै, प्यो कंकरीली गैल॥

(बिहारी)

हास्य रस के अन्य उदाहरण –

सखि! बात सुनो इक मोहन की, निकसी मटुकी सिर रीती ले कै।

पुनि बाँधि लयो सु नये नतना, रू कहँू-कहँू बुन्द करी छल कै॥

निकसी उहि गैल हुते जहाँ मोहन, लीनी उतारि तबै चल कै।





पतुकी धरि स्याम खिसाय रहे, उत ग्वारि हँसी मुख आँचल कै ॥

तेहि समाज बैठे मुनि जाई । हृदय रूप-अहमिति अधिकाई ॥

तहँ बैठे महेस-गन दोऊ! विप्र बेस गति लखड़ न कोऊ ॥

सखी संग दै कुँवर तब चलि जनु राज-मराल ।

देखत फिरइ महीप सब कर-सरोज जय-माल ॥

जेहि दिसि नारद बैठे फूली । सो दिसि तेहि न बिलोकी भूली ॥

पुनि-पुनि मुनि उकसाहिं अकुलाहीं । देखि दसा हर-गन मुसकाहीं ॥

3. करुण रस

स्थायी भाव – शोक

आलम्बन विभाव – प्रिय व्यक्ति का दुख, मृत शरीर, इष्टनाश ।

उद्दीपन विभाव – आलम्बन का रुदन, मृतक दाह, यादें, स्मरण ।

अनुभाव – अश्रुपात, विलाप, भावयनिन्दा, भूमिपतन, उच्छवास ।

संचारी भाव – निर्वेद, मोह, अपस्मार, व्याधि, ग्लानि, स्मृति, श्रम, विषाद, जडता, उन्माद ।

यथा –

राघौ गीध गोद करि लीन्हो ।

नयन सरोज सनेह सलिल सुचि मनहुं अरघ जल दीन्हो ॥

करुण रस के अन्य उदाहरण

प्रिय मृत्यु का अप्रिय महा संवाद पाकर विष-भरा ।

चित्रस्थ-सी, निर्जीव सी, हो रह गयी हत उत्तरा ॥

संज्ञा-रहित तत्काल ही वह फिर धरा पर गिर पड़ी ।

उस समय मूर्छा भी अहो! हितकर हुई उसको बड़ी ॥

फिर पीटकर सिर और छाती अश्रु बरसाती हुई ।

कुररी-सहश सकरुण गिरा से दैन्य दरसाती हुई ॥

बहुविधि विलाप-प्रलाप वह करने लगी उस शोक में ।

निज प्रिय-वियोग समान दुख होता न कोई लोक में ॥

देखि सुदामा की दीन दसा करुना करि कै करुनानिधि रोये ।

पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैननि के जल सों पग धोये ॥

4. रौद्र रस

- स्थायी भाव – क्रोध

- आलम्बन विभाव – अपराधी व्यक्ति, शत्रु, विपक्षी, द्रोही, दुराचार ।





- उद्दीपन विभाव – कटुवचन, शत्रु के अपराध, शत्रु की गर्वोक्ति।
- अनुभाव – नेत्रों का रक्तिम होना, त्यौरे चढ़ाना, ओठ चबाना।
- संचारी भाव – मद, उग्रता, अमर्ष, स्मृति, जड़ता, गर्व।

यथा –

तुमने धनुष तोड़ा शशिशेखर का,
मेरे नेत्र देखो,
इनकी आग में डूब जाओगे सर्वंश राघव।
गर्व छोड़ो
काटकर समर्पित कर दो अपने हाथ।
मेरे नेत्र देखो।

रौद्र रस के अन्य उदाहरण –

श्री कृष्ण के सुन वचन अर्जुन क्रोध से जलने लगे।
सब शोक अपना भूलकर करतल-युगल मलने लगे।।
संसार देखे अब हमारे शत्रु रण में मृत पड़े।
करते हुए यह घोषणा वे हो गये उठकर खड़े।।
उस काल मारे क्रोध के तनु काँपने उनका लगा।
मानो हवा के जोरे से सोता हुआ सागर जगा।
मुख बालरवि सम लाल होकर ज्वाल-सा बोधित हुआ।
प्रलयार्थ उनके मिस वहाँ क्या काल ही क्रोधित हुआ।।
भारखे लखन, कुटिल भयी भौंहें।
रद-पट फरकत नैन रिसौंहें।।
कहि न सकत रघुवीर डर, लगे वचन जनु बान।
नाइ राम-पद-कमल-जुग, बोले गिरा प्रसाद।।
भाषे लखन कुटिल भई भौंहे, रद-पट फरकत नयन रिसौंहे।
रघुवंशिन्ह मैं जहँ कोऊ होई, तेहि समाज अह कहई न कोई।। (रौद्र)

आश्रय – लक्ष्मण

विषय (आलंबन) – जनक के वचन

उद्दीपन विभाव – पूर्वजों की वीरता, जनक के वचन की कठोरता

अनुभाव – होठ फड़कना, भौंहे टेढ़ी होना





संचारी भाव – अमर्श, गर्व

स्थायी भाव – क्रोध

रस – रौद्र

उस काल मारे क्रोध के तूने काँपने उसका लगा, मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा।

मुख बाल रवि सम लाल होकर ज्वाला सा बोधित हुआ, प्रलयार्थ उनके मिस वहाँ, क्या काल ही क्रोधित हुआ॥ (रौद्र)

- आश्रय – योद्धा
- विषय (आलंबन) – शत्रु
- उद्दीपन विभाव – शत्रु की कडवी बातें
- अनुभाव – शरीर का काँपना, मुख का लाल होना
- संचारी भाव – अमर्श, गर्व, उग्रता
- स्थायी भाव – क्रोध
- रस – रौद्र

गर्भ के अर्भक काटन को, पटुधार कुठार कराल है जाको।

सोई हों बूझत राजसभा, धनु को दल्यौ हों टलिहों बल ताको।

लघु आनन उतर देत बडो, लरिहै मरिहै करिहै कछु साको।

गोरो गरुर गुमान भर्यो, कहु कौसिक छोटो सो छोटो है काको॥ (रौद्र)

- आश्रय – परशुरामजी
- विषय (आलंबन) – लक्ष्मण
- उद्दीपन विभाव – लक्ष्मण द्वारा परशुराम का परिहास, अपमान एवं व्यंग्यपूर्ण वचन
- अनुमान – कुठार दिखाना, दाँत पीसना, आँखे लाल करना, भौंहे टेढ़ी करना
- संचारी भाव – गर्व, आवेग, उग्रता, अमर्श
- स्थायी भाव – क्रोध
- रस – रौद्र

5. वीर रस

- स्थायी भाव – उत्साह
- आलम्बन विभाव – शत्रु, शत्रु का उत्कर्ष।
- आश्रय – नायक (वीर पुरुष)।
- उद्दीपन विभाव – रिपु की गर्वोक्ति, मारु आदि राग, रणभेरी, रण कोलाहल।
- अनुभाव – अंग स्फुरण, रक्तिम नेत्र, रोमांच।
- संचारी भाव – हर्ष, धृति, गर्व, असूया आदि।



वीर रस के अन्तर्गत चार प्रकार के वीरों का उल्लेख किया गया है –

- 1) युद्धवीर (भीम, दुर्योधन)
- 2) धर्मवीर (युधिष्ठिर)
- 3) दानवीर (कर्ण)
- 4) दयावीर (राजा शिवि)

वीर रस के उदाहरण –

सकल सूरसामंत, समरि बल जंत्र मंत्र तस।
उद्धिराज प्रथिराज, बाग मनो लग वीर नट।
कढत तेग मनो वेग, लागत मनो बीज झट्टु घट।
थकि रहे सूर कौतिग गिगन, रगन मगन भइ श्रोन धर।
हर हरिष वीर जग्गे हुलस हुरव रंगि जब रत्त वर॥

(चन्द्रबरदाई)

स्व-जाति की देख अतीव दुर्दशा
विगर्हणा देख मनुष्य-मात्र की।
निहार के प्राणि-समूह-कष्ट को
हुए समुत्तोजित वीर-केसरी।
हितैषणा से निज जन्म-भूमि की
अपार आवेश ब्रजेश को हुआ।
बनी महा बंक गठी हुई भवे,
नितान्त विस्फारित नेत्र हो गये॥

मैं सत्य कहता हूँ सखे! सुकुमार मत जानो मुझे।
यमराज से भी युद्ध मैं प्रस्तुत सदा जानो मुझे।
हे सारथे! हैं द्रोण क्या? आवें स्वयं देवेन्द्र भी।
वे भी न जीतेंगे समर मैं आज क्या मुझसे कभी॥

6. भ्यानक रस

- स्थायी भाव – भय
- आलम्बन विभाव – बाघ, चोर, भयंकर वन, शक्तिशाली का कोप, भ्यानक दृश्य।
- उद्धीपन विभाव – आलम्बन की चेष्टाएँ, नीरवता, कोलाहल।
- अनुभाव – गिडगिडाना, क्षथ होना, आँखें बन्द करना, स्वर भंग, पलायन, मूर्छा।
- संचारी भाव – दैन्य, जडता, आवेग, शंका, चिन्ता आदि।



यथा –

और जब आई घोर काल रात्रि,
वे आततायी टूट पडे अबलाओं पर,
नोंचते, चबाते उनका माँस, भोगते,
कर्णबेधी-चीत्कार, हाहाकार,
दुराचार दृष्टिवेधी
देख नहीं सकी अबला, अचेत हो गई -सुलक्षणा

भ्यानक रस के अन्य उदाहरण –

समस्त सर्पी सँग श्याम ज्यों कढे,
कलिंद की नन्दिनि के सु-अंक से।
खडे किनारे जितने मनुष्य थे,
सभी महाशंकित भीत हो उठे।।
हुए कई मूर्छित घोर त्रास से,
कई भगे, मेदिनि में गिरे कई।
हुई यशोदा अति ही प्रकंपिता,
ब्रजेश भी व्यस्त-समस्त हो गये।।
उधर गरजती सिंधु लहरियाँ, कुटिल काल के जालों सी।
चली आ रही फैन उगलती, फैन फैलायें व्यालों सी।।

(जयशंकर प्रसाद)

7. वीभत्स रस

STEP UP
ACADEMY

- स्थायी भाव – जुगुप्सा
- आलम्बन विभाव – घृणास्पद वस्तु या कार्य, माँस, रक्त, अस्थि, श्मशान, दुर्गन्धि।
- उद्वीपन विभाव – आलम्बन के कार्य, रक्त, माँस आदि का सड़ना, कुत्ते-गिर्दु आदि द्वारा शब नोंचना।
- अनुभाव – मुँह मोड़ना, नाक-आँख बंद करना, थूकना।
- संचारी भाव – मोह, असूया, अपस्मार, आवेग, व्याधि जड़ता आदि।

वीभत्स रस के उदाहरण –

कहाँ कमध कहाँ मथ्थ कहाँ कर चरन अंत रूरि।
कहाँ कथ वहि तेग, कहाँ सिर जुद्धि फुट्टि उर।
कहौं दंत मत्त हय षुर षुपरि, कुम्भ असुङ्ह रूङ सब।
हिंदवान रान भय भान मुष, गहिय तेग चहुवान जब।।

(चन्द्रबरदाई)



सिर पर बैठो काग आंखि दोउ खात निकारत
खींचत जीभहिं स्यार अतिहि आनन्द डर धारत।

8. अद्भुत रस

- स्थायी भाव – विस्मय (आश्र्वय)
- आलम्बन विभाव – अलौकिक या आश्वर्यजनक वस्तु
- उद्दीपन विभाव – आलम्बन का गुण या कार्य।
- अनुभाव – रोमाँच, कँप, स्वेद, संभ्रम।
- संचारी भाव – वितर्क, भ्रान्ति, हर्ष, शंका, आवेग, मोह।

यथा –

एक अचम्भा देख्यौ रे भाई।

ठाढा सिंह चरावै गाई।।

जल की मछली तरवर ब्याई।

पकडि बिलाइ मुरगै खाई।।

(कबीर)

अद्भुत रस के अन्य उदाहरण –

अखिल भुवन चर-अचर जग हरिमुख में लखि मातु।

चकित भयी, गदगद वचन, विकसित दृग, पुलकातु।।

दिखरावा निज मातहि उद्भुत रूप अखंड।

रोम-रोम प्रति लागे कोटि-कोटि ब्रह्मांड।।

अगनित रवि-ससि सिव चतुरानन।

बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन।

तनु पुलकित, मुख बचन न आवा।

नयन मूँदि चरनन सिर नावा।।

9. शान्त रस

- स्थायी भाव – निर्वेद या वैराग्य
- आलम्बन विभाव – निर्वेद उत्पन्न करने वाली वस्तु, सांसारिक नश्वरता।
- उद्दीपन विभाव – सत्संग, पुण्याश्रम, तीर्थ, एकान्त।
- अनुभाव – रोमाँच, दृढ़ता, कथन, चेतावनी, संकल्प।
- संचारी भाव – धृति, मोह, निर्वेद, हर्ष, विमर्श।
- आश्रय – ज्ञानी व्यक्ति।



यथा –

जल में कुम्भ कुम्भ में जल है बाहर भीतर पानी।

फूटा कुम्भ जल जलहिं समाना यह तथ कह्यो गियानी ॥

(कबीर)

शान्त रस के अन्य उदाहरण –

थिर नहिं जउबन थिर नहिं देह

थिर नहिं रहए बालमु सओं नेह ।

थिर जनु जानह ई संसार

एक पए थिर रह पर उपकार ॥

(विद्यापति)

बुद्ध का संसार त्याग –

क्या भाग रहा हूँ भार देख?

तू मेरी ओर निहार देख-

मैं त्याग चला निस्सार देख ।

अटकेगा मेरा कौन काम ।

ओ क्षणभंगुर भव! राम-राम!

रूपाश्रय तेरा तरुण गात्र,

कह कब तक है वह प्राण-मात्र?

भीतर भीषण कंकाल-मात्र,

बाहर-बाहर है टीमटाम ।

ओ क्षणभंगुर भव! राम-राम!

10. वात्सल्य रस

- स्थायी भाव – वत्सलता
- आलम्बन विभाव – बच्चा (संतान)
- उद्वीपन विभाव – आलम्बन की चेष्टाएँ
- अनुभाव – स्नेह से देखना, आलिंगन, चुम्बन, पालने झुलाना।
- संचारी भाव – हर्ष, गर्व आदि।
- आश्रय – माता-पिता।





यथा –

जसोदा हरि पालने झुलावै
हलरावै दुलराय मल्हावै जोइ सोई कछु गावै।
मेरे लाल को आओ निन्दरिया काहे न आनि सुलावै।
कबहुँ पलक हरि मूद लेत कबहुँ अधर फरकावै॥

(सूरदास)

वात्सल्य रस के अन्य उदाहरण –

हरि अपने रँग में कछु गावत।
तनक तनक चरनन सों नाचत, मनहिं-मनहिं रिझावत।
बाँहि उँचाई काजरी-धौरी गैयन टेरि बुलावत।
माखन तनक आपने कर ले तनक बदन में नावत।
कबहुँ चितै प्रतिबिंब खंभ में लवनी लिये खवावत।
दुरि देखत जसुमति यह लीला हरखि अनन्द बढावत॥।।
मैया कबहुँ बढ़ेगी चोटी।
कितनी बार मोहि दूध पियत भई यह अजहुँ है छोटी।।

(सूरदास)

11. भक्ति रस



- स्थायी भाव – भगवद्विषयक रति
- आलम्बन विभाव – आराध्य देव, गुरुजन, इष्ट
- उद्दीपन विभाव – आराध्य या आलम्बन का रूप, उनके कार्य एवं लीलाएँ।
- अनुभाव – अश्रु, रोमांच, कंठावरोध, गद्दद् होना, नेत्र बंद होना।
- संचारी भाव – जगुप्सा, आलस्य आदि के अतिरिक्त सभी मुख्यतः हर्ष, आवेग, दैन्य, स्मरण।

शास्त्रों में नौ प्रकार की भक्ति (नवधाभक्ति) का उल्लेख मिलता है–

- श्रवण
- कीर्तन
- स्मरण
- पाद सेवन
- अर्चन
- वंदन
- दास्य
- साख्य
- आत्म निवेदन।

भक्ति रस के उदाहरण –

राम जपु राम जपु राम बावरे।
घोर भव नीर निधि नाम निज नाव रे॥।

(तुलसी)



बसौ मेरे नैनन में नन्दलाल।

मोहनी सूरत सांवरी सूरत, नैणा बने विसाल।

अधर सुधारस मुरली राजती, उर वैयन्ती माल।

क्षुद्र घटिका कटि तट सोभित नुपुर सबद रसाल।

मीरा के प्रभु सन्तन सुखदाई, भगत बछल गोपाल।

(मीरा)

जाको हरि दृढ करि अंग कर्यो।

सोई सुसील, पुनीत, बेद-बिद विद्या-गुननि भर्यो।

उतपति पांडु-सुतन की करनी सुनि सतपंथ डर्यो।

ते त्रैलोक्य-पूज्य, पावन जस सुनि-सुनि लोक तर्यो।

जो निज धरम बेद बोधित सो करत न कछु बिसरयो।

बिनु अवगुन कृकलास्कूप मज्जित कर गहि उधर्यो।।



STEP UP
ACADEMY



लिंग

शब्द के जिस रूप से उसकी जाति (नर, मादा) का बोध होता है, उसे लिंग (Gender in hindi) कहते हैं।

लिंग दो प्रकार के होते हैं -

1. पुल्लिंग
2. स्त्रीलिंग

शब्दों के जिस रूप में उनके 'नरत्व' (पुरुषत्व) का बोध होता है, उसे 'पुल्लिंग' तथा शब्दों के जिस रूप से उसके 'स्त्रीत्व' का बोध होता है, उसे 'स्त्रीलिंग' कहते हैं।

जैसे -

पुल्लिंग शब्द - लड़का, बैल, पेड़, नगर आदि।

स्त्रीलिंग शब्द - गाय, लड़की, लता, नदी आदि।

हिन्दी भाषा में सृष्टि के समस्त पदार्थों को दो ही लिंगों में विभक्त किया गया है।

निर्जीव शब्दों का लिंग निर्धारण कठिन होता है, सजीव शब्दों का लिंग निर्धारण सरलता से हो जाता है।

संस्कृत के पुल्लिंग तथा नपुंसकलिंग शब्द, जो हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं, उसी रूप में स्वीकार कर लिए गए हैं, जैसे- तन, मन, धन, देश, जगत् आदि पुल्लिंग तथा सुन्दरता, आशा, लता दिशा जैसे शब्द स्त्रीलिंग हैं।

पुल्लिंग

हिन्दी में जो शब्द रूप या बनावट के आधार पर पुल्लिंग होते हैं, उनका परिचय इस प्रकार है

- **अकारान्त पुल्लिंग शब्द-** राम, बालक, गृह, सूर्य, सागर आदि।
- **आकारान्त पुल्लिंग शब्द-** घड़ा, चूना, बूरा आदि।
- **इकारान्त पुल्लिंग शब्द-** कवि, हरि, कपि, वारि।
- **ईकारान्त पुल्लिंग शब्द-** मोती, पानी, धी आदि।
- **उकारान्त पुल्लिंग शब्द-** भानु, शिशु, गुरु आदि।
- **ऊकारान्त पुल्लिंग शब्द-** बाबू, चाकू, आलू, भालू आदि।
- **प्रत्यान्त पुल्लिंग शब्द -** आव या आवा (घुमाव, पड़ाव, बढ़ावा, चढ़ावा), ना (चलना, तैरना, सोना, जागना,) पन (लडकपन, भोलापन, बड़प्पन, बचपन), आन (मिलान, खानपान, लगान), खाना (डाकखाना, चिडियाखाना)।
- अर्थ की दृष्टि से पुल्लिंग शब्द प्रायः धातुओं और रत्नों के नाम - सोना, लोहा, हीरा, मोती आदि (चाँदी को छोड़कर)।
- भोज्य पदार्थ पेड़ा, लड्डू, हलवा, अनाजों के नाम गेहूँ, जौ, चना।



- दिनों-महीनों के नाम सोमवार से रविवार तक सभी दिन, हिन्दी महीनों के नाम चैत्र, बैसाख, सावन, भादों आदि।
- हिमालय, हिन्दमहासागर, भारत, चन्द्रमा आदि पर्वत, सागर, देश और ग्रहों के नाम (पृथ्वी) पुल्लिंग होते हैं।

स्त्रीलिंग

रूप या बनावट के आधार पर

- आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द - लता, सरिता, मामला, उदारता
- इकारान्त स्त्रीलिंग शब्द - मति, रुचि, छवि।
- अग्नि संस्कृत में पुल्लिंग है, परन्तु हिन्दी में स्त्रीलिंग है। (अपवाद)।
- ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द - नदी, सरस्वती।
- उकारान्त एवं ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द- धातु, बालू, सरयू।
- प्रत्यान्त स्त्रीलिंग शब्द - 'इया' (डिबिया, खटिया, बछिया, बिटिया)। 'अन' (लगन, जलन, उलझन, तपन, सूजन), 'अ' (चहक, महक, तडप आदि।) 'आई' (लड़ाई, मिठाई, लिखाई, पढ़ाई, खटाई), 'त' (अदालत, वकालत, कीमत, इज्जत, वसीयत आदि।)
- वे संज्ञा, जिनके अन्त में 'ख' स्त्रीलिंग-भूख, आँख, साख, कोख आदि।
- अपवाद दुःख, सुख, मुख आदि पुल्लिंग हैं।

अर्थ की दृष्टि से

नक्षत्रों (रोहिणी, भरणी), नदियों व झीलों (गंगा, यमुना, सरस्वती, सरयू, सांभर, डल), तिथियों (पठवा, दोयज, तीज), भाववाचक संज्ञाएँ इच्छा, अर्चना, ऋद्धि-सिद्धि कटुता, महानता, सरलता आदि।

वाक्य रचना में लिंग के शुद्ध प्रयोग

- संज्ञा शब्द पुल्लिंग या स्त्रीलिंग होते हैं।
- सर्वनाम में लिंग भेद नहीं होता, क्योंकि सर्वनाम का लिंग निर्णय 'क्रिया' के आधार पर होता है।
- विशेषण पद प्रायः अपने निकटतम विशेष्य के अनुसार ही स्त्रीलिंग या पुल्लिंग होते हैं – अच्छा लड़का, अच्छी बात, काला बछड़ा, काली गाय, बड़ा बेटा, बड़ी बेटी आदि।
- क्रिया पदों का लिंग कर्ता के अनुसार होता है, नदी बहती है। झरना बहता है।
- कर्ता में विकल्प होने पर क्रिया का लिंग बाद वाले कर्ता के समान होता है, जैसे-राम या सीता गई। वहाँ कुओं या नदी दिखाई पड़ेगी।

लिंग – परिवर्तन

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के कातिपय नियम इस प्रकार हैं –

- | | |
|-----------------------------------|--------------|
| 1. शब्दान्त 'अ' को 'आ' में बदलकर- | भवदीय-भवदीया |
| छात्र-छात्रा | सुत-सुता |
| वृद्ध-वृद्धा | अनुज-अनुजा |
| पूज्य-पूज्या | |



2. शब्दान्त 'अ' को 'ई' में बदलकर -
 देव-देवी
 पुत्र -पुत्री
 ब्राह्मण-ब्राह्मणी
 मेंढक-मेंढकी
 गोप-गोपी
 दास-दासी
3. शब्दान्त 'आ' को 'ई' में बदलकर-
 नाना-नानी
 बेटा-बेटी
 लड़का-लड़की
 रस्सा-रस्सी
 घोड़ा-घोड़ी
 चाचा-चाची
4. शब्दान्त 'आ' को 'इया' में बदलकर -
 बूढ़ा-बुढ़िया
 चूहा-चुहिया
 कुत्ता-कुतिया
 डिब्बा-डिबिया
 बेटा-बेटिया
 लोटा-लुटिया
5. शब्दान्त प्रत्यय 'अक' को 'इका' में बदलकर -
 बालक-बालिका
 लेखक-लेखिका
 पाठक-पाठिका
 गायक-गायिका
 नायक-नायिका
6. 'आनी' प्रत्यय लगाकर -
 देवर-देवरानी
 चौधरी -चौधरानी
 भव-भवानी
 जेठ-जेठानी
 सेठ-सेठानी
7. 'नी' प्रत्यय लगाकर -
 शेर-शेरनी
 मोर-मोरनी
 सिंह-सिंहनी
 ऊँट-ऊँटनी
 जाट-जाटनी
 भील-भीलनी
8. शब्दान्त में 'ई' के स्थान पर 'इनी' लगाकर -
 हाथी-हथिनी
 तपस्वी-तपस्विनी
 स्वामी-स्वामिनी
9. 'इन' प्रत्यय लगाकर -
 माली-मालिन
 चमार-चमारिन
 नाई-नाइन
 कुम्हार-कुम्हारिन
 धोबी-धोबिन
 सुनार-सुनारिन
10. 'आइन' प्रत्यय लगाकर -
 चौधरी - चौधराइन
 ठाकुर-ठकुराइन
 मुंशी -मुंशियाइन
11. शब्दान्त 'मान' के स्थान पर 'मती' लगाकर -
 श्रीमान्- श्रीमती
 बुद्धिमान-बुद्धिमती
 आयुष्मान-आयुष्मती
12. शब्दान्त 'ता' के स्थान पर 'त्री' लगाकर -
 कर्ता -कर्त्री
 नेता-नेत्री
 दाता-दात्री
13. शब्द के पूर्व में 'मादा' शब्द लगाकर -
 खरगोश-मादा खरगोश



भालू-मादा भालू	राजा-रानी
भेड़िया-मादा भेड़िया	पुरुष-स्त्री
14. भिन्न रूप वाले कतिपय शब्द -	बादशाह-बेगम
कवि-कवयित्री	युवक-युवती
वर-वधू	विद्वान-विदुषी
वीर-वीरांगना	साधु-साध्वी
मर्द-औरत	बैल-गाय
दूल्हा-दुलहिन	भाई-भाभी
नर-नारी	ससुर-सास

महत्त्वपूर्ण तथ्य -

- शब्द के जिस रूप से उसकी जाति (नर-मादा) का बोध हो, वह लिंग है।
- हिन्दी में पुल्लिंग और स्त्रीलिंग का निर्धारण 'रूप या बनावट' तथा 'अर्थ' की वृष्टि से किया जाता है।





वचन

“शब्द के जिस रूप से एक या एक से अधिक का बोध होता है, उसे हिन्दी व्याकरण में ‘वचन’ कहते हैं।“

वचन की परिभाषा

दूसरे शब्दों में- “संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध हो, उसे ‘वचन’ कहते हैं अर्थात् जिस रूप से किसी व्यक्ति, वस्तु के एक या एक से अधिक होने का पता चलता है, उसे वचन कहते हैं।

जैसे:

- लड़की खेलती है।
- लड़कियाँ खेलती हैं।
- फ्रिज में सब्जियाँ रखी हैं।
- तालाब में मछलियाँ तैर रही हैं।
- माली पौधों को सींच रहा है।
- कछुआ खरगोश के पीछे है।

उपर्युक्त वाक्यों में लड़की, फ्रिज, तालाब, बच्चे, माली, कछुआ शब्द उनके एक होने का तथा लड़कियाँ, सब्जियाँ, मछलियाँ, पौधे, खरगोश शब्द उनके एक से अधिक होने का ज्ञान करा रहे हैं। अतः यहाँ लड़की, फ्रिज, तालाब, माली, कछुआ एकवचन के शब्द हैं तथा लड़कियाँ, सब्जियाँ, मछलियाँ, पौधे, खरगोश बहुवचन के शब्द।

वचन का शाब्दिक अर्थ संख्यावचन होता है। संख्यावचन को ही संक्षेप में वचन कहते हैं। वचन का एक अर्थ कहना भी होता है।

वचन के भेद या वचन के प्रकार

वचन के दो भेद होते हैं:

1. एकवचन
2. बहुवचन

1. **एकवचन:** संज्ञा के जिस रूप से एक व्यक्ति या एक वस्तु होने का ज्ञान हो, उसे एकवचन कहते हैं अर्थात् जिस शब्द के कारण हमें किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, पदार्थ आदि के एक होने का पता चलता है उसे एकवचन कहते हैं।

जैसे :- लड़का, लड़की, गाय, सिपाही, बच्चा, कपड़ा, माता, पिता, माला, पुस्तक, स्त्री, टोपी, बन्दर, मोर, बेटी, घोड़ा, नदी, कमरा, घड़ी, घर, पर्वत, मैं, वह, यह, रुपया, बकरी, गाड़ी, माली, अध्यापक, केला, चिड़िया, संतरा, गमला, तोता, चूहा आदि।



2. **बहुवचन:** शब्द के जिस रूप से एक से अधिक व्यक्ति या वस्तु होने का ज्ञान हो, उसे बहुवचन कहते हैं अर्थात् जिस शब्द के कारण हमें किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, पदार्थ आदि के एक से अधिक या अनेक होने का पता चलता है उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे :- लड़के, लड़कियाँ, गायें, कपड़े, टोपियाँ, मालाएँ, माताएँ, पुस्तकें, वधुएँ, गुरुजन, रोटियाँ, पेंसिलें, स्त्रियाँ, बेटे, बेटियाँ, केले, गमले, चूहे, तोते, घोड़े, घरों, पर्वतों, नदियों, हम, वे, ये, लताएँ, गाड़ियाँ, बकरियाँ, रुपए आदि।

1. आदरणीय या सम्मानीय व्यक्तियों के लिए सदैव बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। इसके लिए एकवचन व्यक्तिवाचक संज्ञा को ही बहुवचन में प्रयोग कर दिया जाता है।

जैसे :-

- गांधीजी चंपारन आये थे।
- शास्त्रीजी बहुत ही सरल स्वभाव के थे।
- गुरुजी आज नहीं आये।
- पापाजी कल कलकत्ता जायेंगे।
- अम्बेडकर जी छुआछुत के विरोधी थे।
- श्री रामचन्द्र वीर थे।

2. संबद्ध दर्शाने वाली कुछ संज्ञायें एकवचन और बहुवचन में एक समान रहती हैं।

जैसे - नाना, मामी, ताई, ताऊ, नानी, मामा, चाचा, चाची, दादा, दादी आदि।

3. द्रव्यसूचक संज्ञाओं का प्रयोग केवल एकवचन में ही होता है।

जैसे - तेल, धी, पानी, दूध, दही, लस्सी, रायता आदि।

4. कुछ शब्द सदैव बहुवचन में प्रयोग किये जाते हैं।

जैसे - दाम, दर्शन, प्राण, आँसू, लोग, अक्षत, होश, समाचार, हस्ताक्षर, दर्शक, भाग्य, केश, रोम, अश्रु, आशीर्वाद आदि।

उदाहरण-

- आपके हस्ताक्षर बहुत ही अलग हैं।
 - लोग कहते रहते हैं।
 - आपके दर्शन सौभाग्य वालों को मिलते हैं।
 - इसके दाम ज्यादा हैं।
 - आज के समाचार क्या हैं?
 - आपका आशीर्वाद पाकर मैं धन्य हो गया हूँ।
5. पुल्लिंग ईकारान्त, उकारान्त और ऊकारान्त शब्द दोनों वचनों में समान रहते हैं।

जैसे- एक मुनि, दस मुनि, एक डाकू, दस डाकू, एक आदमी, दस आदमी आदि।



6. बड़प्पन दिखाने के लिए कभी -कभी वक्ता अपने लिए 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग करता है।

जैसे -

- हम अंग्रेजों के जमाने के जेलर हैं
- मालिक ने नौकर से कहा कि हम मीटिंग में जा रहे हैं।
- जब गुरुजी घर आये तो वे बहुत खुश थे।
- हमें याद नहीं हमने कभी 'आपसे' ऐसा कहा था।

7. व्यवहार में 'तुम' के स्थान पर 'आप' का प्रयोग करना अच्छा माना जाता है।

जैसे-

- आप कहाँ पर गये थे।
- आप आइयेगा जरुर, हमें आपकी प्रतीक्षा रहेगी

8. जातिवाचक संज्ञा का प्रयोग दोनों वचनों में किया जाता है।

जैसे-

- कुत्ता भौंक रहा है।
- कुत्ते भौंक रहे हैं।
- शेर जंगल का राजा है।
- बैल के चार पाँव होते हैं।

9. परन्तु धातुओं का बोध कराने वाली जातिवाचक संज्ञायें एकवचन में ही प्रयुक्त होती हैं।

जैसे-

- सोना बहुत महँगा है।
- चाँदी सस्ती है।
- उसके पास बहुत धन है।

10. गुण वाचक और भाववाचक दोनों संज्ञाओं का प्रयोग एकवचन और बहुवचन दोनों में ही किया जाता है।

जैसे-

- मैं उनके धोखे से ग्रस्त हूँ।
- इन दवाईयों की अनेक खूबियाँ हैं।
- डॉ राजेन्द्र प्रसाद की सज्जनता पर सभी मोहित थे।
- मैं आपकी विवशता को जानता हूँ।

11. कुछ शब्द जैसे हर, प्रत्येक, और हर एक का प्रयोग सिर्फ एकवचन में होता है।

जैसे-

- हर एक कुआँ का पानी मीठा नहीं होता।
- प्रत्येक व्यक्ति यही कहेगा।
- हर इन्सान इस सच को जानता है।





12. समूहवाचक संज्ञा का प्रयोग केवल एकवचन में ही किया जाता है।

जैसे-

- इस देश की बहुसंख्यक जनता अनपढ़ है।
- लंगूरों की एक टोली ने बहुत उत्पात मचा रखा है।

13. ज्यादा समूहों का बोध करने के लिए समूहवाचक संज्ञा का प्रयोग बहुवचन में किया जाता है।

जैसे- विद्यार्थियों की बहुत सी टोलियाँ इधर गई हैं।

14. एक से ज्यादा अवयवों को इंगित करने वाले शब्दों का प्रयोग बहुवचन में होता है लेकिन अगर उनको एकवचन में प्रयोग करना है तो उनके आगे एक लगा दिया जाता है।

जैसे- आँख, कान, ऊँगली, पैर, दांत, अंगूठा आदि।

उदाहरण-

- राधा के दांत चमक रहे थे।
- मेरे बाल सफेद हो चुके हैं।
- मेरा एक बाल टूट गया।
- मेरी एक आँख में खराबी है।
- मंजू का एक दांत गिर गया।

15. करण कारक के शब्द जैसे- जाड़ा, गर्मी, भूख, प्यास आदि को बहुवचन में ही प्रयोग किया जाता है।

जैसे-

- बेचारा बन्दर जाड़े से ठिठुर रहा है।
- भिखारी भूखे मर रहे हैं।

16. कभी कभी कुछ एकवचन संज्ञा शब्दों के साथ गुण, लोग, जन, समूह, वृन्द, दल, गण, जाति आदि लगाकर उन शब्दों को बहुवचन में प्रयोग किया जाता है।

जैसे-

- छात्रगण बहुत व्यस्त होते हैं।
- मजदूर लोग काम कर रहे हैं।
- स्त्रीजाति बहुत संघर्ष कर रही है।

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम

विभिन्निरहित संज्ञाओं के बहुवचन बनाने के नियम-

1. आकारान्त पुलिंग शब्दों में 'आ' के स्थान पर 'ए' लगाने से-

एकवचन	बहुवचन
जूता	जूते
तारा	तारे

लड़का	लड़के
घोड़ा	घोडे
बेटा	बेटे
मुर्गा	मुर्गे
कपड़ा	कपडे
बालिका	बालिकाएं

2. अकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में ‘अ’ के स्थान पर ‘ए’ लगाने से-

कवचन	बहुवचन
कलम	कलमें
बात	बातें
रात	रातें
आँख	आखें
पुस्तक	पुस्तकें
सड़क	सड़कें
चप्पल	चप्पलें

3. जिन स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्त में ‘या’ आता है, उनमें ‘या’ के ऊपर चन्द्रबिन्दु लगाने से बहुवचन बनता है।

जैसे-

एकवचन	बहुवचन
बिंदिया	बिंदियाँ
चिडिया	चिडियाँ
डिबिया	डिबियाँ
गुडिया	गुडियाँ
चुहिया	चुहियाँ

4. ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के ‘इ’ या ‘ई’ के स्थान पर ‘इयाँ’ लगाने से-

एकवचन	बहुवचन
तिथि	तिथियाँ
नारी	नारियाँ
गति	गतियाँ
थाली	थालियाँ



5. आकारांत स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञा-शब्दों के अन्त में 'एँ' लगाने से बहुवचन बनता है।

जैसे-

एकवचन	बहुवचन
लता	लताएँ
अध्यापिका	अध्यापिकाएँ
कन्या	कन्याएँ
माता	माताएँ
भुजा	भुजाएँ
पत्रिका	पत्रिकाएँ
शाखा	शाखाएँ
कामना	कामनाएँ
कथा	कथाएँ

6. इकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'याँ' लगाने से-

एकवचन	बहुवचन
जाति	जातियाँ
रीति	रीतियाँ
नदी	नदियाँ
लड़की	लड़कियाँ

7. उकारान्त व ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में 'एँ' लगाते हैं। 'ऊ' को 'उ' में बदल देते हैं-

एकवचन	बहुवचन
वस्तु	वस्तुएँ
गौ	गौएँ
बहु	बहुएँ
वधू	वधुएँ
गऊ	गउएँ

8. संज्ञा के पुंलिंग अथवा स्त्रीलिंग रूपों में 'गण' 'वर्ग' 'जन' 'लोग' 'वृन्द' 'दल' आदि शब्द जोड़कर भी शब्दों का बहुवचन बना देते हैं।

जैसे-

एकवचन	बहुवचन
स्त्री	स्त्रीजन
नारी	नारीवृन्द



अधिकारी	अधिकारीवर्ग
पाठक	पाठकगण
अध्यापक	अध्यापकवृंद
विद्यार्थी	विद्यार्थीगण
आप	आपलोग
श्रोता	श्रोताजन
मित्र	मित्रवर्ग
सेना	सेनादल
गुरु	गुरुजन
गरीब	गरीब लोग

9. कुछ शब्दों में गुण, वर्ण, भाव आदि शब्द लगाकर बहुवचन बनाया जाता है।

जैसे-

एकवचन	बहुवचन
व्यापारी	व्यापारीगण
मित्र	मित्रवर्ग
सुधी	सुधिजन

विभक्तिसहित संज्ञाओं के बहुवचन बनाने के नियम-

विभक्तियों से युक्त होने पर शब्दों के बहुवचन का रूप बनाने में लिंग के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता।

इसके कुछ सामान्य नियम निम्नलिखित हैं-

1. अकारान्त, आकारान्त (संस्कृत-शब्दों को छोड़कर) तथा एकारान्त संज्ञाओं में अन्तिम 'अ', 'आ' या 'ए' के स्थान पर बहुवचन बनाने में 'ओं' कर दिया जाता है।

जैसे-

एकवचन	बहुवचन
लड़का	लड़कों
घर	घरों
गधा	गधों
घोड़ा	घोड़ों
चोर	चोरों





2. संस्कृत की आकारान्त तथा संस्कृत-हिन्दी की सभी उकारान्त, ऊकारान्त, अकारान्त, औकारान्त संज्ञाओं को बहुवचन का रूप देने के लिए अन्त में 'ओं' जोड़ना पड़ता है। उकारान्त शब्दों में 'ओं' जोड़ने के पूर्व 'ऊ' को 'उ' कर दिया जाता है।

एकवचन	बहुवचन
लता	लताओं
साधु	साधुओं
वधू	वधुओं
घर	घरों
जौ	जौओं

3. सभी इकारान्त और ईकारान्त संज्ञाओं का बहुवचन बनाने के लिए अन्त में 'यों' जोड़ा जाता है। 'इकारान्त' शब्दों में 'यों' जोड़ने के पहले 'ई' का इ' कर दिया जाता है।

जैसे-

एकवचन	बहुवचन
मुनि	मुनियों
गली	गलियों
नदी	नदियों
साड़ी	साड़ियों
श्रीमती	श्रीमतियों

वचन की पहचान

वचन की पहचान संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अथवा उसमे प्रयुक्त क्रिया के द्वारा होती है।

1. हिंदी भाषा में आदर प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है।

जैसे-

- गाँधी जी हमारे राष्ट्रपिता हैं।
- पिता जी, आप कब आएं?
- मेरी माता जी मुंबई गई हैं।
- शिक्षक पढ़ा रहे हैं।
- नरेन्द्र मोदी भारत के प्रधानमंत्री हैं।

2. कुछ शब्द सदैव एकवचन में रहते हैं।

जैसे-

- निर्दलीय नेता का चयन जनता द्वारा किया गया।
- नल खुला मत छोड़ो, वरना सारा पानी खत्म हो जाएगा।





- मुझे बहुत क्रोध आ रहा है।
 - राजा को सदैव अपनी प्रजा का ख्याल रखना चाहिए।
 - गांधी जी सत्य के पुजारी थे।
3. द्रव्यवाचक, भाववाचक तथा व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ सदैव एकवचन में प्रयुक्त होती हैं।

जैसे-

- चीनी बहुत महँगी हो गई है।
- पाप से घृणा करो, पापी से नहीं।
- बुराई की सदैव पराजय होती है।
- प्रेम ही पूजा है।
- किशन बुद्धिमान है।

4. कुछ शब्द सदैव बहुवचन में रहते हैं।

जैसे-

- दर्दनाक दृश्य देखकर मेरे तो प्राण ही निकल गए।
- आजकल मेरे बाल बहुत टूट रहे हैं।
- रवि जब से अफसर बना है, तब से तो उसके दर्शन ही दुर्लभ हो गए हैं।
- आजकल हर वस्तु के दाम बढ़ गए हैं।

वचन सम्बन्धी विशेष निर्देश

1. 'प्रत्येक' तथा 'हरएक' का प्रयोग सदा एकवचन में होता है।

जैसे-

- प्रत्येक व्यक्ति यही कहेगा
- हरएक कुआँ मीठे जल का नहीं होता।

2. दूसरी भाषाओं के तत्सम या तदभव शब्दों का प्रयोग हिन्दी व्याकरण के अनुसार होना चाहिए।

जैसे, अँगरेजी के 'फुट' (foot) का बहुवचन 'फीट' (feet) होता है किन्तु हिन्दी में इसका प्रयोग इस प्रकार होगा- दो फुट लम्बी दीवार है न कि 'दो फीट लम्बी दीवार है'।

3. प्राण, लोग, दर्शन, आँसू, होंठ, दाम, अक्षत इत्यादि शब्दों का प्रयोग हिन्दी में बहुवचन में होता है।

जैसे-

- आपके होंठ खुले कि प्राण तृप्त हुए।
- आपलोग आये, आर्शीवाद के अक्षत बरसे, दर्शन हुए।

4. द्रव्यवाचक संज्ञाओं का प्रयोग एकवचन में होता है।

जैसे-

- उनके पास बहुत सोना है।
- उनका बहुत-सा धन बरबाद हुआ।
- न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी।





किन्तु, यदि द्रव्य के भित्र-भित्र प्रकारों का बोध हों, तो द्रव्यवाचक संज्ञा बहुवचन में प्रयुक्त होगी।

जैसे-

- यहाँ बहुत तरह के लोहे मिलते हैं।
- चमेली, गुलाब, तिल इत्यादि के तेल अच्छे होते हैं।

कुछ महत्वपूर्ण वचन परिवर्तन

कवचन	बहुवचन
पत्ता	पत्ते
बेटा	बेटे
कवि	कविगण
छुट्टी	छुट्टियाँ
दवाई	दवाईयाँ
अलमारी	अलमारियाँ
गुरु	गुरुजन
घड़ी	घड़ियाँ
मिठाई	मिठाइयाँ
हड्डी	हड्डियाँ
कुर्सी	कुर्सियाँ
चिड़िया	चिड़ियाँ
कहानी	कहानियाँ
गुड़िया	गुड़ियाँ
चुहिया	चुहियाँ
कविता	कविताएँ
बुढ़िया	बुढ़ियाँ
लता	लताएँ
वस्तु	वस्तुएँ
ऋतु	ऋतुएँ
कक्षा	कक्षाएँ
अध्यापिका	अध्यापिकाएँ
सेना	सेनाएँ
भाषा	भाषाएँ
कमरा	कमरे
रूपया	रूपए



तिनका	तिनके
भेड़	भेड़ें
बहन	बहनें
घोड़ा	घोड़े
तस्वीर	तस्वीरें
लड़का	लड़के
किताब	किताबें
पुस्तक	पुस्तकें
आँख	आँखें
बात	बातें
बच्चा	बच्चे
कपड़ा	कपड़े





वाक्य

दो या दो से अधिक पदों के सार्थक समूह को, जिसका पूरा पूरा अर्थ निकलता है, वाक्य कहते हैं।

उदाहरण : 'सत्य कड़वा होता है।'

एक वाक्य है क्योंकि इसका पूरा पूरा अर्थ निकलता है किन्तु 'सत्य होता कड़वा।' वाक्य नहीं है क्योंकि इसका अर्थ नहीं निकलता है।

वाक्य की परिभाषा -

दो या दो से अधिक शब्दों के समूह जिसका कोई अर्थ हो उसे वाक्य कहा जाता है। एक सामान्य वाक्य को बनाने के लिए कर्ता, कर्म और क्रिया का इस्तेमाल किया जाता है।

जैसे :-

1. मनुष्य का कर्म ही उसका धर्म है।
2. जीत सदैव सत्य की होती है।

वाक्य के भेद -

वाक्य का विभाजन दो आधार पर किया गया है।

1. रचना के आधार पर
2. अर्थ के आधार पर

1. रचना के आधार पर -

- 1) साधारण वाक्य
- 2) संयुक्त वाक्य
- 3) मिश्रित वाक्य

1. साधारण वाक्य -

ऐसे वाक्य जिन्हें एक ही विधेय और एक ही क्रिया होती है, इन्हें साधारण वाक्य कहा जाता है।

साधारण वाक्य के उदाहरण -

जैसे :-

- राहुल पड़ता है।
- मैंने भोजन कर लिया।
- रीना घर जा रही है।



2. संयुक्त वाक्य -

जब दो या दो से अधिक साधारण वाक्य समानाधिकरण समुच्चयबोधकों से जुड़े होते हैं, तो ऐसे वाक्य को संयुक्त वाक्य कहा जाता है।

संयुक्त वाक्य के उदाहरण -

जैसे :-

- राहुल चला गया और गीता आ गई।
- मैं जा रहा हूं लेकिन तुम आ रहे हो।
- मैंने एक काम कर लिया पर दूसरा काम छोड़ दिया।

3. मिश्रित वाक्य -

ऐसे वाक्य जिनमें एक वाक्य मुख्य हो और दूसरा वाक्य उस पर आश्रित हो या उपवाक्य हो, तो ऐसे वाक्यों को मिश्रित वाक्य कहा जाता है।

मिश्रित वाक्य के उदाहरण -

जैसे:-

- ज्यों ही अध्यापक मैं कक्षा में प्रवेश किया वैसे ही छात्र शांत हो गए।
- यदि परिश्रम करोगे तो तुम अवश्य सफल हो जाओगे।
- मैं जानता हूं कि तुम्हें क्या अच्छा लगता है।

2. अर्थ के आधार पर -

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं।

1. विधानवाचक वाक्य
2. निषेधवाचक वाक्य
3. आज्ञावाचक वाक्य
4. प्रश्नवाचक वाक्य
5. विस्मयादिबोधक वाक्य
6. इच्छावाचक वाक्य
7. संदेहवाचक वाक्य
8. संकेतवाचक वाक्य

1. विधानवाचक वाक्य

ऐसे वाक्य जिनमें किसी भी कार्य के होने का या किसी के अस्तित्व का पता चलता है या बोध होता है, उन वाक्य को विधानवाचक वाक्य कहते हैं।

विधानवाचक वाक्य को दूसरे शब्दों में विधि वाचक वाक्य भी कहा जाता है।





विधानवाचक वाक्य के उदाहरण

- राजस्थान मेरा राज्य है।
- विशाल ने आम खा लिया।
- पवन के पिता का नाम किशोर सिंह है।

2. निषेधवाचक वाक्य

ऐसे वाक्य जिनमें किसी भी कार्य के निषेध का बोध होता है, उन वाक्यों को निषेधवाचक वाक्य कहा जाता है।

निषेधवाचक वाक्य के उदाहरण

- राधा आज स्कूल नहीं जाएगी।
- आज मैं फ़िल्म देखने नहीं जाऊँगा।
- हम आज कहीं पर भी घूमने नहीं जाएंगे।

3. आज्ञावाचक वाक्य

वह वाक्य जिनमें आदेश, आज्ञा या अनुमति का पता चलता हो, उन वाक्य को आज्ञा वाचक वाक्य कहा जाता है।

आज्ञावाचक वाक्य के उदाहरण

- कृपया वहां पर बैठ जाइए।
- कृपया करके शांति बनाए रखें।
- आपको अपनी मदद स्वयं करनी पड़ेगी।

4. प्रश्नवाचक वाक्य

ऐसे वाक्य जिनमें किसी प्रश्न का बोध हो, उन्हें प्रश्नवाचक वाक्य कहा जाता है। प्रश्नवाचक वाक्य के नाम से ही पता चलता है कि इस वाक्य में प्रश्नों का बोध होने वाला है।

इन वाक्यों के माध्यम से प्रश्न पूछकर वस्तु या किसी अन्य के बारे में जानकारी जानने की कोशिश की जाती है। इसके अलावा इन वाक्यों के पीछे (?) यह चिन्ह लगता है।

प्रश्नवाचक वाक्य के उदाहरण

- तुम्हारा कौन सा देश है?
- तुम कौन से गांव में रहते हो?
- तुम्हारा नाम क्या है?
- तुम्हारी बहन क्या काम करती है?

5. विस्मयादिबोधक वाक्य

जिन वाक्य में आश्वर्य, घृणा, अत्यधिक, खुशी, शौक का बोध होता हो, उन वाक्य को विस्मयादिबोधक वाक्य कहा जाता है। इसके अलावा इन वाक्यों में विस्मय शब्द होते हैं और इन शब्दों के पीछे (!) विस्मयसूचक लगता है और इसी से इन वाक्य की पहचान बनती है। मतलब यह है कि इसी सूचक चिन्ह के आधार पर इन वाक्यों को आसानी से पहचाना जाता है।



विस्मयादिबोधक वाक्य के उदाहरण

- ओह! आज दिन कितना ठंडा है।
- बल्ले बल्ले! हमें जीत मिल गई।
- अरे! तुम यहां कब पहुंचे।

6. इच्छावाचक वाक्य

वे वाक्य जिसमें हमें वक्ता की कोई इच्छा, आकांक्षा, आशीर्वाद, कामना इत्यादि का पता चलता है, उन वाक्य को इच्छा वाचक वाक्य कहते हैं।

इच्छावाचक वाक्य के उदाहरण

- सदा खुश रहो।
- दीपावली की आपके परिवार को शुभकामनाएं।
- तुम्हारा कल्याण हो।

7. संदेहवाचक वाक्य

जिन वाक्य में किसी भी प्रकार की संभावना और संदेह का बोध होता हो, उन वाक्य को संदेहवाचक वाक्य कहा जाता है।

संदेहवाचक वाक्य के उदाहरण

- लगता है राम अब ठीक हो गया है।
- शायद आज बारिश हो सकती है।
- शायद मेरा भाई इस काम के लिए मान गया है।

8. संकेतवाचक वाक्य

वह वाक्य जिनमें एक क्रिया या दूसरी क्रिया पर पूरी तरह से निर्भर हो, उन वाक्य को संकेतवाचक वाक्य कहा जाता है।

संकेतवाचक वाक्य के उदाहरण

- अच्छे से प्रैक्टिस करते, तो मैडल मिल जाता।
- अच्छी तैयारी की होती, तो सिलेक्शन हो जाता।
- कार को धीरे चलाते, तो पेट्रोल खत्म नहीं होता।





वाच्य

वाच्य का अर्थ – वाक्य में कथन की प्रधानता

अब बात करें कि वाक्य में कर्ता, कर्म या भाव किसकी प्रधानता है, वाक्य में इसका पता चलता है, इसे वाच्य कहते हैं।

वाच्य से यह पता चलता है कि वाक्य में कर्ता, कर्म और भाव में से किसकी प्रधानता है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि वाक्य में प्रयुक्त क्रिया के लिंग, वचन तथा पुरुष – कर्ता, कर्म या भाव में से किसके अनुसार है।

परिभाषा –

वाच्य क्रिया के उस रूपान्तर को कहते हैं, जिससे कर्ता, कर्म और भाव के अनुसार क्रिया के परिवर्तन जात होते हैं।

यथा –

- रमा पुस्तक पढ़ती है। (कर्तृवाच्य)
- पुस्तक पढ़ी जाती है। (कर्ता वाचक)
- मोहन से पढ़ा नहीं जाता है। (भाववाचक)

ऊपर के वाक्यों में उनकी क्रियाएँ क्रमशः कर्ता, कर्म और भाव के अनुसार हैं। पहले वाक्य में रमा कर्ता है और उसके अनुसार क्रिया है – पढ़ती है।

दूसरे वाक्य में कर्म पुस्तक के अनुसार क्रिया है – पढ़ी जाती है। अन्तिम वाक्य में पढ़ा नहीं जाता है से न पढ़ने का भाव स्पष्ट है। अतः यहाँ क्रिया भाव के अनुसार है।

वाच्य के भेद –

वाच्य के तीन भेद होते हैं-

- कर्तृवाच्य
- कर्मवाच्य
- भाववाच्य

ऊपर के तीनों वाक्यों से वाच्य के ये तीनों भेद स्पष्ट हैं।

कर्तृवाच्य

जिस वाक्य में क्रिया कर्ता के अनुसार हो, उसे 'कर्तृवाच्य' कहते हैं।

यथा –

- राम पत्र लिखता है।
- सीता पुस्तक पढ़ती है।

ऊपर के इन दो वाक्यों की क्रियाएँ लिखता और पढ़ती कर्ता राम और सीता के अनुसार हैं। अतः ये वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।



कर्मवाच्य

वाक्य में कर्म की प्रधानता होती है। जिस वाक्य में क्रिया कर्म के अनुसार हो, उसे 'कर्मवाच्य' कहते हैं।

यथा –

- पत्र लिखा जाता है।
- पुस्तक पढ़ी जाती है।
- राम ने चिट्ठी लिखी।

ऊपर के दोनों वाक्यों में पत्र और पुस्तक कर्म है और इनके अनुसार क्रियाएँ हैं –

लिखा जाता और पढ़ी जाती।

अतः ये वाक्य **कर्मवाच्य** के उदाहरण हैं।

नोट : ज्यादातर सकर्मक क्रिया के उदाहरण **कर्म वाच्य** में आते हैं।

भाववाच्य

जिस वाक्य में क्रिया कर्ता और कर्म को छोड़कर भाव के अनुसार हो, उसे 'भाववाच्य' कहते हैं।

यथा –

- उससे बैठा नहीं जाता।
- राम से खाया नहीं जाता।
- उससे रोया नहीं जाता।

ऊपर के वाक्यों में बैठा नहीं जाता, खाया नहीं जाता से एक भाव स्पष्ट होता है। इन सब वाक्यों में न कर्ता की प्रधानता है, न कर्म की। इनमें निहित सभी क्रियाएँ भाव के अनुसार हैं।

अतः भाव के अनुसार क्रिया होने से ये सभी **भाववाच्य** के उदाहरण हैं।

टिप्पणी: कर्तृवाच्य में सकर्मक और अकर्मक दोनों क्रियाएँ होती हैं।

कर्मवाच्य में क्रिया केवल सकर्मक होती है। क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्म के अनुसार होता है। कर्मवाच्य का प्रयोग विधान और निषेध दोनों स्थितियों में होता है।

भाववाच्य में क्रियाएँ प्रायः **अकर्मक** होती हैं। इसकी क्रिया सदा एकवचन, अन्य पुरुष और पुल्लिंग में होती है। इसमें असमर्थता और निषेध होने से वाक्य प्रायः नकारात्मक होते हैं।

नोट : क्रिया सदा एकवचन में होगी।

कर्मवाच्य के प्रयोग

अंग्रेजी व्याकरण में कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य में बदलने की प्रक्रिया होती है। परन्तु, हिन्दी में ऐसा नहीं होता। हिन्दी में कुछ सामान्यतः कर्तृ रूप में ही चलते हैं और कुछ कर्म रूप में ही।

हिन्दी में 'राम श्याम द्वारा पीटा गया' जैसा वाक्य नहीं चलता। हिन्दी की प्रकृति के अनुसार सही वाक्य 'श्याम ने राम को पीटा' होगा।

हिन्दी में कर्मवाच्य का प्रयोग विशिष्ट स्थितियों में ही होता है।





यथा –

1. जब कर्ता अज्ञात हो अथवा ज्ञात कर्ता का उल्लेख करने की आवश्यकता न हो –
 - परीक्षाफल कल प्रकाशित किया जाएगा।
 - चोर समझकर संन्यासी पकड़ा गया।
2. कानूनी तथा सरकारी व्यवहार में अधिकतर व्यक्त करने के लिए –
 - बिना टिकट यात्रियों को सख्त सजा दी जाएगी।
 - आपको सूचित किया जाता है कि.....
3. कर्ता पर जोर देने के लिए –
 - रावण राम के द्वारा मारा गया।
4. अशक्यता के प्रसंग में –
 - यह काम मुझसे नहीं होगा।
5. अपना प्रभाव व्यक्त करने के लिए –
 - उसे पेश किया जाए।
 - कल देखा जाएगा।
6. सम्भावना व्यक्त करने के लिए –
 - उत्पादन बढ़ने पर बोनस दिया जाएगा।



**STEP UP
ACADEMY**



विराम चिन्ह

जैसा कि विराम का अर्थ रुकना होता है, उसी प्रकार हिंदी व्याकरण में विराम शब्द का अर्थ है – ठहराव या रुक जाना। एक व्यक्ति अपनी बात कहने के लिए, उसे समझाने के लिए, किसी कथन पर बल देने के लिए, आश्र्य आदि भावों की अभिव्यक्ति के लिए कहीं कम, कहीं अधिक समय के लिए ठहरता है। भाषा के लिखित रूप में कुछ समय ठहरने के स्थान पर जो निश्चित संकेत चिह्न लगाये जाते हैं, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।

वाक्य में विराम-चिह्नों के प्रयोग से भाषा में स्पष्टता और सुन्दरता आ जाती है तथा भाव समझाने में भी आसानी होती है। यदि विराम-चिह्नों का यथा स्थान उचित प्रयोग न किया जाये तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

उदाहरण-

- रोको, मत जाने दो।
- रोको मत, जाने दो।

इस प्रकार विराम-चिह्नों से अर्थ एवं भाव में परिवर्तन हो जाता है। इनका ध्यान रखना आवश्यक है।

विराम चिन्ह

नाम	विराम चिह्न
अन्य विराम	(,)
अर्द्ध विराम	(;)
पूर्ण विराम	(।)
प्रश्नवाचक चिह्न	(?)
विस्मयसूचक चिह्न	(!)
अवतरण या उद्धरण चिह्न	इकहरा – (' '), दुहरा – (" ")
योजक चिह्न	(–)
कोष्ठक चिह्न	() { } []
विवरण चिह्न	(:-)
लोप चिह्न	(.....)
विस्मरण चिह्न	(^)
संक्षेप चिह्न	(.)



निर्देश चिह्न	(-)
तुल्यतासूचक चिह्न	(=)
संकेत चिह्न	(*)
समाप्ति सूचक चिह्न	(- : -)

विराम-चिह्नों का प्रयोग-

1. अल्प विराम-

अल्प विराम का अर्थ है, थोड़ी देर रुकना या ठहरना। अंग्रेजी में इसे हम 'कोमा' कह कर पुकारते हैं।

- वाक्य में जब दो या दो से अधिक समान पदों पदांशो अथवा वाक्यों में संयोजक अव्यय 'और' की संभावना हो, वहाँ अल्प विराम का प्रयोग होता है।

उदाहरण-

- पदों में—पंकज, लक्ष्मण, राजेश और मोहन ने विद्यालय में प्रवेश किया।
- वाक्यों में—मोहन रोज खेल के मैदान में जाता है, खेलता है और वापस अपने घर चला जाता है।
- वह काम करता है, क्योंकि वह गरीब है।
- आज मैं बहुत थका हूँ, इसलिए जल्दी घर जाऊँगा।

यहाँ अल्प विराम द्वारा पार्थक्य/अलगाव को दिखाया गया है।

- जहाँ शब्दों की पुनरावृत्ति की जाए और भावों की अधिकता के कारण उन पर अधिक बल दिया जाए।

उदाहरण-

सुनो, सुनो, वह नाच रही है।

- जब कई शब्द जोड़े से आते हैं, तब प्रत्येक जोड़े के बाद अल्प विराम लगता है।

उदाहरण-

सुख और दुःख, रोना और हँसना,

- क्रिया विशेषण वाक्यांशों के साथ,

उदाहरण-

वास्तव में यह बात, यदि सच पूछो तो, मैं भूल ही गया था।

- संज्ञा वाक्य के अलावा, मिश्र वाक्य के शेष बड़े उपवाक्यों के बीच में।

उदाहरण-

- यह वही पैन है, जिसकी मुझे आवश्यकता है।

- चिंता चाहे जैसी भी हो, मनुष्य को जला देती है।

- वाक्य के भीतर एक ही प्रकार के शब्दों को अलग करने में।

उदाहरण-

मोहन ने सेब, जामुन, केले आदि खरीदे।



7. उद्धरण चिह्नों के पहले,

उदाहरण-

वह बोला, “मैं तुम्हें नहीं जानता।”

8. समय सूचक शब्दों को अलग करने में।

उदाहरण-

कल शुक्रवार, दिनांक 18 मार्च से परीक्षाएँ प्रारम्भ होंगी।

9. पत्र में अभिवादन, समापन के साथ।

उदाहरण-

- पूज्य पिताजी,
- भवदीय,
- मान्यवर ,

2. अर्द्ध विराम चिह्न-

अर्द्ध विराम का प्रयोग प्रायः विकल्पात्मक रूप में ही होता है। अंग्रेजी में इसे ‘सेमी कॉलन’ कहते हैं।

1. जब अन्य विराम से अधिक तथा पूर्ण विराम से कम ठहरना पड़े तो अर्द्ध विराम(;) का प्रयोग होता है।

उदाहरण-

- बिजली चमकी ; फिर भी वर्षा नहीं हुई
- एम.ए. ; एम.एड.
- शिक्षक ने मुझसे कहा; तुम पढ़ते नहीं हो।
- शिक्षा के क्षेत्र में छात्राएँ बढ़ती गई; छात्र पिछड़ते गए।

2. एक प्रधान पर आश्रित अनेक उपवाक्यों के बीच में।

उदाहरण-

- जब तक हम गरीब हैं; बलहीन हैं; दूसरे पर आश्रित हैं; तब तक हमारा कुछ नहीं हो सकता।
- जैसे ही सूर्योदय हुआ; अँधेरा दूर हुआ; पक्षी चहचहाने लगे और मैं प्रातः भ्रमण को चल पड़ा।

3. पूर्ण विराम (।)-

पूर्ण विराम का अर्थ है पूरी तरह से विराम लेना, अर्थात् जब वाक्य पूर्णतः अपना अर्थ स्पष्ट कर देता है तो पूर्ण विराम का प्रयोग होता है अर्थात् जिस चिह्न के प्रयोग करने से वाक्य के पूर्ण हो जाने का ज्ञान होता है, उसे पूर्ण विराम कहते हैं। हिन्दी में इसका प्रयोग सबसे अधिक होता है। पूर्ण विराम का प्रयोग नीचे उदाहरणों में देखें –

1. साधारण, मिश्र या संयुक्त वाक्य की समाप्ति पर।

उदाहरण-

- अजगर करे ना चाकर, पंछी करें ना काम।
- दास मलूका कह गए, सबके दाता राम।।



- पंछी डाल पर चहचहा रहे थे।
 - राम स्कूल जाता है।
 - प्रयाग में गंगा-यमुना का संगम है।
 - यदि सुरेश पढ़ता, तो अवश्य पास होता।
2. प्रायः शीर्षक के अन्त में भी पूर्ण विराम का प्रयोग होता है।

उदाहरण-

नारी और वर्तमान भारतीय समाज।

3. अप्रत्यक्ष प्रश्नवाचक वाक्य के अन्त में पूर्ण विराम लगाया जाता है।

उदाहरण-

उसने मुझे बताया नहीं कि वह कहाँ जा रहा है।

4. प्रश्नवाचक चिह्न (?)-

प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग प्रश्न सूचक वाक्यों के अन्त में पूर्ण विराम के स्थान पर किया जाता है। इसका प्रयोग निम्न स्थिति में किया जाता है-

- क्या बोले, वे चोर हैं?
- क्या वे घर पर नहीं हैं?
- कल आप कहाँ थे?
- आप शायद यू. पी. के रहने वाले हो?
- जहाँ भ्रष्टाचार है, वहाँ ईमानदारी कैसे रहेगी?
- इतने लड़के कैसे आ पाएँगे?

5. विस्मयादिबोधक चिह्न (!)-

जब वाक्य में हर्ष, विषाद, विस्मय, घृणा, आश्वर्य, करुणा, भय आदि भाव व्यक्त किए जाएँ तो वहाँ इस विस्मयादिबोधक चिह्न (!) का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा आदर सूचक शब्दों, पदों और वाक्यों के अन्त में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण-

1. हर्ष सूचक-

- तुम्हारा कल्याण हो !
- हे भगवान्! अब तो तुम्हारा ही आसरा है।
- हाय! अब क्या होगा।
- छिः! छिः! कितनी गंदगी है।
- शाबाश! तुमने गाँव का नाम रोशन कर दिया।

**2. करुणा सूचक-**

हे प्रभु! मेरी रक्षा करो

3. घृणा सूचक-

इस दुष्ट पर धिक्कार है!

4. विषाद सूचक-

हाय राम! यह क्या हो गया।

5. विस्मय सूचक-

सुनो! मोहन पास हो गया।

6. उद्धरण या अवतरण चिह्न-

जब किसी कथन को ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाता है तो उस कथन के दोनों ओर इसका प्रयोग किया जाता है, इसलिए इसे अवतरण चिह्न या उद्धरण चिह्न कहते हैं। इस चिह्न के दो रूप होते हैं-

1. इकहरा उद्धरण (' ')-

जब किसी कवि का उपनाम, पुस्तक का नाम, पत्र-पत्रिका का नाम, लेख या कविता का शीर्षक आदि का उल्लेख करना हो तो इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है।

उदाहरण-

- रामधारीसिंह 'दिनकर' ओज के कवि हैं।
- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
- तुलसीदास ने कहा- "सिया राममय सब जग जानी, करऊं प्रणाम जोरि जुग पानि।"
- 'रामचरित मानस' के रचयिता तुलसीदास हैं।
- 'राजस्थान पत्रिका' एक प्रमुख समाचार-पत्र है।
- कहावत सही है कि, 'उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे'।

2. दुहरा उद्धरण (" ")

जब किसी व्यक्ति या विद्वान तथा पुस्तक के अवतरण या वाक्य को ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाए, तो वहाँ दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण-

- "स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।" —तिलक।
- "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।" —सुभाषचन्द्र बोस।

7. योजक चिह्न (-)

इसे समास चिह्न भी कहते हैं। अंग्रेजी में प्रयुक्त हाइफन (-) को हिन्दी में योजक चिह्न कहते हैं। हिन्दी में अधिकतर इस चिह्न (-) के स्थान पर डेश (-) का प्रयोग प्रचलित है। यह चिह्न सामान्यतः दो पदों को जोड़ता है और दोनों को मिलाकर एक समस्त पद बनाता है लेकिन दोनों का स्वतंत्र अस्तित्व बना रहता है।



- कमल-से पैर।
 - कली-सी कोमलता।
 - कभी-कभी
 - खेलते-खेलते
 - रात-दिन
 - माता-पिता
1. दो शब्दों को जोड़ने के लिए तथा द्वन्द्व एवं तत्पुरुष समास में।

उदाहरण-

सुख-दुःख, माता-पिता।

2. पुनरुक्त शब्दों के बीच में।

उदाहरण-

धीरे-धीरे, घर -घर, रोज -रोज।

3. तुलना वाचक सा, सी, से के पहले लगता है।

उदाहरण-

भरत-सा भाई, सीता-सी माता।

4. शब्दों में लिखी जाने वाली संख्याओं के बीच।

उदाहरण-

एक-चौथाई

8. कोष्ठक चिह्न ()-

किसी की बात को और स्पष्ट करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। कोष्ठक में लिखा गया शब्द प्रायः विशेषण होता है।

इस चिह्न का प्रयोग-

1. वाक्य में प्रयुक्त किसी पद का अर्थ स्पष्ट करने हेतु।

उदाहरण-

- आपकी ताकत (शक्ति) को मैं जानता हूँ।
- आवेदन-पत्र जमा कराने की तिथि में सात दिन की छूट दी गई है।
- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (भारत के प्रथम राष्ट्रपति) बेहद सादगी पसन्द थे।

2. नाटक या एकांकी में पात्र के अभिनय के भावों को प्रकट करने के लिए।

उदाहरण-

राम - (हँसते हुए) अच्छा जाइए।





9. विवरण चिह्न (:-)-

किसी कही हुई बात को स्पष्ट करने के लिए या उसका विवरण प्रस्तुत करने के लिए वाक्य के अंत में इसका प्रयोग होता है। इसे अंग्रेजी में 'कॉलन एंड डेश' कहते हैं।

उदाहरण-

- सर्वनाम छ: प्रकार के होते हैं:- पुरुषवाचक, मिजवाचक, सम्बन्धवाचक, निश्चितवाचक, अनिश्चितवाचक, प्रक्षेपवाचक।
- वेद चार हैं:- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद।
- पुरुषार्थ चार हैं:- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

10. लोप सूचक चिह्न (....)-

जहाँ किसी वाक्य या कथन का कुछ अंश छोड़ दिया जाता है, वहाँ लोप सूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण-

- तुम मान जाओ वरना.....।
- मैं तो परिणाम भोग रहा हूँ, कहीं आप भी.....।

11. विस्मरण चिह्न (^)-

इसे हंस पद या त्रुटिपूरक चिह्न भी कहते हैं। जब किसी वाक्य या वाक्यांश में कोई शब्द लिखने से छूट जाये तो छूटे हुए शब्द के स्थान के नीचे इस चिह्न का प्रयोग कर छूटे हुए शब्द या अक्षर को ऊपर लिख देते हैं।

उदाहरण-

- मेरा भारत ^ देश है।
- मुझे आपसे ^ परामर्श लेना है।

12. संक्षेप चिह्न या लाघव चिह्न (o)-

किसी बड़े शब्द को संक्षेप में लिखने हेतु उस शब्द का प्रथम अक्षर लिखकर उसके आगे यह चिह्न लगा देते हैं। प्रसिद्धि के कारण लाघव चिह्न होते हुए भी वह पूर्ण शब्द पढ़ लिया जाता है।

उदाहरण-

- राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय – रा० ऊ० मा० वि०।
- भारतीय जनता पार्टी = भा० ज० पा०
- मास्टर ऑफ आर्ट्स = एम० ए०
- प्राध्यापक – प्रा०।
- डॉक्टर – डॉ०।
- पंडित – पं०।



13. निर्देशक चिह्न (-)-

यह चिह्न योजक चिह्न (-) से बड़ा होता है। इस चिह्न के दो रूप हैं- 1. (-) 2. (—)। अंग्रेजी में इसे 'डैश' कहते हैं।

- महाराज- द्वारपाल! जाओ।
- द्वारपाल- जो आज्ञा स्वामी!
- 1. उद्घृत वाक्य के पहले।

उदाहरण-

वह बोला - “मैं नहीं जाऊँगा।”

2. समानाधिकरण शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों के बीच में।

उदाहरण-

आँगन में ज्योत्सना-चाँदनी-छिटकी हुई थी।

14. तुल्यतासूचक चिह्न (=)-

समानता या बराबरी बताने के लिए या मूल्य अथवा अर्थ का ज्ञान कराने के लिए तुल्यतासूचक चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण-

- 1 लीटर = 1000 मिलीलीटर
- वायु = समीर

15. संकेत चिह्न (*)-

जब कोई महत्वपूर्ण बातें बतानी हो तो उसके पहले संकेत चिह्न लगा देते हैं।

उदाहरण-

स्वास्थ्य सम्बन्धी निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए-

- प्रातःकाल उठना चाहिए।
- श्रमण के लिए जाना चाहिए।

16. समाप्ति सूचक चिह्न या इतिश्री चिह्न (-०-)-

किसी अध्याय या ग्रन्थ की समाप्ति पर इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। यह चिह्न कई रूपों में प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण-

(- :: -), (-x-x-)





विलोम शब्द

विलोम शब्द की परिभाषा:

जो शब्द किसी दूसरे शब्द का उल्टा अर्थ बताते हैं, उन्हें विलोम शब्द या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं। जैसे- अपेक्षा- नगद, आय- व्यय, आजादी-गुलाम, नवीन- प्राचीन शब्द एक दूसरे के उलटे अर्थ वाले शब्द हैं। अतः इन्हें 'विलोम शब्द' कहते हैं। अतः विलोम का अर्थ है- उल्टा या विरोधी अर्थ देने वाला। विलोम शब्द अपने सामनेवाले शब्द के सर्वदा विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं।

(अ, आ)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अमृत	विष	अथ	इति
अन्धकार	प्रकाश	अन्यायु	दीर्घायु
अनुराग	विराग	आदि	अंत
आगामी	गत	आग्रह	दुराग्रह
अनुज	अग्रज	आकर्षण	विकर्षण
अधिक	न्यून	आदान	प्रदान
आलस्य	स्फूर्ति	अर्थ	अनर्थ
अपेक्षा	नगद	अतिवृष्टि	अनावृष्टि
आदर्श	यथार्थ	आय	व्यय
आहार	निराहार	आविर्भाव	तिरोभाव
आमिष	निरामिष	अभिज्ञ	अनभिज्ञ
आजादी	गुलामी	अनुकूल	प्रतिकूल
आर्द्र	शुष्क	अन्य	अधिक
अनिवार्य	वैकल्पिक	अमृत	विष
अगम	सुगम	अभिमान	नम्रता
आकाश	पाताल	आशा	निराशा
अनुग्रह	विग्रह	अपमान	सम्मान
आश्रित	निराश्रित	अनुज	अग्रज



शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अरुचि	रुचि	आदि	अंत
आदान	प्रदान	आरंभ	अंत
आय	व्यय	अर्वाचीन	प्राचीन
अवनति	उन्नति	आदर	अनादर
आयात	निर्यात	अनुपस्थित	उपस्थित
आलस्य	स्फूर्ति	अतिवृष्टि	अनावृष्टि
आस्तिक	नास्तिक	आलस्य	स्फूर्ति
आदर्श	यथार्थ	अच्छा	साफ
अच्छा	सुन्दर	अजीब	अनोखा
अक्सर	कभी कभार	अनुमति देना	मना करना
अमावस्या	पूर्णिमा	अस्त	उदय
अनुलोम	प्रतिलोम	अनुरक्ति	विरक्ति
अमर	मर्त्य	अग्नि	जल
अत्यसंख्यक	बहुसंख्यक	आधुनिक	बहुसंख्यक
आधुनिक	प्राचीन	आगामी	विगत
आचार	अनाचार	आत्मा	पपरमात्मा
आदान	प्रदान	आयात	निर्यात
आकाश	पाताल	आग्रह	अनाग्रह
आकीर्ण	विकीर्ण	आधार	आधेय
आसक्त	अनासक्त	आभ्यन्तर	बाह्य
अतिथि	आतिथेय	आदत्त	प्रदत्त
आना	जाना	आहान	विसर्जन
अदोष	सदोष	अनाथ	सनाथ
अनुरक्ति	विरक्ति	अराग	सुराग
अस्वस्थ	स्वस्थ	अगला	पिछला
अवनि	अम्बर	अनाहूत	आहूत
अतुकान्त	तुकान्त	अत्यधिक	अत्यत्य
अधः	उपरि	अधुनातन	पुरातन
अनुग्रह	विग्रह	अर्पित	गृहीत
अर्जन	वर्जन	अपेक्षा	उपेक्षा



शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अधम	उत्तम	अंगीकार	अस्वीकार
अज्ञ	विज्ञ	अघ	अनघ
अकाल	सुकाल	अर्थी	प्रत्यर्थी
अनैक्य	ऐक्य	अंत	अनंत
अचर	चर	अर्वाचीन	प्राचीन
आवश्यक	अनावश्यक	आधुनिक	प्राचीन
आदि	अनादि	आगत	अनागत
आश्रित	निराश्रित	आरोह	अवरोह
आवृत	अनावृत	आस्था	अनास्था
आकुंचन	प्रसारण	अवर	प्रवर
अकाम	सुकाम	अन्तरंग	बहिरंग
अर्पण	ग्रहण	अवनति	उन्नति
अति	अल्प	अनेकता	एकता
अनित्य	नित्य	अतल	वितल
अधिकारी	अनाधिकारी	अंतर्मुखी	वहिर्मुखी
अश्रु	हास	अभिज्ञ	अनभिज्ञ
अग्र	पश्च	अपमान	सम्मान
अथ	इति	अन्तर्द्वन्द्व	बहिर्द्वन्द्व
अपना	पराया	अनेक	एक
अवनति	उन्नति	अजेय	जेय
अदेय	देय	आशा	निराशा
आग्रही	दुराग्रही	आतुर	अनातुर
आकर्षण	विकर्षण	आधार	निराधार
आच्छादित	अनाच्छादित	आभ्यन्तर	बाह्य
आगम	लोप	आगामी	विगत
आदिष्ट	निषिद्ध	आलोक	अंधकार

(इ, ई)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
इच्छा	अनिच्छा	इष्ट	अनिष्ट
ईद	मुहर्म	ईश्वर	जीव



शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
इच्छित	अनिच्छित	इहलोक	परलोक
इति	अथ	इसका	उसका
ईषत	अलम	इकट्ठा	अलग
ईश	अनीश		

(उ, ऊ,)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
उदात्त	अनुदात्त	उधार	नकद
उन्नति	अवनति	उदघाटन	समापन
उन्मीलन	निमीलन	उत्तरायण	दक्षिणायण
उर्ध्व	निम्न	उऋण	ऋण
उन्मुख	विमुख	उद्धम	निरुद्धम
उपस्थित	अनुपस्थित	उर्ध्व	अधो
ऊपर	नीचे	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
उपचार	अपचार	उपमेय	अनुपमेय
उपमा	अनुपमा	उपाय	निरुपाय
उपयोग	दुरुपयोग	उत्तम	अधम
उग्र	सौम्य	उपसर्ग	प्रत्यय
उर्ध्वगामी	अधोगामी	ऊँच	नीच
उपकार	अपकार	उदार	अनुदार
उदय	अस्त	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
उधार	नकद	उत्थान	पतन
उत्कर्ष	अपकर्ष	उत्तर	दक्षिण
उद्यमी	आलसी	उर्वर	ऊसर
उत्तम	अधम	उपसर्ग	प्रत्यय
उदार	कृपण	उत्कृष्ट	निकृष्ट
उपयोग	दुरुपयोग	उत्कर्ष	अपकर्ष
उत्साह	निरुसाह	उद्यमी	निरुद्यम
उपयुक्त	अनुपयुक्त	उच्च	निम्न
उद्धृत	विनीत	उदयाचल	उस्ताचल
उत्तरायण	दक्षिणायण	उधार	नकद



(ए, ऐ)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
एडी	चोटी	ऐतिहासिक	अनैतिहासिक
एकता	अनेकता	एकत्र	विकर्ण
एक	अनेक	ऐसा	वैसा
एकल	बहुल	ऐहिक	पारलौकिक
ऐश्वर्य	अनैश्वर्य	एकाग्र	चंचल
ऐक्य	अनैक्य		

(ओ, औ)

शब्द	विलोम
ओजस्वी	निस्तेज
औपचारिक	अनौपचारिक
औचित्य	अनौचित्य
औपन्यासिक	अनौपन्यासिक

(क)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
कल	आज	क्रम	व्यक्तिक्रम
कनीय	वरीय	कार्य	अकार्य
कठिन	सरल	क्रूर	अक्रूर
कुकृति	सुकृत्य	कलुष	निष्कलुष
कुख्यात	विख्यात	कनिष्ठ	ज्येष्ठ
कपूत	सपूत	कृष्ण	शुक्ल
कुसुम	वज्र	कलंक	निष्कलंक
कदाचार	सदाचार	कर्कश	सुशील
कसूरवार	बेकसूर	कटु	मधुर
क्रिया	प्रतिक्रिया	कृतज्ञ	कृताध्य
कड़वा	मीठा	कुछ्छ	शान्त
क्रय	विक्रय	कर्म	निष्कर्म
कीर्ति	अपकीर्ति	कुरुप	सुरुप
करुण	निष्टुर	कायर	निडर



शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
क्रूर	अक्रूर	कृत्रिम	प्रकृत
कर्मण्य	अकर्मण्य	कोप	कृपा
कठोर	कोमल	कृष्ण	शुक्ल
कनिष्ठ	ज्येष्ठ	कपटी	निष्कपट
कुटिल	सरल	क्रोध	क्षमा
कृपण	दाता	कर्मठ	अकर्ममण्य

(ख)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
खिलना	मुरझाना	खुशी	दुख
खेद	प्रसन्नता	ख्यात	कुख्यात
खगोल	भूगोल	खुला	बन्द
खंडन	मंडन	खल	सज्जन
खाद्य	अखाद्य	खीझाना	रीझना
खरा	खोटा		

(ग)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
गोचर	अगोचर	गमन	आगमन
गद्य	पद्य	ग्राम्य	शिष्ट
गम्भीर	वाचाल	गृहीत	त्यक्त
गणतन्त्र	राजतन्त्र	गृही	त्यागी
गेय	अगेय	गर्मी	सर्दी
गीला	सूखा	गहरा	छिछला
गुण	दोष	गरीब	अमीर
गुप्त	प्रकट	गुरु	शिष्य
ग्रस्त	मुक्त	ग्राह्य	त्याज्य
गगन	पृथ्वी	गरल	सुधा
गृहस्थ	संन्यासी	गत	आगत
गुण	दोष	गमन	आगमन



(घ)

शब्द	विलोम
घर	बाहर
घृणा	प्रेम
घात	प्रतिघात
घरेलू	बाहरी
घटना	बढ़ना
घन	तरल

(च, छ)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
चर	अचर	चाह	अनचाह
चोर	साधु	चिन्मय	जड़
चल	अचल	चीर	साधु
चिरन्तन	नश्वर	चेतन	अचेतन
चढ़ाव	उतार	चंचल	स्थिर
चतुर	मूँढ़	चिर	अचिर
छाँह	धूप	छली	निश्छल
छूत	अछूत		

(ज, झ)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
जीवन	मरण	जड़	चेतन
जंगम	स्थावर	जटिल	सरस
जय	पराजय	जन्म	मृत्यु
ज्येष्ठ	कनिष्ठ	जागरण	निद्रा
ज्योति	तम	जल	स्थल
जीवित	मृत	जातीय	विजातीय
ज्वार	भाटा	जल्द	देर
ज्योतिर्मय	तमोमय	जागृति	सुषुप्ति
जोड़	घटाव	जेय	अजेय
जीत	हार	जवानी	बुढ़ापा



शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
जाग्रत	सुषुप्त	जाड़ा	गर्मी
जंगम	स्थावर	जाति	कुजाति
झूठ	सच	झोपड़ी	महल

(त, थ)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
तुच्छ	महान	ताप	शीत
तम	आलोक	तीव्र	मन्द
तुच्छ	महान्	तिमिर	प्रकाश
तामसिक	सात्त्विक	तुकान्त	अतुकान्त
तरल	ठोस	ताना	भरनी
तारीफ	शिकायत	तरुण	वृद्ध
तृष्णा	तृप्ति	तृष्णा	वितृष्णा
तिक्त	मधुर	तीक्ष्ण	कुंठित
त्याज्य	ग्राह्य	तुल	अतुल
तृप्त	अतृप्त	थलचर	जलचर
थोड़ा	बहुत	थोक	फुटकर

(द)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
दिवा	रात्रि	देय	अदेय
दीर्घकाय	कृशकाय	दूषित	स्वच्छ
दुर्बल	सबल	दक्षिण	वाम
दाता	याचक	दिन	रात
देव	दानव	दुराचारी	सदाचारी
दुष्ट	सज्जन	दास	स्वामी
दोषी	निर्दोषी	दानी	कंजूस
दुरुप्रयोग	सदुप्रयोग	दुर्जन	सज्जन
दयालु	निर्दय	दुर्दान्त	शांत
दानव	देव	दुर्गम्भ	सुगम्भ
दिन	रात	दीर्घकाय	कृशकाय



शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
दाता	सूम	दक्षिण	वाम
दृढ़	विचलित	दुर्बल	सबल
दूषित	स्वच्छ	दुराशय	सदाशय
देय	अदेय	दिवा	रात्रि
दृश्य	अदृश्य	दुःशील	सुशील
दोष	गुण		

(ध)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
धनी	निर्धन	ध्वंस	निर्माण
धर्म	अधर्म	धीर	अधीर
धूप	छाँव	धनी	निर्धन
धरा	गगन	धृष्ट	विनीत

(न)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
नूतन	पुरातन	नकली	असली
निर्माण	विनाश	निकट	दूर
निरक्षर	साक्षर	न्यून	अधिक
निन्दा	स्तुति	नागरिक	ग्रामीण
निर्मल	मलिन	निरामिष	सामिष
निर्लज्ज	सलज्ज	निर्दोष	सदोष
नगर	ग्राम	निर्दय	सदय
निष्काम	सकाम	निन्द्य	वन्द्य
नख	शिख	निषिद्ध	विहित
निद्रा	जागरण	निराकार	साकार
निश्छल	छली	नमक हराम	नमक हलाल
निषेध	विधि	निश्चेष्ट	सचेष्ट
नर	नारी	नैसर्गिक	कृत्रिम
नगद	उधार	नीरस	सरस
निर्गुण	सगुन	निर्जीव	सजीव



शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
न्याय	अन्याय	नाम	अनाम
निरर्थक	सार्थक	नेक	बद
नैतिक	अनैतिक	निराशा	आशा
नया	पुराना	नित्य	अनित्य
नश्वर	शाश्वत	निर्दोष	सदोष
निन्दा	स्तुति	निरक्षर	साक्षर
निःदर	कायर	नरक	स्वर्ग
निर्धन	धनी	नकल	असल
नास्तिक	आस्तिक	नकरात्मक	सकरात्मक
नेकी	बदी		

(प, फ)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
पतिव्रता	कुलटा	पाप	पुण्य
प्रलय	सृष्टि	पवित्र	अपवित्र
प्रेम	घृणा	प्रश्न	उत्तर
पूर्ण	अपूर्ण	परतंत्र	स्वतंत्र
प्रत्यक्ष	परोक्ष	पूर्व	अपूर्व
प्रात	साय	प्रकाश	अंधकार
पण्डित	मुर्ख	पक्ष	विपक्ष
प्रमुख	सामान्य	प्रारम्भिक	अन्तिम
प्रशंसा	निन्दा	परार्थ	स्वार्थ
पुरस्कार	दण्ड	पूर्ववर्ती	परवर्ती
परमार्थ	स्वार्थ	पुरुष	कोमल
प्रधान	गौण	प्रवृत्ति	निवृत्ति
प्राचीन	नवीन	प्राकृतिक	कृत्रिम
पुष्ट	अपुष्ट	परिश्रम	विश्राम
पूर्णता	अपूर्णता	प्रयोग	अप्रयोग
पठित	अपठित	पाश्चात्य	पौर्वात्य
प्रसाद	विषाद	पुण्य	पाप
परमार्थ	स्वार्थ	पात्र	कुपात्र



शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
पतन	उत्थान	पराया	अपना
प्रज	मृढ़	प्रशंसा	निंदा
पानी	आग	पुरातन	नवीन
पूर्ववत	नूतनवत	परार्थ	स्वार्थ
प्रजा	राजा	पुरुष	स्त्री
पराजय	जय	पता	खोज
पवित्र	अपवित्र	प्रख्यात	अख्यात
प्रतिकूल	अनुकूल	प्रलय	सृष्टि
प्रकट	गुप्त	पालक	संहारक
पूर्व	उत्तर	पूर्णिमा	अमावस्या
पूर्ण	अपूर्ण	परकीय	स्वकीय
पतनोन्मुख	विकासोन्मुख	प्रमुख	गौण
प्राची	प्रतीची	फूट	मेल
फायदा	नुकसान	फल	निष्फल
फूलना	मुरझाना		

(ब, भ)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
बाढ़	सूखा	बुराई	भलाई
बन्धन	मुक्ति	बर्बर	सम्य
बाह्य	अभ्यन्तर	बहिरंग	अन्तरंग
बलवान्	बलहीन	बढ़िया	घटिया
बैर	प्रीति	बद	नेक
बद्ध	मुक्त	बाढ़ग्रस्त	सूखाग्रस्त
बुरा	अच्छा	भूत	भविष्य
भोगी	योगी	भौतिक	आध्यात्मिक
भद्र	अभद्र	भाव	अभाव
भय	निर्भय	भूगोल	खगोल
भूलोक	द्युलोक	भेद	अभेद
भोग्य	अभोग्य	भला	बुरा
भिखारी	दाता	भारी	हल्का



(म)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
मानवता	दानवता	मृदुल	कठोर
मानव	दानव	मुख	पृष्ठ
मिलन	विरह	मृत	जीवित
मुनाफा	नुकसान	महात्मा	दुरात्मा
मान	अपमान	मित्र	शत्रु
मधुर	कटु	मिथ्या	सत्य
मौखिक	लिखित	मोक्ष	बंधन
मंगल	अमंगल	मितव्यय	अपव्यय
मूक	वाचाल	मसृण	अमानवीय
मीठा	कड़वा	मृदुल	रुक्ष
मालिक	नौकर	मलिन	निर्मल
मनुज	दनुज	मर्त्य	अमर
माता	पिता	मानक	अमानक
मूक	वाचाल	मरण	जीवन
मेहनती	आलसी		

(य, र, ल)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
यश	अपयश	योग	वियोग
योगी	भोगी	यथार्थ	कल्पित
राजतन्त्र	जनतन्त्र	रत	विरत
रागी	विरागी	रचना	ध्वंस
रक्षक	भक्षक	राजा	रंक
राग	द्वेष	रूपवान्	कुरुप
रिक्त	पूर्ण	रात्रि	दिवस
रात	दिन	राम	रावण
रंगीन	बेरंग	रुग्ण	स्वस्थ
लघु	गुरु	लौकिक	अलौकिक
लिप्त	अलिप्त	लुप्त	व्यक्त
लायक	नालायक	लाभ	हानि
लिखित	अलिखित	लेन	देन



(व)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
विधवा	सधवा	विजय	पराजय
वसंत	पतझर	विरोध	समर्थन
विशुद्ध	दूषित	विषम	सम
विद्वान	मूर्ख	विवाद	निर्विवाद
विशिष्ट	साधारण	विस्तृत	संक्षिप्त
विशेष	सामान्य	बहिष्कार	स्वीकार
वृद्धि	हास	विमुख	सम्मुख
वैतनिक	अवैतनिक	विशालकाय	क्षीणकाय
वीर	कायर	वृहत	लघु
व्यस्त	अव्यस्त	व्यवहारिक	अव्यावहारिक
विपत्ति	सम्पत्ति	वृष्टि	अनावृष्टि
वक्र	सरल	विशिष्ट	सामान्य
वियोग	मिलन	विधि	निषेध
वरदान	अभिशाप	विपन्न	सम्पन्न
विस्तार	संक्षेप	वृद्ध	तरुण
वादी	प्रतिवादी	विकास	हास
विरह	मिलन	विष	अमृत
विरत	निरत	विकीर्ण	संकीर्ण
वैमनस्य	सौमनस्य	व्यस्त	अकर्मण्य
विक्रय	क्रय	विधवा	सधवा
व्यास	समास	विश्लेषण	संश्लेषण
विसर्जन	अहान	वैतनिक	अवैतनिक
विजय	पराजय	वन	मरु
विश्वास	अविश्वास	व्यर्थ	अव्यर्थ
विनीत	उद्भृत	विपद	सम्पद
विशिष्ट	साधारण	व्यय	आय
विस्तृत	संक्षिप्त	विष्यात	कुष्यात
विषाद	आहद	वन्य	पालित
विकर्ष	आकर्ष	वियोग	संयोग



शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
विशेष	सामान्य	वक्र	ऋजु
विनाश	निर्माण	विशालकाय	लघुकाय
विसर्जन	सर्जन		

(स)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
सौभाग्य	दुर्भाग्य	साक्षर	निरक्षर
साधु	असाधु	सुजन	दुर्जन
सुपुत्र	कुपुत्र	सुमति	कुमति
सरस	नीरस	सच	झूठ
साकार	निराकार	सजीव	निर्जीव
सुर	असुर	संक्षेप	विस्तार
सरस	नीरस	सौभाग्य	दुर्भाग्य
सुगंध	दुर्गंध	सगुण	निर्गुण
सक्रिय	निष्क्रिय	सफल	असफल
सज्जन	दुर्जन	संतोष	असंतोष
सावधान	असावधान	सबल	निर्बल
संधि	विच्छेद	स्वस्थ	अस्वस्थ
सुख	दुःख	सरल	कठिन
सुन्दर	असुन्दर	स्वदेश	विदेश
शिक्षित	अशिक्षित	संजीव	निर्जीव
सदाचार	दुराचार	सम	विषम
सफल	विफल	सजल	निर्जल
स्वजाति	विजाति	सम्मुख	विमुख
सार्थक	निरर्थक	सकर्म	निष्कर्म
सुकर्म	कुकर्म	सगुण	निर्गुण
सबल	दुर्बल	सनाथ	अनाथ
सहयोगी	प्रतियोगी	स्वतन्त्रा	परतन्त्रा
संयोग	वियोग	सम्मान	अपमान



शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
सकाम	निष्काम	साकार	निराकार
सुलभ	दुर्लभ	सुपथ	कुपथ
स्तुति	निन्द	स्मरण	विस्मरण
सशंक	निशंक	सन्तोष	असन्तोष
सुधा	गर्ल	संकल्प	विकल्प
सन्यासी	गृहस्थ	स्वधर्म	विधर्म
समष्टि	व्यष्टि	संघटन	विघटन
समूल	निर्मल	सत्कर्म	दुष्कर्म
सुमति	कुमति	संकीर्ण	विस्तीर्ण
सदाशय	दुराशय	समास	व्यास
स्वत्प्यायु	चिरायु	सुसंसगति	कुसंगति
सुपरिणाम	दुष्परिणाम	सखा	शत्रु
सौम्य	असौम्य	सुगम	दुर्गम
सुशील	दुशील	स्थूल	सूक्ष्म
स्वामी	सेवक	सृष्टि	प्रलय
सन्धि	विग्रह	स्थिर	चंचल
सबाध	निर्बाध	सत्कार	तिरस्कार
स्वार्थ	निस्वार्थ	सापेक्ष	निरपेक्ष
सक्षम	अक्षम	सादर	निरादर
सलज्ज	निर्लज्ज	सदय	निर्दय
सुलभ	दुर्लभ	संकोच	असंकोच
सभ्य	असभ्य	सुदूर	अदूर
सभय	निर्भय	सामान्य	विशिष्ट
सुकाल	अकाल	सविकार	निर्विकार
सुबह	शाम	स्वप्न	जागरण
स्मरण	विस्मरण	संगत	असंगत
स्वदेशी	परदेशी	सुभग	दुभग
समाज	व्यक्ति	संग	निःसंग
स्वकीया	परकीया	सामान्य	विशिष्ट



(श, ह, क्ष, ज)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
शूर	कायर	शयन	जागरण
शीत	उष्ण	शुभ	अशुभ
शुष्क	आर्द्र	शकुन	अपशकुन
शुक्ल	कृष्ण	श्वेत	श्याम
शासक	शासित	शयन	जागरण
श्रव्य	दृश्य	शोषक	पोषक
क्षील	अक्षील	शान्ति	क्रान्ति
शत्रु	मित्र	श्रीगणेश	इतिश्री
श्रद्धा	घृणा	श्यामा	गौरी
स्वर्ग	नरक	स्वीकृत	अस्वीकृत
स्वदेश	विदेश	स्वाधीन	पराधीन
स्तुति	निंदा	शुक्ल	कृष्ण
शिव	अशिव	श्वेत	श्याम
शरण	अशरण	शासक	शासित
षंड	मर्द	षंडत्व	पुंसत्व
हस्त	दीर्घ	हित	अहित
हर्ष	शोक	हिंसा	अहिंसा
हँसना	रोना	हास	रुदन
क्षर	अक्षर	क्षम्य	अक्षम्य
क्षुद्र	विशाल	क्षणिक	शाश्वत
क्षमा	क्रोध	क्षुद्र	महत
क्षमा	दण्ड	ज्ञान	अज्ञान





विशेषण

विशेषण

- विशेषण वे शब्द होते हैं जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं। ये शब्द वाक्य में संज्ञा के साथ लगकर संज्ञा की विशेषता बताते हैं।
- विशेषण विकारी शब्द होते हैं एवं इन्हें सार्थक शब्दों के आठ भेड़ों में से एक माना जाता है।
- बड़ा, काला, लम्बा, दयालु, भारी, सुंदर, कायर, टेढ़ा - मेढ़ा, एक, दो, वीर पुरुष, गोरा, अच्छा, बुरा, मीठा, खट्टा आदि विशेषण शब्दों के कुछ उदाहरण हैं।

विशेषण की परिभाषा

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, संख्या, मात्रा या परिमाण आदि) बताते हैं विशेषण कहलाते हैं।

जैसे - बड़ा, काला, लंबा, दयालु, भारी, सुंदर, अच्छा, गन्दा, बुरा, एक, दो आदि।

- वहां चार लड़के बैठे थे।
- अध्यापक के हाथ में लंबी छड़ी है।
- वह घर जा रहा था।
- गीता सुंदर लड़की है।

विशेष्य

जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताई जाए वे विशेष्य कहलाते हैं।

जैसे - मोहन सुंदर लड़का है।

प्रविशेषण

विशेषण शब्द की भी विशेषता बतलाने वाले शब्द 'प्रविशेषण' कहलाते हैं।

जैसे - राधा बहुत सुंदर लड़की है।

इस वाक्य में सुंदर (विशेषण) की विशेषता बहुत शब्द के द्वारा बताई जा रही है। इसलिए बहुत प्रविशेषण शब्द है।

विशेषण के भेद

हिन्दी व्याकरण में विशेषण के मुख्यतः 5 भेद या प्रकार होते हैं।

- गुणवाचक
- परिमाणवाचक
- संख्यावाचक
- सार्वनामिक



1. गुणवाचक :- जिस विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम के गुण या दोष का बोध हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। ये विशेषण भाव, रंग, दशा, आकार, समय, स्थान, काल आदि से सम्बन्धित होते हैं।

जैसे - अच्छा, बुरा, सफेद, काला, रोगी, मोटा, पतला, लम्बा, चौड़ा, नया, पुराना, ऊँचा, मीठा, चीनी, नीचा, प्रातःकालीन आदि।

- गुणवाचक विशेषणों में 'सा' साधश्यवाचक पद जोड़कर गुणों को कम भी किया जाता है।

जैसे - लाल-सा, बड़ा-सा, छोटी-सी, ऊँची-सी आदि।

- कभी-कभी गुणवाचक विशेषणों के विशेष्य वाक्य लुप्त हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में संज्ञा का काम भी विशेषण ही करता है।

जैसे - बड़ों का आदर करना चाहिए।

दीनों पर दया करनी चाहिए।

- गुणवाचक विशेषण में विशेष्य के साथ कैसा/ कैसी लगाकर प्रश्न करने पर विशेषण पता किया जाता है।

2. परिमाणवाचक :- जिन विशेषण शब्दों से किसी वस्तु के परिमाण, मात्रा, माप या तोल का बोध हो वे परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

इसके दो भेद हैं।

I. **निश्चित परिमाणवाचक :-** दस क्विटल, तीन किलो, डेढ़ मीटर।

II. **अनिश्चित परिमाणवाचक :-** थोड़ा, इतना, कुछ, ज्यादा, बहुत, अधिक, कम, तनिक, थोड़ा, इतना, जितना, ढेर सारा।

3. संख्यावाचक :- जिस विशेषण द्वारा किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध हो, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे - बीस दिन, दस किताब, सात भैंस आदि। यहाँ पर बीस, दस तथा सात - संख्यावाचक विशेषण हैं। इसके दो भेद हैं -

I. **निश्चित संख्यावाचक :-** दो, तीन, ढाई, पहला, दूसरा, इकहरा, दुहरा, तीनों, चारों, दर्जन, जोड़ा, प्रत्येक।

II. **अनिश्चित संख्यावाचक :-** कई, कुछ, काफी, बहुत।

4. सार्वनामिक :- पुरुषवाचक और निजवाचक सर्वनाम (मैं, तू, वह) के अतिरिक्त अन्य सर्वनाम जब किसी संज्ञा के पहले आते हैं, तब वे संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

जैसे - यह घोड़ा अच्छा है।, वह नौकर नहीं आया। यहाँ घोड़ा और नौकर संज्ञाओं के पहले विशेषण के रूप में 'यह' और 'वह' सर्वनाम आये हैं। अतः ये सार्वनामिक विशेषण हैं।

जैसे - यह विद्यालय, वह बालक, वह खिलाड़ी आदि।

सार्वनामिक विशेषण के भेद

व्युत्पत्ति के अनुसार सार्वनामिक विशेषण के भी दो भेद हैं-

- मौलिक सार्वनामिक विशेषण
- यौगिक सार्वनामिक विशेषण





I. **मौलिक सार्वनामिक विशेषण :-** जो सर्वनाम बिना रूपान्तर के संज्ञा के पहले आता हैं उसे मौलिक सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

जैसे -

- वह लड़का,
- यह कार,
- कोई नौकर,
- कुछ काम इत्यादि।

II. **यौगिक सार्वनामिक विशेषण :-** जो मूल सर्वनामों में प्रत्यय लगाने से बनते हैं।

जैसे -

कैसा घर, उतना काम, ऐसा आदमी, जैसा देश इत्यादि।

विशेष्य और विशेषण में संबंध

ऊपर आपने विशेषण और विशेष्य के बारे में पढ़ा, अब इन दोनों के संबंधों पर बात करेंगे।

“वाक्य में विशेषण का प्रयोग दो प्रकार से होता है- कभी विशेषण विशेष्य के पहले आता है और कभी विशेष्य के बाद।” इस प्रकार प्रयोग की वृष्टि से विशेषण के दो भेद हैं-

- विशेष्य - विशेषण
- विधेय - विशेषण

1. **विशेष्य विशेषण :-** जो विशेषण विशेष्य के पहले आये, वह विशेष्य - विशेष होता हैं।

जैसे -

- मुकेश चंचल बालक है।,
- संगीता सुंदर लड़की है।

इन वाक्यों में चंचल और सुंदर क्रमशः बालक और लड़की के विशेषण हैं, जो संज्ञाओं (विशेष्य) के पहले आये हैं।

2. **विधेय विशेषण :-** जो विशेषण विशेष्य और क्रिया के बीच आये, वहाँ विधेय - विशेषण होता हैं।

जैसे -

- मेरा कुत्ता लाल हैं।,
- मेरा लड़का आलसी है।

इन वाक्यों में लाल और आलसी ऐसे विशेषण हैं, जो क्रमशः कुत्ता (संज्ञा) और है (क्रिया) तथा लड़का (संज्ञा) और है (क्रिया) के बीच आये हैं।





महत्वपूर्ण

विशेषण के लिंग, वचन आदि विशेष्य के लिंग, वचन आदि के अनुसार होते हैं।

जैसे -

- अच्छे लड़के पढ़ते हैं।,
- नताशा भली लड़की है।,
- रामू गंदा लड़का है। आदि

यदि एक ही विशेषण के अनेक विशेष्य हों तो विशेषण के लिंग और वचन समीप वाले विशेष्य के लिंग, वचन के अनुसार होंगे,

जैसे -

- नये पुरुष और नारियाँ,
- नयी धोती और कुरता। आदि





व्याख्या

व्याख्या

व्याख्या न भावार्थ है और न आशय। यह इन दोनों से भिन्न है। व्याख्या किसी भाव या विचार का विस्तार या विवेचन है। इसमें परीक्षार्थी को अपने अध्ययन, मनन और चिन्तन के प्रदर्शन की पूरी स्वतंत्रता रहती है।

व्याख्या की परिभाषा

- गद्य और पद्य में व्यक्त भावों अथवा विचारों को विस्तारपूर्वक लिखने को व्याख्या कहते हैं।
- ‘व्याख्या’ किसी भाव या विचार के विस्तार और विवेचन को कहते हैं।
- व्याख्या में पद-निर्देश, अलंकार, कठिन शब्दों का अर्थ तथा समानांतर पंक्तियों से तुलना आवश्यक है। व्याख्या न भावार्थ है, और न आशय। यह इन दोनों से भिन्न है। नियम भी भिन्न है।
- ‘व्याख्या’ किसी भाव या विचार के विस्तार और विवेचन को कहते हैं। इसमें परीक्षार्थी को अपने अध्ययन, मनन और चिन्तन के पदर्शन की पूरी स्वतन्त्रा रहती है।

व्याख्या के प्रकार

प्रसंग-निर्देश व्याख्या का अनिवार्य अंग है। इसलिए व्याख्या लिखने के पूर्व प्रसंग का उल्लेख कर देना चाहिए, पर प्रसंग-निर्देश संक्षिप्त होना चाहिए। परीक्षा-भवन में व्याख्या लिखते समय परीक्षार्थी प्रायः दो-दो, तीन-तीन पृष्ठों में प्रसंग-निर्देश करते हैं और कभी-कभी मूलभाव से दूर जाकर लम्बी-चौड़ी भूमिका बांधने लगते हैं।

यह ठीक नहीं। उत्तम कोटि की व्याख्या में प्रसंग-निर्देश संक्षिप्त होता है। ऐसी कोई भी बात न लिखी जाय, जो अप्रासंगिक हो। अप्रासंगिक बातों को ढूँस देने से अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है। अतः परीक्षार्थी को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि व्याख्या में कोई बात फिजूल और बेकार न हो। प्रसंग-निर्देश विषय के अनुकूल होना चाहिए।

व्याख्या में मूल के भावों और विचारों का समुचित और सन्तुलित विवेचन होना चाहिए। यहाँ परीक्षार्थी को अपनी स्वतन्त्र बुद्धि और विद्या से काम लेने का पूरा अधिकार है। विषय के विवेचन में विचारों के सत्यासत्य का निर्णय किया जाता है। इसलिए, विचारों का विवेचन में विचारों के सत्यासत्य का निर्णय किया जाता है।

इसलिए, विचारों का विवेचन करते समय छात्र को विषय के गुण और दोष, दोनों की समीक्षा करनी चाहिए। यदि वह चाहें, तो उसके एक ही पक्ष का विवेचन कर सकता है। लेकिन, अच्छी व्याख्या में विचारों या भावों का सन्तुलित विवेचन अपेक्षित है। यदि छात्र मूल के भावों से सहमत है, तो उसकी तर्कसंगत पुष्टि करनी चाहिए और यदि असहमत है, तो वह उसका खण्डन भी कर सकता है।





व्याख्या में खण्डन-मण्डन से पहले मूल के भावों का सामान्य अर्थ अथवा भावार्थ लिख देना चाहिए, ताकि परीक्षक यह जान सके कि छात्र ने उसका सामान्य अर्थ भली भाँति समझ लिया है। व्याख्या में भावार्थ अथवा आशय का इतना ही काम है। भावार्थ के बाद विषय का विवेचन होना चाहिए।

व्याख्या लिखने के लिए पहले लम्बी-लम्बी पंक्तियाँ दी जाती थी। लेकिन अब एक-दो पंक्तियों या वाक्यों का अवतरण दिया जाता है। इन दो तरह के अवतरणों की व्याख्या लिखते समय थोड़ी सावधानी बरतनी चाहिए। जब कोई बड़ा-सा अवतरण व्याख्या के लिए दिया जाय, तब समझना चाहिए कि इसमें अनेक विचारों का समावेश हो सकता है।

ऐसी स्थिति में विद्यार्थी को अवतरण के मूल और गौण भावों की खोज करनी चाहिए। इसके विपरीत, जब एक-दो पंक्तियों का अवतरण दिया जाय, तब छात्रों को उन्हीं शब्दों का विवेचन करना चाहिए, जिनसे भाव स्पष्ट हो जाय। छोटे अवतरणों में भावों की अधिकता रहती है। व्याख्या में इन्हीं गूढ़ भावों का विस्तार होना चाहिए।

सम्यक विवेचन के बाद अन्त में कठिन शब्दों का अर्थ, टिप्पणी के रूप में दे देना चाहिए। इस तरह व्याख्या समाप्त होती है।

व्याख्या के लिए आवश्यक निर्देश

मूल अवतरण से व्याख्या बड़ी होती है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई के सम्बन्ध में कोई निश्चित सलाह नहीं दी जा सकती। छात्रों को सिर्फ यह देखना है कि मूल भावों अथवा विचारों का समुचित और सन्तोषजनक विवेचन हुआ या नहीं। इन बातों को ध्यान में रखकर अच्छी और उत्तम व्याख्या लिखी जा सकती है।

- व्याख्या में प्रसंग-निर्देश अत्यावश्यक है।
- प्रसंग-निर्देश संक्षिप्त, आकर्षक और संगत होना चाहिए।
- व्याख्या में मूल विचार या भाव का संतोषपूर्ण विस्तार हो।
- अंत में शब्दार्थ लिखे जायें।
- मूल के विचारों का खण्डन या मण्डन किया जा सकता है।
- मूल के विचारों के गुण-दोषों पर समानरूप से प्रकाश डालना चाहिए।
- यदि कोई महत्वपूर्ण बात हो, तो उसपर अन्त में टिप्पणी दे देनी चाहिए।

व्याख्या का उदाहरण

1. सिद्धि-हेतु स्वामी गये, यह गौरव की बात,
पर चोरी-चोरी गये, यही बड़ा व्याघात।

व्याख्या :- ये पंक्तियाँ डा. मैथलीशरण गुप्त के 'यशोधरा' काव्य से ली गयी हैं। कुछ वर्षों तक दाम्पत्य-जीवन बिताने के बाद यशोधरा (सिद्धार्थ की धर्मपत्नी) ने यह सहज ही जान लिया था कि उसका पति सांसारिक सुखों की सीमाओं में बँधने वाला साधारण मनुष्य नहीं हैं। इसका आभास उसे पहले ही मिल चुका था।

अतः वह जानती थी कि सिद्धार्थ का वन-गमन या महाभिनिष्क्रमण स्वाभाविक था। लेकिन गौतम एक रात चुपके से घर छोड़ कर चले गये। यशोधरा को इस बात का बड़ा दुःख हुआ कि उसके स्वामी उससे बिना कुछ कहे, इस तरह चुपके-से क्यों चले गये। यह बात उसे कँटे की तरह चुभने लगी।



अर्थ-विश्लेषण :- यशोधरा यह जान कर गौरवान्वित हुई कि उसके पति जीवन के एक महान् लक्ष्य की पूर्ति में, संसार के कल्याणार्थ गये हैं। सिद्धार्थ-जैसे महापुरुष की धर्मपत्नी होने का उसे गर्व हैं।

लेकिन दुःख की बात यह है कि वे बिना कुछ कहे-सुने चले गये। सिद्धार्थ का 'चोरी-चोरी' जाना यशोधरा को बहुत खला, जैसे उसके हृदय पर गहरा आघात हुआ। वह तड़प उठी और विकल हो गयी।

ऐसा कर गौतम ने नारी के स्त्रियोचित अधिकार, विश्वास और स्वत्व पर गहरी चोट की। नारी का स्वाभाविक मान इसे क्यों कर सहन करे ! आदर्श नारी सब कुछ सहन कर सकती हैं पर अपमान का धूंट कैसे पी सकती हैं? कभी-कभी नारी की आत्म-गौरव-भावना स्त्री-हठ का रूप धारण कर लेती हैं।

लेकिन यशोधरा में इसका अभाव है। वह अपने पति की पलायनवादी मनोवृत्ति का विरोध करती महापुरुषों को 'चोरी-चोरी' गृह-त्याग करना शोभा नहीं देता।

विवेचन :- प्रश्न यह है कि यशोधरा से बिना कुछ कहे सिद्धार्थ ने पलायन क्यों किया ?सिद्धार्थ, श्रृंगार-भाव से न सही, कर्तव्य-भाव से अवश्य ही यशोधरा को, अपने गृह-त्याग का, पूर्व परिचय दे देना चाहते थे। लेकिन नारी की स्वाभाविक दुर्बलता से वे अच्छी तरह अवगत थे।

उन्हें यह शंका थी कि यदि वे पलायन की बात यशोधरा से कह देंगे तो वह निश्चय ही उनके पथ की बाधा बन जायगी। फिर उनकी योजना सफल न हो पाती। उनकी शंका निराधार न थी। वे अपने ही वंश में राम के साथ वन जाने वाली सीता का हठ देख चुके थे।

ऐसी अवस्था में सिद्धार्थ के लिए दूसरा और कोई रास्ता न था। अतः यह स्पष्ट है कि सिद्धार्थ का 'चोरी-चोरी' जाना सार्थक था। लेकिन यशोधरा के लिए यह अभिशाप हो गया। एक सजग और जागरूक नारी के लिए इतना क्या कम था कि उसका पति उसे 'मुक्ति-मार्ग' की बाधा नारी' समझे।

फिर नारी का स्वाभिमान क्यों न उत्तेजित हो? सच तो यह है कि नारी और पुरुष की स्वाभाविक प्रवृत्तियों के अनुसार यशोधरा और सिद्धार्थ के दृष्टिकोण अपने में सत्य हैं। दोनों के विचार स्वाभाविक हैं।

शब्दार्थ :- सिद्धि-हेतु-सांसारिक माया तथा बन्धनों को जीतने के लिए। व्याघात-गहरा आघात।

ACADEMY

व्याख्या का दूसरा उदाहरण

2. तुमने मुझे पहचाना नहीं।

तुम्हारी आँखों पर चर्बी छाई हुई है।

कंगाल ही कलियुग का कल्कि-अवतार है।

व्याख्या :- ये पंक्तियाँ हिंदी के सुप्रसिद्ध कहानी-लेखक राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह की कहानी 'दरिद्रनारायण' से ली गयी हैं। इन पंक्तियों में लेखक धनवानों को यह बताना चाहता है कि इस युग में कंगाल ही भगवान है। वे भगवान को पाने के लिए तीर्थों में जाकर पंडों को धन का दान करते हैं, पर वह धन कंगालों या गरीबों को मिलना चाहिए, क्योंकि कंगाल ही धन के सही अधिकारी हैं। धनी लोग धन के घमंड में चूर हैं वे गरीबों की दर्दभरी कहानी नहीं सुनते।

उनकी आँखों पर घमंड का चश्मा चढ़ा है या उनपर चर्बी छायी है। जबतक वे इस चश्मे को उतार नहीं फेंकते, तबतक कलियुग के कल्कि-अवतार के दर्शन नहीं कर सकते। इस युग का भगवान कंगाल है, गरीब है। उसकी सेवा ही आज भगवान की सबसे बड़ी पूजा है।





व्याख्या का तीसरा उदाहरण

3. माला फेरत युग गया, गया न मन का फेर।

कर का मनका छाँड़िकै, मन का मनका फेर॥

व्याख्या :- प्रस्तुत 'दोहा' 'साहित्य-सरिता' नामक पुस्तक में संकलित 'कबीरदास की सखियाँ' से लिया गया है। महज अङ्गतालीस मात्राओं के इस छंद में महान् निर्गुणवादी संत कबीर ने एक गहरा अनुभव व्यक्त किया है।

उनका कहना है कि माला फेरते-फेरते तो अनगिनत वर्ष बीते, किंतु मन का फेर न गया अर्थात् मन की मैल न धुली, कपट न मिटा। अतः यह आवश्यक है कि हाथ की सुमरिनी छोड़कर मन की सुमरिनी फेरनी ही आरंभ कर दें।

इस दोहे में कबीर ऐसे ढोंगियों को फटकारते हैं, जो दुनिया को ठगने के लिए एक ओर माला जपते हैं और दूसरी ओर फरेब का जाल बुनते हैं। उनके लिए माला मानो धोखे की टट्टी है, जिसकी आँड़ में वे मनमाना शिकार खेलते हैं।

किंतु सच्चे भक्त जानते हैं कि प्रभु उसी पर प्रसन्न होता है, जिसका हृदय निर्मल हो, निष्कपट हो, छल-छद्गहीन हो। गोस्वामीजी ने भी लिखा है कि भगवान् राम की वाणी है-

निर्मल जन सोई मोहि पावा।

मोहि कपट छल-छिद्र न भावा॥

प्रस्तुत दोहे में यमक अलंकार है। 'मन का' और 'मनका' एक ही स्वर-व्यंजन-समुदाय की आवृत्ति है, किंतु दोनों में भेद है। एक 'मन का' का अर्थ स्पष्ट है और दूसरे 'मनका' का अर्थ माला है, अनुभव की गहराई से निकली हुई कबीर की यह वाणी सहज रूप से अर्थवान तो है ही, अलंकृत भी हो गयी है।



**STEP UP
ACADEMY**



शुद्ध वर्तनी

भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है और शब्द भाषा की सबसे छोटी सार्थक इकाई है। भाषा के माध्यम से ही मानव मौखिक एवं लिखित रूपों में अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है। इस वैचारिक अभिव्यक्ति के लिए शब्दों का शुद्ध प्रयोग आवश्यक है। अन्यथा अर्थ का अनर्थ होने में भी देर नहीं लगती। कई बार क्षेत्रीयता, उच्चारण भेद और व्याकरणिक ज्ञान के अभाव के कारण वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ हो जाती हैं।

वर्तनी संबंधी अशुद्धियों के कई कारण हो सकते हैं जिसमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं –

1. मात्रा प्रयोग –

हिन्दी के कई शब्द ऐसे हैं जिनको लिखते समय मात्रा के प्रयोग विषयक संशय उत्पन्न हो जाता है। ऐसे शब्दों का ठीक से उच्चारण करने पर उचित मात्रा प्रयोग किया जाना संभव होता है।

जैसे –

अशुद्ध	शुद्ध
अतिथी	अतिथि
इंदोर	इंदौर
उर्जा	ऊर्जा
ऊषा	उषा
करुणा	करुणा
क्योंकी	क्योंकि
गितांजली	गीतांजलि
तियालीस	तैंतालिस
त्रिपुरारी	त्रिपुरारि
दवाईयाँ	दवाइयाँ
दीयासलाइ	दियासलाई
निरिक्षण	निरीक्षण
नूपुर	नूपुर
प्रतीलीपि	प्रतिलिपि
आहुती	आहूति
ईकाई	इकाई



उहापोह	ऊहापोह
एरावत	ऐरावत
केकयी	कैकेयी
क्षिती	क्षिति
गौतम	गौतम
तिथी	तिथि
तिलांजली	तिलांजलि
त्यौंहार	त्योहार
दिवारात्रि	दिवारात्रि
निरव	नीरव
नीती	निति
प्रतिनीधी	प्रतिनिधि
पल्नि	पल्नी
पड्हौसी	पड्होसी
परिक्षित	परीक्षित
पुज्य	पूज्य
पुरुस्कार	पुरस्कार
बिमार	बीमार
मिट्टि	मिट्टी
मुल्य	मूल्य
मूमर्ष	मुमूर्ष
युयूत्सा	युयुत्सा
रूप	रूप
रूपया	रूपया
श्रीमति	श्रीमती
परिक्षा	परीक्षा
पितांबर	पीतांबर
पूज्यनीय	पूजनीय
बधाईयाँ	बधाइयाँ
मारुति	मारुति
मिलित	मीलित
मूर्ति	मूर्ति



मेथलीशरण	मैथिलीशरण
रचियता	रचयिता
रात्रि	रात्रि
शारिरीक	शारीरिक
हरितिमा	हरीतिमा

2. आगम –

शब्दों के प्रयोग में अज्ञानवश या भूलवश जब अनावश्यक वर्णों का प्रयोग किया जाए तो उसे आगम कहते हैं। आगम स्वर व व्यंजन दोनों का हो सकता है। अतिरिक्त रूप से प्रयुक्त इन वर्णों को हटाकर शब्दों का शुद्ध प्रयोग किया जा सकता है।

स्वर का आगम –

जैसे –

अशुद्ध	शुद्ध
अत्याधिक	अत्यधिक
अहोरात्रि	अहोरात्र
पहिला	पहला
प्रदर्शनी	प्रदर्शनी
द्वारिका	द्वारका
अहिल्या	अहल्या
आधीन	अधीन
तदानुकूल	तदनुकूल
वापिस	वापस

व्यंजन का आगम –

जैसे –

अशुद्ध	शुद्ध
अंतर्धान	अंतर्धन
चिक्कीर्षा	चिकिर्षा
मानवीयकरण	मानवीकरण
सट्ट्य	सट्टश
सौजन्यता	सौजन्य
कृत्यकृत्य	कृतकृत्य
षष्ठ्	षष्ठ
समुन्द्र	समुद्र



3. लोप –

शब्दों के प्रयोग में जब किसी आवश्यक वर्ण (स्वर या व्यंजन) का प्रयोग होने से रह जाए तो वह लोप कहलाता है। इस आधार पर भी शब्दों के सही प्रयोग करने हेतु आवश्यक स्वर या व्यंजन जोड़कर त्रुटि रहित प्रयोग किया जा सकता है।

स्वर का लोप –

जैसे –

अशुद्ध	शुद्ध
अगामी	आगामी
उज्यनी	उज्ज्यनी
जमाता	जामाता
मोक्षदायनी	मोक्षदायिनी
स्वस्थ्य	स्वास्थ्य
आजीवका	आजीविका
कालंदि	कालिंदी
वयाकरण	वैयाकरण

व्यंजन का लोप –

जैसे –

अशुद्ध	शुद्ध
अनुच्छेद	अनुच्छेद
गणमान्य	गण्यमान्य
जोत्सना	ज्योत्स्ना
प्रतिच्छाया	प्रतिच्छाया
मत्सेंद्र	मत्स्येंद्र
मिष्ठान	मिष्टान्न
व्यंग	व्यंग्य
स्वालंबन	स्वावलंबन
उपलक्ष	उपलक्ष्य
छत्रछाया	छत्रच्छाया
धातव्य	ध्यातव्य
प्रतिद्वंद्व	प्रतिद्वंद्व
महात्म	माहात्म्य
याज्ञवल्क	याज्ञवल्क्य
सामर्थ	सामर्थ्य





4. वर्ण व्यतिक्रम (क्रम भंग) –

शब्दों में प्रयुक्त वर्णों को उनके क्रम से प्रयुक्त न कर शब्द में उसके नियत स्थान की अपेक्षा किसी अन्य क्रम पर प्रयुक्त करना वर्ण व्यतिक्रम कहलाता है।

जैसे –

अशुद्ध	शुद्ध
अथिति	अतिथि
आवाहन	आह्वान
चिन्ह	चिह्न
पूर्वान्ह	पूर्वाह्न
ब्रह्मा	ब्रह्म
विह्ल	विह्वल
अपरान्ह	अपराह्न
आल्हाद	आह्लाद
जिक्हा	जिह्वा
प्रल्हाद	प्रह्लाद
मध्यान्ह	मध्याह्न

5. वर्ण परिवर्तन –

कई बार वर्ण प्रयुक्त करते समय असावधानीवश किसी वर्ण विशेष के स्थान पर किसी दूसरे वर्ण का प्रयोग हो जाता है। यह प्रयोग वर्तनी की अशुद्धि को दर्शाता है। अतः इस प्रकार के प्रयोग में सावधानी रखनी चाहिए।

जैसे –

अशुद्ध	शुद्ध
अधिशासी	अधिशासी
आंसिक	आंशिक
कनिष्ठ	कनिष्ठ
छीद्रान्वेशी	छिद्रान्वेषी
निषंग	निषंग (तरकश)
पुरुस्कार	पुरस्कार
यथेष्ट	यथेष्ठ
वरिष्ठ	वरिष्ठ
श्राप	शाप
संगठन	संगठन





संतुष्ट	संतुष्ट
खंबा	खंभा
जुखाम	जुकाम
नृसंश	नृशंस
प्रसासन	प्रशासन
रामायन	रामायण
विंधाचल	विंध्याचल
सीधा-साधा	सीधा-सादा
संघठन	संघटन
सुसुषा	सुश्रुषा

6. संयुक्ताक्षरों व व्यंजन द्वित्व का अशुद्ध प्रयोग -

दो व्यंजनों के बीच स्वर का अभाव संयुक्ताक्षर बनाता है वहीं दो समान व्यंजनों में से कोई एक जब स्वर रहित हो व तुरंत एक-दूसरे के बाद आए तो ऐसा प्रयोग द्वित्व कहलाता है। शुद्ध लेखन के लिए इन संयुक्त एवं द्वित्व वर्णों के प्रयोग में भी सावधानी रखनी चाहिए।

जैसे -

अशुद्ध	शुद्ध
अद्वितीय	अद्वितीय
उतीर्ण	उत्तीर्ण
उल्लेखित	उल्लिखित
न्यौछावर	न्योछावर
बुद्धवार	बुधवार
रक्खा	रखा
वृद्धि	वृद्धि
संक्षिप्तिकरण	संक्षिप्तीकरण
उतम	उत्तम
उलंघन	उल्लंघन
निमित	निमित्त
प्रज्वलित	प्रज्वलित
योधा	योद्धा
विध्याचल	विद्यालय
शुद्धिकरण	शुद्धीकरण



7. पंचम वर्ण/अनुस्वार/अनुनासिकता (चंद बिंदु) का प्रयोग -

कई बार शब्दों में अनुस्वार या अनुनासिक चिह्न के प्रयोग की आवश्यकता होती है। इनमें से अनुस्वार के स्थान पर अनुनासिक या अनुनासिक के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग त्रुटिपूर्ण होता है। अतः इनके प्रयोग में विशेष सावधानी की जरूरत होती है।

जैसे -

अशुद्ध	शुद्ध
अँकुर	अंकुर
आँसू	आँसू
काँच	काँच
गाँधी	गाँधी
चाँद	चाँद
झाँसी	झाँसी
अँधा	अंधा
ऊँचा	ऊँचा
कुआँ	कुआँ
चन्चल	चंचल
जगन्नाथ	जगन्नाथ
झूँठ	झूठ
थूँक	थूक
दिंगनाग	दिङ्नाग
वांगमय	वाङ्मय
षन्मुख	षण्मुख
सन्लाप	संलाप
सम्हार	संहार
हँसना	हँसना
हँसिया	हँसिया
दाँत	दाँत
पाचवां	पाँचवाँ
षणमास	षण्मास
सन्लग्न	संलग्न
सन्शय	संशय
हन्स	हंस
हँसमुख	हँसमुख



8. 'रेफ' व 'र' के अशुद्ध प्रयोग -

'र' तथा रेफ के असावधानीपूर्वक प्रयोग से कई बार शब्दों में वर्तनी दोष आ जाता है। अतः शुद्ध वर्तनी प्रयोग का ध्यान रखते हुए इनके प्रयोग में सावधानी रखकर हम त्रुटिपूर्ण प्रयोग से बच सकते हैं।

जैसे -

अशुद्ध	शुद्ध
अर्थार्त	अर्थात्
अनुगृह	अनुग्रह
आर्शिवाद	आशीर्वाद
चर्मोत्कर्ष	चरमोत्कर्ष
दुर्गति	दुर्गति
सर्मथ	समर्थ
पुर्नजन्म	पुनर्जन्म
ब्रहस्पति	बृहस्पति
मुधनर्य	मूर्खन्य
विगृह	विग्रह
शूरंगार	शृंगार
सृष्टा	स्रष्टा
स्त्रोत	स्रोत
अहरनिस	अहर्निश
अनुग्रहित	अनुग्रहीत
क्रशांगी	कृशांगी
तीर्थंकर	तीर्थकर
दर्शन	दर्शन
नर्मदा	नर्मदा
प्रर्यपण	प्रत्यर्पण
मरयादा	मर्यादा
मुहूर्त	मुहूर्त
ब्रह्मीकरण	वृद्धीकरण
संग्रहित	संगृहीत
स्त्रोत्र	स्रोत्र
सृष्टि	सृष्टि



9. संधि –

संधि के नियमों की जानकारी के अभाव में भी शब्दों में त्रुटि होने की पूरी संभावना रहती है। अतः वे शब्द जो संधि शब्द बन रहे हों उनके प्रयोग में संधि के नियमों के सावधानीपूर्वक प्रयोग से हम शब्दों का शुद्ध प्रयोग कर सकते हैं।

जैसे –

अशुद्ध	शुद्ध
अत्याधिक	अत्यधिक
अंताक्षरी	अंत्याक्षरी
अभ्यांतर	अभ्यंतर
अभ्यारण्य	अभ्यारण्य
अन्विती	अन्विति
उपरोक्त	उपर्युक्त
कविंद्र	कवींद्र
उज्ज्वल	उज्ज्वल
पुनरावलोकन	पुनरवलोकन
पुनरोत्थान	पुनरुत्थान
तत्त्वावधान	तत्त्वावधान
भाष्कर	भास्कर
रविंद्र	रवींद्र
षट्यंत्र	षट्यंत्र
सम्यकज्ञान	सम्यवज्ञान
उच्छ्वास	उच्छ्वास
गत्यावरोध	गत्यवरोध
पुनरोक्ति	पुनरुक्ति
दुरावस्था	दुरवस्था
भगवतगीता	भगवद्गीता
मेघाछ्छन्न	मेघाच्छन्न
लघुत्तर	लघूत्तर
संसदसदस्य	संसत्सदस्य
सरवर	सरोवर



10. समास-

शब्दों के शुद्ध प्रयोग हेतु समास के नियमों का भी ज्ञान होना आवश्यक है। भाषा व्यवहार में आने वाले सामासिक पदों के प्रयोग में समास के नियमों का ध्यान रख कर हम त्रुटियों से बच सकते हैं।

जैसे –

अशुद्ध	शुद्ध
अष्टवक्र	अष्टावक्र
एकलोता	इकलौता
निरपराधी	निरपराध
सशंकित	सशंक
यौवनावस्था	युवावस्था
अहोरात्रि	अहोरात्र
दिवारात्रि	दिवारात्र
सकुशलतापूर्वक	सकुशल/कुशलतापूर्वक
योगीवर	योगिवर

11. उपसर्ग –

उपसर्ग के प्रयोग से बने शब्दों में उचित उपसर्ग की पहचान कर लेखन या वाचन करने से शब्दों का शुद्ध प्रयोग संभव हो सकता है।

जैसे –

अशुद्ध	शुद्ध
अनाधिकार	अनाधिकार
निरावलंब	निरवलंब
निराभिमान	निरभिमान
निसंकोच	निसंकोच
बईमान	बेर्इमान
सशंकित	सशंक/शंकित
तदोपरांत	तदुपरांत
निशुल्क	निःशुल्क
निरालंकृत	निरलंकृत
बेफिजूल	फिजूल/फ़जूल
सदृश्य	सादृश्य/सदृश
सानंदपूर्वक	सानंद/आनंदपूर्वक





12. प्रत्यय -

प्रत्यय के नियमों की जानकारी के अभाव के कारण भी शब्दों में त्रुटि होने की पूरी संभावना रहती है। अतः प्रत्यय के सही व सावधानीपूर्वक प्रयोग से लेखन में होने वाली अशुद्धि से बच सकते हैं।

जैसे -

अशुद्ध	शुद्ध
अनुपातिक	आनुपातिक
उपनिवेशिक	औपनिवेशिक
उद्योगीकरण	औद्योगिकीकरण
एतिहासीक	ऐतिहासिक
ऐश्वर्य	ऐश्वर्य
ओदार्य	ओदार्य
कार्पण्यता	कृपणता/कार्पण्य
क्रोधित	क्रुद्ध
ग्रसित	ग्रस्त
तत्कालिक	तात्कालिक
दैन्यता	दैन्य
प्रफुल्लित	प्रफुल्ल
प्रामाणिकरण	प्रमाणीकरण
प्रोद्योगिकी	प्रौद्योगिकी
वाल्मीकी	वाल्मीकि
ओद्योगिक	औद्योगिक
ओदार्यता	उदारता
कौंतेय	कौंतेय
गोरवता	गुरुता
चातुर्यता	चातुर्य/चतुरता
दारिद्रयता	दरिद्रता/दारिद्र्य
धीर्यता	धीरता/धैर्य
प्रमाणिक	प्रामाणिक
प्रागेतिहासिक	प्रागैतिहासिक
भाग्यमान	भाग्यवान
व्यवहारीक	व्यावहारिक



13. लिंग -

हिन्दी में स्त्री लिंग व पुलंग शब्दों के प्रयोग के विशिष्ट नियम हैं जो हम लिंग वाले अध्याय में विस्तृत रूप से पढ़ चुके हैं। लिंग परिवर्तन व पहचान के नियमों का सही प्रयोग हम अशुद्धियों से बच सकते हैं।

जैसे -

अशुद्ध	शुद्ध
अनाधिनी	अनाथ
गुणवानी	गुणवती
चूही	चुहिया
ठाकुरनी	ठकुराइन
दुल्हा	दुल्हिन
पिशाचिनी	पिशाची
विद्वानी	विदुषी
सुनारी	सुनारिन
कवित्री	कवयित्री
चमारी	चमारिन
जेठी	जेठानी
दाती	दात्री
नेती	नेत्री
भुजंगी	भुजंगिनी
श्रीमति	श्रीमती

14. वचन -

हिन्दी में वचन दो प्रकार के होते हैं- एकवचन और बहुवचन। इनके प्रयोग व पहचान की विस्तृत चर्चा वचन वाले अध्याय में हो चुकी है। इनका ठीक तरीके से पालन हमें शुद्ध लेखन में मदद करता है।

जैसे -

अशुद्ध	शुद्ध
अनेकों	अनेक
इकाईयाँ	इकाइयाँ
हिन्दुओं	हिन्दुओं
विद्यार्थीगण	विद्यार्थिगण
आसुएं	आँसू
गौवें	गौएँ
दवाईयाँ	दवाइयाँ





समास

आपस में संबंध रखने वाले जब दो या दो से अधिक शब्दों के बीच में से विभक्ति हटाकर उन दोनों शब्दों को मिलाया जाता है तब इस मेल को समास कहते हैं।

दो या दो से अधिक शब्द मिलकर जब एक नया उस से मिलता जुलता शब्द का निर्माण करते हैं वह समास कहलाता है। समास शब्द 'सम्' (पूर्ण रूप से) एवं 'आस' (शब्द) से मिलकर बना होता है। जिसका अर्थ होता है विस्तार से कहना। और इसी के अंतर्गत समास के नियमों से बना शब्द सामासिक पद या समस्त पद कहलाता है। जैसे - देश भक्ति, चौराहा, महात्मा, रसोईघर।

समास की परिभाषा -

समास का संक्षिप्त तात्पर्य है - "संछिप्तीकरण"। इसका शाब्दिक अर्थ होता है छोटा रूप। अर्थात् जब दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर जो नया और छोटा शब्द बनता है उस शब्द को समास कहते हैं।

दूसरे शब्दों में कहा जाए तो जहाँ पर कम-से-कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रकट किया जाए वह समास कहलाता है।

उदाहरण:

1. हाथ के लिए कड़ी = हथकड़ी
2. रसोई के लिए घर = रसोईघर
3. नील और कमल = नीलकमल

सामासिक शब्द

समास के नियमों से निर्मित शब्द सामासिक शब्द कहलाता है। इसे समस्तपद भी कहा जाता है। समास होने के बाद विभक्तियों के चिन्ह गायब हो जाते हैं।

उदाहरण: नीलकमल

समास विग्रह

सामासिक शब्दों के बीच के सम्बन्ध को स्पष्ट करने को समास - विग्रह कहते हैं। विग्रह के बाद सामासिक शब्द गायब हो जाते हैं अर्थात् जब समस्त पद के सभी पद अलग - अलग किय जाते हैं उसे समास-विग्रह कहते हैं।

उदाहरण:- माता-पिता = माता और पिता।





समास के भेद

समास के मुख्यतः छह प्रकार या भेद होते हैं जो निम्नलिखित इस प्रकार हैं-

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वन्द्व समास
6. बहुव्रीहि समास

अव्ययीभाव समास

अव्ययीभाव समास में प्रथम पद अव्यय होता है और उसका अर्थ प्रधान होता है उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इसमें अव्यय पद का प्रारूप लिंग, वचन, कारक, में नहीं बदलता है वो हमेशा एक जैसा रहता है।

दूसरे शब्दों में कहा जाये तो यदि एक शब्द की पुनरावृत्ति हो और दोनों शब्द मिलकर अव्यय की तरह प्रयोग हों वहाँ पर अव्ययीभाव समास होता है संस्कृत में उपसर्ग युक्त पद भी अव्ययीभाव समास ही मने जाते हैं।

अव्ययीभाव समास के उदाहरण

- प्रतिदिन = प्रत्येक दिन
- घर-घर = प्रत्येक घर
- रातों रात = रात ही रात में
- प्रतिवर्ष = हर वर्ष
- आजन्म = जन्म से लेकर
- यथासाध्य = जितना साधा जा सके
- धडाधड = धड-धड की आवाज के साथ
- आमरण = मर्त्यु तक
- यथाकाम = इच्छानुसार
- यथास्थान = स्थान के अनुसार
- अभूतपूर्व = जो पहले नहीं हुआ
- निर्भय = बिना भय के
- निर्विवाद = बिना विवाद के
- निर्विकार = बिना विकार के
- प्रतिपल = हर पल
- अनुकूल = मन के अनुसार
- अनुरूप = रूप के अनुसार
- यथासमय = समय के अनुसार





- यथाशीघ्र = शीघ्रता से
- अकारण = बिना कारण के
- यथासामर्थ्य = सामर्थ्य के अनुसार
- यथाविधि = विधि के अनुसार
- भरपेट = पेट भरकर
- हाथोंहाथ = हाथ ही हाथ में
- बेशक = शक के बिना

तत्पुरुष समास

तत्पुरुष समास में दूसरा पद प्रधान होता है। यह कारक से जुदा समास होता है। इसमें ज्ञातव्य-विग्रह में जो कारक प्रकट होता है उसी कारक वाला वो समास होता है। इसे बनाने में दो पदों के बीच कारक चिन्हों का लोप हो जाता है उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

तत्पुरुष समास के उदाहरण

- राजा का कुमार = राजकुमार
- धर्म का ग्रंथ = धर्मग्रंथ
- रचना करने वाला = रचनाकार
- राजा का पुत्र = राजपुत्र
- शर से आहत = शराहत
- राह के लिए खर्च = राहखर्च
- तुलसी द्वारा कृत = तुलसीदासकृत
- राजा का महल = राजमहल

तत्पुरुष समास के भेद

वैसे तो तत्पुरुष समास के 8 भेद होते हैं किन्तु विग्रह करने की वजह से कर्ता और सम्बोधन दो भेदों को लुप्त रखा गया है। जिस तत्पुरुष समास में प्रथम पद तथा द्वितीय पद दोनों भिन्न-भिन्न विभक्तियों में हो, उसे व्याधिकरण तत्पुरुष समास कहते हैं। उदाहरणतया- राजः पुरुषः - राजपुरुषः में प्रथम पद राजः षष्ठी विभक्ति में है तथा द्वितीय पद पुरुषः में प्रथमा विभक्ति है। इस प्रकार दोनों पदों में भिन्न-भिन्न विभक्तियाँ होने से व्याधिकरण तत्पुरुष समास हुआ।

इसलिए विभक्तियों के अनुसार तत्पुरुष समास के 6 भेद होते हैं :-

1. कर्म तत्पुरुष समास
2. करण तत्पुरुष समास
3. सम्प्रदान तत्पुरुष समास
4. अपादान तत्पुरुष समास
5. सम्बन्ध तत्पुरुष समास
6. अधिकरण तत्पुरुष समास



1. कर्म तत्पुरुष समास

इसमें दो पदों के बीच में कर्मकारक छिपा हुआ होता है। कर्मकारक का चिन्ह 'को' होता है। 'को' को कर्मकारक की विभक्ति भी कहा जाता है। उसे कर्म तत्पुरुष समास कहते हैं।

कर्म तत्पुरुष समास के उदाहरण

- ग्रामगत = ग्राम को गया हुआ
- माखनचोर = माखन को चुराने वाला
- वनगमन = वन को गमन
- मुंहतोड़ = मुंह को तोड़ने वाला
- स्वर्गप्राप्त = स्वर्ग को प्राप्त
- देशगत = देश को गया हुआ
- जनप्रिय = जन को प्रिय
- मरणासन्न = मरण को आसन्न
- गिरहकट = गिरह को काटने वाला
- कुंभकार = कुंभ को बनाने वाला
- गृहागत = गृह को आगत
- कठफोड़वा = कांठ को फोड़ने वाला
- शत्रुघ्न = शत्रु को मारने वाला
- गिरिधर = गिरी को धारण करने वाला
- मनोहर = मन को हरने वाला

2. करण तत्पुरुष समास

जहाँ पर पहले पद में करण कारक का बोध होता है। इसमें दो पदों के बीच करण कारक छिपा होता है। करण कारक का चिन्ह या विभक्ति 'के द्वारा' और 'से' होता है। उसे करण तत्पुरुष कहते हैं।

करण तत्पुरुष समास के उदाहरण

- मनचाहा = मन से चाहा
- शोकग्रस्त = शोक से ग्रस्त
- भुखमरी = भूख से मरी
- धनहीन = धन से हीन
- बाणाहत = बाण से आहत
- ज्वरग्रस्त = ज्वर से ग्रस्त
- मदांध = मद से अँधा
- रसभरा = रस से भरा





- आचारकुशल = आचार से कुशल
- भयाकुल = भय से आकुल
- आँखोंदेखी = आँखों से देखी
- तुलसीकृत = तुलसी द्वारा रचित
- रोगातुर = रोग से आतुर
- पर्णकुटीर = पर्ण से बनी कुटीर
- कर्मवीर = कर्म से वीर
- रक्तरंजित = रक्त से रंजित
- जलाभिषेक = जल से अभिषेक
- रोगग्रस्त = रोग से ग्रस्त

3. सम्प्रदान तत्पुरुष समास

इसमें दो पदों के बीच सम्प्रदान कारक छिपा होता है। सम्प्रदान कारक का चिन्ह या विभक्ति 'के लिए' होती है। उसे सम्प्रदान तत्पुरुष समास कहते हैं।

सम्प्रदान तत्पुरुष समास के उदाहरण

- विद्यालय = विद्या के लिए आलय
- रसोईघर = रसोई के लिए घर
- सभाभवन = सभा के लिए भवन
- विश्रामगृह = विश्राम के लिए गृह
- गुरुदक्षिणा = गुरु के लिए दक्षिणा
- प्रयोगशाला = प्रयोग के लिए शाला
- देशभक्ति = देश के लिए भक्ति
- स्नानघर = स्नान के लिए घर
- सत्याग्रह = सत्य के लिए आग्रह
- यज्ञशाला = यज्ञ के लिए शाला
- डाकगाड़ी = डाक के लिए गाड़ी
- देवालय = देव के लिए आलय
- गौशाला = गौ के लिए शाला
- युद्धभूमि = युद्ध के लिए भूमि
- हथकड़ी = हाथ के लिए कड़ी
- धर्मशाला = धर्म के लिए शाला
- पुस्तकालय = पुस्तक के लिए आलय



- राहखर्च = राह के लिए खर्च
- परीक्षा भवन = परीक्षा के लिए भवन

4. अपादान तत्पुरुष समास

इसमें दो पदों के बीच में अपादान कारक छिपा होता है। अपादान कारक का चिन्ह या विभक्ति 'से अलग' होता है। उसे अपादान तत्पुरुष समास कहते हैं।

अपादान तत्पुरुष समास के उदाहरण

- कामचोर = काम से जी चुराने वाला
- दूरागत = दूर से आगत
- रणविमुख = रण से विमुख
- नेत्रहीन = नेत्र से हीन
- पापमुक्त = पाप से मुक्त
- देशनिकाला = देश से निकाला
- पथभ्रष्ट = पथ से भ्रष्ट
- पदच्युत = पद से च्युत
- जन्मरोगी = जन्म से रोगी
- रोगमुक्त = रोग से मुक्त
- जन्मांध = जन्म से अँधा
- कर्महीन = कर्म से हीन
- वनरहित = वन से रहित
- अन्जहीन = अन्ज से हीन
- जलहीन = जल से हीन
- गुणहीन = गुण से हीन
- फलहीन = फल से हीन
- भयभीत = भय से डरा हुआ

5. सम्बन्ध तत्पुरुष समास

इसमें दो पदों के बीच में सम्बन्ध कारक छिपा होता है। सम्बन्ध कारक के चिन्ह या विभक्ति 'का', 'के', 'की' होती हैं। उसे सम्बन्ध तत्पुरुष समास कहते हैं।

सम्बन्ध तत्पुरुष समास के उदाहरण

- गंगाजल = गंगा का जल
- लोकतंत्र = लोक का तंत्र
- दुर्वादल = दुर्व का दल



- देवपूजा = देव की पूजा
- आमवृक्ष = आम का वृक्ष
- राजकुमारी = राज की कुमारी
- जलधारा = जल की धारा
- राजनीति = राजा की नीति
- सुखयोग = सुख का योग
- मूर्तिपूजा = मूर्ति की पूजा
- श्रधकण = श्रधा के कण
- शिवालय = शिव का आलय
- देशरक्षा = देश की रक्षा
- सीमारेखा = सीमा की रेखा
- जलयान = जल का यान
- कार्यकर्ता = कार्य का करता
- सेनापति = सेना का पति
- कन्यादान = कन्या का दान
- गृहस्वामी = गृह का स्वामी
- पराधीन – पर के अधीन

6. अधिकरण तत्पुरुष समास

इसमें दो पदों के बीच अधिकरण कारक छिपा होता है। अधिकरण कारक का चिन्ह या विभक्ति 'में', 'पर' होता है। उसे अधिकरण तत्पुरुष समास कहते हैं।

अधिकरण तत्पुरुष समास के उदाहरण

- ईस्वरभक्ति = ईस्वर में भक्ति
- आत्मविश्वास = आत्मा पर विश्वास
- दीनदयाल = दीनों पर दयाल
- दानवीर = दान देने में वीर
- आचारनिपुण = आचार में निपुण
- जलमग्न = जल में मग्न
- सिरदर्द = सिर में दर्द
- कलाकुशल = कला में कुशल
- शरणागत = शरण में आगत
- आनन्दमग्न = आनन्द में मग्न



- आपबीती = आप पर बीती
- नगरवास = नगर में वास
- रणधीर = रण में धीर
- क्षणभंगुर = क्षण में भंगुर
- पुरुषोत्तम = पुरुषों में उत्तम
- लोकप्रिय = लोक में प्रिय
- गृहप्रवेश = गृह में प्रवेश
- युधिष्ठिर = युद्ध में स्थिर
- शोकमग्न = शोक में मग्न

तत्पुरुष समास के उपभेद

1. नञ् तत्पुरुष समास
2. उपपद तत्पुरुष समास
3. लुप्तपद तत्पुरुष समास

उपपद तत्पुरुष समास

ऐसा समास जिनका उत्तरपद भाषा में स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त न होकर प्रत्यय के रूप में ही प्रयोग में लाया जाता है। जैसे- नभचर, कृतज्ञ, कृतधन, जलद, लकड़हारा इत्यादि ।

लुप्तपद तत्पुरुष समास

जब किसी समास में कोई कारक चिह्न अकेला लुप्त न होकर पूरे पद सहित लुप्त हो और तब उसका सामासिक पद बने तो वह लुप्तपद तत्पुरुष समास कहलाता है। जैसे -

- दहीबड़ा – दही में डूबा हुआ बड़ा
- ऊँटगाड़ी – ऊँट से चलने वाली गाड़ी
- पवनचक्की – पवन से चलने वाली चक्की आदि ।

नञ् तत्पुरुष समास

इसमें पहला पद निषेधात्मक होता है उसे नञ् तत्पुरुष समास कहते हैं।

नञ् तत्पुरुष समास के उदाहरण

- असभ्य = न सभ्य
- अनादि = न आदि
- असंभव = न संभव
- अनंत = न अंत





कर्मधारय समास

कर्मधारय समास का उत्तर पद प्रधान होता है। इस समास में विशेषण-विशेष्य और उपमेय-उपमान से मिलकर बनते हैं उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

कर्मधारय समास के उदाहरण

- नीलगगन = नीला है जो गगन
- चन्द्रमुख = चन्द्र जैसा मुख
- पीताम्बर = पीत है जो अम्बर
- महात्मा = महान है जो आत्मा
- लालमणि = लाल है जो मणि
- महादेव = महान है जो देव
- देहलता = देह रूपी लता
- नवयुवक = नव है जो युवक
- अधमरा = आधा है जो मरा
- प्राणप्रिय = प्राणों से प्रिय
- श्यामसुंदर = श्याम जो सुंदर है
- नीलकंठ = नीला है जो कंठ
- महापुरुष = महान है जो पुरुष
- नरसिंह = नर में सिंह के समान
- कनकलता = कनक की सी लता
- नीलकमल = नीला है जो कमल
- परमानन्द = परम है जो आनंद



कर्मधारय समास के भेद

1. विशेषणपूर्वपद कर्मधारय समास
2. विशेष्यपूर्वपद कर्मधारय समास
3. विशेषणोभयपद कर्मधारय समास
4. विशेष्योभयपद कर्मधारय समास

1. विशेषणपूर्वपद कर्मधारय समास :-

जहाँ पर पहला पद प्रधान होता है वहाँ पर विशेषणपूर्वपद कर्मधारय समास होता है।

जैसे :-

- नीलीगाय = नीलगाय
- पीत अम्बर = पीताम्बर
- प्रिय सखा = प्रियसखा



2. विशेष्यपूर्वपद कर्मधारय समास :-

इसमें पहला पद विशेष्य होता है और इस प्रकार के सामासिक पद ज्यादातर संस्कृत में मिलते हैं।

जैसे :- कुमारी श्रमणा = कुमारश्रमणा

3. विशेषणोभयपद कर्मधारय समास :-

इसमें दोनों पद विशेषण होते हैं।

जैसे :- नील – पीत, सुनी – अनसुनी, कहनी – अनकहनी

4. विशेष्योभयपद कर्मधारय समास :-

इसमें दोनों पद विशेष्य होते हैं।

जैसे :- आमगाछ, वायस-दम्पति।

कर्मधारय समास के उपभेद

1. उपमानकर्मधारय समास

2. उपमितकर्मधारय समास

3. रूपककर्मधारय समास

1. उपमानकर्मधारय समास :-

इसमें उपमानवाचक पद का उपमेयवाचक पद के साथ समास होता है। इस समास में दोनों शब्दों के बीच से 'इव' या 'जैसा' अव्यय का लोप हो जाता है और दोनों पद, चूँकि एक ही कर्ता विभक्ति, वचन और लिंग के होते हैं, इसलिए समस्त पद कर्मधारय लक्षण का होता है। उसे उपमानकर्मधारय समास कहते हैं।

जैसे :- विद्युत् जैसी चंचला = विद्युचंचला

2. उपमितकर्मधारय समास :-

यह समास उपमानकर्मधारय का उल्टा होता है। इस समास में उपमेय पहला पद होता है और उपमान दूसरा पद होता है। उसे उपमितकर्मधारय समास कहते हैं।

जैसे :- अधरपल्लव के समान = अधर – पल्लव, नर सिंह के समान = नरसिंह।

3. रूपककर्मधारय समास :-

जहाँ पर एक का दूसरे पर आरोप होता है वहाँ पर रूपककर्मधारय समास होता है।

जैसे :- मुख ही है चन्द्रमा = मुखचन्द्र।

द्विगु समास

इस समास में पूर्वपद संख्यावाचक होता है और कभी-कभी उत्तरपद भी संख्यावाचक होता हुआ देखा जा सकता है। इस समास में प्रयुक्त संख्या किसी समूह को दर्शाती है किसी अर्थ को नहीं। इससे समूह और समाहार का बोध होता है। उसे द्विगु समास कहते हैं।



द्विगु समास के उदाहरण

- दोपहर = दो पहरों का समाहार
- त्रिवेणी = तीन वेणियों का समूह
- पंचतन्त्र = पांच तंत्रों का समूह
- त्रिलोक = तीन लोकों का समाहार
- शताब्दी = सौ अब्दों का समूह
- पंसरी = पांच सेरों का समूह
- सतसई = सात सौ पदों का समूह
- चौगुनी = चार गुनी
- त्रिभुज = तीन भुजाओं का समाहार
- चौमासा = चार मासों का समूह
- नवरात्र = नौ रात्रियों का समूह
- अठन्नी = आठ आनों का समूह
- सप्तऋषि = सात ऋषियों का समूह
- त्रिकोण = तीन कोणों का समाहार
- सप्ताह = सात दिनों का समूह

द्विगु समास के भेद

1. समाहारद्विगु समास
2. उत्तरपदप्रधानद्विगु समास

**STEP UP
ACADEMY**

1. समाहारद्विगु समास

समाहार का मतलब होता है समुदाय, इकट्ठा होना, समेटना उसे समाहारद्विगु समास कहते हैं।

जैसे :-

- तीन लोकों का समाहार = त्रिलोक
- पाँचों वटों का समाहार = पंचवटी
- तीन भुवनों का समाहार = त्रिभुवन

2. उत्तरपदप्रधानद्विगु समास

उत्तरपदप्रधानद्विगु समास दो प्रकार के होते हैं।

1. बेटा या फिर उत्पत्र के अर्थ में।

जैसे :-

- दो माँ का = दुमाता
- दो सूतों के मेल का = दुसूती।



- जहाँ पर सच में उत्तरपद पर जोर दिया जाता है।

जैसे :-

पांच प्रमाण = पंचप्रमाण

पांच हत्थड = पंचहत्थड

द्वंद्व समास

द्वंद्व समास में दोनों पद ही प्रधान होते हैं इसमें किसी भी पद का गौण नहीं होता है। ये दोनों पद एक-दूसरे पद के विलोम होते हैं लेकिन ये हमेशा नहीं होता है। इसका विग्रह करने पर और, अथवा, या, एवं का प्रयोग होता है उसे द्वंद्व समास कहते हैं।

द्वन्द्व समास उदाहरण

- पाप-पुण्य = पाप और पुण्य
- राधा-कृष्ण = राधा और कृष्ण
- अन्न-जल = अन्न और जल
- नर-नारी = नर और नारी
- गुण-दोष = गुण और दोष
- देश-विदेश = देश और विदेश
- अमीर-गरीब = अमीर और गरीब
- नदी-नाले = नदी और नाले
- धन-दौलत = धन और दौलत
- सुख-दुःख = सुख और दुःख
- आगे-पीछे = आगे और पीछे
- ऊँच-नीच = ऊँच और नीच
- आग-पानी = आग और पानी
- मार-पीट = मारपीट
- राजा-प्रजा = राजा और प्रजा
- ठंडा-गर्म = ठंडा या गर्म
- माता-पिता = माता और पिता
- दिन-रात = दिन और रात

द्वन्द्व समास के भेद

- इतरेतरद्वंद्व समास
- समाहारद्वंद्व समास
- वैकल्पिकद्वंद्व समास





1. इतरेतरद्वंद्व समास

वो द्वंद्व जिसमें और शब्द से भी पद जुड़े होते हैं और अलग अस्तित्व रखते हों उसे इतरेतर द्वंद्व समास कहते हैं। इस समास से जो पद बनते हैं वो हमेशा बहुवचन में प्रयोग होते हैं क्योंकि वे दो या दो से अधिक पदों से मिलकर बने होते हैं।

जैसे :-

- राम और कृष्ण = राम-कृष्ण
- माँ और बाप = माँ-बाप
- अमीर और गरीब = अमीर-गरीब
- गाय और बैल = गाय-बैल
- ऋषि और मुनि = ऋषि-मुनि
- बेटा और बेटी = बेटा-बेटी

2. समाहारद्वंद्व समास

समाहार का अर्थ होता है समूह। जब द्वंद्व समास के दोनों पद और समुच्चयबोधक से जुड़ा होने पर भी अलग-अलग अस्तित्व नहीं रखकर समूह का बोध कराते हैं, तब वह समाहारद्वंद्व समास कहलाता है। इस समास में दो पदों के अलावा तीसरा पद भी छुपा होता है और अपने अर्थ का बोध अप्रत्यक्ष रूप से कराते हैं।

जैसे :-

- दालरोटी = दाल और रोटी
- हाथपौंच = हाथ और पौंच
- आहारनिंद्रा = आहार और निंद्रा

3. वैकल्पिक द्वंद्व समास

इस द्वंद्व समास में दो पदों के बीच में या, अथवा आदि विकल्पसूचक अव्यय छिपे होते हैं उसे वैकल्पिक द्वंद्व समास कहते हैं। इस समास में ज्यादा से ज्यादा दो विपरीतार्थक शब्दों का योग होता है।

जैसे :-

- पाप-पुण्य = पाप या पुण्य
- भला-बुरा = भला या बुरा
- थोड़ा-बहुत = थोड़ा या बहुत

बहुब्रीहि समास

बहुब्रीहि समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता। जब दो पद मिलकर तीसरा पद बनाते हैं तब वह तीसरा पद प्रधान होता है। इसका विग्रह करने पर “वाला, है, जो, जिसका, जिसकी, जिसके, वह” आदि आते हैं वह बहुब्रीहि समास कहलाता है।

बहुब्रीहि समास के उदाहरण

- त्रिनेत्र = तीन नेत्र हैं जिसके (शिव)
- नीलकंठ = नीला है कंठ जिसका (शिव)



- लम्बोदर = लम्बा है उदर जिसका (गणेश)
- दशानन = दश हैं आनन जिसके (रावण)
- चतुर्भुज = चार भुजाओं वाला (विष्णु)
- पीताम्बर = पीले हैं वस्त्र जिसके (कृष्ण)
- चक्रधर = चक्र को धारण करने वाला (विष्णु)
- वीणापाणी = वीणा है जिसके हाथ में (सरस्वती)
- स्वेताम्बर = सफेद वस्त्रों वाली (सरस्वती)
- सुलोचना = सुंदर हैं लोचन जिसके (मेघनाद की पत्नी)
- दुरात्मा = बुरी आत्मा वाला (दुष्ट)
- घनश्याम = घन के समान हैं जो (श्री कृष्ण)
- मृत्युंजय = मृत्यु को जीतने वाला (शिव)
- निशाचर = निशा में विचरण करने वाला (राक्षस)
- गिरिधर = गिरी को धारण करने वाला (कृष्ण)
- पंकज = पंक में जो पैदा हुआ (कमल)
- त्रिलोचन = तीन हैं लोचन जिसके (शिव)
- विषधर = विष को धारण करने वाला (सर्प)

बहुब्रीहि समास के प्रकार/भेद

1. समानाधिकरण बहुब्रीहि समास
2. व्याधिकरण बहुब्रीहि समास
3. तुल्ययोग बहुब्रीहि समास
4. व्यतिहार बहुब्रीहि समास
5. प्रादी बहुब्रीहि समास

1. समानाधिकरण बहुब्रीहि समास

इसमें सभी पद कर्ता कारक की विभक्ति के होते हैं लेकिन समस्त पद के द्वारा जो अन्य उक्त होता है, वो कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण आदि विभक्तियों में भी उक्त हो जाता है उसे समानाधिकरण बहुब्रीहि समास कहते हैं।

जैसे :-

- प्राप्त है उदक जिसको = प्रप्तोदक
- जीती गई इन्द्रियां हैं जिसके द्वारा = जितेंद्रियाँ
- दत्त है भोजन जिसके लिए = दत्तभोजन
- निर्गत है धन जिससे = निर्धन
- नेक है नाम जिसका = नेकनाम
- सात है खण्ड जिसमें = सतखंडा



2. व्याधिकरण बहुब्रीहि समास

समानाधिकरण बहुब्रीहि समास में दोनों पद कर्ता कारक की विभक्ति के होते हैं लेकिन यहाँ पहला पद तो कर्ता कारक की विभक्ति का होता है लेकिन बाद वाला पद सम्बन्ध या फिर अधिकरण कारक का होता है उसे व्याधिकरण बहुब्रीहि समास कहते हैं।

जैसे :-

- शूल है पाणी में जिसके = शूलपाणी
- वीणा है पाणी में जिसके = वीणापाणी

3. तुल्ययोग बहुब्रीहि समास

जिसमें पहला पद 'सह' होता है वह तुल्ययोग बहुब्रीहि समास कहलाता है। इसे सहबहुब्रीहि समास भी कहती हैं। सह का अर्थ होता है साथ और समास होने की वजह से सह के स्थान पर केवल स रह जाता है।

इस समास में इस बात पर ध्यान दिया जाता है की विग्रह करते समय जो सह दूसरा वाला शब्द प्रतीत हो वो समास में पहला हो जाता है।

जैसे :-

- जो बल के साथ है = सबल
- जो देह के साथ है = सदेह
- जो परिवार के साथ है = सपरिवार

4. व्यतिहार बहुब्रीहि समास

जिससे घात या प्रतिघात की सुचना मिले उसे व्यतिहार बहुब्रीहि समास कहते हैं। इस समास में यह प्रतीत होता है की 'इस चीज से और उस चीज से लड़ाई हुई।'

जैसे :-

- मुक्के-मुक्के से जो लड़ाई हुई = मुक्का-मुक्की
- बातों-बातों से जो लड़ाई हुई = बाताबाती

5. प्रादी बहुब्रीहि समास

जिस बहुब्रीहि समास पूर्वपद उपसर्ग हो वह प्रादी बहुब्रीहि समास कहलाता है।

जैसे :-

- नहीं है रहम जिसमें = बेरहम
- नहीं है जन जहाँ = निर्जन

समास और संधि में अंतर:

समास का शाब्दिक अर्थ होता है संक्षेप। समास में वर्णों के स्थान पर पद का महत्व होता है। इसमें दो या दो से अधिक पद मिलकर एक समस्त पद बनाते हैं और इनके बीच से विभक्तियों का लोप हो जाता है। समस्त पदों को तोड़ने की प्रक्रिया को विग्रह कहा जाता है। समास में बने हुए शब्दों के मूल अर्थ को परिवर्तित किया भी जा सकता है और परिवर्तित नहीं भी किया जा सकता है।



उदाहरण:- विषधर = विष को धारण करने वाला अर्थात् शिव।

जबकि.....

संधि का शब्दिक अर्थ होता है मेल। संधि में उच्चारण के नियमों का विशेष महत्व होता है। इसमें दो वर्ण होते हैं इसमें कहीं पर एक तो कहीं पर दोनों वर्णों में परिवर्तन हो जाता है और कहीं पर तीसरा वर्ण भी आ जाता है। संधि किये हुए शब्दों को तोड़ने की क्रिया विच्छेद कहलाती है। संधि में जिन शब्दों का योग होता है उनका मूल अर्थ नहीं बदलता।

उदाहरण:- पुस्तक+आलय = पुस्तकालय।

द्विगु समास और बहुब्रीहि समास में अंतरः

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है और दूसरा पद विशेष्य होता है जबकि बहुब्रीहि समास में समस्त पद ही विशेषण का कार्य करता है।

जैसे -

- चतुर्भुज -चार भुजाओं का समूह
- चतुर्भुज -चार हैं भुजाएं जिसकी

कर्मधारय समास और बहुब्रीहि समास में अंतरः

समास के कुछ उदहारण हैं जो कर्मधारय और बहुब्रीहि समास दोनों में समान रूप से पाए जाते हैं, इन दोनों में अंतर होता है। कर्मधारय समास में एक पद विशेषण या उपमान होता है और दूसरा पद विशेष्य या उपमेय होता है।

इसमें शब्दार्थ प्रधान होता है। कर्मधारय समास में दूसरा पद प्रधान होता है तथा पहला पद विशेष्य के विशेषण का कार्य करता है।

जैसे: - नीलकंठ = नीला कंठ और बहुब्रीहि समास में दो पद मिलकर तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं इसमें तीसरा पद प्रधान होता है।

जैसे- नीलकंठ = नील + कंठ

द्विगु और कर्मधारय समास में अंतरः

द्विगु का पहला पद हमेशा संख्यावाचक विशेषण होता है जो दूसरे पद की गिनती बताता है जबकि कर्मधारय का एक पद विशेषण होने पर भी संख्यावाचक कभी नहीं होता है।

द्विगु का पहला पद ही विशेषण बन कर प्रयोग में आता है जबकि कर्मधारय में कोई भी पद दूसरे पद का विशेषण हो सकता है।

जैसे -

- नवरात्र - नौ रात्रों का समूह
- रक्तोत्पल - रक्त है जो उत्पल

संयोगमूलक समास

संयोगमूलक समास को संज्ञा समास भी कहते हैं। इस समास में दोनों पद संज्ञा होते हैं अर्थात् इसमें दो संज्ञाओं का संयोग होता है।

जैसे :-

माँ-बाप, भाई-बहन, दिन-रात, माता-पिता।



आश्रयमूलक समास

आश्रयमूलक समास को विशेषण समास भी कहा जाता है। यह प्राय कर्मधारय समास होता है। इस समास में प्रथम पद विशेषण होता है और दूसरा पद का अर्थ बलवान होता है। यह विशेषण-विशेष्य, विशेष्य-विशेषण, विशेषण, विशेष्य आदि पदों द्वारा सम्पन्न होता है।

जैसे :- कच्चाकेला, शीशमहल, घनस्याम, लाल-पीला, मौलवीसाहब, राजबहादुर।

वर्णनमूलक समास

इसे वर्णनमूलक समास भी कहते हैं। वर्णनमूलक समास के अंतर्गत बहुब्रीहि और अव्ययीभाव समास का निर्माण होता है। इस समास में पहला पद अव्यय होता है और दूसरा पद संज्ञा। उसे वर्णनमूलक समास कहते हैं।

जैसे :- यथाशक्ति, प्रतिमास, घड़ी-घड़ी, प्रत्येक, भरपेट, यथासाध्य।





हिन्दी मुहावरे अर्थ सहित

हिंदी मुहावरे और अर्थ और वाक्य प्रयोग

मुहावरा – अपने मुँह मियाँ मिटू बनना

अर्थ – अपनी बड़ाई आप करना

वाक्य प्रयोग – अपने मुँह मियाँ मिट्लू बननेवाले को समाज में इज्जत नहीं मिलती।

मुहावरा – आँख दिखाना

अर्थ – क्रोध से देखना, रोकना, धमकाना

वाक्य प्रयोग – गलती भी करते हो और ऊपर से आँखें भी दिखाते हो।

मुहावरा – आँख का तारा, आँख की पुतली

अर्थ – बहुत प्यारा

वाक्य प्रयोग – यह बच्चा मेरी आँखों का तारा है।

मुहावरा – आँख का काजल चुराना

अर्थ – सफाई के साथ चोरी करना

वाक्य प्रयोग – इतने लोगों के बीच से घड़ी गायब ! चोर ने तो जैसे आँखों का काजल ही चुरा लिया है

मुहावरा – आँखों में धूल झोंकना

अर्थ – सरे आम धोखा देना

वाक्य प्रयोग – परीक्षक की आँखों में धूल झोंककर कुछ विद्यार्थी अच्छे अंक तो पा जाते हैं, परंतु इससे उन्हें जीवन में सफलता नहीं मिलती

मुहावरा – आँखों पर चढ़ना

अर्थ – पसंद आ जाना

वाक्य प्रयोग – तुम्हारी घड़ी चोर की आँखों पर चढ़ गयी थी, इसलिए मौका पाते ही के लिए लोभ होना उसने चुरा ली



मुहावरा – आँखें फेर लेना

अर्थ – पहले जैसा व्यवहार न रखना

वाक्य प्रयोग – जब से उसे अफसरी मिली है, उसने माँ बाप, यार दोस्त सबसे आँखें फेर ली है

मुहावरा – आँखें बिछाना

अर्थ – प्रेम से स्वागत करना

वाक्य प्रयोग – तुम्हारी राह में आँखें बिछाये कय से बैठा हूँ तुम जल्द आ जाओ

मुहावरा – आँख में पानी न होना

अर्थ – जोहना, बेशर्म होना

वाक्य प्रयोग – बर्डमान लोगों की आँखों में पानी नहीं होता

मुहावरा – आँखों में खून उतरना

अर्थ – अत्यधिक क्रोध होना

वाक्य प्रयोग – जयचंद को देखते ही महाराज पृथ्वीराज की आँखों में खून उतर आया

मुहावरा – आँखों में गड़ना

अर्थ – पसंद आना

वाक्य प्रयोग – तुम्हारी कलम मेरी आँखों में गड़ गयी है, इसे तुम मुझे दे दी

मुहावरा – आँखों में चरबी छाना

अर्थ – घमंड होना

वाक्य प्रयोग – दौलत हाथ में आते ही उसकी आँखों में चरबी छा गयी और वह अपने रिश्तेदारों से बुरा व्यवहार करने लगा।

मुहावरा – आँखे लाल करना

अर्थ – क्रोध से देखना

वाक्य प्रयोग – आँखें लाल मत करो, इससे मैं डरनेवाला नहीं

मुहावरा – आँखे सेंकना

अर्थ – दर्शन का सुख उठाना

वाक्य प्रयोग – बहुत से नवयुवक तो मेले ठेले में सिर्फ आँखे सेंकने ही आते हैं



मुहावरा – खाक छानना

अर्थ – भटकना

वाक्य प्रयोग – नौकरी की खोज में वह खाक छानता रहा।

मुहावरा – खरी-खोटी सुनाना

अर्थ – भला-बुरा कहना

वाक्य प्रयोग – कितनी खरी-खोटी सुना चुका हूँ, मगर बेकहा माने तब तो ?

मुहावरा – खून का प्यासा

अर्थ – जानी दुश्मन होना

वाक्य प्रयोग – उसकी क्या बात कर रहे हो, वह तो मेरे खून का प्यासा हो गया है।

मुहावरा – खेत रहना या आना

अर्थ – वीरगति पाना

वाक्य प्रयोग – पानीपत की तीसरी लड़ाई में इतने मराठे आये कि मराठा-भूमि जवानों से खाली हो गयी।

मुहावरा – खटाई में पड़ना

अर्थ – झमेले में पड़ना, रुक जाना

वाक्य प्रयोग – बात तय थी, लेकिन ऐन मौके पर उसके मुकर जाने से सारा काम खटाई में पड़ गया।

मुहावरा – खटाई में डालना

अर्थ – किसी काम को लटकाना

वाक्य प्रयोग – उसनेतो मेरा काम खटाई में डाल दिया। अब किसी और से कराना पड़ेगा।

मुहावरा – खाई से निकलकर खंदक में कूदना

अर्थ – एक परेशानी या मुसीबत से निकलकर दूसरी में जाना

वाक्य प्रयोग – मुझे ज्ञात नहीं था कि मैं खाई से निकलकर खंदक में कूदने जा रहा हूँ।

मुहावरा – खाक फॉकना

अर्थ – मारा-मारा फिरना

वाक्य प्रयोग – पहले तो उसने नौकरी छोड़ दी, अब नौकरी की तलाश में खाक फॉक रहा है।





मुहावरा – खाक में मिलना

अर्थ – सब कुछ नष्ट हो जाना

वाक्य प्रयोग – बाढ़ आने पर उसका सब कुछ खाक में मिल गया।

मुहावरा – खाना न पचना

अर्थ – बेचैन या परेशान होना

वाक्य प्रयोग – जब तक श्यामा अपने मन की बात मुझे बताएगी नहीं, उसका खाना नहीं पचेगा।

मुहावरा – खा-पी डालना

अर्थ – खर्च कर डालना

वाक्य प्रयोग – उसने अपना पूरा वेतन यार-दोस्तों में खा-पी डाला, अब उधार माँग रहा है।

मुहावरा – खाने को दौड़ना

अर्थ – बहुत क्रोध में होना

वाक्य प्रयोग – मैं अपने ताऊजी के पास नहीं जाऊँगा, वे तो हर किसी को खाने को दौड़ते हैं।

मुहावरा – खिचड़ी पकाना

अर्थ – गुप्त बात या कोई षड्यंत्र करना

वाक्य प्रयोग – छात्रों को खिचड़ी पकाते देख अध्यापक ने उन्हें डाँट दिया।

मुहावरा – खीरे-ककड़ी की तरह काटना

अर्थ – अंधाधुंध मारना-काटना

वाक्य प्रयोग – 1857 की लड़ाई में रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों को खीरे-ककड़ी की तरह काट दिया था।

मुहावरा – खुदा-खुदा करके

अर्थ – बहुत मुश्किल से

वाक्य प्रयोग – रामू खुदा-खुदा करके दसवीं में उत्तीर्ण हुआ है।

मुहावरा – खुशामदी टटू

अर्थ – खुशामद करने वाला

वाक्य प्रयोग – वह तो खुशामदी टटू है, खुशामद करके अपना काम निकाल लेता है।





मुहावरा – खूँटा गाड़ना

अर्थ – रहने का स्थान निर्धारित करना

वाक्य प्रयोग – उसने तो यहीं पर खूँटा गाड़ लिया हैं, लगता हैं जीवन भर यहीं रहेगा।

मुहावरा – खून-पसीना एक करना

अर्थ – बहुत कठिन परिश्रम करना

वाक्य प्रयोग – रामू खून-पसीना एक करके दो पैसे कमाता हैं।

मुहावरा – खून के आँसू रुलाना

अर्थ – बहुत सताना या परेशान करना

वाक्य प्रयोग – रामू कलियुगी पुत्र हैं, वह अपने माता-पिता को खून के आँसू रुला रहा हैं।

मुहावरा – खून सवार होना

अर्थ – बहुत क्रोध आना

वाक्य प्रयोग – उसके ऊपर खून सवार हैं, आज वह कुछ भी कर सकता हैं।

मुहावरा – खून-खच्चर होना

अर्थ – बहुत मारपीट या झागड़ा होना

वाक्य प्रयोग – सुबह-सुबह दोनों भाइयों में खून-खच्चर हो गया।

मुहावरा – खून पीना

अर्थ – शोषण करना

वाक्य प्रयोग – सेठ रामलाल जी अपने कर्मचारियों का बहुत खून चूसते हैं।

मुहावरा – ख्याली पुलाव पकाना

अर्थ – असंभव बातें करना

वाक्य प्रयोग – अरे भाई! ख्याली पुलाव पकाने से कुछ नहीं होगा, कुछ काम करो।

मुहावरा – खेल बिगड़ना

अर्थ – काम बिगड़ना

वाक्य प्रयोग – अगर पिताजी ने साथ नहीं दिया तो हमारा सारा खेल बिगड़ जाएगा।





मुहावरा – खून ठण्डा होना

अर्थ – उत्साह से रहित होना या भयभीत होना

वाक्य प्रयोग – आतंकवादियों को देखकर मेरा तो खून ठण्डा पड़ गया।

मुहावरा – खोटा पैसा

अर्थ – अयोग्य पुत्र

वाक्य प्रयोग – कभी-कभी खोटा पैसा भी काम आ जाता है।

मुहावरा – खोपड़ी खाना या खोपड़ी चाटना

अर्थ – बहुत बातें करके परेशान करना

वाक्य प्रयोग – अरे भाई! मेरी खोपड़ी मत खाओ, जाओ यहाँ से।

मुहावरा – खोपड़ी खाली होना

अर्थ – श्रम करके दिमाग का थक जाना

वाक्य प्रयोग – उसे पढ़ाकर तो मेरी खोपड़ी खाली हो गई, फिर भी उसे कुछ समझ नहीं आया।

मुहावरा – खोपड़ी गंजी करना

अर्थ – बहुत मारना-पीटना

वाक्य प्रयोग – लोगों ने मार-मार कर चोर की खोपड़ी गंजी कर दी।

मुहावरा – खोपड़ी पर लादना

अर्थ – किसी के जिम्मे जबरन काम मढ़ना

वाक्य प्रयोग – अधिकतर कर्मचारियों के छुट्टी पर जाने के कारण एक या दो कर्मचारियों की खोपड़ी पर काम लादना पड़ा।

मुहावरा – खोलकर कहना

अर्थ – स्पष्ट कहना

वाक्य प्रयोग – मित्र, जो कहना हैं, खोलकर कहो, मुझसे कुछ भी मत छिपाओ।

मुहावरा – खोज खबर लेना

अर्थ – समाचार मिलना

वाक्य प्रयोग – मदन के दादा जी घर छोड़कर चले गए। बहुत से लोगों ने उनकी खोज खबर ली तो भी उनका पता नहीं चला।





मुहावरा – खोद-खोद कर पूछना

अर्थ – अनेकानेक प्रश्न पूछना

वाक्य प्रयोग – खोद-खोद कर पूछना बंद करो, मैं इस तरह के सवालों के जबाब नहीं दूँगा।

मुहावरा – गले का हार होना

अर्थ – बहुत प्यारा

वाक्य प्रयोग – लक्ष्मण राम के गले का हर थे।

मुहावरा – गर्दन पर सवार होना

अर्थ – पीछा ना छोड़ना

वाक्य प्रयोग – जब देखो, तुम मेरी गर्दन पर सवार रहते हो।

